।। श्री ।।

वृंदावन संस्कृत माला

।। जय श्री राधे ।।

।। हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।।

३०१

संपूर्ण आध्यात्म ज्ञान

सरल संक्षिप्त व्याख्या महत्वपूर्ण ज्ञान

व्याख्याकार

लेखक

पं किशोरी दास जयप्रकाश वैष्णव

वैदिक भाष्यक

आदि जगतगुरू शंकराचार्य

भक्ति योग रसावतार पंचम मौलिक जगत्गुरू

श्री कृपालु जी महाराज

चैरिटेबल ट्रस्ट कृपालु परिषत् मनगढ़, वृंदावन

संक्षिप्त आध्यात्म ज्ञान

रचनाकार :- जयप्रकाश वैष्णव द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण पुस्तक जिनके प्रवचन, आत्मज्ञान यूट्यूब पर मौजूद है!

एक मात्र ऐसी रहस्यमई पुस्तक जिसमें चार वेद, 10 उपनिषद,, गीता, 18 पुराण के संपूर्ण ज्ञान समाहित है!

तत्वज्ञान निरूपण कथा युक्त संपूर्ण आध्यात्म का एकमात्र

पुस्तक मूल्य ₹240 मात्र

ब्रह्मखंड

परमात्मा कहां है?

ओशो के अनुसार,,,,,,

हसीद फकीर हुआ, बालसेन। उससे मिलने कुछ औरहसीद फकीर आए हुए थे। चर्चा चल पड़ी— एक बड़ी दार्शनिक चर्चा ——परमात्मा कहां है?

किसी ने कहा, पूरब में, क्योंकि पूरब से सूरज ऊगता है। और किसी ने कहा कि जेरूसलम में, क्योंकि यहूदी ही परमात्मा के चुने हुए लोग हैं, और परमात्मा ने ही मूसा के द्वारा यहूदियों को जेरूसलम तक पहुंचाया। जरूर परमात्मा जेरूसलम में होगा, जेरूसलम के मंदिर में होगा! और किसी ने कुछ, किसी ने कुछ···। जो जरा और ऊंची दार्शनिक उड़ान भर सकते थे, उन्होंने कहा, परमात्मा सर्वव्यापी है; सब जगह है; ये क्या बातें कर रहे हो— जेरूसलम, कि पूरब! परमात्मा सर्वव्यापी है, सब जगह है। बालसेन चुपचाप सुनता रहा। बालसेन अदभुत फकीर था। ऐसे ही जैसे पलटू, जैसे कबीर। सब ने फिर बालसेन से कहा, आप चुप हैं, आप कुछ नहीं बोलते; परमात्मा कहां है? बालसेन ने कहा, अगर सच पूछते हो तो परमात्मा वहां होता है जहां आदमी उसे घुसने देता है। बड़ा अदभुत उत्तर दिया! तुम घुसने ही न दो तो परमात्मा भी क्या करेगा? तुम अपने हृदय में आने दो, तो। मगर कौन उसके लिए क्षार खोलेगा? भक्ति जहां है, वहां भगवान है। लोग पूछते हैं: भगवान कहां है?

लोग भगवान को देखने भी आ जाते हैं, मेरे पास आ जाते हैं कि भगवान दिखा दें! जैसे अंधा प्रकाश देखना चाहे। जैसे बहरा संगीत सुनना चाहे। जैसे गूंगा गीत गाना चाहे। बिना इसकी फिक्र किए कि मैं अंधा हूं, कि बहरा हूं, कि गूंगा हूं। लंगड़ा ओलंपिक में भाग लेने जाना चाहता है; बिना इसकी फिक्र किए कि मैं लंगड़ा हूं। उठ सकता नहीं, चल सकता नहीं, ओलंपिक में भाग लेना है! पूछते हैं लोग: ईश्वर कहां है? मैं उनसे कहता हूं: यह सवाल ही मत उठाओ। पहले यह बताओ: भक्ति है? वे कहते हैं, भक्ति कैसे हो? पहले भगवान का पता होना चाहिए, तो हम भक्ति करेंगे। इस भेद को खयाल में रखना। परमात्मा का पता जो पहले मांगता है, फिर कहता है भक्ति करेगा, वह कभी भक्ति नहीं करेगा। क्योंकि परमात्मा का पता भक्ति के बिना चलता ही नहीं। भक्ति की आंख ही उसे देख पाती है। भक्ति के हाथ ही उसे छू पाते हैं। भक्ति के लबालब हृदय में ही उसकी तरंग उठती है। जहां भक्ति है, वहां भगवान है। -ओशो".

परमात्मा कौन है?

जिनकी सत्ता संपूर्ण ब्रह्मांड पर है! जानते हैं परमात्मा किसे कहते है? जिनकी नजर प्रत्येक ब्रह्मांड के प्रत्येक ग्रह के प्रत्येक देश के प्रत्येक राज्य के प्रत्येक जिले के एक-एक गांव के एक-एक मोहल्ले के एक एक घर के एक-एक जीव को अनंत जन्मों से 24 घंटे दिन रात हर सेकंड जिस पर उनकी टकटकी लगी हुई है! और मनुष्य ही नहीं कीड़े मकोड़े पशु पक्षी पर जिनकी नजर है वही परमात्मा है जिनकी नजर से एक जीव बचा हो! वह भगवान नहीं! संपूर्ण चराचर जीव जिनके नजर के सामने में है! वही परम शक्ति परमात्मा है! जिनकी नज़रों से कभी कोई नहीं बच

सकता! चाहे पृथ्वी के किसी भी कोने पर छिपकर कुछ भी कर ले! फिर भी नहीं बच पाएगा! परमात्मा उस जगह पर नहीं हर पल उनके अंदर ही है!

परमात्मा की सत्ता

संसार के प्रत्येक प्राणी समस्त जीवो में परमात्मा की ही सत्ता है! दुनिया का जितना भी खेल है स्कूल कॉलेज बैंक ऑफिस मंत्री रेलवे एयरपोर्ट बिजनेस,,, फिल्मी दुनिया,, खेल कूद की दुनिया संसार में यह जितने भी खेल हैं वह सब परम शक्ति परमात्मा का ही खेल है! उनके अलावा है कोई और दूसरा जो एक ही व्यक्ति दो रूप धारण कर सके!,,, जब दो रूप धारण नहीं कर सकता तो इतने अनंत प्राणी कौन बना होगा विचार करें! वही जिनके अंदर दो प्रकार के गुण विद्यमान है द्वैत और अद्वैत! अब इस बात को दिमाग से हटा दीजिए कि हमने सुना है सब प्राणी में भगवान का वास है! भगवान का वास नहीं अपितु एक परमात्मा अनंत अलग-अलग प्राणी बनकर संसार में अलग-अलग रूपों में लीला कर रहे हैं!,, इस रहस्य को कोई नहीं समझ पाया! यही है द्वैत और अद्वैत का रहस्य!,, भगवान की प्रबल माया इस रहस्य को पता चलने देगी नहीं!

परमात्मा दिव्य है!

भगवान को देखने के लिए जानने के लिए,,, मन में उनका विचार आने के लिए, वाणी पर उनका नाम आने के लिए नेत्रों से उनके दर्शन के लिए दिव्य शक्ति चाहिए जो केवल उनकी कृपा से मिलता है! क्योंकि परमात्मा दिव्य है और हमारी इंद्रियां, मन, बुद्धि प्राकृतिक वस्तु है माया के तत्व हैं और वेद कहते हैं परमात्मा माया के क्षेत्र से सर्वथा परे है अर्जुन को विराट रूप का दर्शन तभी हुआ जब स्वयं श्री कृष्ण ने उनको दिव्य शक्ति दी और वेदव्यास ने संजय को,,, तब धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र की घटना बता पाए! भगवान जिस पर कृपा अपनी कृपा करते हैं उनके माइक इंद्रिय मन बुद्धि को दिव्य बनाते हैं तब वह जीव परमात्मा का अनुभव कर पाता है उन्हें देख सकता है उन्हें जान सकता है! तब उनको उनका रियलाइज होता है! प्राकृतिक वस्तु उन्हें ग्रहण नहीं कर सकती!

परमात्मा ही माता और वही पिता है!

राधा और कृष्ण एक हैं माता पार्वती और शिवजी एक है महालक्ष्मी और भगवान विष्णु एक हैं और यह छह मिलकर एक बन जाते हैं वही निराकार परमात्मा है! माता सीता और भगवान श्री राम एक है! हम समझते हैं दोनों को अलग पर वास्तव में दोनों एक हैं अर्धनारीश्वर भगवान महादेव एक रूप धारण किया है बताने के लिए कि हम एक ही हैं दो नहीं! माता और पिता एक ही है वही एक परमात्मा जब सृष्टि को अपने गर्भ से उत्पन्न करता है जब जीवो पर उनकी ममता बरसती है तो मां बन जाता है और सब का पोषण करता है तो पिता बन जाता है! पिता कठोर बनकर दया ना करके जीव को अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल देते हैं! जब उनकी दया बरसती है तो वही परमात्मा हमारी मां बन जाते हैं! पर दोनों एक हैं!

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

भगवान दो नहीं,,, भगवान एक हैं!

अब इस भ्रम को हटा दीजिए जो हम समझते हैं विष्णु अलग है शिव अलग है भगवान गणेश अलग है हनुमान जी अलग है मां दुर्गा अलग है जितने भी हम देवी देवता भगवान देखते हैं सब उस ज्योति निरंजन निराकार परमात्मा जो एक है उनका ही रूप है रूप अनेक है उनके रूप अनंत हैं पर वह एक ही है एक ही परम सत्ता ने अनंत ब्रह्मांड को रचा है वही जगत का सृजन करता है और पालन करता और वही संघार करता है सृष्टि चलाने के लिए विष्णु उत्पन्न करने के लिए ब्रह्मा और अंत करने के लिए शिव बन जाता है वही गणपति वही बजरंगबली वही महेश्वर वही ब्रह्मा और वही विष्णु और वही योगमाया और वही मां दुर्गा है परमात्मा एक हैं सब उनके ही रूप हैं! ईश्वर, अल्लाह, गॉड, खुदा, वाहेगुरु सब एक हैं! 🙏

परमात्मा दो विरोधी तत्व के अधिष्ठाता है!

परमात्मा दो विरोधी तत्व के अधिष्ठाता है! वह इतना दूर है ब्रह्मांड से जितना दूर कोई नहीं जहां तक पहुंचना असंभव है! परमात्मा सबसे दूर है और वही जीव के इतने करीब है जितना करीब कोई नहीं यह शरीर भी नहीं! सबसे पास भी वही और सबसे दूर भी वही! आनंद भी वही कष्ट भी वही! प्रकाश भी वही अंधकार भी वही! ज्ञान भी वही और अज्ञान भी वही! स्त्री भी वही और पुरुष भी वही! वह इतने दयावान है दया की मूर्ति है जितना ब्रह्मांड में कोई नहीं और वही इतने कठोर हैं जब कर्मों की सजा मिलेगी इतने निष्ठुर जितना कठोर कोई नहीं! क्षमावान भी वही और क्षमा ना करने वाले भी वही,,, माया से परे भी वही और माया में भरे भी वही अर्थात माया से बाहर भी वही है!

और माया में समाया भी वही है! निर्गुण निराकार भी वही सगुण साकार भी वही माता भी वही और पिता भी वही! सब कुछ वही एक है! भगवान को देखना और जानना पहचानना और समझना सरल कार्य नहीं है! उनको देखने के लिए और जानने के लिए उनके विषयों को समझने के लिए दिव्य दृष्टि चाहिए अर्थात दिव्य शक्ति और यह केवल उनकी कृपा से प्राप्त होता है हर किसी को नहीं मिलता! प्राणी फिर फिर जन्म लेती है फिर मरती है बारंबार इस चक्र में अनादिकाल तक घूमती रहती है!

परमात्मा के पांच मूल स्वरूप

1. सत्- परमात्मा सत्य है सदा से हैं और सदा रहेंगे ना उनका प्रारंभ है ना उनका अंत है शाश्वत है!

2. चित- परमात्मा एक परम चेतन शक्ति है! उस परम चेतन का एक चिंगारी अंश मात्र जीव है!

3. आनंद- परमात्मा आनंद का विशाल समुद्र है प्रत्येक जीव की तृप्ति है आकर्षण है जीव जो आनंद चाहती है उनके अंश होने के कारण, वह परमात्मा आनंद से परिपूर्ण है!

4. अद्वैत- परमात्मा सदा एक समान एक भाव से रहते हैं! उनका भाव परिवर्तन नहीं होता एक रस में रहते हैं!

5. अनंत- परमात्मा का खेल अनंत है और अनंत रहेंगे! जो असीम है अपरंपार है जिसकी गिनती नहीं किया जा सकता! वही परमात्मा है!

भगवान है तो हमें दिखाओ

किसी ने कहा:- भगवान है तो हमें दिखाओ? हमने कहा तुम्हारे शरीर में पीड़ा है तो इसे पहले हमें दिखाओ! जैसे शरीर के पीड़ा को दर्द को दिखाया नहीं जा सकता अनुभव किया जाता है ऐसे ही परमात्मा को भी अनुभव किया जा सकता है दिखाया नहीं जा सकता जैसे रोगी दर्द को जानता है! उन्हें दर्द का महसूस होता है पैसे का तकलीफ एक निर्धन ही जानता है! कोई अन्य नहीं! जिसका संसार उजड़ जाए उसका तकलीफ क्या होता है सिर्फ उसे वही जानेगा कोई दूसरा नहीं! बस ऐसे ही भगवान का अनुभव अंदर से जिसको हो गया इसे तो केवल वही जानता है कोई दूसरा नहीं!!!!! जैसे पीड़ा को दिखाया नहीं जा सकता ऐसे ही परमात्मा के अनुभव को बताया नहीं जा सकता! शब्द नहीं! मेरा कृष्ण उड़ा लो इस जगत से तुम्हारे बिना अब हम क्या बताएं? कृष्ण मिलन की अश्रु धार!

जब कभी वह परमेश्वर कृपा की दृष्टि से मात्र जीव को देखते हैं तत्काल उन्हें सच्चाई स्वयं का बोध हो जाता है उनकी अज्ञानता सबसे पहले नष्ट करते हैं जब वह कृपा करते हैं! तब जाकर उनका प्राकृतिक इंद्रियां मन, बुद्धि, फिर उनका विचार करता है तब उसे भगवान दिखाई देते हैं जो कई जन्मों से उस परमात्मा के कृपा पात्र जीव है! दिव्य शक्ति बस उन्हीं को मिलते हैं!

अर्जुन को जैसे हुआ था तब उन्हें भगवान दिखाई देते हैं! प्राकृतिक सिस्टम से उन्हें ग्रहण नहीं किया जा सकता! क्योंकि वह मायातीत है!

सर्वम परं परमेश्वर:

सृष्टि रचना, कौन है निराकार ब्रह्म?

लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती कौन है? तीनों मां दुर्गा के अंश हैं ब्रह्मा, विष्णु और शंकर कौन है? तीनों सदाशिव के अंश है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती इन 6 से ऊपर की परम शक्ति है सदाशिव और मां दुर्गा अब देखिए मां दुर्गा कौन है? श्री राधा रानी का अंश,, और सदाशिव कौन है? श्री कृष्ण के अंश,,,, अंत में दो तत्व शेष बचे वही राधा और कृष्ण है सबसे ऊपर की परम शक्ति यही है अंत में दोनों एक बन जाते हैं वही है परम तत्व और वही है निराकार ब्रह्म जो परमात्मा एक है उनकी सृष्टि रचना इसी तरह हुई है!,,, वेद के अनुसार!

परमात्मा कौन है?

जिनके एक रोम कूप में अनंत ब्रह्मांड लटका हुआ है हजार लाख करोड़ ब्रह्मांड नहीं है अनंत ब्रह्मांड है और वह जिनके एक परमाणु मात्र स्थान में अनंत ब्रह्मांड गति कर रहे हैं! जिनके एक इशारे से बृहस्पति शुक्र बुध शनि अपना चाल बदलता है सारे ग्रह तारे जिनके इशारे से चलते हैं और समस्त प्राणियों की बुद्धि जिनके इशारे चलता है! आंख बंद किया तो समस्त ब्रह्मांड का प्रलय महाविनाश हो जाता है! आंख खोला तो फिर से सृष्टि रचना हो जाती है! संसार पृथ्वी तो परमात्मा की शक्ति का एक बूंद मात्र है और दूसरा बूंद ब्रह्मांड है और परमात्मा सागर है! परमात्मा बिंब है तो हम उनका प्रतिबिंब है! जीव ही ब्रह्म का स्वरूप है! ईश्वर अंश जीव अविनाशी!

तीन प्रकार के विष्णु

तीन प्रकार के विष्णु का वर्णन

संसार केवल एक ही भगवान विष्णु के बारे में जानते हैं वास्तविक में तीन प्रकार के भगवान विष्णु है उसे विस्तार से जानेंगे!

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण ने सर्वप्रथम तीन पुरुष अवतार लिए थे!

जिसमें सबसे प्रथम अवतार है

तीन प्रकार के भगवान विष्णु कौन है?

इसमें जानते हैं तीन भगवान विष्णु का अलौकिक रहस्य,, ब्रह्म संहिता,, वेदों के अनुसार!

संसार केवल एक ही भगवान विष्णु को जानते हैं पर वास्तविक में तीन भगवान विष्णु है! जिसका नीचे विस्तृत वर्णन किया गया है! अंत तक इसे पूरा समझिए प्रमाण द्वारा पूरी विस्तार से समझाया गया है! सर्वप्रथम पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जो कि श्री कृष्ण है उन्होंने तीन पुरुष अवतार लिए थे! फिर भी समझ ना आए तो संदेह दूर करने के लिए आप पूछ सकते हैं! जब कुछ नहीं था ब्रह्मांड भी नहीं था ब्रह्मा विष्णु शंकर का अस्तित्व नहीं था मां दुर्गा नहीं थे जब कुछ भी नहीं था उस समय एक पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की ही सत्ता थी!

और वह पूर्ण ब्रह्म परमात्मा है भगवान श्री कृष्ण जिससे समस्त ब्रह्मांड, सारे देवी देवता, त्रिदेव, योग माया, मां दुर्गा सब कुछ उत्पन्न हुआ है उस परम अक्षर ब्रह्म से इस विषय में किसी को अगर कुछ भी संशय हो तो आप समाधान कर सकते हैं यह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है! इसका विस्तार नीचे है! आप वहां से समझ सकते हैं!

कुछ कथानक यह इंगित करते हैं कि श्री कृष्ण महाविष्णु के अवतार हैं, जैसे भगवान श्री कृष्ण के प्रकट होने से पहले जेल में देवकी और वसुदेव के समक्ष महाविष्णु प्रकट हुए थे, बाद में उन्होंने बालक श्रीकृष्ण का रूप धारण कर लिया।

कुछ कथानक यह भी इंगित करते हैं कि श्रीकृष्ण ही परात्पर ब्रह्म हैं अन्य सभी उनके अवतार हैं जैसे ब्रह्म संहिता में लिखा है--:

यस्यैक निःश्वसितकालमथावलम्ब्य,

जीवन्ति लोमविलजाः जगदण्ड नाथा ।

विष्णुर्महान्स इह यस्य कलाविशेषो,

गोविंदमादि पुरुषं तमहं भजामि ॥

ब्रह्म संहिता

"अनंत कोटि ब्रह्माण्डों के संचालक भगवान श्री कृष्ण के ही अंश हैं और उनका अस्तित्व भगवान श्री कृष्ण की एक श्वास से प्रतिपालित है। इससे अधिक और क्या इस तथ्य को पुष्ट किया जा सकता है कि महाविष्णु स्वयं भगवान श्री कृष्ण की एक कला के अवतार हैं ।"

उपर्युक्त कथानक साधकों में यह भ्रम पैदा करता है कि क्या भगवान श्री कृष्ण और महाविष्णु दो प्रथक व्यक्तित्व हैं या एक होते हुए भी विभिन्न अवतार हैं?

उत्तर

आइए इस गुत्थि को सुलझायें ।

श्रीमद्भागवत महापुराण के अनुसार सृष्टि की रचना के समय परब्रह्म ने अपनी एक शक्ति को कार्णार्णवशायी महाविष्णु के रूप में प्रकट किया।

आद्योऽवतारः पुरुषः परस्य कालः स्वभावः सद्-असन्मनश्च ।

द्रव्यं विकारो गुण इन्द्रियाणि विराट् स्वराट् स्थास्नु चरिष्णु भूम्नः ॥

भाग २.६.४२ ॥

"कार्णार्णवशायी विष्णु परब्रह्म के प्रथम अवतार माने जाते हैं। वे शाश्वत काल, पंच महाभूत की माया एवं उसमें व्याप्त अहंकार, परब्रह्म का सर्वव्यापक रूप गर्भोदशायी महाविष्णु तथा संपूर्ण जगत के चराचर जीवात्माओं के स्वामी है" । कार्णार्णवशायी महाविष्णु को परब्रह्म के प्रथम अवतार होने के कारण प्रथम पुरुष भी कहा जाता है ।

गर्भोदशायी महाविष्णु को द्वितीय पुरुष भी कहा जाता है । गर्भोदशायी महाविष्णु ने अनंत ब्रह्माण्डों को प्रकट किया और प्रत्येक ब्रह्माण्ड में एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शंकर को प्रकट किया । प्रत्येक ब्रह्माण्ड के विष्णु को क्षीरोदशायी महाविष्णु या तृतीय पुरुष कहते हैं। इनको परमात्मा भी कहते हैं जो अनंत कोटि ब्रह्माण्डों के सभी जीवों के हृदय में बैठकर उनके प्रत्येक क्षण के प्रत्येक कर्मों का साक्षी बन तत्पश्चात उसका फल प्रदान करते हैं ।

अतः यह स्पष्ट है कि भगवान श्री कृष्ण की शक्ति (कार्णार्णवशायी विष्णु) की शक्ति (गर्भोदशायी महाविष्णु) की शक्ति का प्राकट्य क्षीरोदशायी महाविष्णु हैं । इसीलिए कहा गया है -

विष्णुर्महान्स इह यस्य कलाविशेषो ॥

ब्रह्म संहिता

एक बार सृष्टि रचयिता ब्रह्मा जी भगवान श्री कृष्ण से मिलने द्वारिका गए। ब्रह्मा जी ने द्वारपाल से अहंकार पूर्वक कहा कि,"भगवान श्री कृष्ण को सूचना दे दो कि ब्रह्मा उनसे मिलने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं"। जब द्वारपाल ने ब्रह्मा का संदेश सुनाया तो श्रीकृष्ण ने पूछा कि, "कौन ब्रह्मा?"। यह सुनकर ब्रह्मा जी स्तब्ध रह गये, फिर ब्रह्मा जी

ने उत्तर दिया,"मैं सृष्टि रचयिता तथा चार कुमार परमहंसों का पिता"। द्वारपाल ने ब्रह्मा जी को भगवान श्री कृष्ण से मिलने दिया। तब ब्रह्मा जी ने भगवान श्रीकृष्ण से नम्रता पूर्वक उनके द्वारा पूछे गए प्रश्न का कारण पूछा ।

भगवान के ब्रह्मा जी को अपने विराट रूप का दर्शन कराया जिसमें अनंत ब्रह्मा, विष्णु, शंकर इत्यादि समाये हुये थे । दर्शन मात्रा से ब्रह्मा जी का मिथ्या अहंकार नष्ट हो गया। तब ब्रह्मा जी को ज्ञात हुआ कि भगवान श्री कृष्ण समस्त ब्रह्माण्डों के पालक हैं और ब्रह्मा तो उनमें से सबसे छोटे ब्रह्माण्ड के रचयिता है।

ब्रह्मा जी ने भगवान श्री कृष्ण के चरणकमलों में गिरकर क्षमा याचना की तथा उनकी स्तुति की -

ब्रह्मा श्री कृष्ण की स्तुति की करते हुये

ब्रह्मा जी ने भगवान श्री कृष्ण के चरणकमलों में गिरकर क्षमा याचना की तथा उनकी स्तुति की

क्वाहं त्मोमहदहं खचराग्निवार्भू संवेष्टितांडघटसप्तवितस्तिकायः ।

क्वेदृग्विधाऽविगणिताण्डपराणुचर्या वाताध्वरोम विवरस्य च ते महित्वम्।

भा १०.१४.११

"जिस प्रकार एक छोटे से छिद्र से आती हुई सूर्य की किरणों में अनंत धूल के कण दृष्टिगोचर होते हैं, उसी प्रकार आपके शरीर के रोम-रोम में अनंत ब्रह्मा, विष्णु शंकर और उनके ब्रह्मांड समाए हुए हैं। आप की महिमा अवर्णनीय है"।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि भगवान श्रीकृष्ण के दो प्रकार के अवतार होते हैं । एक युगावतार श्री कृष्ण और एक स्वयं श्री कृष्ण।

युगावतार श्रीकृष्ण प्रत्येक द्वापर में अवतारित होते हैं जबकी स्वयं श्री कृष्ण एक कल्प में केवल एक बार आते हैं ।

युगावतार तथा महाविष्णु दोनों अवतार हैं । जबकि स्वयं श्री कृष्ण अन्य सभी अवतारों के स्रोत हैं। यद्यपि अवतारी और सभी अवतारों में अनंत दिव्यानंद है तथा श्री कृष्ण के समकक्ष शक्तियां होती हैं परन्तु अवतार उन परम शक्तियों के अध्यक्ष नहीं होते । स्वयं श्री कृष्ण ही समस्त दिव्य शक्तियों के स्वामी और नियंत्रण कर्ता हैं ।

आपके शरीर के रोम-रोम में अनंत ब्रह्मा, विष्णु शंकर और उनके ब्रह्मांड समाए हुए हैं

आपके शरीर के रोम-रोम में अनंत ब्रह्मा, विष्णु शंकर और उनके ब्रह्मांड समाए हुए हैं

दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि भगवान श्री कृष्ण ही अपनी शक्तियाँ अपने सभी अवतारों को देते हैं और श्री कृष्ण अपनी शक्ति निस्पंद भी कर सकते हैं क्योंकि वे स्वयं ही समस्त शक्तियों के नियन्त्रक हैं ।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं।--

हरहिं हरिता विधिहिं विधिता, शिवहिं शिवता जो दई ।

"वे ही हैं जो विष्णु को पालन की शक्ति देते हैं, ब्रह्मा को रचना करने की शक्ति देते हैं, शिव को संहार करने की शक्ति देते हैं"।

नाहं न यूयं यदृतां गतिं विदु- र्न वामदेव: किमुतापरे सुरा: ।

तन्माययामोहितबुद्धयस्त्विदं विनिर्मितं चात्मसमं विचक्ष्महे ॥ भा २.६.३७ ॥

"न ही भगवान शंकर, न ही तुम और न ही मैं दिव्यानंद की सीमाओं का अंत पा सकते हैं तो देवी देवता की क्या बिसात? और हम सभी लोग भगवान की माया से मोहित हैं अतः व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार ही हम लोग ब्रह्माण्डों को देख सकते हैं।

यह सभी प्रमाण सिद्ध करते हैं कि एक ही परमेश्वर परमब्रह्म है और सभी अवतार उसी की शक्तियों से या उसकी शक्ति की शक्ति से शक्ति प्राप्त करते हैं।

स्वयं श्रीकृष्ण एक कल्प में एक बार अवतरित होते हैं । आज से 5000 वर्ष पूर्व नंद और यशोदा के दुलारे पुत्र के रूप में जो श्रीकृष्ण अवतरित हुए थे वे स्वयं श्री कृष्ण थे। वे केवल अधिकारी जीवात्माओं को दिव्यानंद प्रदान करने हेतु अवतरित होते हैं। उस अवतारकाल में प्रेम दान के अतिरिक्त सभी कर्म - जैसे राक्षसों का वध, महाभारत में सहयोग आदि - स्वयं श्रीकृष्ण के माध्यम से युगावतार श्रीकृष्ण करते हैं।

प्रश्न -

यदि 5000 वर्ष पहले श्री कृष्ण ने अवतार लिया था, वे विष्णु नहीं थे तो वे देवकी के सामने विष्णु के रूप में क्यों प्रकट हुए?

श्री कृष्ण ही सर्वशक्तिमान परब्रह्म है। वे किसी भी समय किसी भी रूप में प्रकट हो सकते हैं। पूर्व जन्म में देवकी वासुदेव ने भगवान के माता-पिता होने का वरदान माँगा था । उस वरदान की याद दिलाने के लिये भगवान प्रथम परमात्मा महाविष्णु के रूप में प्रकट हुये । तत्पश्चात, उनको पृथ्वी पर अवतरित होने के बाद भगवत स्वरूप को छुपाकर देवकी और यशोदा की अर्चना के अनुरूप, बालक रूप में समस्त बाल लीलायें सम्पादित करनी थीं । इसके अनंतर उन्हें प्राणीमात्र के लिए कुछ महत्वपूर्ण लोकादर्शों को भी स्थापित करना था।

होत विभोर सुनत ब्रजनारिन, वाक्यन चोरी जारी के ।

भाव न मो कहँ चरण समर्चन, पद्मा सी घरवारी के ।

(प्रेम रस मदिरा सिद्धान्त माधुरी पद १३२)

श्री कृष्ण गोपियों की प्रेम भरी "चोर" और "जार" गालियाँ खाकर विभोर हो जाते हैं । किंतु अपनी अर्धांगिनी महालक्ष्मी की आदर युक्त चरण सेवा नहीं भाती है ।

- जगद्गुरूत्तम श्री कृपालु जी महाराज

भगवान श्री कृष्ण कौन है?

संसार के 90% जीव को नहीं मालूम श्री कृष्ण कौन है? पूरा जगत यही समझ बैठे हैं कि भगवान विष्णु ने श्री कृष्ण अवतार लिया है जैसे भगवान राम ने लिया है! वास्तविक सत्य क्या है?

यह नहीं मालूम! श्री कृष्ण को बड़े-बड़े मुनि ब्रह्मा, विष्णु, शिव नहीं जान सके छोटी सी जीव कहां से जान पाएगी! ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और मां दुर्गा, अनंत ब्रह्मांड के सारे देवी देवता,, कारण महाविष्णु यह जितने भी सत्ता है सब एक अवधि में है अनलिमिटेड कोई नहीं है सबकी एक लंबी आयु है! महाप्रलय में यह सभी उसी में वापस मिल जाते हैं जिससे उत्पन्न हुए हैं! कहां जाकर मिलते हैं परम अक्षर ब्रह्म, पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जो अविनाशी है!

शाश्वत है! वही है भगवान श्री कृष्ण उनको जानने के लिए ब्रह्म संहिता और श्रीमद् भागवत गीता को अच्छे से समझनी होगी! विराट सृष्टि रचना कैसे हुई है? जब श्री कृष्ण की कृपा होती है जिस जीव पर बस वही उन्हें जान पाता है!

ओम का क्या अर्थ है?

ओम का संकेत ब्रह्म को दर्शाता है ओम ही ब्रह्म है ब्रह्म ही ओम है क्योंकि उस निराकार ब्रह्म में तीन शक्ति समाहित है ब्रह्म, विष्णु और शिव! तीनों शक्ति मिलकर परब्रह्म बनते हैं वही ओम है! इसमें तीन भाग होते हैं सबसे ऊपर जो लाइन गई है वह है ब्रह्मलोक बीच में आई है वह मृत्यु लोक अर्थात पृथ्वी और जो सबसे नीचे है वह है पाताल लोक और बीच में चंद्र है जो पृथ्वी लोक के स्वामी महादेव उसको धारण किए हुए हैं! ओम इसमें ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों के निज धाम अनंत ब्रह्मांड त्रिलोक इसमें समाया हुआ है! सभी मंत्र ओम से शुरू होते हैं क्योंकि ओम ही ब्रह्म का प्रतीक है!

क्या हम खुद से कर रहे हैं?

इसे ध्यान पूर्वक समझिएगा!

कौन है वह?

संसार के अधिकांश जीवो को लग रहा है कि हम खुद से खा रहे हैं खुद से पी रहे हैं! खाना पानी हम खुद से कर रहे हैं! खुद के पीछे कोई खुदा छिपा है इसका उन्हें पता नहीं जो उन्हें सब कुछ करा रहा है कर्तापन जीव को मार डाली है 24 घंटे मैं कर रहा यह बुरी तरह भ्रम बैठा है!

अब बताओ कौन कर रहा? मिथ्या शरीर को मैं माना हुआ है! शरीर तुम्हारे सामने पड़ा है मैं निकल कर चला गया! अब उसे कोई पानी पिला रहा गंगाजल पिला रहा मुख से बाहर आ जा रहा क्यों नहीं जा रहा अंदर?

कोई था जो वही ले जा रहा था अब वह इस शरीर में नहीं! कोई ऐसा तरकीब लगाओ की मुर्दा को किसी भी तरह जल का एक बूंद उनके पेट में ले जाकर देखो,,, है अगर किसी की शक्ति बड़े-बड़े वैज्ञानिक हार गए इस खेल को ना समझ पाए!

मैं शरीर सामने है अब मैं क्यों नहीं कर रहा? गले के नीचे एक बूंद को नहीं ले जा पा रहा! जब जीवित था इतना अहंकार था मैं खा रहा मैं पी रहा अब मैं को क्या हो गया कैसे सुस्त पड़ गया! जिसको मैं माना था वह तो सामने है!

गंभीर से जब सोचेंगे तब मालूम चलेगा की कोई है जो अन्न, पानी को अंदर ले जाता है! हर शरीर में ब्रह्म का वास है जब तक है वह इस देह में उसे तब तक वह चलाता है! जब तक ब्रह्म शरीर में रहेगा तब तक जीवित रहोगे जब वे शरीर छोड़ कर चले जाएंगे वही मृत्यु है जो कुछ नहीं कर सकती इसलिए शरीर में प्राण के रहते पहचान लो कि मुझे जो कुछ भी मैं कर रहा उसे मुझे कौन करवा रहा नहीं समझे तो प्राण निकलने के बाद केवल पछताना पड़ेगा! उसने छोटी सी एक तुम्हें अवसर दिया है अपने आप को पहचानने का अगर नहीं पहचाना तो सिर्फ आगे पछताना ही पड़ेगा! और पूजा पाठ भजन भक्ति से अलग होकर थोड़ा तत्व चिंतन करें जानना यह है कि कौन मुझे मेरे भोजन पानी को अंदर ले जाता है कौन पानी को निगलता है!

अंत समय तो मैं नहीं ले जा पाऊंगा पूरा जीवन जिसका इतना अहंकार किया यहां तक कि उस शरीर को जलाने के लिए दूसरे लोग उठा कर ले जाएंगे हम कुछ नहीं कर सकते इसीलिए तो ले जाने के लिए उन्हें यह शरीर उठाना पड़ा!

अभी क्यों नहीं ले जा रहा? क्योंकि अभी इस शरीर में कोई शक्ति विद्यमान है जिसके कारण तुम जीवित हो! जो मृत्यु के बाद इस शरीर में नहीं रहेगा जो अभी है उसे शीघ्र ही पहचान ले वह कौन है?

उठना बैठना चलना फिरना सोना सब उन्हीं की शक्ति से होता है जिसको नहीं जान पाया! अज्ञान वश समझ लिया कि मैं कर रहा!

श्री कृष्ण की दिव्य कृपा

प्रभु श्री कृष्ण को जानने के लिए श्री कृष्ण की कृपा चाहिए ऐसे भी कोई उनको नहीं जान सकता! उसने साफ-साफ कहा है जब मैं कृपा करता हूं जीव पर तब वह मुझको जान सकने में सामर्थ होता है!

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया |मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते || 14||

(उनकी माया अत्यंत प्रचंड है कोई उन्हें नहीं जान सकता अपनी शक्ति के बल पर भक्ति के बल पर ज्ञान के बल पर चाहे कितने भी ज्ञान अर्जित हम कर ले वह परब्रह्म श्री कृष्ण ज्ञान की सीमा से परे है)

भगवान श्री कृष्ण को कभी जाना नहीं जा सकता! वह त्रिगुणात्मक आवरण प्रकृति के आवरण से परे है जिनके मन में श्री कृष्ण के लिए तनिक भी संदेह है वह उनको कभी नहीं जान सकता! श्री कृष्ण को जानने के लिए केवल उनकी दिव्य कृपा चाहिए! जिसने उस पर कृपा कर दी बस वही उनको जान सकता है! एक भी धर्म ग्रंथ छूटनी नहीं चाहिए जब सारे ग्रंथो का समन्वय हो जाएगा! 18 पुराण ही नहीं इसके अलावा और भी बड़े-बड़े रहस्यमई ग्रंथ है किसी के

शब्द द्वारा बता कर श्री कृष्ण को नहीं समझाया जा सकता जब तक स्वयं श्री कृष्ण उस पर कृपा ना करें! वह इंद्रियां, मन, बुद्धि से परे है! जब ब्रह्मा जी को संदेह हो गया था जब गायों को छिपा दिया गया था श्री कृष्ण के प्रत्येक लीला मे रहस्य छिपा है तो जब बड़े-बड़े भ्रम में पड़ गए उनकी जब पूरी कृपा होगी! तब तनिक भी संदेह नहीं रहेगा!

उन्हें जानने के लिए केवल उनकी कृपा चाहिए केवल उस ब्रह्म की कृपा! सारे धर्म ग्रंथो का अध्ययन करनी होगी! कुछ ग्रंथो को पढ़ने से उन्हें नहीं जान सकते!

चार वेद,, 108 उपनिषद,, गीता,, 18 महापुराण, 6 शास्त्र,, अक्षर ब्रह्म का रहस्य श्रीमद् भागवत गीता में बताई गई है गीता जैसा कोई ग्रंथ नहीं!,,, पूरी गहराई से त्रिगुणात्मक अक्षर ब्रह्म योग सबको समझनी होगी!

जब तक गीता को समझेंगे नहीं तब तक श्री कृष्ण को कभी नहीं जान सकते क्योंकि मन में अनंत संदेह भरा हुआ है उनके लिए उनसे प्रेम करो! तर्क वितर्क से वह कभी नहीं मिलेंगे! श्री कृष्ण तक पहुंचने के लिए केवल निष्काम प्रेम चाहिए और उस पर पूर्ण विश्वास!

एक-एक तथ्य को समझनी होगी कृष्ण संदेह का विषय नहीं पूर्ण विश्वास का विषय है! उस पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण को ब्रह्मा, विष्णु, शिव नहीं जान सके! श्री कृष्ण उनकी बुद्धि से भी बाहर है वह परम सर्वशक्तिमान है सब उनसे ही उत्पन्न हुए हैं बड़े-बड़े देवाधिदेव ब्रह्मांड के सारे देवी देवता कोई नहीं जान सके तो जीव क्या जान पाएगी? जीव उस ब्रह्म की तटस्थ शक्ति है! एक छोटा सा अंश है उस विराट को नहीं जान सकती उनकी कृपा चाहिए! क्योंकि उनकी माया प्रचंड है! इंद्रिय, मन बुद्धि को पूरी तरह से ढक दिया है!

भगवान श्री कृष्ण परम अक्षर ब्रह्म है! प्रत्येक जीव पर उन्होंने माया का ऐसा आवरण डाला है कोई उन्हें जान ना पाए! जिस जीव पर श्री कृष्ण ने कृपा कर दी उसके अंदर किंतु परंतु ऐसा वैसा संदेह कुछ नहीं रहता! और उनको जान जाता है! श्री कृष्ण को जानने के लिए चैतन्य महाप्रभु और जगतगुरु कृपालु जी महाराज को पहले जानना होगा वह दोनों कौन है?

हमारे परम गुरु जगद्गुरु कृपालु जी महाराज के सानिध्य में जो रहेंगे बस वही श्री कृष्ण को जान पाए हैं!

क्यों लगता है? भगवान नहीं है!

लोग कहते हैं भगवान नहीं है पहले तो यह विचार करो कि समस्त प्राणियों को जो भगवान नहीं है यह लगता है क्यों लगता है? पहले तो इसे समझो! चलो मान लिया भगवान नहीं है लेकिन भगवान नहीं है यह फीलिंग भी हमें दिया किसने है अब विचार करो,,, भगवान तो नहीं है लेकिन भगवान नहीं है यह फीलिंग हमें दिया किसने है? इसका मतलब कोई तो है जिसने हमें अपने आप को महसूस होने की शक्ति नहीं दी है! जब यह तथ्य मालूम चल जाएंगे तब समझ आएगा कोई है जो यह फीलिंग हमें दिया है वही भगवान है!

जो प्रत्येक जीव को लगता है कि भगवान नहीं है वह उसी भगवान की ही माया है! जो किसी को भी स्वयं का पता चलने नहीं देती! वह खुद को छिपा कर रखा है! जो उनकी तलाश करेगा वही उन्हें पाएगा!

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण का शाश्वत अवतार

श्री कृष्ण का रहस्य

आज का सबसे महत्वपूर्ण विषय

श्री कृष्ण का रहस्य

जानिए श्री कृष्ण का अद्भुत गहरा रहस्य इसे अंत तक अवश्य पढ़िए यदि श्री कृष्ण पूर्ण ब्रह्म को जानना है अंत तक इसे पढ़ने पर श्री कृष्ण का जो संदेह है वह मिट जाएगा अब जानते हैं इस भयावह रहस्य को जो स्वयं चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी को बताया है और चैतन्य महाप्रभु स्वयं श्री कृष्ण ही है जो श्री राधा रानी के प्रेम को उनके कर्ज को चुकाने के लिए कलयुग में पांच सौ वर्ष पूर्व अवतरित हुए थे! उन्होंने अपने परम भक्त सनातन गोस्वामी को क्या बताया है? पूरी विस्तार से जानेंगे कि श्री कृष्ण कौन है?

श्री कृष्ण अवतार लेकर बाद में नहीं आए थे वह बहुत पहले से थे उनका ना प्रारंभ है ना अंत है श्री कृष्ण के अलावा जो भी हैं सब एक अवधि में है सब की लिमिट है ब्रह्मा की भी लिमिट है विष्णु की भी और शिव की भी जब इनकी अवधि पूरी हो जाती है तो वह अपने ऊपर सदाशिव में विलीन हो जाती है और सदाशिव की अवधि पूरी होने पर वह अपने ऊपर की शक्ति में विलीन हो जाती है जो जिस जहां-जहां से उत्पन्न हुए हैं वह उसमें विलीन हो जाते हैं अंत में सब जाकर श्री कृष्ण में मिल जाते हैं!

अब जानेंगे भगवान श्री कृष्ण,,, विष्णु के अवतार नहीं बल्कि ब्रह्मा, विष्णु और शंकर यह तीनों उस विराट परमेश्वर श्री कृष्ण का त्रिगुणात्मक अवतार है! त्रिगुणात्मक प्रकृति ब्रह्मा, विष्णु और शिव के नहीं है यह भगवान श्री कृष्ण का है जिसको व्यवस्थित रूप से ऑपरेट करने के लिए उन्होंने तीन प्रकार का अवतार लिया है सृष्टि को प्रारंभ करने के लिए ब्रह्मा और सृष्टि को चलाने के लिए विष्णु और सृष्टि का अंत करने के लिए महादेव श्री कृष्ण स्वयं बना हैं!

सबसे पहले जब कुछ नहीं था तब की बात है श्री कृष्ण ने तीन पुरुष अवतार लिया था जो तीन प्रकार के विष्णु है यह श्री कृष्ण का पहला अवतार है फिर वही श्री कृष्ण ने दूसरा अवतार लिया है अपनी प्रकृति को चलाने के लिए श्री कृष्ण ने तीन अवतार ब्रह्मा, विष्णु, शिव का उन्हीं ने लिया है! जैसे किसी दुकान को वहां का मालिक चलाने के लिए कोई वर्कर रखते हैं उसी प्रकार श्री कृष्ण अपनी त्रिगुणात्मक प्रकृति,, जीव जगत को चलाने के लिए तीन लोगों को तीन प्रकार का काम उन्होंने सौंप दिया है! और श्री कृष्ण स्वयं छिप गया है! इसलिए उन्हें कोई नहीं जान सकते!

अब चलते हैं अपने विषय की ओर इसके लिए सबसे पहले तो यह जानना आवश्यक है अवतार किसी भगवान ने नहीं लिया है केवल श्री कृष्ण ने लिया है जितने भी ईश्वर भगवान हम जानते हैं या देखते हैं सब श्री कृष्ण का ही अवतार है हनुमान, गणेश, विष्णु, ब्रह्मा, शिव वह सब श्री कृष्ण का ही रूप है भगवान श्री कृष्ण विष्णु के बाद अवतरित होकर आए थे! इसलिए संसार को भ्रम में उसने स्वयं डाल दिया है जबकि वह श्री कृष्ण पहले से थे! श्री कृष्ण,,, ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों के बाद नहीं आए हैं वह तो बहुत पहले से थे अविनाशी है शाश्वत है निर्गुण है निराकार है सब उन्हीं से उत्पन्न होता है और अंत में उसी में विलीन हो जाता है अंत में श्री कृष्ण ही शेष बचते हैं!

हम समझ बैठे कि वह भगवान विष्णु ने 24 अवतार लिया है यह तो हम सबको और सारे जगत को मालूम है पर यह नहीं मालूम कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव यह तीनों श्री कृष्ण का त्रिगुण अवतार है! भगवान श्री कृष्ण ने सबसे पहले अपने प्रकृति को व्यवस्थित रूप से चलने के लिए सतोगुण रजोगुण और तमोगुण इन तीन प्रकार को नियंत्रित करने के लिए ब्रह्मा विष्णु और शिव का रूप धारण किया है फिर भगवान विष्णु ने 24 अवतार लिया है जिसमें एक श्री कृष्णा शामिल हो गए इस कारण लोग नहीं समझ पाए श्री कृष्ण ने सब की बुद्धि को चकित कर दिया! उनकी माया इतनी बलशाली है अपने को स्वयं छुपा कर रखा है और ब्रह्मा विष्णु और शिव इन तीनों को सबसे बड़े कर्ताधर्ता इन्हीं तीनों को बनाया है इसलिए संसार इन तीनों को ही जानता है श्री कृष्ण को नहीं जान पाते! सामने वाला बता दे की श्री कृष्ण ही ब्रह्म है और वह मान जाए यह संभव नहीं!

श्री कृष्ण को उनकी बुद्धि तभी मानने को तैयार हो सकता है कि वह पूर्ण ब्रह्म है जब वह श्री कृष्ण स्वयं उस पर कृपा करते हैं! क्योंकि श्री कृष्ण के विषय को लेकर प्राणी की बुद्धि में कई प्रकार के संदेह भरा हुआ है इसलिए कभी नहीं मान सकता क्योंकि उनकी बुद्धि उस परब्रह्म श्री कृष्ण को जान ही नहीं सकती! ब्रह्मा, विष्णु, और शंकर इन तीनों से पहले से ही भगवान श्री कृष्ण की सत्ता थी! श्री कृष्ण पहले से थे ब्रह्मा, विष्णु और शिव बाद में आए हैं और यह तीनों इस पूर्ण का ही अवतार है भगवान श्री कृष्ण पूर्ण अवतार हैं! जब कुछ नहीं था ना ब्रह्मा ना विष्णु और ना ही महादेव,, ना मां दुर्गा,, ना अनंत ब्रह्मांड,, ना पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि, अहंकार कुछ भी नहीं थे तब सिर्फ पूर्ण ब्रह्म परमात्मा वही पहले से थे और वही भगवान श्री कृष्ण है!

बाकी अस्तित्व में जितने भी आए हैं सब बाद में आए हैं इसीलिए श्रीमद् भागवत महापुराण में और गीता में श्री कृष्ण ने स्पष्ट किया है जब कुछ नहीं था तब सिर्फ मैं था और जो कुछ भी दिख रहा है वह भी मैं ही हूं और जब सब नष्ट हो जाएगा कुछ भी नहीं रहेगा तब भी केवल मैं ही शेष रहूंगा! फिर भी लोग नहीं समझ पाए!

माता यशोदा को अनंत ब्रह्मांड का दर्शन भी भगवान ने कराया! अर्जुन को विराट रूप दिखाया फिर भी लोग श्री कृष्ण को नहीं जान पाए! अर्जुन को गीता में ऐसे ऐसे रहस्य बताया है अक्षर ब्रह्म योग का जब वर्णन किया था तब उन्होंने बताया है कि मैं ही शाश्वत पूर्ण ब्रह्म हूं मुझसे ही सब उत्पन्न हुआ है मैं पहले से था बाकी सभी मेरे बाद में आए हैं फिर भी लोग नहीं समझ पाए!

इस बात का जवाब भी भगवान श्री कृष्ण ने गीता में दिया है जिस पर मैं कृपा करता हूं बस वही मुझको जान पाता है! मेरी कृपा के बगैर मुझको कोई नहीं जान सकते! जिस जिस पर मैंने दिव्य कृपा की है उनकी बुद्धि पर तब वह मुझको जान पाए हैं कि मैं ही शाश्वत निराकार ब्रह्म हूं!

जब तक मेरी कृपा नहीं होती तब तक उनकी बुद्धि मुझको ना जानकर मुझे छोड़कर इधर-उधर की बातों में तर्क वितर्क ऐसा वैसा किंतु परंतु इसमें उसका चंचल मन भटकती रहती है!

जब मैं उसे पर स्वयं कृपा करता हूं तो मैं अपना दिव्य ज्ञान उसे प्रदान करता हूं और सीधे मैं उन्हें अपने मार्ग पर लाकर खड़ा कर देता हूं और अपना ज्ञान के साथ-साथ प्रेमी और मैं उन्हें अपने निज धाम का अनन्य भक्त बना लेता हूं!

अब जानते हैं उस पूर्ण ब्रह्म परमात्मा ने अब तक कितने अवतार ले चुके हैं उसकी श्रेणी जो चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी को बताया था!

कृष्ण के अवतारों का वर्णन चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी को शिक्षा देते समय किया है।[1] भगवान का वह रूप, जो सृष्टि करने के हेतु भौतिक जगत् में अवतरित होता है, अवतार कहलाता है।[2] कृष्ण के अवतार असंख्य हैं और उनकी गणना कर पाना संभव नहीं है। जिस प्रकार विशाल जलाशयों से लाखों छोटे झरने निकलते हैं, उसी तरह से समस्त शक्तियों के आगार पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री हरि से असंख्य अवतार प्रकट होते हैं।[3]भगवान कृष्ण के 6 तरह के अवतार होते हैं:-

भगवान कृष्ण के 6 तरह के अवतार

1. पुरुषावतार (3)

कारणाब्धिशायी विष्णु (महा विष्णु)

गर्भोदकशायी विष्णु

क्षीरोदकशायी विष्णु।

2. लीला अवतार (25) चतु:सन (सनक, सनातन, सनत कुमार व सनन्दन), नारद, वराह, मत्स्य, यज्ञ, नर-नारायण, कपिल, दत्तात्रेय, हयग्रीव, हँस, प्रश्निगर्भ, ऋषभ, प्रथू, नृसिंह, कूर्म, धन्वन्तरि, मोहिनी, वामन, परशुराम, राम, व्यास, बलराम, कृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि।

3. गुण-अवतार (3) जो भौतिक गुणों का नियन्त्रण करते हैं-

ब्रह्मा (रजोगुण)

शिव (तमोगुण)

विष्णु (सतोगुण)

4. मन्वन्तर-अवतार (14) जो प्रत्येक मनु के शासन में प्रकट होते हैं। ब्रह्मा के एक दिन में 14 मनु बदलते हैं। श्रीमद्भागवत[5] में मन्वन्तर-अवतारों की सूचि दी गई है- यज्ञ, विभु, सत्यसेन, हरि, वैकुण्ठ, अजित, वामन, सार्वभौम, ऋषभ, विष्वक्सेन, धर्मसेतु, सुधामा, योगेश्वर तथा ब्रह्द् भानु। इसमें से यज्ञ तथा वामन की गणना लीलावतारों में भी की जाती है।

5. युग-अवतार (4)

सतयुग में शुक्ल (श्वेत)

त्रेतायुग में रक्त

द्वापर युग में श्याम

कलियुग में सामान्यता कृष्ण (काला), किन्तु विशेष दशाओं में पीतवर्ण।

6. शक्त्यावेश अवतार जब-जब भगवान अपनी विविध शक्तियों के अंश रूप में किसी में विधमान रहते हैं, तब वह जीव शक्त्यावेश अवतार कहलाता है।[6]

वैकुण्ठ में शेषनाग (भगवान की निजी सेवा)

अनन्तदेव (ब्रह्मांड के समस्त लोकों को धारण करने की शक्ति)

ब्रह्मा (सृष्टि-शक्ति)

चतु:सन या चारों कुमार (ज्ञान-शक्ति)

नारद मुनि (भक्ति-शक्ति)

महाराज प्रथू (पालन-शक्ति)

परशुराम (दुष्टदमन-शक्ति)

खुदा कौन है?

® क्या हम कार्य खुद से करते हैं?,,, नहीं!

जो प्रत्येक जीव के अंदर खुद से कार्य करने की शक्ति है जैसे पक्षियों को क्या कोई खाना पकड़ कर खिलाता है नहीं! खुद से खा लेती है और खुद का अर्थ है स्वयं! और "स्वयं" ही परमात्मा है ब्रह्म, बिना स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं क्योंकि स्वयं ही ब्रह्म है और ब्रह्म ही स्वयं है! क्या हमें कोई खाना खिलाता है नहीं! खुद से खाते हैं क्या हमें कोई नहलाता है नहीं! खुद से नहाते हैं क्या हमें कोई बोलवाता है नहीं! खुद से बोलते हैं! क्या देखना है क्या नहीं! क्या हमें कोई प्रेरित करता है नहीं! हम खुद से देखते हैं! क्या सुनना है क्या नहीं! क्या कोई प्रेरित करता है! हम खुद से सुनते हैं जहां-जहां पर खुद है वहां वहां पर खुदा है! खुदा, बिना खुद कार्य नहीं करते! जैसे पेट्रोल बिना गाड़ी नहीं चल सकते! गाड़ी है पेट्रोल नहीं तो वह गाड़ी कोई काम का नहीं! हमें लगता यह है कि खुद से कर रहे पर वास्तव में खुद से नहीं खुदा करता है! जितने कार्य हम खुद से कर रहे हैं! खुद का कोई अस्तित्व नहीं! क्योंकि खुद के पीछे खुदा छिपा है!

कौन किससे ऊपर है उनका क्रम

कौन किससे ऊपर है? जिनकी शक्ति उससे अधिक है उनका क्रम इस प्रकार है- इसकी श्रेणी!

वृक्ष योनि< कीट योनि< जलचर< पक्षी योनि< पशु योनि< मनुष्य योनि< देवता< राजा इंद्र< ब्रह्मा जी< भगवान विष्णु< महेश्वर< सदाशिव (काल ब्रह्म), < प्रकृति योग माया मां दुर्गा< कारण महा विष्णु< मोहसागर ज्योति स्वरूप< अव्याकृत ब्रह्म< अक्षर ब्रह्म<

परम अक्षर ब्रह्म (पूर्ण ब्रह्म परमात्मा सच्चिदानंद श्री कृष्ण)

इससे जितने भी नीचे हैं सब की एक अवधि है लिमिट है अविनाशी कोई नहीं! कल्प महाप्रलय में समस्त सृष्टि अंत में सब यहां आकर विलीन होते हैं! परम अक्षर ब्रह्म ही शाश्वत है अजन्मा है नित्य है इनका ना प्रारंभ है ना इनका अंत है! सबका यही लय होता है!

द्वैत और अद्वैत का रहस्य

जिसने इस रहस्य को जान लिया उसने सब कुछ जान लिया क्योंकि रहस्य का यही सबसे अंतिम शिखर है इसके बाद और कुछ जानने का बाकी नहीं रहता!

सबसे घनघोर रहस्य है! बुद्धि जिसे नहीं जान सकती! इस भेद को उस रचनाकार ने छुपा कर रखा है! संसार में जो कुछ भी अलग-अलग चीजे हम देख रहे हैं! प्राणी की चेहरा, आवाज, आदत, पौधे के पत्ते जो कुछ भी हो वह सब एक परमात्मा की ही लीला है!

वेद कहते हैं वही एक परमात्मा अलग-अलग रूपों में संसार में वह खुद स्वयं लीला कर रहा है उनके अलावा और कोई है नहीं दूसरा जो संसार में है सिर्फ वही एक है! वही द्वैत है और वही अद्वैत है! सृष्टि में जो कुछ भी एक समान है जैसे आनंद की चाह और आत्मा वही है और अलग-अलग है अर्थात जीव का संस्कार! यह भी वही!

प्रत्येक जीव, भगवान के हिसाब में है!

जैसे स्कूल के प्रिंसिपल के पास स्कूल के एक-एक बच्चों का रिकॉर्ड रहता है प्रत्येक छात्र-छात्राओं का उनके पास हिसाब रहता है! बस ऐसे ही ब्रह्म श्री कृष्ण के पास अनंत ब्रह्मांड के प्रत्येक जीव का उनके पास हिसाब रहता है! संसार के प्रत्येक जीव पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण के हिसाब में है! एक कोने में चल रही चींटी जिसे कोई देखता भी नहीं वह भी उनके हिसाब में है!

लोग भगवान को क्यों नहीं मानते?

कुछ लोग हैं जो भगवान को नहीं मानते और इसका कारण यह है कि भगवान दिखते नहीं इसलिए मानते नहीं उसने तो अपने धड़कन को धड़कते भी नहीं देखा है फिर इसे क्यों मानता है? क्योंकि डॉक्टर ने बताया है हमारे शरीर में धड़कन है! लिवर है किडनी है सब रिसर्च हुआ है इसलिए इन सबको ना देखने पर भी लोग मानते हैं साइंस पर इतना विश्वास और जो हमारे ऋषि मुनि शास्त्र ग्रंथ गीता श्रीमद् भागवत महापुराण चार वेद जो हमको बताए हैं कि भगवान हमारे हृदय में हर समय वही धड़कन बनकर धड़क रहा है!

हमारे हृदय में उनका वास है! हमारे अंदर वे विद्यमान है! तो इस पर विश्वास नहीं! कभी मंगल ग्रह को देखा नहीं है फिर भी विश्वास की मंगल ग्रह है अपने किडनी को कभी देखा नहीं फिर भी विश्वास है इस शरीर में किडनी है! वेद और गीता ने बताया हमारे अंदर परमात्मा है! पर इस पर विश्वास क्यों नहीं?

भगवान कहां है? यजुर्वेद

ईशा वास्यम् इदं सर्वम् यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम् ।।१।।,,,

यजुर्वेद कहते हैं!

भगवान कहीं बाहर नहीं और ना ही भगवान कोई वस्तु है जो दिख जाए भगवान ना कोई सिनेमा है जिसे दिखाया जाए! प्रत्येक जीव के कर्मों में छिपा हुआ परमात्मा उस कर्म का साक्षी है! अपनी आंखों से कौन सा दृश्य देखा? कब देखा? किस भाव से देखा? बुरी भाव या अच्छी भाव! और संसार के किस जीव ने देखा,, क्या सुना? वाणी से क्या-क्या शब्द बोला? क्या सोचा और क्या किया? जिसके पास इन सब का हिसाब होता है वह परमात्मा है! मन का एक भी विचार एक भी भाव उनसे छिपा नहीं है! वह अंतर्यामी है अंतर घट की एक-एक रहस्य को जानते हैं! अंदर में कितने भी गहरे हमारा विचार हो! चित् की गहराई में उनका वास है!,, घट घट की जानने वाला है!

कौन है भगवान?

कितने भी कष्ट जीवन में क्यों ना हो चाहे कितने भी बड़े भक्त,,, भगवान किसी की पुकार क्यों नहीं सुनते? क्योंकि वह भगवान है इंसान नहीं,,,,, इंसान वह है जो सिर्फ अपने आप को देखता है और भगवान वह है जिन्हें संसार के एक-एक प्राणी एक एक जीव जंतु कीड़े मकोड़े पशु पक्षी,,, दीनहीन,, निर्बल,, लाचार,, रोगी,, जिन्हें लोग देखना पसंद नहीं करेंगे,, जो कई वर्षों से नहाया नहीं!

इतनी शरीर में गंदगी कोई देखना पसंद नहीं करेंगे ऐसे संसार में है जिनका हाल बहुत बुरा है! इन सब को जो गले लगाता है वही भगवान है!,,,, सुदामा तो इसके सबसे बड़ा प्रमाण है भगवान श्री कृष्ण द्वारकाधीश नंगे पैर दौड़ कर सुदामा को गले लगाए थे! भगवान किसी की स्थिति देखकर नहीं उनकी सरल बुद्धि देखकर पिघलते हैं!

जिन्हें सब की चिंता है! संपूर्ण प्राणियों से जो बराबर प्रेम करते हैं! वही भगवान है!

जो उनसे अधिक प्रेम करता है वह भी उनसे उतना ही अधिक प्रेम करते हैं बाकी तो उनका प्रेम सब पर बराबर है!

सब की चिंता उन्हें इसलिए है क्योंकि सब उत्पन्न उसी से हुए हैं! इसलिए चिंता उन्हें सब की है सिर्फ एक प्राणी की नहीं!

जो सबको देखते हैं वही भगवान है! बड़े से बड़े रोग कैंसर जैसे कष्ट शरीर में आ गए भगवान को रो-रो कर पुकारो नहीं सुनेंगे चाहे दिन रात उनकी तपस्या किया जाए!

विधि का लेख बदलता नहीं जो एक बार लिख दिया गया वह होकर रहेगा! लाख उपाय लाख चतुराई से प्रारब्ध को कभी बदला नहीं जा सकता! कर्म का लेख अटल है शाश्वत है! किसी भी हाल में भोगना ही पड़ता है!

किसी के कष्ट पर भगवान ध्यान इसीलिए नहीं देते क्योंकि बड़े से बड़े कष्ट वाले उनकी नजरों में है ऐसे कष्ट जिनके शरीर में चारों तरफ से बीमारी की वार है और उससे भी बड़े-बड़े कष्ट वालों को भगवान देख रहे हैं! हम संसार के सामने में कुछ भी नहीं है किसी भी क्षेत्र में हम आगे नहीं सब में हम नीचे हैं! संसार में हमसे आगे कितने लाखों करोड़ों हैं जिसका हमें मालूम नहीं!

बड़े से बड़े ज्ञानी बड़े से बड़े धनवान बड़े से बड़े सुंदर रूप बड़े से बड़े प्रतिष्ठा संसार में इतने अधिक हैं हम सिर्फ अपने आप को ही महान समझ बैठे हैं! मैं ज्ञानी, मैं धनवान, मैं सुंदर हमसे अधिक और भी हैं जिसका हमें मालूम नहीं!

वह तो उनको भी देख रहे हैं जिनके शरीर में 10 प्रकार के कैंसर है और हजारों बीमारियां एक शरीर में है! हमें कितने रोग हैं जो भगवान हम पर दया करेंगे!,,,!

हमारी गरीबी कितनी है वह तो उनको भी देख रहे हैं उन लाखों करोड़ों अनाथ बच्चों को जिनके एक वक्त के खाने के लिए दाना नहीं मिल रहा! उससे भी गरीबी से बुरा हाल और कई संसार में है!

जिन्हें सिर्फ वही देख रहा है हमारी बुद्धि तो केवल अपने तक ही सीमित है हम सिर्फ अपने बारे में ही सोच सकते हैं भगवान तो संपूर्ण जगत का स्वामी है हर प्राणी की चिंता है उनको चाहे कितने भी बड़े अधर्मी हो! भगवान तो उससे भी प्रेम करते हैं चाहे जीव करें या ना करें!

भगवान वह है जिनका ध्यान एक हमारी तरफ ही नहीं हजार लाख प्राणियों की तरफ ही नहीं संपूर्ण ब्रह्मांड के प्रत्येक जीव पर उनका ध्यान है चाहे कितने भी बड़े भक्त हो उनके इतने निष्काम भक्त हैं उनके बराबरी पहुंचने की कोशिश किया तो कभी नहीं पहुंच पाएंगे,,, इतने संसार में बड़े से बड़े तपस्वी ऋषि मुनि बड़े-बड़े लाखों अघोरी शिव भक्त हैं हजारों रसिक संत कृष्ण भक्त हैं लाखों किशोरी भक्त हैं!

जो संपूर्ण प्राणियों को एक समान सब पर जिनका बराबर ध्यान है किसी एक प्राणी पर न कम न ज्यादा,,,, जो जीव के साथ सिर्फ उनके कर्मों का हिसाब करते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं उन्हें अपना स्थान प्रदान करते हैं वही भगवान है!

भगवान की तीन प्रमुख शक्तियां

भगवान की तीन प्रमुख शक्तियां

1. जीव शक्ति!

2. माया शक्ति!

3. पराशक्ति!

भगवान के पास अनंत शक्तियां हैं जिसमें तीन प्रमुख है आईए जाने कौन सा तीन?

जीव शक्ति भगवान के मध्य अर्थात तटस्थ शक्ति है उनका मध्य पावर है! और माया शक्ति उनकी प्रकृति है जो सदा परमात्मा से बाहर में रहती है माया शक्ति, भगवान से दूर रहती है! इसलिए माया को भगवान की बहिरंग शक्ति

कहा गया है जिससे इंद्रियां, मन, बुद्धि, चित, अहंकार सब उत्पन्न हुए हैं! तीसरा है पराशक्ति जो भगवान की अंतरंगा शक्ति है! जीव का ध्यान आधा माया की तरफ और आधा भगवान की तरफ इसीलिए लगा है क्योंकि जीव मध्य पावर है तटस्थ शक्ति है! भगवान के मध्य भाग से जीव उत्पन्न हुई है! प्रकृति,, भगवान से सदा बाहर रहती है!

भगवान की प्राप्ति

भगवान श्री कृष्ण को प्राप्त करना है तो उनकी तरह योग योगेश्वर परम योगी जितेंद्रिय बनना होगा! सबसे प्रेम करना होगा! जैसे वे सबसे करते हैं! गाली सुनकर चुपचाप मुस्कुराना होगा जैसे शिशुपाल के समय उन्होंने किया था! यदि भगवान श्री राम को प्राप्त करना है तो उनकी तरह कष्ट सहते हुए मुस्कुराना होगा! धैर्य और साहस से मर्यादा में रहकर अपना कर्म करते रहना है! और उनकी तरह त्यागी बनना है! महलों का स्वामी वन वन भटककर झोपड़ी में रहे हैं! यदि शिवजी को प्राप्त करना है तो उनकी तरह बैरागी एकांत में ध्यान मग्न रहना है और संसार के सारे विष को अर्थात अपने सभी तमाम दुखों को चुप रहकर अपने अंदर धारण करना है जैसे उन्होंने हलाहल विष को गले में धारण किया था! यही इन तीनों ने सिखाया है! जिसको भी पाना है जिससे प्रेम है पहले तो उनकी तरह बनना होगा!
राम,,,,कृष्ण या महादेव!

तीन अविनाशी तत्व ब्रह्म,, जीव और माया

तीन अविनाशी तत्व है ब्रह्म,, जीव और माया,,, जिसमें ब्रह्म यानि परमात्मा जो जीव और माया का शासक है इन दोनों पर शासन करने वाला है!,,, माया,, ब्रह्म की एक प्रचंड बहिरंग शक्ति है अर्थात आउट पावर पर वह जड़ है अपने से कुछ नहीं कर सकती! जब तक मायापति श्री कृष्ण उस पर इशारा ना करें! और तीसरा तत्व है जीव तत्व भगवान की तटस्थ चेतन शक्ति है पर जीव शक्ति,, माया शक्ति से दुर्बल है माया,, जीव शक्ति से प्रबल है प्रत्येक जीव माया का आधीन है!

भगवान की चेतन शक्ति को प्राप्त करके माया,, संसार में कार्य करती है मन, बुद्धि, इंद्रियां, चित, अहंकार यह सब जड़ माया है जैसे पत्थर एक जगह पड़ा ही रहता है जब तक उसे चेतन शक्ति द्वारा हटाकर इधर-उधर ना किया जाए! उसे जड़ कहते हैं!

आत्मा की चेतन शक्ति से यह क्रिया करते हैं! इंद्रियां, मन, बुद्धि सब प्राकृतिक है माइक है! माइक वस्तु परमात्मा तक नहीं जा सकती! क्योंकि परमात्मा, माया से परे है! इंद्रियां मन बुद्धि माया का आवरण है!

संसार के समस्त प्राणी आनंद क्यों चाहते हैं?

गीता,,, तत्वज्ञान और 4 वेद,, 10 उपनिषद के अनुसार,,,,,, कृपया अंत तक इसे ध्यान पूर्वक पढ़िएगा! अभी तक का सबसे महत्वपूर्ण विषय,,,प्रत्येक जीव अनंत जन्मों से आनंद की खोज में लगी है तो क्यों लगी है?

इसे अंत तक पढ़ने पर ही समझ आ पाएंगे आधा छोड़ कर चले गए तो कभी भी नहीं समझ पाएंगे कभी नहीं! इसका इतना बड़ा रहस्य है!,,,,

पूरी विस्तार से इसमें बताया गया है! की जीव आनंद क्यों चाहती है? अब चलते हैं हम अपने विषय में

एक ऐसे उदाहरण से समझेंगे की छोटा सा अबोध बच्चा भी समझ जाए!,,, आईए जानते हैं आखिर संसार के प्रत्येक जीव 24 घंटे जो कुछ भी कर रही है अनंत जन्मों से प्रयत्नशील है सिर्फ उनका एक ही प्रयोजन है आनंद प्राप्ति!

जीव हर सेकंड जो कुछ भी कर रही है आनंद के लिए ही कर रही है परंतु तृप्ति क्यों नहीं मिलती? पूरी विस्तार से जानते हैं इसका रहस्य क्या है?

यहां से ध्यान देकर समझिएगा एक-एक शब्दों को गहराई से समझना होगा! तब इस रहस्य को जान पाएंगे! मुख्य विषय हमारा शुरू होता है! विषय कठिन है समझने में दिक्कत होगी परंतु समझने की पूरी कोशिश कीजिएगा! यह उदाहरण मुश्किल से आप लोगों तक पहुंचाने के लिए लाया गया है! कि हमारी 10 इंद्रियां, मन, बुद्धि आखिर सुख की तलाश में क्यों लगी है? अब हम जानेंगे इसका जवाब क्या है?

देखो पांच मंजिल का फ्लैट है और एक कमरे की लंबाई इतनी ऊंची है कि पहुंचना संभव नहीं! उस पांच फ्लैट में जो सबसे नीचे के कमरे हैं सबसे नीचे के कमरे में 5 वर्ष के बच्चे बैठे हुए हैं जिसमें ऊपर के छत में एक छिद्र है वहां से शहद की बारिश हो रही है! बच्चे अबोध हैं कुछ नहीं जानते,, कहां से टपक रही कौन है ऊपर? उन्हें कुछ पता नहीं!

टपक रहा सब मिलकर उसको चाटने लग गए! सब उसमें मस्त हो गए! उसमें इतने मग्न हो गए कि वह कहां बैठे हैं? इसका भी उसे होश नहीं! उसमें से एक लड़का विद्वान था उसने खोज की यह कहां से टपक रहा है मालूम चला कि ऊपर के फ्लैट में 15 वर्ष के बच्चे बैठे हुए हैं जैसे नीचे का हाल है ऐसे ही ऊपर का भी हाल है! वहां के बच्चे भी वही कर रहे हैं जो नीचे के कर रहे हैं! उसने दो मंजिल को पार किया!

तब उसने देखा कि दूसरे मंजिल के छत में भी छिद्र है वहां से शहद आ रही है! तीसरी मंजिल को गया वहां भी पाया कि नीचे जैसा वहां का भी कंडीशन है! पूरे चार मंजिल तक बच्चे एक ही क्रिया कर रहे हैं जैसे नीचे में कर रहे हैं! पर मालूम किसी को नहीं की ऊपर से कौन शहद की बारिश कर रहा है?

चार मंजिल तक के किसी को भी नहीं पता,,, पांचवी मंजिल के वह सबसे ऊपर में खड़ा है और पांचो मंजिल तक छत में छिद्र बना हुआ है वहां से पूरे सभी फ्लैट में नीचे तक शहद की बारिश हो रही है! नीचे से लेकर पांचवें मंजिल तक सभी क्रम अनुसार एक से बड़े एक विद्वान है! पर समझ कोई नहीं पाया की उसे बरसाने वाला कौन है? कहां से आ रही! इसका पता कोई नहीं लगा पाया?,,,,,

उन सभी विद्वान में एक महान विद्वान था जो सभी अपनी तत्वज्ञान के द्वारा दिव्य शक्ति से सभी मंजिल को पार किया! ऊपर जाकर देखा तो एक कोई बहुत बड़ा व्यक्ति बहुत बड़ा विशाल ड्रम लेकर शहद को नीचे की तरफ गिरा रहा है!

सिर्फ उन्हीं ने जान पाया की इसका रहस्य क्या है? बाकी तो उसी में मग्न हो गए! अब जानते हैं इस पूरी कहानी का वास्तविक अर्थ क्या है? इसमें बहुत बड़ा रहस्य छिपा है! अब जानते हैं वह रहस्य क्या है?

रहस्य:- सबसे नीचे में जो बच्चे बैठे हैं वह है 10 इंद्रियां! हमारी पूरी 10 इंद्रियां प्रत्येक क्षण जो कुछ भी कर रही है आनंद के लिए,,, सुख के लिए ही कर रही है आंखे जो देखती है! किस लिए? आनंद के लिए! कान जो शब्द सुनती है किस लिए? आनंद के लिए! रसना, त्वचा, सब आनंद के लिए ही कार्य करती है! इंद्रियां एक छोटा सा बच्चा है! जब आनंद में उससे बड़े वाले भीगे हुए हैं तो छोटे वाले की क्या गिनती! आनंद की वर्षा तो ऊपर से चली आ रही है! जो सबसे ऊपर है उसे पकड़िए वह कौन है?

इन तीनों के पास इतनी शक्ति नहीं कि अपने ऊपर वाले को जान जाए! फ्लैट नंबर दो क्या है? हमारा मन है! आखिर इंद्रियों में सुख की लालसा कहां से आई है? मन से आई है! क्योंकि मन,,, अनंत जन्मों से सुखों का भूखा है!

मन पहले से, भूखा है इसलिए अपने नीचे वाले 10 इंद्रियों को भी अपने जैसे सुखों का भूखा बना दिया है! अब चलते हैं फ्लैट नंबर 3 में जो है हमारी बुद्धि! इंद्रियां तो सुख में रमी हुई है लेकिन मन में सुखों की चाहत कहां से आई है? उसके ऊपर वाले से आई है,!

मन से ऊपर कौन है? बुद्धि! इसमें मिथ्या सुखों का ज्ञान भर दिया गया है! बुद्धि में सुखों का भ्रम डाल दिया गया है! इंद्रियां और मन,,,, बुद्धि के कब्जे में है इसलिए इंद्रियां और मन अनंत जन्मों से सुख के लिए तड़प रही है! जो सबसे हाई पावर का है बुद्धि उसमें ही सुखों का भरम है तो संसार के झूठे सुखों से कौन बच पाएगा? सारा खेल तो बुद्धि का ही है!

इंद्रियां,, मन और बुद्धि तीनों आनंद से भीगे हुए हैं इसलिए आनंद का रस इन तीनों का प्रमुख गुण है! इसलिए यह तीनों आनंद सुख की खोज में लगे हुए हैं कई जन्म बीत गए पर यह तीनों कभी हार नहीं मानने वाले! बुद्धि को अटल विश्वास है मुझे संसार में सुख मिलेगा और मिलकर रहेगा! इसलिए इंद्रियां और मन को भी बुद्धि झूठे सुखों में भटका रही है! यह बुद्धि का गहरा भ्रम है!

जिसे कोई नहीं मिटा सकता जब तक उसे सत्य का ज्ञान ना हो यह भ्रम का त्याग ना हो! और उससे ऊपर वाले फ्लैट में जाकर देखा तो पता चला कोई एक व्यक्ति और है!

जो शहद में भीगा हुआ है! जो बुद्धि से ऊपर है वह है आत्मा,,, नीचे वाले जितने भी आनंद चाह रहे हैं क्योंकि कोई है जो इंद्रियां, मन, बुद्धि तीनों को आनंद में भिगो दिया है! वही आत्मा है! आत्मा आनंद स्वरूप है! इंद्रियां मन बुद्धि इससे नीचे हैं! इसलिए आत्मा का गुण इन तीनों में आया हुआ है! परंतु आत्मा,,, आनंद स्वरूप क्यों है?

क्योंकि वह परमात्मा का शाश्वत अंश है! ईश्वर अंश जीव अविनाशी!

परमात्मा आनंदकंद सच्चिदानंद आनंद का समुद्र है आत्मा जिनका एक छोटा सा टुकड़ा है अंश है चिंगारी है! जैसे ज्वालामुखी की चिंगारी गरम रहती है बर्फ की चिंगारी ठंडी रहती है

ऐसे ही परमात्मा की चिंगारी आत्मा,,, सदा आनंद में रहती है! इंद्रियां,, मन,,, बुद्धि इससे नीचे हैं इसलिए नीचे वाले सब सुख की खोज में लगे हुए हैं! इन तीनों को नहीं पता कि हमें तृप्ति कैसे मिलेगी? क्योंकि तीनों अपने आप को महान समझ बैठे हैं उन्हें ज्ञान नहीं कि उससे ऊपर कोई और है? यह तीनों अहंकार से ही बने हैं! इसलिए इनके पास

जानने की शक्ति नहीं की ऊपर कौन है? बुद्धि जो सबसे हाई पावर है इंद्रियां और मन से बलवान है वह भी असमर्थ है हमारी प्राकृतिक बुद्धि! आत्मा को कभी नहीं जान सकती!,,,, क्योंकि आत्मा,,, बुद्धि से सर्वथा परे है! सबसे ऊपर जो नीचे शहर बरसा रहा है वही परमात्मा है!

जो सारा संसार समस्त जगत के प्रत्येक प्राणी के भीतर आत्मा बनकर सबको आनंद में भिगो दिया है! क्योंकि वह स्वयं आनंद का विराट समुद्र है सच्चिदानंद है! पर मिलता क्यों नहीं? क्योंकि इंद्रियां, मन, बुद्धि जो सुख ढूंढ़ रही है वह भौतिक संसार में ढूंढ रही है उसे नहीं मालूम कि उसे सुख कहां मिलेगा?

जब तीनों से ऊपर जाएगी,, मन,,, बुद्धि के आवरण,, को तोड़कर बाहर निकलेगी तब उसे मालूम चलेगा कि ऊपर आत्मा है और उससे ऊपर परमात्मा!

आत्मा और परमात्मा का मिलन यही तृप्ति है और यही परमानंद! जिसे प्राप्त करने के बाद कुछ भी पाना और बाकी नहीं रहता! जब कुछ बाकी ही नहीं रहेगा तभी तो इस जीव को तृप्ति मिल सकती है! परमात्मा ही प्रत्येक जीव की तृप्ति है! जब तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं होगी! इस जीव को तब तक आनंद के लिए भटकती रहेगी!

कभी भी उसे सुख, शांति, आनंद नहीं मिल सकता जब तक उसे परमात्मा की प्राप्ति ना हो!

परमात्मा पांच चीजों का साक्षी

परम सत्ता परमात्मा इन पांच चीजों का साक्षी है पांच जगह में उनका वास है! पूरी सृष्टि बस पांच चीजों का ही खेल है! 1. काल,,, 2. कर्म,,, 3. प्रकृति,,, 4. जीव और 5.स्थान!

संसार का कौन सा जीव अपनी मन बुद्धि चित् प्रकृति द्वारा 24 घंटे में किस समय पर कौन से कर्म कर रही है? कर चुकी है और आगे करेगी!

और इस पूरी पृथ्वी के,, पृथ्वी ही नहीं,, अनंत ब्रह्मांड के किस जगह किस कोने में छिपकर करेगी!

कहते हैं वेद और हमारे शास्त्र! परमात्मा उसका साक्षी है! दुनिया से बचा जा सकता है पर उनसे नहीं उनकी नजर प्रत्येक जीव पर चारों तरफ से लगी हुई है इश-उपनिषद का पहला मंत्र भी कहती है!

ईशा वास्यम् इदं सर्वम् यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम् ।।१।।

पूरा विश्व जगत परमात्मा की नजरों से घिरी हुई है! उसने ऐसा मायाजाल रचाया है जगत में कि किसी को पता ना चले कि वह देख रहे,,,, जगत को बनाया ही उसने ऐसा है!

प्रत्येक जीव के अंतःकरण में कैमरा फिटिंग किए हुए हैं और सबको स्वयं से बेखबर किया है! लगेगा ही नहीं कि भगवान है यही तो उनकी माया है! जहां परमात्मा का प्रतीत ना हो वही माया है!

भगवान क्यों हमारे पकड़ में नहीं आते?

केन उपनिषद सामवेद का एक शाखा!!! लीजिए प्रमाण,,,,

इसमें आपको एक से सात तक प्रमाण मिलेंगे परमात्मा,, माया की बनी हुई सिस्टम द्वारा प्राकृतिक मशीनों द्वारा उनको ग्रहण नहीं किया जा सकता! प्रमाण

यह वेद मंत्र सबसे नीचे दिया गया है यह वेद मंत्र कहते हैं जिनकी शक्ति को प्राप्त करके आंखें संसार को देखती हैं उनको पंचमहाभूत आंखें कभी नहीं देख सकती क्योंकि आंखों में रोशनी उनकी ही शक्ति से है जिसे वेदों में ब्रह्म कहा गया है!,,,

जिनकी शक्ति को प्राप्त करके कान सुनती है उनके आवाज को कान नहीं सुन सकती जिनकी शक्ति को प्राप्त करके मन विचार करता है उनका विचार मन,, कभी नहीं कर सकता!

जिनकी शक्ति को प्राप्त करके बुद्धि में ज्ञान शक्ति है जानने समझने की शक्ति है बुद्धि उनको कभी नहीं जान सकती,,, जिनकी शक्ति को प्राप्त करके माया संसार में क्रियाशील है! माया उनको कभी नहीं ग्रहण कर सकते!

क्योंकि माया परमात्मा की ऐसी शक्ति है जो परम सत्य परमात्मा को ढक कर रखी हुई है उनका प्रतीत होने कभी नहीं देगी! और परमात्मा कभी पकड़ में आएंगे नहीं!,,,

इसलिए परमात्मा को सिर्फ भक्ति और प्रेम के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है अन्य कोई उपाय नहीं! लीजिए प्रमाण वेद मंत्र 1-7

केन इषितम् पतति प्रेषितम् मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः । केन इषिताम् वाचम् इमाम् वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति ॥१॥

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यत् वाचः ह वाचम् स उ प्राणस्य प्राणः । चक्षुषः चक्षुः अतिमुच्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भवन्ति ॥२॥

न तत्र चक्षुः गच्छति न वाक् गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो यथा एतत् अनुशिष्यात् अन्यत् एव तत् विदितात् अथो अविदितात् अधि । इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नः तत् व्याचचक्षिरे ॥३॥

यत् वाचा अनभ्युदितम् येन वाक् अभ्युद्यते । तत् एव बृहम त्वं विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥४॥

यत् मनसा न मनुते येन आहुः मनो मतम् । तत् एव बृहम त्वं विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥५॥

यत् चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूँषि पश्यति । तत् एव बृहम त्वं विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥६॥

यत् श्रोत्रेण न श्रणोति येन श्रोत्रम् इदम् श्रुतम् । तत् एव बृहम त्वं विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥७॥

हमारे शरीर में 6 शक्तियां

इस हमारे शरीर में 6 शक्तियों का वास है कौन सी 6 शक्तियां- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती देखिए कैसे? शरीर में जो पांच प्राण हैं वह शिवजी हैं! और शरीर- पृथ्वी, जल, वायु अग्नि, आकाश पांच प्रकृति योग माया मां दुर्गा जिससे शरीर बना है! शरीर प्रकृति मां दुर्गा है!,,, देखो पार्वती और शिवजी का दर्शन हो गया! अब चलिए भगवान विष्णु के दर्शन के लिए,, मन और चित् इसमें जो मोह, ममता, वासना रूपी माया है वह भगवान विष्णु है लेकिन इन दोनों को जो हरण किया है धन संपत्ति वह मां लक्ष्मी है! चार शक्तियों के दर्शन हो गए! अब चलिए ब्रह्मा जी, मां सरस्वती कहां है? जो कर्म और प्रारब्ध का खेल है वह रजोगुणी ब्रह्मा जी है लेकिन किसके माध्यम से कर्म हो रहा है बुद्धि के माध्यम से और बुद्धि कौन है? मां सरस्वती! हमारे शरीर में इन छह का वास है!

परमात्मा कौन है?

परमात्मा कौन है? किसे कहते हैं परमात्मा? नीचे दिया गया है!

® जो जन्म मृत्यु से परे है,,,

® सुख-दुख से परे है,,,

® इंद्रियां मन बुद्धि से परे है,,,

® जो कालचक्र से परे है,,,

® दिन-रात से परे है,,,

® शब्दों से परे है,,,

® प्रकृति के अष्टावरण से परे है,,,

® माया से सर्वथा परे है,,,

® ज्ञान की सीमा से परे है,,,

® अज्ञान के आवरण से परे है,,,

® पंचमहाभूत से परे है,,,

® नेत्रों से परे है,,,

® अनंत ब्रह्मांड की सीमाओं से परे है,,,

® प्राकृतिक भौतिक जगत से परे है,,,

® सारे प्रमाण से परे है,,,

® सारे अनुभवों से परे है,,,

® आत्मा से परे है,,,

® कर्मों के चक्र से परे है,,,

® भूत, भविष्य, वर्तमान की सीमाओं से परे है,,,

® विचारों से परे है,,,

® वाणी से परे है,,,

® सुगंध दुर्गंध से परे है,,,

® तमाम स्वादिष्ट व्यंजन रसना से परे है,,,

® नश्वरता से परे है,,,

® पंचप्राणों से परे है,,,

® पूजा पाठ भजन भक्ति से परे है,,,

® बुद्धि की अंतिम सीमाओं से परे है,,,

® समझने की शक्तियों से परे है,,,

® निर्णय लेने की शक्तियों से परे है,,,

® ज्ञान शक्ति से परे है,,,

® ध्यान शक्ति से परे है,,,

® स्मरण शक्ति से परे है,,,

® संकल्प विकल्प से परे है,,,

® इच्छा शक्ति से परे है,,,

® विश्वास की शक्ति से परे है,,,

® लिमिट,,अवधि,, गिनती से परे है,,,

® जो अनंत से परे है,,,

® अनंत जन्मों के संस्कारों से परे है,,,

® अहंकार से परे है,,,

® मोह ममता से परे है,,,

® स्वार्थ से परे है,,,

® वासना, आकर्षण मायाजाल,, क्रोध, लोभ,, ईर्ष्या और राग द्वेष, कपट,, भय,, चिंता,, माया के विकारों से परे है!

वेद कहते हैं- यह सब जितने भी हैं सब उनसे ही है वह स्वयं इन सबसे परे है! लेकिन परे का अर्थ होता क्या है?- बाहर,, उस आवरण से बाहर,, परमात्मा संपूर्ण आवरण से बाहर है! इसलिए प्राकृतिक मशीनों द्वारा उन्हें ग्रहण नहीं किया जा सकता! क्योंकि त्रिगुणात्मक प्रकृति उनसे ही है वह प्रकृति से नहीं! प्रकृति,, परमात्मा के प्रकाशक से ही प्रकाशित है!

जब स्वयं उनकी कृपा होती है जीव पर,, तभी उनका मन, बुद्धि उनकी तरफ जाता है, और मन, बुद्धि, चित भगवान में लगता है जब तक उनकी कृपा नहीं होती तब तक जीव संसार की माया मे अनंत जन्मो तक अनंत काल तक माया भंवर में भटकते रहते हैं! मोहजाल में फंसे रहते हैं! जब उनकी कृपा होती है तब जीव जन्म मृत्यु के चक्र से बाहर होती है संसार की प्रबल माया से ऊबर पाती है! और माया से बच पाती है! क्योंकि संसार की माया उनकी ही शक्ति है!

भगवान श्री कृष्ण ने गीता 10वें अध्याय में 10/11 अर्जुन को बताया है जब मेरी जीव पर बहुत बड़ी कृपा होती है,, सबसे पहले मैं उनकी अज्ञानता बुद्धि में जो माया है उसे नष्ट करता हूं! तभी वह मेरी कृपा से ही वह सत्य को जान पाती है! जब जीव इन सबसे परे हो जाती है तब उन्हें भगवान की प्राप्ति होती है!

भगवान भली भांति जानते हैं कि इन सबसे परे कोई नहीं हो सकता! मेरी माया इतनी प्रबल है कोई पार नहीं हो सकता! इसलिए उन्होंने श्रीमद् भागवत गीता की रचना की! उन्होंने सबसे सरल मार्ग बताया है!

जिस साधना के द्वारा परमात्मा तक शीघ्र ही पहुंच सके! ज्ञान योग से उन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकता! और ना ही ध्यान योग से और ना ही कर्म योग से!

परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है केवल भक्ति योग और उनसे प्रेम करके ही उस तक पहुंचा जा सकता है इसके अलावा अन्य कोई उपाय नहीं चारों वेदों में! सिर्फ प्रेम और भक्ति के द्वारा परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है!

Writer

€Jay Prakash Vaishnav

जगत परमात्मा के घेरे में है- ईशावास्य उपनिषद

ईशा वास्यम् इदं सर्वम् यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम् ।।१।।*

ईशावास्य उपनिषद-1

भावार्थ:- यह वेद मंत्र कहते हैं जो यह संसार जगत हम और आप देख रहे हैं यह जगत चारों तरफ से परमात्मा की नजरों से घिरा हुआ है उनके ही आवरण में जगत चारों तरफ से उनके ही घेरे में है! पृथ्वी ही नहीं अनंत ब्रह्मांड के कोने-कोने में भी उनकी नजर है! सूक्ष्म से विराट तक वही एकमात्र बसा हुआ है! चारों तरफ एक उनकी ही साया है और उनकी ही माया है! हम अगर उनको नहीं देख पा रहे नहीं पहचान पा रहे तो हमारी गलती इसका दंड भोगना पड़ेगा! उनकी नजर हम पर चारों तरफ से है और पूरे 24 घंटे हैं!

परम सत्ता परमात्मा की मूल 5 सत्ता

परम सत्ता परमात्मा की मूल 5 सत्ता

काल, कर्म, प्रकृति, जीव और स्थान

वेद कहते हैं परमात्मा इन पांच का साक्षी है!

परंतु यह क्या है? इसको हमें जानना है!

1. जो प्रतिपल हो रही है वह कर्म!

2. जिसके द्वारा कर्म हो रही अर्थात जो जबरदस्ती जीव को करवा रही है- वह प्रकृति

3. जो करने वाली है- वह है जीव

4. जहां पर कर्म हो रही- वह है स्थान

5. जो प्रकृति और जीव को प्रतिपल खिसका रहा है- वह है काल

24 घंटे जो सबको मिला है जिसके अंतर्गत कर्म हो रहा है- वह है समय अर्थात काल यही कालचक्र है महाकाल! जिसका साक्षी ईश्वर है! कब कहां पर किसने क्या किया? परमात्मा उसका साक्षी है!

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः" का मतलब है कि ब्रह्म वास्तविक है, ब्रह्मांड मिथ्या है, और जीव ही ब्रह्म है:

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः । अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥

ब्रह्म वास्तविक है, ब्रह्मांड मिथ्या है (इसे वास्तविक या असत्य के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है).

जीव ही ब्रह्म है और भिन्न नहीं.

इसे सही शास्त्र के रूप में समझा जाना चाहिए.

यह वेदांत द्वारा घोषित किया गया है.

ब्रह्म के बारे में कुछ और बातें:

ब्रह्म, हिन्दू दर्शन में इस सारे विश्व का परम सत्य है.

ब्रह्म, जगत का सार है.

ब्रह्म, दुनिया की आत्मा है.

ब्रह्म, विश्व का कारण है.

ब्रह्म, एक और अद्वितीय है.

उपनिषद् में क्यों कहा गया? ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या है आईए जाने

सर्व खल्विदं ब्रह्म तत्वमसि

यह समस्त (भासमान द्वैतप्रपत्र) वास्तव में ब्रह्म ही है । वही ब्रह्म तू है

यह उपनिषदों तत्वज्ञान तत्वज्ञानोपदेशका सारांश है । इसमें निष्ठा न होना ही अज्ञान ही । जीव ब्रह्म से अभिन्न होते हुए भी अविद्या के कारण अपने वास्तविक अजन्मा अविनाशी शुद्ध बुद्ध मुक्त सच्चिदानंद मय आत्मस्वरूपको विस्मृत कर अपने को जन्म मरण धर्मा , कर्ता, भोक्ता , सुखदु : खवान् मान बैठा है और मिथ्या जगत में सत्यबुद्वि करके स्व निर्मित कर्म पाश में स्वयं बंधकर जन्म मरण संसृतिमो फंसा हुआ अनन्त दु:ख भोग रहा रहा है। जीवन के सकल दु: खोके कारण इस अविद्या की निवृत्ति के लिए उपनिषदों में जीव ब्रह्म की एकता के प्लतिपादक के साथ साथ जगत के मिथ्या त्वका। उपदेश भी हुआ है जिसे पूर्वाचार्योन

ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या

इन सरल शब्दों में स्पष्ट कर दिया है । ब्रह्म सत्य है जगत मिथ्या है । जिस प्रकार मन्दान्धकार में रज्जु ही सर्परूप दिखलायी देती है , उसी प्रकार अवि विद्या में निर्गुण निराकार ब्रह्म - सत्ता ही सगुण साकार जगद्रूप दिखलायी देती है । जिस प्रकार मन्दान्धकार के कारण वास्तविक रज्जु नहीं दिखलाई पड़ती , पत्युत वास्तविक सत्ताहीन सर्प ही प्रतिभासित होता ,और वास्तविक उसी प्रकार अविद्या के कारण वास्तविक (पारमार्थिक) सतामय ब्रह्म नहीं प्रतीत होता है और वास्तविक सत्ताहीन व्यावहारिक जगत ही प्रत्यक्ष प्रतीत होता है। वस्तु एक ही है जो रज्जु है , वही भ्रमावस्था में सर्परूप है । उसी प्रकार ज्ञानावस्थान में जगद्रूप है । जगत की सत्य प्रतीत और ब्रह्म की अप्रतिति तबतक होती रहती है , अन्धद्यान्धकार की निवृत्ति नहीं होती है । विद्यारुपी प्रकाश द्वारा अधिष्ठान का निश्चय होते ही स्पष्ट हो जाता है कि सर्वाधिष्ठान ब्रह्मसत्ता ही (पारमार्थिक) सत्य है और रज्जु में अध्यस्त सर्प के समान ब्रहा में अध्यस्त जगत मिथ्या है ।

इस प्रकार सद्गुओसे दृष्टान्तादिको द्वारा औपनिषदज्ञान भली प्रकार श्रवण कर जिज्ञासु उसपर मनन करते हुए वैराग्यदि साधन सप्ततिके सहयोग से जगत के मिथ्यात्वकी पुष्टि और निदिध्यासनादि अन्तरंग साधनो के सहयोग से जीव ब्रह्मौक्यनिष्ठा सप्पादनद्वारा स्वात्मानुभूतिमय ज्ञान दीपक पदीप्त कर अनादिकाल अविद्यान्धकार की निवृत्ति द्वारा निश्चय कर लेता कि कि एकमात्र अद्वितीय स्वगत सजातीय विजातीय भेद शून्य त्रिकालाबाधित बह्मासत्ता ही सत्य है । उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी पारमार्थिक सत्य नहीं है । इस प्रकार दृढ़ बोध वान् ज्ञानी के लिए अन्य कुछ ज्ञातव्य एवं प्राप्तव्य शेष नहीं रह जाता । कृतकृत्य होकर वह नित्य बोध मय निजस्व रूप में

जीवन्मुक्ति का परमानन्द लाभ कर ब्रह्म की अद्वितीय चिन्मय सत्ता में प्रवेश कर जाता है । ऐसे ब्रह्मा स्वरूप विज्ञानी के लिए उपनिषद का निश्चय है कि

न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति ब्रह्मौव सन ब्रह्मप्योति

(वृहद ० ४।४।६)

जीव ब्रहौक्य ज्ञान निष्ठा की यह चरम सीमा ही औपनिषदज्ञान की पराकाष्ठा है ।

उपनिषद निर्गुण निराकार ब्रह्म अवाङ्मनसगोचर है । श्रुति उसके लिए कहती हैं

मतों वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।

इसी अवाङ्मनसगोचर परमाद्वितीय निर्गुण परम तत्व का बोध कराने के लिए उपनिषदच्छ्रुतियां

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते ।

इत्यादिके द्वारा इस नानागुणधर्मवान इन्द्रयग्राह शब्द स्पर्श रूप रस गंध आदिमय जगतत्पचका ब्रह्मा में अध्यारोप करती है और फिर इन्हीं इन्द्रयग्राह एवं निर्गुण निवर्यपदेश्य निर्विशेषा ब्रह्मा सत्ता का परिचय कराती है। उदाहरणार्थ कठश्रुति उसे अशब्द ,अस्पर्श ,अरूप , अव्यम , अरस आदि कहकर उसका उपदेश करती है

अशब्दमस्पर्शमरुपव्यं

तथारसं नित्यमगन्धच्च यत

इसी प्रकार माण्डूक्य श्रुति उसके सम्बन्ध में कहती हैं

नान्त: प्रज्ञं न बहि प्रज्ञ नोभयते : प्रज्ञं न प्रज्ञानघन न प्रज्ञं नाप्रज्ञम।

अदृष्टमव्यवहार्यमग्राह्यामलक्षणमचित्यमव्यदेश्य _ मेकात्मप्रत्ययसारं प्रपचोपशमं शान्त शिवमद्वैत चतुर्थ मन्यते स आत्मा स विज्ञेय: ।

इसी प्रकार अन्यत्र भी उपनिषदो में निषेध रूप में ही उस निर्गुण निरज्जनके सम्बन्धमे उपदेश हुआ है और अन्तमे श्रुति नेति नेति (यह नहीं , यह नहीं) कहकर उसके सम्बन्ध में समस्त उक्ति योका खण्डन कर उसे सर्वथा निर्गुण निर्विशेष अवाडमनगोचर प्रतिपादन करती है । इस प्रकार अध्यारोपके सहारे ब्रहाका परिचय कराती हुई श्रुतिया अध्यरोपित समस्त जगत की वास्तविक सत्ताके निरासार्थ ही बार बार उपदेश करती है ।

रघुवंश द्वितीय सर्ग का काव्य सौन्दर्य सोदाहरण वर्णित कीजिए

महाकवि कालिदास द्वारा विरचित रघुवंश के रूप में प्रख्यात 19 सर्ग का उदात्त एवं सरस महाकाव्य है । कथावस्तु की महनीयता और साथ ही उसके सुव्यवस्थित संग्रथन मार्मिक स्थलों के सरस वर्णन , विविध मनोभाव की सरस एवं प्रभावोत्पादक अभिव्यंजना , पात्रों के स्पष्ट चरित्र चित्रण उनके परस्पर मनोहर नाटकीय संवाद , प्राकृतिक दृश्यों के

स्वाभाविक एवं रोचक वर्णन अलंकारो के मौलिक , उपयुक्त एवं स्वाभाविक प्रयोग छन्दो के सौन्दर्य , शैली की सरलता व स्पष्टता,प्रांजल तथा परिमार्जित भाषा का मधुर प्रवाह इत्यादि के कारण रघुवंश काव्य शब्दों के कण्ठ का हार बन अपने रचयिता की कीर्ति पताका को विश्व में फहरा रहा है । दिलीप द्वारा नन्दिनी की सेवा का वर्णन दिलीप और मायावी सिंह का संवाद ,रघु और इन्द्र का संवाद रघु की दिग्विजय विलाप का वर्णन ,रघु कौत्सका संवाद इन्दुमति स्वयंवर का वर्णन , इन्दुमति के वियोग में अज का करूण विलाप ,दशरथ की मृगय का वर्णन ,दशरथ के द्वारा श्रवण कुमार के आहत होने का वर्णन , राम और परशुराम के सामुख्य का वर्णन ,सीता परित्याग ,परित्यक्ता सीता का करूणा परिवेदन ,कुश के ऐश्वर्य और अग्नि वर्ण के

वयम् अमृतस्य पुत्राः- श्वेताश्वर उपनिषद

वयम् अमृतस्य पुत्राः (श्वेताश्वर उपनिषद) अमृतस्य पुत्रा वयं, सबलं सदयं नो हृदयम्। गतमितिहासं पुनरुन्नेतुं, युवसङ्घटनं नवमिह कर्तुम् ॥ भारतकीर्तिं दिशि दिशि नेतुं, दृढसङ्कल्पा विपदि विजेतुम्। ऋषिसन्देशं जगति नयेम, सत्त्वशालिनो मनसि भवेम॥ कष्टसमुद्रं सपदि तरेम, स्वीकृतकार्यं न हि त्यजेम। दीनजनानां दुःखविमुक्तिं, महतां विषये निर्मलभक्तिम् ॥ सेवाकार्ये सन्ततशक्तिं, सदा भजेम भगवति रक्तिम्। सर्वे अमृतस्य पुत्राः शृण्वन्तु ये दिव्यानि धामानि आतस्थुः॥ युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्विश्लोक एतु पथ्येव सूरेः। शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः॥ (श्वेताश्वतरोपनिषद् - द्वितीयोऽध्यायः) वेद कहते हैं कि मृत्यु से रहित अविनाशी ईश्वर की संतान हैं चूँकि संतान में पिता के गुण होना स्वाभाविक है इसलिए वेदानुसार हम भी अमृत हैं, बदलाव प्रकृति का नियम है जिस के अनुसार संसार की हर वस्तु प्रति क्षण बदलती रहती है। पूरे ब्रह्मांड में जन्म-मरण एवं बनने और टूटने की प्रक्रिया प्रतिक्षण चलती रहती है। शारीरिक अर्थात सांसारिक जीवन तो प्राकृतिक सिद्धांत अनुसार माता पिता के द्वारा पैदा हो

परात्पर ब्रह्म

ब्रह्म, ईश्वर, खुदा, अल्लाह ये सब उस परात्पर ब्रह्म के पर्यायवाची हैं जो अखिल ब्रह्माण्ड का नियंत्रक है । ब्रह्म का शाब्दिक अर्थ है, वृहत् अर्थात बड़ा । ब्रह्म बड़ा ही नहीं अपितु वह सबसे बड़ा है। पेड़ बड़ा होता है, उससे बड़ा समुद्र एवं आकाश समुद्र से भी बड़ा होता है । संसार में एक से एक बड़ी वस्तुएँ हैं । स्पष्टतः ब्रह्म से बड़ा कुछ भी नहीं है, अन्यथा प्रलय के समय में समस्त चराचर जगत ब्रह्म के महोदर में कैसे विलीन होता? तो इस संसार के प्रत्येक प्राणी व प्रत्येक वस्तु से वह सबसे बड़ा है परन्तु कितना बड़ा है? वेद कहता है -

सत्यं ज्ञानमनंतम् ब्रह्म । (वेद)

"वह अनंत मात्रा का बड़ा है" , अर्थात उसकी कोई सीमा नहीं है।

अतः संस्कृत व्याकरण के अनुसार ब्रह्म की दो परिभाषाएँ वेदों ने की हैं -

वृहति वृंहयति इति तत्परं ब्रह्म । - रहस्य अग्नाय ब्राह्मण

" वह जो स्वयं अनंत मात्रा का बड़ा हो और

वह जो औरों को भी अनंत मात्रा का बड़ा कर सके।"

तो वह किसको बड़ा करते हैं ? जो जीव शरणागत हो जाए उस जीव को उसी क्षण ब्रह्म अपनी सभी शक्तियाँ देकर अपने समान बड़ा बना देते हैं । इन्हीं मायातीत जीवों को भगवत् प्राप्त संत कहते हैं।

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई ॥

"जो तुम्हें जान ले वह तुम्हारे समान हो जाता है।" यद्यपि वेद कहता है -

न तत्स्मश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते । श्वेताश्वतरोपनिषद् ६-८

"कोई भी तत्व भगवान के समकक्ष भी नहीं है, उनसे बड़ा होना तो असम्भव है" । यद्यपि वे सबसे बड़े हैं तथापि वे पामर जीव के शरणागत होने पर कृपा द्वारा जीव को अपने समान बना देता है। अर्थात ब्रह्म अपनी सभी शक्तियाँ जीव को भगवत् प्राप्ति के उपरांत प्रदान कर अपने समान बना देते हैं ।

संपूर्ण ब्रह्मांड में केवल तीन ही अनादि अनंत तत्व हैं, ब्रह्म, जीव एवं माया । ब्रह्म तथा जीव चेतन हैं और माया जड़ है । यद्यपि माया अनादि अनंत है तथापि माया से उत्पन्न संसार सादि सांत है।

जीव और ब्रह्म में भेदाभेद सम्बंध है । दोनों चेतन तथा अनादि हैं अतः जीव और ब्रह्म में अभेद है । अभेद के साथ-साथ बहुत से भेद भी हैं । उनमें से कुछ तालिका में दी गये हैं ।

भगवान के अनंत स्वरूप होते हैं परंतु मूल रूप से हम भगवान को 2 रूपों में विभक्त किया जा सकता है - एक निराकार स्वरूप दूसरा साकार स्वरूप ।

निराकार ब्रह्म

भगवान का निर्गुण निर्विशेष सर्वव्यापक स्वरूप निराकार स्वरूप कहलाता है। इस स्वरूप में भगवान की सभी शक्तियाँ सुसुप्त अवस्था में रहती हैं अर्थात उनका विकास नहीं होता । केवल सत् अर्थात सर्वव्यापकता, चित अर्थात सर्वज्ञता, आनंद अर्थात नित्यानंद की शक्तियां ही विकसित होती हैं अतः इस निराकार ब्रह्म को सच्चिदानंद कहा जाता है। ब्रह्म के इस रूप के उपासक को ज्ञानी कहा जाता है और उनका अंतिम लक्ष्य मोक्ष होता है । मुक्ति होने पर जीव सदा के लिए माया के बंधन से मुक्त हो जाता है । मुक्तज्ञानी मरणोपरांत सदा के लिये निर्गुण निराकार ब्रह्म में विलीन हो जाता है । यह सुख सदा एकरस रहता है ।

साकार ब्रह्म

ब्रह्म का सगुण सविशेष साकार रूप भी होता है । साकार ब्रह्म के दो स्वरूप होते हैं ।

परमात्मा

साकार रूप में परमात्मा का नाम, रूप, गुण एवं धाम होता है परंतु लीला परिकर नहीं होते । यह ऐश्वर्य प्रधान रूप है जिसमें उनकी चार भुजाएँ होती हैं और उनको महाविष्णु कहा जाता है । परमात्मा योगियों के उपास्य हैं । महाविष्णु

के धाम का नाम वैकुंठ है। इस मार्ग के अनुगामी भी अनंत आनंद अनंत ज्ञान को प्राप्त कर वैकुंठ को प्राप्त करते हैं । वहां वे निरंतर परमात्मा के दर्शन व सानिध्य से दिव्यानंद प्राप्त करते हैं । सगुण साकार परमात्मा के आनंद का वैलक्षण्य ब्रह्मानंद से अनंत गुना अधिक होता है ।

भगवान

सगुण साकार रूप का जब मृत्युलोक में अवतरण होता है तो भगवान कहते हैं। इस स्वरूप में वे अपनी समस्त ऐश्वर्य युक्त शक्तियों को छिपाकर केवल प्रेमा शक्ति को अपने नाम, रूप, लीला, गुण, धाम एवं परिकर के रूप में प्रकट करते हैं।

भगवान का यह स्वरूप भक्तों को अधिक प्रिय होता है क्योंकि इसमें प्रेम की प्रधानता होती है । भक्तगण प्रभू के प्रेम के वशीभूत होकर उनकी भगवता को भूल जाते हैं तथा उन को चार भावों से प्रेम करते हैं वे चार भाव हैं दास्य,सख्य, वात्सल्य एवं माधुर्य। भगवान की भगवतता को बिसारकर उनके साथ निःसंकोच प्रेम करने का आनंद अपरिमेय है। इसीलिए साधक गण मोक्ष तथा वैकुंठ दोनों के आनंद को ठुकरा देते हैं । यहाँ तक कि आत्मज्ञानी अपने ब्रह्मानंद को ठुकरा कर प्रेमानंद में निमज्जित हो जाते हैं यथा श्री शुकदेव परमहंस, राजा जनक । स्वयं श्री कृष्ण के मित्र उद्धव अपने ब्रह्मानंद को छोड़कर प्रेमानंद में निमग्न हो गए । परंतु संपूर्ण इतिहास में एक भी उदाहरण नहीं है जिसने प्रेमानंद को छोड़कर ब्रह्मानंद को अपनाया हो ।

जब भगवान राम ने हनुमान जी की निःस्वार्थ सेवा से प्रसन्न होकर उन्हें मोक्ष देना चाहा तो हनुमान जी ने साफ़ इंकार कर दिया - भवबंधच्छिदे तस्मै स्पृहयामि नमुक्तये। भवान्प्रभुरहं दास इति यत्र विलुप्यते।।

बा. रामायण "मुक्ति को अपनाने से मैं अपने स्वामी राम की सेवा के अनिर्वचनीय आनंद से वंचित हो जाऊँगा । अतः मुझे मोक्ष नहीं चाहिए।"

निराकार ब्रह्म के मूल पांच स्वरूप

निराकार ब्रह्म के मूल पांच स्वरूप

1. सत्- परम सत्ता

2. चित- चेतन

3.आनंद- रस

4.अद्वैत- एक समान

5.अनंत- असीम

सच्चिदानंद रूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे तापत्रय विनाशाय श्री कृष्णाय वयं नमः ! श्रीमद् भागवत महापुराण

किस वेद में कौन सा उपनिषद है?

1.ऋग्वेदीय

उपनिषद

अक्षमालिकोपनिषद • आत्मबोधोपनिषद • ऐतरेयोपनिषद • कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषद • नादबिन्दुपनिषद • निर्वाणोपनिषद • बहवृचोपनिषद • मृदगलोपनिषद • राधोपनिषद • सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषद

2.शुक्ल यजुर्वेदीय

उपनिषद

अद्वयतारकोपनिषद • अध्यात्मोपनिषद • ईशावास्योपनिषद • जाबालोपनिषद • तुरीयातीतोपनिषद • त्रिशिखिब्राह्मणोपनिषद • निरालम्बोपनिषद • परमहंसोपनिषद • पैंगलोपनिषद • बृहदारण्यकोपनिषद • भिक्षुकोपनिषद • मन्त्रिकोपनिषद • याज्ञवल्क्योपनिषद • शाट्यायनीयोपनिषद • शिवसंकल्पोपनिषद • सुबालोपनिषद • हंसोपनिषद

3.कृष्ण यजुर्वेदीय

उपनिषद

अक्षि उपनिषद • अमृतनादोपनिषद • कठोपनिषद • कठरूद्रोपनिषद • कलिसन्तरणोपनिषद • कैवल्योपनिषद • कालाग्निरूद्रोपनिषद • चाक्षुषोपनिषद • क्षुरिकोपनिषद • तैत्तिरीयोपनिषद • दक्षिणामूर्ति उपनिषद • ध्यानबिन्दु उपनिषद • नारायणोपनिषद • रूद्रहृदयोपनिषद • शारीरिकोपनिषद • शुकरहस्योपनिषद • श्वेताश्वतरोपनिषद

4.सामवेदीय

उपनिषद

आरूणकोपनिषद • केनोपनिषद • कुण्डिकोपनिषद • छान्दोग्य उपनिषद् • जाबाल्युपनिषद • जाबालदर्शनोपनिषद • महोपनिषद् • मैत्रेय्युग्पनिषद • योगचूडाण्युपनिषद • रूद्राक्षजाबालोपनिषद • वज्रसूचिकोपनिषद • संन्यासोपनिषद • सावित्र्युपनिषद

5.अथर्ववेदीय

उपनिषद

अथर्वशिर उपनिषद • गणपति उपनिषद • गोपालपूर्वतापनीयोपनिषद • नृसिंहोत्तरतापनीयोपनिषद • नारदपरिव्राजकोपनिषद • परब्रह्मोपनिषद • प्रश्नोपनिषद • महावाक्योपनिषद • माण्डूक्योपनिषद • मुण्डकोपनिषद • श्रीरामपूर्वतापनीयोपनिषद • शाण्डिल्योपनिषद • सीता उपनिषद • सूर्योपनिषद

जो मैं आनंद चाहता हूं? क्यों चाहता हूं?

संसार के सुख में खो मत जाओ कभी एकांत में बैठकर विचार किया करें! जो मैं आनंद चाहता हूं? तो क्यों चाहता हूं? ढूंढता संसार में हूं पर मिलता क्यों नहीं? जो प्राणी आनंद चाहती है क्यों चाहती है क्योंकि वह आत्मा है आत्मा का नेचुरल गुण है आनंद चाहना! जैसे मान लो आपको भूख लगा तृप्ति प्राप्त करने के लिए क्या करोगे भोजन ग्रहण करेंगे! अब बताओ जो भोजन ग्रहण किए थे कहां चल दिया? शरीर तो उसे भस्म कर दिया!

फिर पेट खाली, फिर भूख! संसार के भौतिक पदार्थों से कभी भूख शांत नहीं होगी ना ही तृप्ति मिलेगी! इसका अर्थ है हम शरीर नहीं,, कोई और है वही आत्मा है! जो अनंत जन्मों से प्यासी है फड़फड़ा रही है परमात्मा से मिलने के लिए!, इसलिए वह इंद्रिय, मन ,बुद्धि के चापलूसी में नहीं आती!

परमात्मा कौन है?

मात्र 10 बिंदु में जानते हैं!

1. जो संपूर्ण ब्रह्मांड का सर्वज्ञाता है!

2. संसार के प्रत्येक जीव के अलग-अलग संस्कार को जो एक एक जीव के अंदर पकड़ कर बैठे हैं!

प्रत्येक जीव के स्वभाव को जो स्वयं पकड़ कर रखा है!

3. जिन्हें संसार के प्रत्येक जीव के पल-पल की खबर है!

4. जिनको कोई नहीं जान सकता और जो सबको जानते हैं!

5. जो प्रत्येक जीव की चेतन शक्ति है और वही जो सबका आनंद है!

6. अनंत ब्रह्मांड जिनके एक-एक रोमकुप में लटका हुआ है! संपूर्ण अनंत ब्रह्मांड जिनके अधीन है!

जिनकी मुट्ठी में है!

मुट्ठी खोल दिया तो ब्रह्मांड प्रकट हो गए मुट्ठी बंद कर दिए तो समस्त ब्रह्मांड का विनाश हो जाता है! अनंत ब्रह्मांड जिनके इशारे से ही सृजन विलोपन होते हैं!

7. जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है अर्थात आत्मा और जो विराट से भी विराट है! अर्थात ज्योति स्वरूप विराट ब्रह्म!

8. चार वेद 18 पुराण समस्त ज्ञान हासिल करके भी अपनी बुद्धि द्वारा जिसको कभी जाना नहीं जा सकता!

9. जिनकी माया से पार पाना जिनकी कृपा के बिना संभव नहीं!

10. जो सबको देख रहा है जिसको कोई नहीं देख सकता!

स्वयं अपने आप को परमात्मा फैला दिया है अखिल ब्रह्मांड में

एक परमात्मा स्वयं अपने आप को इस पूरे ब्रह्मांड में फैला दिया है! चारों तरफ जो कुछ भी दिख रहा है सब वही है! कुत्ते बिल्ली कीड़ा मकोड़ा पशु पक्षी जीव जंतु मनुष्य समुद्र सूरज चांद तारे जो इस अखिल ब्रह्मांड में जो भी दिख रहा है सब वही एक ब्रह्म है परमात्मा से रहित कुछ भी नहीं है! एक पत्ता उनसे अलग नहीं है! एक जीव उनसे अलग नहीं है! धरती के कोने कोने में देखिएगा चींटी मौजूद है! यही परमात्मा की सर्वव्यापकता का प्रतीक है! अनंत ब्रह्मांड में एकमात्र वही है दूसरा और कोई नहीं! उनकी ही सत्ता है! जहां तक नजर जा रही है और जहां तक नजर नहीं जा सकती चारों तरफ एक वही परमात्मा है! अपने आप को सत्य संकल्प द्वारा 84 लाख योनियों में फैला दिया है! इसीलिए उनको जगदीश कहते हैं जगत में जो कुछ भी दिख रहा है ध्वनि, रूप, रंग, रसना जो भी प्रतीत हो रहे हैं सब वही है! परमात्मा ही सब कुछ है और सब कुछ ही परमात्मा है!

बुद्धि का सम्राट ही परमात्मा है!

गीता- मैं बुद्धिमानों की बुद्धि हूं!

प्रत्येक प्राणी का जीवन उनके बुद्धि के अनुसार चल रहा है बुद्धि नहीं तो कुछ भी नहीं! जीवन का संचालक तो बुद्धि ही है! जैसे ट्रेन को ऑपरेट करने वाले कोई ड्राइवर होते हैं एयरप्लेन को ऑपरेट करने वाले कोई ड्राइवर होते हैं! ऐसे ही जीवन को चलाने वाला ड्राइवर बुद्धि है!

प्राणियों का जीवन तो बुद्धि के अनुसार चल रहा है लेकिन इस रहस्य से स्वयं बुद्धि भी बेखबर है!

पूरी सृष्टि के संपूर्ण प्राणियों की बुद्धि उस सर्वशक्तिमान निराकार परमात्मा की बुद्धि से चल रही है! एक क्षण को वह बुद्धि को घूमा कर क्या से क्या करवा देते हैं? संसार के समस्त प्राणियों की बुद्धि में एक परमात्मा की ही सत्ता है! बुद्धि उनसे है वह बुद्धि से नहीं! बुद्धि ही चेतन शक्ति है और वेद कहते हैं यही चेतन शक्ति ही ब्रह्म है!

परमात्मा क्षण भर में मति भ्रष्ट करके क्या से क्या करवा देते हैं? संसार जगत जो देख रहे हैं उनके एक अंश मात्र का ही खेल है! उनकी शक्ति तो विराट है जगत एक अंश मात्र है! संसार के संपूर्ण प्राणियों की बुद्धि मिलकर एक बूंद बनता है,, यही बूंद मिलकर एक समुद्र बनता है वह विराट समुद्र भी परमात्मा का एक अंश मात्र है! समुद्र भी पार नहीं पाया!

परमात्मा की बुद्धि तो विराट से भी महाविराट है! अनंत ब्रह्मांड जिनकी बुद्धि के इशारे पर चलते हैं,, अनंत तारे,,, अनंत ग्रह, अनंत उपग्रह,, अनंत आकाशगंगा,,, इन सबके पास बुद्धि नहीं अपने से यह कुछ भी नहीं है अपनी चाल गति इनको नहीं पता! कब तक कितने चक्कर पूरा करना है! यह सभी जड़ है!

उस परम चेतन की बुद्धि से अनंत ब्रह्मांड चलते हैं!

वही परम शक्ति सुप्रीम पावर ही तो ब्रह्म है!

उनकी बुद्धि का कोई आज तक पार नहीं पाया बड़े-बड़े ज्ञानी,, ऋषि मुनि प्रकांड विद्वान उनकी माया को कोई नहीं जान सका परमात्मा की माया ऐसी विचित्र है! उनकी लीला उनकी माया आज तक कोई नहीं समझ पाया!

ऐसी है उनकी प्रबल माया! इसलिए ज्ञानीजनों ने भक्तों ने एक ही बात कही है-

तेरी माया का ना पाया कोई पार लीला तेरी तू ही जाने!

बुद्धि का सम्राट ही परमात्मा है!

परमात्मा जीव के इंद्रियां, मन, बुद्धि में समाया है!

कौन अपनी आंखों से क्या देख रहा है कौन अपने कानों से क्या सुन रहा है कौन अपने इंद्रियों से क्या ग्रहण कर रहा है मन से कौन क्या सोच रहा है किसकी बुद्धि में क्या चल रहा है? परमात्मा को सब मालूम है एक-एक चीजों के ज्ञाता है आंख जो भी देखती है उसे भगवान भी देखते हैं परमात्मा जीव के इंद्रियां मन बुद्धि में समा गया है!

भगवान अंदर हैं इसका प्रमाण

भगवान हमारे अंदर हैं इसका क्या प्रमाण है सबूत क्या है?

1. हमारी सांसे चल रही है! प्रतिपल अप डाउन हो रही है!

2. धड़कन धक धक हो रहा है!

3. इंद्रिय मन बुद्धि में चेतन शक्ति है!

4. सुबह आंखें कौन खोलता है? कैसे अपने आप खुल जाती है? एक समय आएगा आंखें नहीं खुलेगी! सदा के लिए बंद हो जाएगी चाह कर भी नहीं खोल पाएंगे!

5. गले से आवाज ध्वनि कहां से निकलती है? कहां से आती है पहले तो समझना होगा ध्वनि क्या है? तब समझ आएंगे कि वह कौन है? तरंगों का सम्राट!

जीवन शक्ति क्या है?

जीवन का नियंत्रक ही परमात्मा है!

सुबह कौन उठाते हैं आपको? पहले तो इसी को सोचो! एकांत में पल भर के लिए गहराई में जाकर विचार करो! मैं कैसे सुबह अपने आप उठ जाता हूं एक समय आएगा कि लोग उठाते उठाते थक जाएंगे! हम सुबह का दिन नहीं देख पाएंगे!

परमात्मा ही प्राणी को उठाते हैं और वही सुलाते हैं निद्रा अवस्था में वही ले जाते हैं और सुबह नेत्र को वही खोलते हैं मल मूत्र का त्याग वही करवाता है भोजन को वही पचाता है!

सांस वही चलाता है! धड़कन को धक-धक पंपिंग वही करता है! पूरे शरीर के कोने-कोने में रक्त का संचार एकमात्र वही करता है भोजन के दाने जो गले से निगलते हैं उसे वही निगलता है! अपनी शक्ति रोक देगा तो चाह कर भी नहीं निगल पाओगे! अंत समय गंगाजल लोग पिलाते हैं गले से नीचे नहीं जा पाता! अभी बड़े-बड़े चीज जा रहा है उनकी चेतन शक्ति से जा रही है!

15 इंद्रियां, मन, बुद्धि, चित यह सब परम चेतन की सूक्ष्म चेतन शक्ति है! बैठे-बैठे सोच रहे तो उनकी ही शक्ति से,,, संसार को आंखों से देख रहे हैं उनकी शक्ति से,, कानों से शब्द सुनाई दे रहा है उनकी शक्ति से स्वाद इंद्रिय,, सुगंध दुर्गंध इंद्रियां कार्य करती है उनकी ही शक्ति से!, सब कुछ परमात्मा करते हैं!

प्राणी ने अज्ञान वश समझ लिया है कि मैं कर रहा हूं यही कर्तापन अहंकार ही माया है! जो सत्यता को छुपा कर रखी है! अहंकार से बाहर निकलने पर ही परमात्मा को देखा जा सकता है जो हमारे अंदर प्रत्यक्ष विद्यमान है!

@ जयप्रकाश वैष्णव

आदि जगतगुरु शंकराचार्य

श्री राधे हरे कृष्ण

परमात्मा अपने अंदर है कहीं बाहर नहीं!

अपने अंदर के ब्रह्म को कब जानेंगे? शरीर छूट जाने के बाद तो केवल पछताना हीं पड़ेगा! यदि स्वयं को नहीं जान पाया!

तीर्थ धाम जाते हो जिससे मिलने वह स्वयं आपके अंदर है! जहां पर हो वही उनका ध्यान करो! जीव और ब्रह्म के बीच तनिक भी दूरी नहीं! जितना करीब जीवात्मा की यह शरीर नहीं है उससे कई अधिक जीवात्मा के करीब परमात्मा है! शीघ्र ही जान लीजिए! मन को इधर-उधर भटकाना छोड़ दीजिए! चित् को स्थिर करके शांत करके उनका एकांत में एक जगह बैठकर प्रेम भाव से उनका ध्यान करें! वहीं परमात्मा है! जो परम शांत स्वरूप है चित् को शांत करने पर ही उनकी प्राप्ति होती है!

इधर-उधर भटकने से भगवान कभी नहीं मिलेंगे!

चंचल मन को जब तक जानेंगे नहीं उसको समझेंगे नहीं! तब तक लाख तीर्थ करें लाख पूजा करें! उसका कोई महत्व नहीं! मन को तीर्थ धाम जब तक नहीं बनाएंगे!

एक है जो तीर्थ धाम जाकर माया का चिंतन करता है और एक है जो घर पर बैठकर वृंदावन बिहारी जी का चिंतन करता है! तीर्थ धाम वहीं पर है जहां जिस जगह पर भगवान का चिंतन होता है! जहां भगवान का चिंतन हुआ उनका स्मरण हुआ वहीं तीर्थ धाम है! 90% मनुष्य तीर्थ यात्रा भगवान के धाम मौज मस्ती के लिए जाते हैं भगवान से मिलने के लिए नहीं! भगवान ने कहा है जहां पर मेरा चिंतन हुआ वही मेरा तीर्थ धाम है! मन की शैतानी जब तक मिटेगी नहीं! कुछ भी करें चाहे 24 घंटे तपस्या कोई काम की नहीं! पहले अपनी मन की चंचलता को मिटाओ!

उसके कहे अनुसार ना चलो वह आपको सीधे नरक में गिराएगा! मन को अपने वश में कीजिए!

कहीं जाने की आवश्यकता नहीं! जिनके दर्शन प्राप्त करने के लिए लंबी लंबी जगह जाते हो इधर-उधर भटकते हो! वह अपने पास है एक सेकंड भी अपने से दूर नहीं! अपने अंदर के परमात्मा को जब तक जाना नहीं तब तक तीर्थ जाना व्यर्थ है! पहले इसे जानिए! कि परमात्मा मुझसे दूर है ही नहीं! जहां मैं हूं वही मेरा ब्रह्म है! जब रात को गहरी नींद में सो जाता हूं बिल्कुल अकेले! कोई नहीं होता उस समय मेरे पास तब उस समय पूरी रात भर मेरी सांसों में कौन पहरा देता है! सन्यास धारण करके भी माया का चिंतन करना संन्यास नहीं है उसे भी गृहस्थ की श्रेणी में माना जाता है! माया में रहकर सबके बीच रहकर मन को संन्यास बनाना! ऐसी साधना से भगवान मिलेंगे! संसार छोड़कर जाने से नहीं! जब कर्म सन्यास की साधना कर लेंगे! वही परम पद मोक्ष का अधिकारी होता है!

जैसे कमल पुष्प कीचड़ में रहती है परंतु कीचड़ से अलग रहती है श्रीमद् भागवत गीता में गृहस्थियों के लिए भगवान श्री कृष्ण अपनी शीघ्र प्राप्ति का एकमात्र उपाय बताया है!

कर्म सन्यास की साधना! अनासक्त भाव से अपना कर्म करते हुए प्रत्येक क्षण परमात्मा का स्मरण बना कर रखना यही भगवत प्राप्ति का सबसे सरल मार्ग है!

@ जयप्रकाश वैष्णव

स से शंकर भगवान नष्ट करने वाला

स से शंकर भगवान

1. स से संसार

2. स से सांस

3. स से शरीर

तीनों पल-पल नष्ट हो रहे तीनों को नष्ट करने वाला

स से भगवान शंकर है!

विराट सृष्टि रचना कैसे हुई?

विराट सृष्टि रचना कैसे हुई? जब कुछ नहीं था तब क्या था? आईए जानते हैं पूरी विस्तार से-

कदापि भूल न करें भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण जी को समझ बैठे हैं भगवान श्री कृष्ण बाद में नहीं आए हैं पहले से शाश्वत एक वही थे ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी अस्तित्व में बाद में आए हैं पहले यह जानना होगा भगवान श्री कृष्ण कौन है? जिससे तीनों लोको के समस्त देवी देवता अनंत ब्रह्मांड, त्रिदेव, योग माया, प्रकृति,, शक्तियों का महा

सम्राट दो परम शक्ति सदाशिव, और महाविष्णु,, अक्षर ब्रह्म सब उन्हीं से उत्पन्न होती है और अंत में वही पूर्ण ब्रह्म में विलीन होती है! प्राकृतिक महाप्रलय के समय एक परम तत्व शेष बचता है!

ब्रह्मवैवर्त पुराण,, प्रकृति खंड परब्रह्म परमात्मा का स्वरूप वही श्री कृष्ण है!

भगवान श्री कृष्ण के रहस्य

भगवान श्री कृष्ण के रहस्य जानने के लिए 18 पुराणों में यही एकमात्र ऐसा पुराण है! ब्रह्मखंड और प्रकृति खंड रहस्यों से भरा है! एक बार इसका अध्ययन अवश्य करें! परब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण के रहस्य यहां मालूम चलेंगे!

और श्रीमद् भागवत गीता अक्षर ब्रह्म योग इसमें भी भगवान ने बताया है अपने स्वरूप का वर्णन श्रीमद् भागवत गीता में प्रत्यक्ष रखा है! त्रिगुणात्मक प्रकृति योग माया और जीव माया का रहस्य जानना है तो यह गीता अध्याय 13-18 में मिलेंगे! श्री कृष्ण का रहस्य ब्रह्म संहिता,, गर्ग संहिता इसमें मिलेंगे!

18 मे से 6 प्रमुख पुराण कौन-कौन से हैं? इन छह पुराण को सबसे ऊंचा स्थान प्राप्त है!

1. स्कंद पुराण! 2. ब्रह्मवैवर्त पुराण! 3. पद्म पुराण! 4. श्रीमद् भागवत महापुराण! 5. शिव महापुराण! 6. श्रीमद् देवी भागवत!

मैं ही मैं हूं दूसरा कोई नहीं- गीता

श्रीमद् भागवत गीता

मैं ही मैं हूं दूसरा कोई नहीं,, मेरे से रहित कुछ भी नहीं इस भौतिक जगत में जो कुछ भी दृश्यमान है वह सब मैं ही हूं!

सर्वं खल्विदं ब्रह्मम् -

"सब ब्रह्म ही है"

(छान्दोग्य उपनिषद ३/१४/१- सामवेद),, सबसे अंत को देखिए इसमें कुछ महत्वपूर्ण चीज दिखाया गया है!

सर्वोच्च आत्मा- परमात्मा का वास्तविक स्वरूप

परमात्मा का वास्तविक स्वरूप एकरूप, शान्त, निर्भय और विशुद्ध ज्ञानमय है। वह माया के मल से रहित है, संसार की विषमताएँ उसमें नहीं हैं। परमात्मा सत् और असत् दोनों से परे है। उस तक वैदिक या लौकिक शब्द नहीं पहुँच सकते, न कर्मों के फल उसे छू सकते हैं। औरों की तो बात ही क्या? माया भी परमात्मा के सामने टिक नहीं सकती, लज्जित होकर भाग जाती है। महात्मा लोग उसे दुःखरहित, अनन्त, आनन्दमय ब्रह्मस्वरूप अनुभव करते हैं। भगवान् सभी कर्मों के फल देने वाले हैं।

इस शरीर के तत्त्वों के अलग हो जाने और शरीर के नष्ट हो जाने पर भी, उसके भीतर स्थित अजन्मा पुरुष नष्ट नहीं होता।

ब्रह्माजी आगे कहते हैं, "मैंने तुम्हारे समक्ष उन सर्वशक्तिमान श्रीहरि का संक्षेप में वर्णन किया है, जिन्होंने अपनी इच्छा से इस ब्रह्माण्ड की रचना की है। कारण और प्रभाव, सत्ता और अनस्तित्व जो भी है, वह भगवान से अलग नहीं है।

फिर भी भगवान इन सबसे अलग भी हैं। भगवान ने मुझे जो शिक्षा दी है, वह यह 'भागवतम्' है। इसमें भगवान की दिव्य महिमा का संक्षिप्त वर्णन है। तुम्हें इसका विस्तार करना चाहिए। इसका वर्णन इस प्रकार करना चाहिए कि सभी के मन में भगवान श्रीकृष्ण के प्रति प्रेममयी भक्ति जागृत हो। जो लोग भगवान की अचिन्त्य माया की कथा का वर्णन करते हैं, सुनते हैं या उसका अनुमोदन करते हैं, उनका मन कभी भी इससे मोहित नहीं होगा।"

भगवान ने कभी अहंकार नहीं की

आप एक छोटा सा घर बनाते हैं तो जन-जन को बताते हो यह घर मैंने बनाया है छोटी सी नौकरी करते हो तो लोगों को बताते हो मैं यह पद में हूं कक्षा में प्रथम आ जाते हो तो लोगों को बताते हो मैं क्लास में फर्स्ट आया हूं आपकी बेटी अच्छे घर में चली जाती है तो लोगों को बताते हो मेरा दामाद बहुत अच्छे हैं अच्छे पद में हैं उनके यहां ऐसा है वैसा है! थोड़ी सी अध्यात्म ज्ञान मिल गई तो लोगों को जताते हो मैं ज्ञानी हूं भक्ति करते हो तो लोगों को यह जताना चाहते हो कि मैं भक्त हूं तुम्हारा हर चीजों में मैं छिपा हुआ है इतनी बड़ी दुनिया अनंत ब्रह्मांड को सूरज चांद तारे को पृथ्वी चंद्रमा को मैंने सिर्फ अकेले बनाया है मेरे संकल्प मात्र से बना है!

इस जगत में कहीं पर लिखा हुआ है कि संसार को मैंने बनाया है! समुद्र पर्वत पृथ्वी सूरज चांद कहीं भी लिखा है कि इसे भगवान ने बनाया है! इतनी बड़ी दुनिया बनाकर मैं गुप्त रूप से छिपा हूं कहीं भी जगह लिखा नहीं है कि इसे मैंने बनाया है! तुम जो कुछ भी हो मेरे से ही हो तुम अपने से कुछ भी नहीं तुम्हारा अहंकार करना गलत है! जब मैं सर्वशक्तिमान होकर कभी अहंकार नहीं किया तो फिर तुम क्यों करते हो? बड़ा वही है जो बड़ा होकर भी अपने बड़ापन का अहम ना रखें! इसलिए मुझ तक तुम पहुंचना चाहते हो तो मेरे जैसे तुम्हें बनना होगा!

भगवान का शाश्वत नियम

जो भगवान की जितनी अधिक भक्ति करता है उसे उतना ही अधिक दुख और कष्ट मिलता है! भगवान अपने भक्त को दुख अवश्य देते हैं पर साथ नहीं छोड़ते हर पल हर घड़ी श्री कृष्ण तैनात रहते हैं और जो भगवान की भक्ति नहीं करते संसार की माया में लिप्त रहते हैं उनके जीवन को भगवान सुख समृद्धि से भरते हैं परंतु साथ नहीं देते भगवान का कानून है नास्तिक को सुख और आस्तिक को दुख देना! !

भगवान का साथ चाहिए या उनकी संपत्ति चाहिए! साथ मिलेगा तो जन्म जन्म तक संपत्ति मिलेगी तो केवल इसी जन्म तक! आगे 84 में जाओगे तो मिला हुआ संपत्ति क्या साथ देगी स्वयं विचार करो भगवान का साथ चाहिए या उनकी प्रॉपर्टी चाहिए!

भगवान कौन है?

भगवान कौन है? एक महान जजमेंट है न्याय करता अगर किसी को कहा जाए चलो फैसला करो दो लोगों की लड़ाई के बीच में बताओ कौन गलत है? तो वह किसी न किसी का पक्ष लेकर ही बताएगा! क्योंकि वह किसी न किसी के वश में है भगवान पक्षपात से परे है! अनंत ब्रह्मांड उनके ही वश में है वह किसी के वश में नहीं! अगर पूछा जाए आपको की बताओ आपके अंदर ईर्ष्या है या नहीं तो कहेंगे नहीं है! लेकिन परमात्मा के आगे यह सब चलाकी चतुराई नहीं चलती! वहां ईर्ष्या कपट लालच वासना सब सामने आता है! शरीर से जब जीव निकलती है उसके बाद उनके पूरे जीवन के किए हुए कर्म लाइव दिखाया जाता है!,, गरुड़ पुराण कह रहे!

भगवान के आगे किसी की नहीं चलती

कभी विचार करो सड़क पर जो कुत्ते इधर-उधर भटकते रहते हैं क्या उन्हें शौक था कुत्ता बनने का कि भगवान को शौक था उसे कुत्ता बनाने का ,, ना भगवान को शौक था ना उस जीव को कुत्ता बनने का शौक था! अगर आपको पूछा जाए कुत्ते योनि में जाना है आपको तो कहेंगे नहीं पर क्या आपकी चल जाएगी! ऐसे ही उसने भी कहा था मुझे नहीं जाना है पर क्या चल पाया उनका,, कुत्ते बिल्ली सूअर पशु पक्षी इसमें जाने का शौक किसी को नहीं रहता! अब विचार करो ऐसा क्या चीज है जो उनको कुत्ते योनि में जाने पर दर-दर के ठोकने खाने पर मजबूर कर दिया! कुछ है जिसे जानना होगा इसके आगे ना भगवान की चलती है ना जीव की जानिए स्वयं वह क्या है?

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥ १४ ॥

भगवान श्री कृष्ण की माया इतनी प्रचंड शक्तिशाली है! की कोई उनकी माया से नहीं बच पाया! भौतिक संसार जो दिख रहा है वह उनकी गुण माया है! भगवान की दो प्रकार की माया है एक माया संसार और एक माया जो प्रत्येक जीव के अंदर चढ़ा दिया है! मन बुद्धि चित अहंकार यही भगवान की दूसरी माया है! वासना क्रोध लालच अहंकार ईर्ष्या कपट राग द्वेष क्यों उत्पन्न होते हैं? यह सब इसी माया का प्रभाव है! संसार से भाग जाओगे! अंदर की माया से कैसे बचोगे? यह तो मरेगी भी नहीं! इसीलिए भगवान ने कही है 7/14- मेरी शरण में आओ तब पार होगे!

परमात्मा बुद्धि से सर्वथा परे है

बुद्धि दुनिया की सारी चीजों को जान सकती है समझ सकती है क्योंकि बुद्धि बनी ही माया से है इसीलिए माया के विषयों को बुद्धि झट से समझ जाती है! कोई माया की बात कर रहा हो कैसे बुद्धि वहां पहुंच जाती है और भगवान का नाम सुनते ही वहां से भाग जाए! क्योंकि भगवान का विषय उसे समझ नहीं आती! मन,, बुद्धि के अनुसार चलता है जो चीजों को बुद्धि समझ पाती है मन उसी तरफ ध्यान देता है! बुद्धि भगवान के विषय को नहीं समझ पाती इसलिए मन भी भगवान से दूर रहता है! भगवान इसीलिए नहीं सुहाता क्योंकि परमात्मा बुद्धि से सर्वथा परे है! वेद कहते हैं परमात्मा बुद्धि की सीमा से बाहर है! उन्हें इंद्रियां मन बुद्धि द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता! जब स्वयं उस करुणा सिंधु की कृपा होती है तब यह बुद्धि उनको जान पाती है!

परमात्मा एक द्वैत फैक्ट्री है

परमात्मा एक ऐसा द्वैत फैक्ट्री है कारखाना! जहां से अलग-अलग रूप,, अलग-अलग आवाज अलग-अलग प्रारब्ध,, अलग-अलग नमूना धरती पर बनकर आता है!

उस फैक्ट्री से जो भी बनकर आता है धरती पर सब कुछ अलग-अलग बनकर आता है! दो पत्ते भी एक समान नहीं होते, दो नाखून भी एक समान नहीं होते, किसी का रूप एक जैसा नहीं होता किसी की आवाज एक जैसी नहीं होती! परमात्मा एक ऐसा कारखाना है जहां से अनंत चेहरे उत्पन्न होते हैं और मिट भी जाते हैं फिर भी वह चेहरा दोबारा नहीं बनता जो मिट गए! जब तक उनकी सृष्टि चलेगी तब तक अलग-अलग रूप अलग-अलग निर्माण होते रहेंगे! उनके यहां खत्म हो गई ऐसा सिस्टम नहीं रहता! उनके यहां अनंत रचना होती है! समाप्त होने का कोई विकल्प ही नहीं! क्योंकि वह फैक्ट्री कारखाना ही शाश्वत है! जो कभी नष्ट नहीं होती!

जहां पर सांसे हैं वही ब्रह्म है!

जहां-जहां जगह जिस जिस जगह सांसे चल रही है वहां वहां प्रत्यक्ष ब्रह्म है! ब्रह्म का शरीर में रहना ही सांसों का चलना है जब तक है तब तक सांस चलेगा! शरीर से गए तो सांस बंद! ब्रह्म का दर्शन करना है तो सांसों का दर्शन करो कहां-कहां चल रहा है किस-किस जगह चल रहा है जहां सांसे हैं वही ब्रह्म है! अपने श्वास का दर्शन करना ही ब्रह्म का दर्शन करना है! परमात्मा प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान कहीं नहीं केवल सांसों में है वेदों में ब्रह्म को प्राण स्वरूप बताया है प्राण शक्ति ही ईश्वर है! उनकी उपस्थिति में ही शरीर में पांच प्रकार के प्राण कार्य करते हैं! प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान! **ब्रह्म है शरीर में तो प्राण है ब्रह्म नहीं तो प्राण नहीं!**

जीव आनंद क्यों चाहती है?

बताओ बर्फ की चिंगारी ठंडी रहेगी या गरम! ठंडी रहेगी और ज्वालामुखी की चिंगारी गर्म या ठंडी! गरम रहेगी! परमात्मा की चिंगारी कैसे रहेगी? जो गुण परमात्मा का है वही गुण चिंगारी की भी होगी! एक विराट परमात्मा से अनंत चिंगारी उत्पन्न हुई है! क्या आप जानते हैं वह चिंगारी क्या है जीव! संसार के प्रत्येक जीव उस विराट परब्रह्म परमात्मा का शाश्वत अंश है! परमात्मा अविनाशी इसलिए उनका अंश जीवात्मा भी अविनाशी! ईश्वर अंश जीव अविनाशी,,, चेतन अमल सहज सुख राशि!! परमात्मा आनंदकंद सच्चिदानंद का अंश आत्मा आनंद स्वरूप है! इसीलिए संसार के प्रत्येक जीव आनंद चाहती है! हम सब परमात्मा के शाश्वत अंश हैं! अपने अंशी को प्राप्त करने पर ही आनंद/तृप्ति मिलेगी!

आपके अंदर का ब्रह्म देख रहा है!

जो कुछ भी आप इन आंखों से दृश्य देख रहे हो उसे आप नहीं,, आपके अंदर का ब्रह्म देख रहा है जो कुछ भी कानों से शब्द सुन रहे हैं उसे आप नहीं आपके अंदर का ब्रह्म सुन रहा है! सबसे बड़ी नादानी मूर्खता अज्ञानता वह है जो निश्चय कर लिया है कि मुझे कोई नहीं देख रहा जैसी मर्जी आए वैसा करो!

ऐसी भूल किया तो केवल पछताना ही पड़ेगा! यह कहो कि मैं नहीं देख पा रहा उनको! उनकी नजर संपूर्ण ब्रह्मांड के प्रत्येक जीव पर है तुम नहीं देख पा रहा तुम्हारी गलती उनकी नजरों से कोई नहीं बचा ना कोई बच पाएगा! एक क्षण भी कोई उनसे रहित नहीं! हमें देखने वाला हमारा सर्व दृष्टा कहीं बाहर नहीं हमारे अंदर ही छिपा हुआ है हमारा साक्षी वही ब्रह्म है!

प्रत्येक शरीर में ब्रह्म का वास है

प्रत्येक शरीर में ब्रह्म का वास है चाहे कुत्ते का शरीर हो चाहे चींटी का,चाहे मच्छर का चाहे कुत्ते बिल्ली का जितने भी शरीर धारी जीव देख रहे हैं जगत में उस शरीर के अंदर ब्रह्म का वास है! उसका सबूत क्या है? ब्रह्म के शरीर में रहने से ही सांसे धड़कन चलते हैं! वेद कहते हैं शरीर में ब्रह्म की उपस्थिति से ही श्वास प्रतिपल अप डाउन होते हैं! ब्रह्म शरीर के अंदर प्रत्यक्ष है उनकी ही शक्ति से प्राणवायु ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर धकेलता है! धड़कन धड़क रहा है ब्रह्म की शक्ति से पूरे शरीर मन बुद्धि में चेतन शक्ति है! रक्त की धार कोने-कोने में पहुंचती है ब्रह्म शरीर में है इसलिए यह सब हो रहा है! उनके चले जाने पर सारी क्रिया बंद हो जाती है! प्राण शक्ति (चेतन) ही ब्रह्म है!

परम सत्ता की मर्जी

परम सत्ता की मर्जी के बिना इस शरीर में रक्त इधर का उधर नहीं जा सकता उनके आदेश से ही शरीर में रक्त बहता है! सांस धड़कन प्राण मन बुद्धि सब उनकी शक्ति से चलता है!

जगत में जितने प्राणी है वह कौन है?

संसार में जितने चारों तरफ जो प्राणी ही प्राणी देख रहे हो कौन है वह सब? परमात्मा के शरीर का एक-एक प्राणी उनके शरीर के एक-एक रोम छिद्र हैं! उस विराट परमेश्वर का शरीर इतना विशाल है कभी उनका पार नहीं पाया जा सकता! उस परमात्मा महा विष्णु के विराट शरीर के मात्र एक रोमकुप मे अनंत ब्रह्मांड विचरण करते हैं! समस्त ब्रह्मांड हम सब उनके ही अंदर हैं तो कहां से परमात्मा को देख पाओगे! जगत ब्रह्मांड सब उनके ही अंदर है! एक चींटी को हाथी के पीठ पर बिठा दिया किसी ने! चींटी कहती है कहां हैं हाथी? जरा हमें दिखाओ? उसे पता नहीं वह उनमें ही बैठी है ऐसे ही संसार को नहीं पता यह संसार उनमें ही बैठा हुआ है! चींटी को जैसे हाथी की खबर नहीं ऐसे ही प्राणी को परमात्मा की खबर नहीं! हाथी परमात्मा है और हम सब चींटी!

संसार में जितने भी प्राणी देख रहे हो चारों तरफ प्राणी ही प्राणी जान लीजिए वह कौन है? एक एक प्राणी उस विराट परमात्मा के शरीर के एक-एक रोम छिद्र है! शरीर के मात्र उनके एक छिद्र में ही संपूर्ण ब्रह्मांड समाया है! माया और जीव,,, ब्रह्म के अंदर ही विचरण करते हैं! भगवान क्यों नहीं दिखता पहले कारण जान लीजिए- सब कुछ उन्हीं के अंदर है! हम सब उन्हीं के अंदर हैं! परमात्मा विराट से भी विराट है और सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है सूक्ष्म परमात्मा प्रत्येक जीव के अंदर है और विराट ब्रह्म सबसे बाहर है! एक को पहचान लिए तो कल्याण निश्चित है चाहे अंदर का चाहे बाहर का!

बृहच्च तद् दिव्यमचिन्त्यरूपं सूक्ष्माच्च तत् सूक्ष्मतरं विभाति ।

दूरात् सुदूरे तदिहान्तिके च पश्यन्त्विहैव निहितं गुहायाम् ॥७॥

मुण्डकोपनिषद-3/1/7

भगवान क्यों दिखाई नहीं देते?

भगवान क्यों दिखाई नहीं देते?

एक चींटी को हाथी के पीठ पर बिठा दिया जाता है! उनसे यह कहकर की चलो मैं तुमसे हाथी से मिलवाने ले जा रहा हूं! किसी व्यक्ति ने चींटी को उनके पीठ पर बिठा दिया,,, चींटी कहती है कहां है हाथी दिखाओ मुझे,,, इधर मुझे कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा!

बस इसी प्रकार यह संसार ब्रह्मांड हाथी रूपी विराट परमात्मा के शरीर में एक छोटे से भाग में मौजूद है! परमात्मा विराट है! जिनके केवल एक रोम छिद्र में अनंत ब्रह्मांड विचरण करते हैं!

अनंत ब्रह्मांड की सीमा कहां तक फैली है? 94 अरब प्रकाश वर्ष तक केवल 1 ब्रह्मांड का क्षेत्र है! इसी आकार के बड़े-बड़े विराट अनंत ब्रह्मांड है! वह अनंत ब्रह्मांड परमात्मा का केवल एक रोम छिद्र है! जैसे हमारे शरीर के संपूर्ण भाग में एक-एक रोम छिद्र है! परमात्मा के केवल एक रोमकुप में अनंत ब्रह्मांड लटके हुए हैं!

परमात्मा का शरीर तो अनंत ब्रह्मांड से भी विराट है अनंत ब्रह्मांड तक जितने भी स्थान हैं सब परमात्मा का शरीर है हम सब उनके शरीर के अंदर में ही है! अनंत ब्रह्मांड उस विराट पुरुष के शरीर के अंदर मौजूद है!

परमात्मा अनंत ब्रह्मांड से भी विराट है जिनका कभी कोई पार नहीं पा सकता अगर कोई ब्रह्मांड से बाहर भी चला गया उनको देखने के लिए तब भी उन्हें नहीं देखा जा सकता क्योंकि वह विराट से भी विराट है! और सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है जो प्रत्येक जीव के अंदर मौजूद है ना सूक्ष्म को देखा जा सकता है ना विराट को! अपनी योग माया के द्वारा परमात्मा गुप्त रूप से प्रत्येक जीव के अंदर छिपे हुए हैं!

यहां समझिए विज्ञान सृष्टि के माध्यम से:-

अनंत ब्रह्मांड परमात्मा के अंदर है जिसमें से एक ब्रह्मांड,,, अनंत ब्रह्मांड के अंदर है,,, मिल्की वे आकाशगंगा उस एक ब्रह्मांड के अंदर है सौरमंडल (सोलर सिस्टम) उस 1 आकाशगंगा मिल्की वे के अंदर है,,, और एक छोटा सा ग्रह पृथ्वी उस सौरमंडल के अंदर है,,, और हम सब समस्त चराचर जीव इस पृथ्वी के अंदर है!

जैसे चींटी हाथी को नहीं देख पा रही ऐसे सूक्ष्म जीव,, विराट परमात्मा को नहीं देख सकती,,, क्योंकि प्रकृति ब्रह्मांड पृथ्वी सृष्टि के समस्त चराचर जीव सब उस परमात्मा के अंदर ही विद्यमान है!

हम सब उनके ही अंदर हैं तो कहां से उनको देख पाओगे? हम उनके अंदर हैं और वह हमारे अंदर हैं सूक्ष्म और विराट के बीच में जो कुछ भी है! उसे प्रकृति कह सकते हैं वही माया है!

जो सूक्ष्म और विराट का पता चलने नहीं देते जो उस परमात्मा को ढक कर रखते हैं सत्य को छिपा कर रखते हैं उनकी अनुभूति होने नहीं देती उन पर विश्वास होने नहीं देती उनसे सदा दूर रखती है उनकी तरफ जाने नहीं देती! वही माया है! मिथ्या को सत्य और सत्य को मिथ्या प्रतीत करवाती है!

कोई उनके विषय में अगर बताएगा भी तो विश्वास नहीं होगा क्योंकि वह विश्वास की शक्ति से परे है,,, उस परमात्मा का प्रतीत होने नहीं देती सदा जो उनसे दूर रखती है यह भगवान की माया उनकी तरफ जाने कभी देंगे ही नहीं!

जिस पर स्वयं उस परमात्मा की कृपा हो जाती है बस महान भाग्यशाली जीव वही उनका मार्ग पकड़ता है! वही उनको जान पाते हैं और उन्हीं को उस परम शक्ति पर विश्वास हो पाता है! क्योंकि उनकी प्रबल माया उस पर विश्वास होने देंगे ही नहीं! भगवान श्री कृष्ण ने माया के विषय पर गीता में एक ही बात कही है-

मम माया दुरत्यया |

@ जयप्रकाश वैष्णव

हरे कृष्ण श्री राधे

हमारा दृश्य केवल परमात्मा ही देखते हैं

हम जो कुछ भी दृश्य! अपनी इन आंखों से देखते हैं! उसे हम नहीं! अंदर में बैठा! ब्रह्म परमात्मा! उसे देखते हैं! अहंकार बुद्धि को आभान हो रहा! कि मैं देख रहा! वास्तव में हम नहीं!

केवल परमात्मा ही देखते हैं! जीव को अपने कर्मों का फल इसीलिए भुगतना पड़ता है! क्योंकि जिसने देखा है! वह तो छोड़ेंगे नहीं! नित्य हर पल निरंतर उनकी नज़रें प्रत्येक जीव पर लगी हुई है! वह परमात्मा कहते हैं प्राणियों से! चाहे मानिए या ना मानिए अपना कर्म फल तो तुम्हें भोगना ही पड़ेगा! अगर इस सत्य को मान लेगा! तो तुझे बचा लूंगा अन्यथा बड़े कष्ट भोगना पड़ेगा!

श्रीमद् भागवत गीता अलौकिक गुढ़ रहस्यमई ग्रंथ!

चार वेद भी गीता का पार नहीं पा सकते! अद्भुत अलौकिक गुढ़ रहस्य है जो 4 वेदों में भी नहीं है!

सबसे बड़ा रहस्यमई ग्रंथ!

श्रीमद् भागवत गीता

एक ही ग्रंथ में आपको सब मिलेंगे- सांख्य योग,, कर्मयोग,, ज्ञान योग,, भक्ति योग,, कर्म सन्यास,, अक्षर ब्रह्म योग,, त्रिगुणात्मक रहस्य,, मोक्ष सन्यास योग! श्रीमद् भागवत गीता उन्हीं को समझ आएंगे उन्हीं की बुद्धि समझ पाएगी जिस पर स्वयं श्री कृष्ण की कृपा है! उनकी कृपा के बिना उनके बताए हुए रहस्य को प्राकृतिक बुद्धि कभी नहीं समझ सकती! श्रीमद् भागवत गीता क्योंकि दिव्य विषय है,,, और दिव्य को प्राकृतिक ग्रहण नहीं कर सकती! दिव्य

विषयों को समझने के लिए दिव्य बुद्धि चाहिए जो केवल उनकी कृपा से ही प्राप्त हो सकता है! केनो उपनिषद 1-7 वेद मंत्र, परमात्मा इंद्रियां मन बुद्धि से परे है जब स्वयं भगवान की कृपा होती है तब वही उनको जान पाता है!

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन |

भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन || 26||,,, गीता 7/26

बस यही सत्य है जो भगवान ने इसमें कहे हैं-

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया |

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते || 14||

सब का मूल कारण यही एक है जो इस रहस्य को समझ पाया!

गीता 7/14

तीन अविनाशी तत्व जीव, ब्रह्म, माया

देखिए तीन अविनाशी तत्व जीव, ब्रह्म, माया का खेल कैसा है? एक माता के गर्भ में एक बच्चा है उस बच्चे के अंदर एक बैक्टीरिया है! वह बैक्टीरिया जिसके अंदर है क्या वह उनको जान सकता है! उनको नहीं पता कि मैं इस बच्चे के अंदर हूं! और उस बच्चे को नहीं पता कि मैं भी किसी के अंदर हूं! बस इसी प्रकार समझिए जो बैक्टीरिया है वह जीव है जो बच्चा है वह माया है! और बच्चा जिसके अंदर है माता श्री वह परमात्मा है! माया परमात्मा के अंदर और सृष्टि के समस्त चराचर जीव, माया के अंदर में है! क्या वह बैक्टीरिया उस माता को जान सकता है कभी नहीं! ऐसे ही जीव,, परमात्मा को नहीं जान सकता! क्योंकि उनकी माया ने प्रत्येक जीव को अपने कब्जे में कर डाली है! प्रत्येक जीव, माया के अधीन है!

भगवान क्यों दिखाई नहीं देते? परमात्मा विराट है!

एक चींटी को हाथी के पीठ पर बिठा दिया जाता है! उनसे यह कहकर की चलो मैं तुमसे हाथी से मिलवाने ले जा रहा हूं! किसी व्यक्ति ने चींटी को उनके पीठ पर बिठा दिया,,, चींटी कहती है कहां है हाथी दिखाओ मुझे,,, इधर मुझे कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा!

बस इसी प्रकार यह संसार ब्रह्मांड हाथी रूपी विराट परमात्मा के शरीर में एक छोटे से भाग में मौजूद है! परमात्मा विराट है! जिनके केवल एक रोम छिद्र में अनंत ब्रह्मांड विचरण करते हैं!

भगवान का ध्यान कौन करता है?

भक्त भगवान से पूछते हैं प्रभु! मैं ही आपका ध्यान करता हूं बाकी क्यों नहीं करते! भगवान कहते हैं क्योंकि तुम पर मेरी कृपा है बाकी लोगों पर मेरी कृपा नहीं है इसलिए संसार में भटक रहे हैं! जिस पर मेरी कृपा हो जाती है उनकी बंद

बुद्धि खुल जाती है तुम नहीं जानते जो मुझको याद नहीं करते मेरी भक्ति नहीं करते उनकी क्या दुर्गति होती है,,, मेरे भक्तों को छोड़कर बाकी सभी जीवात्मा को 84 लाख योनियों में डाल देता हूं! जिसको मैं चयन करके 84 राउंड में जाने नहीं देता! उनको अपनी कृपा से अपने रास्ते पर ला लेता हूं मैं ही उसको अपना स्मरण करवाता हूं और जिनका मन बुद्धि मुझ में नहीं लगता! भगवान कहते हैं,, बस समझ लीजिए वह सभी जीव 84 में जाने वाले हैं! बचेगा सिर्फ़ वही जिसने मेरी भक्ति की!

यजुर्वेद के एक उपनिषद कहते हैं-

वह परमात्मा संसार में अनेक रूप धारण करके स्वयं खुद द्वैत (अलग-अलग स्वयं बनकर) लीला कर रहा है! यह जगत कोई और नहीं जगदीश ही है! जीवन के रहते उनके इस रहस्य को समझ जाइए संसार ही ईश्वर है! जगत ही परमात्मा है! परमात्मा ही जगत है! जैसे माता श्री, मम्मी और Mothers तीनों एक एक ही है! इंग्लिश में Mothers, संस्कृत में माता श्री और हिंदी में मम्मी कहते हैं! ऐसे ही उस परमात्मा को अज्ञान की भाषा में संसार कहते हैं! और उनको ही ज्ञान की भाषा में परमात्मा कहते हैं! अज्ञानता में वही परमात्मा माया प्रतीत होते हैं! और वही ज्ञान में,,,परमात्मा रूप प्रकट हो जाते हैं!, ॐ श्री राधा

भगवान को इससे मतलब नहीं

हाथ क्या कर रहा है भगवान को इससे कोई मतलब नहीं! पैर क्या कर रहा है? भगवान को इससे भी मतलब नहीं, आंख क्या देख रहा है? भगवान को इससे भी मतलब नहीं, रसेंद्रीय कौन सा स्वाद ले रही है भगवान को इससे भी मतलब नहीं नासिका कौन सा सुगंध ले रही? भगवान को इससे भी मतलब नहीं! शरीर, इंद्रियां कहां पर है? क्या कर रहा है भगवान को इससे मतलब नहीं! जान लीजिए भगवान को सिर्फ किससे मतलब है? आपका मन पूरे 24 घंटे कहां-कहां जा रहा? क्या-क्या कर रहा? भगवान को बस इसी से मतलब है!

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।

मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥ 9/34,, गीता

इस शरीर रूपी यंत्र में दो पक्षी

यजुर्वेद के अनुसार, इस शरीर रूपी यंत्र में दो पक्षी का वास है प्रत्येक शरीर के अंदर दो पक्षी नित्य निरंतर विराजमान है एक पक्षी है करने वाला और दूसरा पक्षी है देखने वाला! समझिए ध्यान से उस ब्रह्म का घनघोर रहस्य!,,, करने वाला भी क्या-क्या कर रही है वह भी एक दिन भूल जाएगी! लेकिन देखने वाला कभी नहीं भूलते! जहां-जहां जीव की दृष्टि पड़ती है वहां-वहां नजर उस ब्रह्म का भी रहता है! यह समझना बहुत बड़ी नादानी होगी कि कोई मुझे नहीं देख रहा! चारों तरफ से उस जाल फैलाने वाले के हर पल नजर में हो! करने वाला भी एक दिन भोगने वाला बन जाएगी! अर्थात जीव! क्योंकि जो कुछ भी कर रहे सर्वदृष्टा की नजर के सामने कर रहे! जरा विचार करो आज मैं जो कुछ कर रहा, मृत्यु पश्चात किसको याद रहेगा! फिर मेरी दशा क्या होगी?

गर्भ में थे तब तो मालूम नहीं था

जब आप गर्भ में थे तब तो मालूम नहीं था कुछ भी नहीं मैं पुरुष की स्त्री यही पता नहीं था,,, मैं कहां जा रहा हूं यह भी नहीं पता शून्य अवस्था में थे दांत क्या होता है मुख क्या होता है? उस समय यह सब किसको मालूम था? भोजन पेट में कैसे जाएगा जब उसकी पिसाई होगी और पिसाई करने के लिए एक मशीन देना पड़ेगा यही दांत सारी चीजों को चबा चबा कर पेट में ले जाएगी! यह सब किसका प्लानिंग था? योजना किसकी थी? जब हमारी स्थिति बिल्कुल शून्य अवस्था थी! जिसने यह सब सोचा होगा उन्हीं ने तो यह सब दिया है! और यहां आकर उन्हीं परम दयालु को भूल गए! जिसको भी उन्होंने बनाया है उनकी एक-एक चीज की उनको चिंता है! फिर भी चिंता में डूबे रहते हैं चिंता छोड़कर बस उनका चिंतन करें! ,,श्री राधा

तीन शक्तियों से ही जीवन की रचना हुई है

शरीर भगवान शंकर हैं शरीर के अंदर जो जीवात्मा है वह भगवान विष्णु है और इन दोनों के मध्य जो कर्म करते हैं वह ब्रह्मा जी है! सतोगुण रजोगुण तमोगुण इन तीन शक्तियों से ही जीवन की रचना हुई है! भगवान शिव जी को कहां ढूंढ रहे यह शरीर ही वह प्रत्यक्ष है शरीरमेव शिव: ! शरीर के अंदर जो जीव है वह भगवान नारायण है विष्णुः आत्मानः अध्यक्षः देवः अस्ति। कर्म और प्रारब्ध जो है वह ब्रह्मा जी है! शरीर का सारा कारोबार बनाना मिटाना तमोगुण के अधिष्ठाता शिव जी के हाथ में होता है! इस शरीर के अंदर जो जीव है वह भगवान विष्णु की शक्ति है! समस्त सृष्टि त्रिगुण प्रकृति,, त्रिदेव में ही समाहित है!,, श्री राधा

ऐसा न समझना कि हमें कोई देख नहीं रहा!

ऐसा बिल्कुल भी न समझना! कि हमें कोई देख नहीं रहा! परमात्मा एक-एक प्राणी के अंदर विद्यमान है! उनकी माया इतनी प्रबल है इतनी प्रचंड है कि वह किसी को पता चलने नहीं देते की अंदर बैठे हुए हैं! जिस दिन पता चलेगा ना केवल पछताना हीं पड़ेगा! जो एक बार कर्म हो गया फिर दोबारा वह कभी नष्ट नहीं होता! जब तक हम उसे भोग ना लें! जन्म से लेकर मृत्यु तक एक एक सेकंड में हमने क्या-क्या किया! मृत्यु के बाद उन सब का हिसाब होगा! शरीर मर जाती है जीव नहीं मरती! उसे तो बस कष्ट भोगना रहता है! उसे तो अपना कर्म फल बार-बार जन्म लेकर चुकाना होता है! जन्म मृत्यु के चक्र में जीव अनंत काल तक भटकती रहती है! जब तक उसे मोक्ष ना मिले!

भगवान कौन है और हम कौन हैं?

ब्रह्म और जीव तीसरा तत्व माया,,,,,भगवान समुद्र है तो हम उस समुद्र का एक बूंद हैं भगवान एक विराट पर्वत है तो हम उस पर्वत के एक कंकड़ हैं! भगवान विभु है! तो हम एक अणु है सूक्ष्म है! भगवान संपूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त है तो हम केवल एक शरीर में ही व्याप्त हैं! भगवान भी अनादि हम भी अनादि,,,, भगवान मायातीत है माया से परे है! और हम मायाधीन है! जीव पर माया का शासन है प्रत्येक जीव,,माया के बंधन में है और परमात्मा माया रहित है! क्योंकि जीव और माया,, उस ब्रह्म की ही शक्ति है! हम अल्पज्ञ हैं और भगवान सर्वज्ञ हैं! परमात्मा एक परम चेतन प्रकाश है! उस प्रकाश का हम एक किरण है! प्रतिबिंब है! उनके ही प्रकाश से हम प्रकाशित हैं!

कोई नहीं बच पाया परमात्मा की नजर से

कोई नहीं बच पाया परमात्मा की नजर से,,,,,,,,,,

जन्म, जीवन और मृत्यु तीन जगह पर तीन त्रिदेव का वास है! जो उनका साक्षी है! ब्रह्मा, विष्णु और शंकर देखिए कैसे? कोई कितने भी छिपकर बचने की कोशिश करें पर भगवान से कोई नहीं बच सकता!

एक उदाहरण से समझते हैं-

देखो एक ट्रेन में एक यात्री बिना टिकट कटाए छुप कर बैठ गया था उसे पहुंचना है रायपुर से नासिक! उसे मालूम नहीं की तीन जगह पर तीन स्टेशन में 3 चेकर खड़े हैं एक जहां वह बैठा था वहां,,, दूसरा मध्य नागपुर स्टेशन में,,,,तीसरा सबसे आखरी नासिक स्टेशन में! पहले चेकर को देखा तो वहां से बच निकला फिर आगे चालाकी करके आगे और बैठ गया!

बीच में चेकर मिल गए अचानक तो उनको वहां से उतार दिया! फिर अपनी चतुराई से छिपकर और बैठ गया! अंतिम स्टेशन मे उन्हें तीसरा चेकर मिले! उसने कहा टिकट दिखाओ नहीं दिखाए,,, पता चला उनको तो उसे पीटते हुए उनकी तलाशी लिए उनका सामान जपती कर लिए और उन्हें पीट कर भगा दिया! वह बालक छिपने की कोशिश किया पर नहीं बच पाया! अब देखिए वह तीन चेकर कौन है? जहां वह बैठा था वह ब्रह्मा जी,,, जो बीच में मिले वह विष्णु जी! जो अंतिम स्टेशन में थे वह शिवजी हैं!

ऐसे ही प्राणी संसार में आ गया है और समझ रहा है कि मैं भगवान से बच जाऊंगा देखो हमारे जीवन में भी तीन स्टेशन है पहला स्टेशन जन्म दूसरा स्टेशन जीवन तीसरा स्टेशन मृत्यु!

जब जन्म लिए थे तो उस वक्त का साक्षी ब्रह्मा जी है! जन्म से लेकर मृत्यु तक के स्टेशन में भगवान विष्णु साक्षी है! पूरे मध्य में वही खड़े हैं अगर मान लो भगवान विष्णु से भी बच गए तो आखरी में तो बचने वाले नहीं! अंत में भगवान शिव जी खड़े हैं मृत्यु से गुजर कर तो जाना ही होगा सबको जाना होगा और मृत्यु ही तो शिवजी है और वहां भगवान भोलेनाथ को मुख दिखाना ही पड़ेगा!

चाहे कितने भी पाप कर्म करके बचने की हम कोशिश करें तीन स्टेशन पर तीन ब्रह्मा, विष्णु, शिव हमारे समक्ष खड़े हैं! इसलिए कोई लाख कोशिश करें फिर भी परमात्मा से नहीं बचा जा सकता!

परमात्मा कालातीत है माया से परे है

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।

भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ।।26।। गीता 7/26,,,,,

मैं सबको जानता हूं पर मुझे कोई नहीं जान सकता!

निर्गुण निराकार परमात्मा कालातीत है मायातीत है,,,, काल अर्थात समय और प्रकृति यानी माया से परे है! माया के कुछ भी चीज उनको ग्रहण नहीं कर सकती केन उपनिषद ऋग्वेद और यजुर्वेद भी इसका प्रमाण है! भगवान को वही देख सकता है वही जान सकता है जिस पर स्वयं भगवान अपनी कृपा करके उन्हें उनके इंद्रिय मन बुद्धि में दिव्य शक्ति प्रदान करते हैं तब वह परमात्मा को जान सकता है देख सकता है उन्हें महसूस कर सकता है जब तक उनकी कृपा नहीं होती जीव पर, तब तक वह संसार के मायाजाल में अनंत काल तक भटकती रहती है!

जब उनकी कृपा होती है तब उनको भगवान की चीज मालूम चलता है!

भगवान की त्रिगुणात्मक माया का इसका लंबा विस्तार है किसी ने प्रश्न किया था भगवान अपने आप को छुपा कर क्यों रखा है?

परमात्मा अपने को छुपा कर नहीं रखा है! तीन अविनाशी तत्व- ब्रह्म,,जीव और माया है पहले इसके रहस्य को जानना होगा! जिसमें एक तत्व है माया! यह एक ऐसा तत्व है जो परम सत्य परमात्मा को ढक कर रखी हुई है जैसे बादल सूर्य को ढक देती है! इसका मतलब यह तो नहीं की सूर्य नहीं है! होता है कुछ आवरण बादल रूपी पर्दा उनको ढक देता है ऐसे ही माया एक पर्दा है! जो परमात्मा को छिपा कर रखी है और संसार के प्रत्येक जीव,, अनंत जन्मों से माया के वशीकरण में है! जैसे जीव को भूत पकड़ लेती है तो वह वही हरकत करती है जैसा भूत उनको करवाता है! बस इसी प्रकार प्रत्येक जीव को माया रुपी भूत ने पकड़ ली है! इस कारण उन्हें परमात्मा दिखाई नहीं देते!

क्योंकि प्रत्येक जीव,, माया के आवरण से बंधी हुई है! इंद्रिय, मन, बुद्धि सब माया की बनी है! मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की गति केवल माया तक है उससे आगे नहीं जा सकती किसी की बुद्धि,,, क्योंकि बुद्धि ही माया से बनी है हमारे सभी सिस्टम प्राकृतिक है!

और यह सिस्टम परमात्मा तक नहीं जा सकती कभी नहीं! जब उनकी कृपा होती है तब एक गधा भी भगवान को जान सकते हैं! अगर उनकी कृपा नहीं हुई तो पूरा जीवन ऐसे ही व्यतीत हो जाएगा खाना, पीना, सोना इसी में ही जीवन गुजर जाएगा किसलिए हमारा जन्म हुआ था? क्यों आए कुछ पता नहीं चलेगा ऐसी है उनकी माया!

बड़े-बड़े ऋषि मुनि नहीं जान सके! कोई उनको जान ही नहीं पाएगा! भगवान ने स्वयं बताया है मेरी कृपा के बगैर कोई मुझको नहीं जान सकते!

जय श्री कृष्ण

कभी गलत चिंतन ना हो

कभी गलत चिंतन ना हो! सर्व द्रष्टा हमारी आंखों में,, इंद्रिय मन बुद्धि में बसा है!

शरीर में वही लाता है वही ले जाता है! और अंदर वह स्वयं मौजूद है! एक क्षण भी वह साथ नहीं छोड़ता! मच्छर योनि में जाओगे वहां भी वह साथ रहेगा! भगवान हमको नहीं देखते सदा याद रखो!

जो जो दृश्य हमारी आंखें देखती है उस उस दृश्य को भगवान भी देखते हैं! जो कुछ भी हम अपनी कानों से श्रवण करते हैं उसे भगवान भी सुनते हैं! जहां-जहां दृष्टि हमारी पड़ती है वहां वहां नजर भगवान की पड़ती है! मन, बुद्धि, चित में अंदर-अंदर क्या चल रहा है? भगवान उसको जानते हैं! जीव ही ब्रह्म का स्वरूप है,, जहां जीव है वहीं ब्रह्म है! जीव का साक्षी दृष्टा ही परमात्मा है! जीव के अंदर ही वह बैठा है!

परमात्मा हमारे मन में ही बसा है!

हमारा मन मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे चर्च,, मूर्ति पूजा में फंसा है और परमात्मा हमारे मन में ही बसा है! भगवान को लेकर इधर-उधर भटक रहे हैं! ना कहीं जाने की जरूरत ना कहीं भटकने की बस जहां सच्चे हृदय से अंतर मन से उनका ध्यान हो परमात्मा वही है! जितना निकट यह शरीर नहीं उससे भी निकट और करीब जीवात्मा के सबसे पास परमात्मा ही होते हैं! जीव और ब्रह्म शरीर के हृदय भाग में दोनों एक ही जगह पर रहते हैं! अनंत जन्मों से साथ है एक सेकंड भी परमात्मा जीव का साथ नहीं छोड़ते!

परमात्मा तो समदर्शी है प्रत्येक जीव के अंदर सर्वत्र विराजमान है पर उनका दर्शन उन्हीं को होंगे जिन्हें उनसे प्रेम है! जिनके अंदर उनके मिलन की व्याकुलता है! तीव्र इच्छा है!

समस्त प्राणी जिनके हाथों का कठपुतली है!

जब सब कुछ अपने हाथ में है हम यह मानते हैं कि हमारे हाथ में सब कुछ है तो फिर संसार में यह क्यों?

कौन है वह? संसार के समस्त प्राणी जिनके हाथों का कठपुतली है!

1. निर्धन होना कोई नहीं चाहता क्या किसी को शौक है गरीब होने का पर हो क्यों जाता है?

2. कोई नहीं चाहता कि मैं विकलांग हो जाऊं पर जन्म से क्यों हो जाता है?

3. कोई नहीं चाहता कि मैं नेत्रहीन वाणी हीन हो जाऊं पर जन्म से हो क्यों जाता है?

4. सब चाहते हैं कि मुझे सुंदर रूप मिले कुरूप ना मिले संसार में क्या सबको सुंदर रूप मिला है फिर भी कुरूप क्यों हो जाते हैं?

5. कोई नहीं चाहता कि मैं मर जाऊं फिर भी ना चाहने पर भी जबरदस्ती अपने भरा पूरा परिवार उसे दुनिया छोड़कर जाना पड़ता है! क्यों?

6. कोई नहीं चाहता कि मेरा मल मूत्र निकलना बंद हो जाए कभी-कभी यह निकलना बंद हो जाते हैं! प्राणी लाख कोशिश करता है बाहर करने की करते-करते थक जाता है फिर भी उनको बाहर नहीं कर सकता अंदर में जाम हो जाता है विचार करें क्यों?

7. कोई नहीं चाहता कि पानी हमेशा गिरता रहे फिर भी कई दिन लगातार तक छोड़ता नहीं! क्यों? कोई नहीं चाहता कि मुझे कष्ट मिले फिर भी कष्ट क्यों मिलता है? कभी-कभी हम सांस लेने की पुरी कोशिश करते हैं पर एक श्वास भी नहीं ले सकते क्यों? सांस थम जाती है!

8. सब चाहते हैं कि ड्यूटी करके मैं वापस अपने घर पहुंचूं अपने परिवार से कभी दूर ना जाऊं लेकिन कभी-कभी उसे वापस कभी घर आना नहीं होता! हमेशा के लिए अपना परिवार छोड़कर चला जाता है! विचार करें क्यों?

9. सब चाहते हैं कि मैं निरोगी रहूं मुझे कोई रोग ना रहे फिर भी शरीर में रोग कहां से पनप जाते हैं! कभी-कभी प्राणी इलाज करते-करते थक जाता है! बड़े-बड़े डॉक्टर के चक्कर लगाता है अमेरिका के डॉक्टर भी फेल हो जाते हैं उसका रोग ठीक नहीं होता! अंत में डॉक्टर कहते हैं अब हमारे हाथ में नहीं हमने पूरी कोशिश कर चुका है बाकी कोई है परम शक्ति! जिनके हाथ में है तो फिर क्या उपाय है किसने ऐसा किया विचार करें क्यों? कौन है वह जिसके आगे दुनिया में किसी की नहीं चलती?

10. सब चाहते हैं कि मैं मुझे इज्जत वाला काम मिले फिर भी इस जगत में गरीब मजदूर झाड़ू पोछा करने का शौक किसी को नहीं फिर भी करना पड़ रहा क्यों? धनवान होना सब चाहते हैं और परिश्रम संघर्ष दिन रात कर रहे हैं करते-करते दुनिया छोड़ दिए! फिर भी गरीबी खत्म नहीं हुआ! उनको सफलता क्यों नहीं? कौन है जिसने उनको यह करने पर मजबूर किया है? किसी को बिना चाहने पर सुख समृद्धि ऐश्वर्य प्राप्त हो जाता है उनको शीघ्र ही जानिए?

जिनके आगे ब्रह्मांड में किसी की नहीं चलती! शरीर के रोम रोम में उनकी ही सत्ता है उनकी मर्जी के बगैर शरीर के रक्त इधर का उधर नहीं हो सकता! उनकी ही शक्ति से शरीर में रक्त की धार बहती है कोशिका हड्डी मांसपेशियां लिवर किडनी प्रजनन सब वहीं से बनकर आया है और उनके ही मर्जी से यह सब चलते हैं! सांसे चलती है! धड़कन धड़कता है! मन बुद्धि चित कार्य करते हैं! चाहे अच्छा हो चाहे बुरा सब उनकी ही मर्जी से होता है! भगवान में मन नहीं लग रहा इसमें भी उनकी मर्जी और लग रहा है इसमें भी उनकी मर्जी छिपा हुआ है! आस्तिक और नास्तिक सब वहीं से बनकर आता है!

जिसको वह चाहता है उनका ही मन उनके तरफ जाता है! जो उनसे दूर है जिसका मन उनके तरफ नहीं जा रहा क्योंकि इसमें भी उनकी मर्जी है! सारा संसार अनंत ब्रह्मांड उस परम शक्ति का एक कठपुतली है! अपने एक अंश मात्र से वह मदारी संसार के समस्त बंदर को नचा रहा है!

तीन अविनाशी तत्व- वेद

हमारे वेद कहते हैं

तीन अविनाशी तत्व हैं ब्रह्म, जीव और माया!

इसके बहुत ही अद्भुत रहस्य जो उपनिषद और वेद में ही मिलेंगे! ब्रह्म यानि परमात्मा जो जीव और माया का शासक है! जीव भगवान की तटस्थ शक्ति है और माया जड़ है भगवान की माया दो प्रकार की है एक जीव माया और एक योग माया! जो संसार के प्रत्येक जीव के अंदर मोह ममता सावर है काम क्रोध लालच यह सब भगवान की चेतन

माया है दूसरा योग माया जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना हुई है! जिसे हम प्रकृति कहते हैं अर्थात मां दुर्गा भगवान की योग माया है! जीव माया जो हम सबके भीतर विद्यमान है! और उपनिषद कहते हैं ऋग्वेद यजुर्वेद कहते हैं जब तक जीव,, ब्रह्म को जान नहीं लेती तब तक उनकी माया निवृत्ति नहीं होती!,,,, जीव अर्थात हम सब! माया अर्थात संसार! ब्रह्म अर्थात दोनों का शासन करता! इन तीनों में सबसे छोटी है जीव Usse प्रबल है माया और माया से प्रबल है परमात्मा!,,, संसार के प्रत्येक जीव माया के वशीकरण में है! इंद्रियां मन बुद्धि की गति माया तक है भगवान तक यह तीनों नहीं जा सकते! परमात्मा माया के क्षेत्र से बाहर है! प्राकृतिक वस्तु उनको ग्रहण नहीं कर सकते! माया का साम्राज्य प्रकृति तक ही सीमित है और प्रकृति अनंत ब्रह्मांड तक है अनंत ब्रह्मांड के बाहर दिव्य शक्ति की सत्ता है!

परमात्मा मन का साक्षी

मन का ध्यान निरंतर संसार में रहता है तो उनका ध्यान केवल मन पर रहता है,, मन क्या कर रहा? मन का साक्षी ही तो परमात्मा है! जब कोई प्राणी किसी के साथ बात करता है! तो उनका ध्यान सिर्फ उनकी बातों में रहता है और भूल जाता है इस बात को कि उनकी बातों को कोई सुन रहा है! याद रहे जब आप किसी के साथ बात करते हैं तो आपका ध्यान सिर्फ आपकी बातों में रहता है पर भगवान जो अंतःकरण में विराजमान है उनका ध्यान सिर्फ इसी में रहता है क्या बात कर रहा है? किसके विषय में कर रहा है?

कोई भरोसा नहीं बात करते समय कब किसका निंदा कर दे कब झूठ बोल दे बात करते-करते कब लड़ाई शुरू कर दे? इसलिए उनका ध्यान हर समय हमारी बातों पर रहता है! क्या बात कर रहा और किसके विषय में कर रहा!

वह सब कुछ जानता है यह ना समझे मेरी बातों को भला वह कैसे जान सकता है पूरी अनंत सृष्टि उनकी एक शक्तियों का ही खेल है! वाणी से जो एक-एक शब्द निकलते हैं तो उनकी ही शक्ति से निकलता है आंखों में रोशनी उनकी ही शक्ति से है जहां-जहां उनकी शक्ति है वहां वहां प्रत्यक्ष परमात्मा है!

पूरे 24 घंटे में क्या सोच रहा है? अकेले-अकेले क्या कर रहा है? पूरा दिन उसका मन, बुद्धि कहां-कहां जा रहा है,, चित् में क्या भर कर रखा है? उनको बस इसी से मतलब रहता है!

वह परमात्मा हमारी एक-एक बातों को सुनता है बड़े ध्यान लगाकर,, जितना ध्यान लगाकर प्राणी बात करता है उतना ध्यान लगाकर परमात्मा उनकी बातों को सुनता है!, जो पूरे सुबह से रात तक हमने क्या-क्या शब्द बोला सब उनके पास जाता है,, उनके रजिस्टर में सब एंट्री हो जाता है! सुबह से रात तक क्या-क्या देखा? क्या-क्या सोचा?, उनके दिए हुए कानों से क्या-क्या सुना? और क्या-क्या किया? वह सब जानते हैं! जो सब कुछ जानता है समस्त सृष्टि का जो सर्वज्ञाता है वही परमात्मा है जिन्हें एक चीज भी नहीं मालूम! वह परमात्मा नहीं! परमात्मा वह है संपूर्ण प्राणियों के अनंत जन्मों के प्रत्येक कर्म को जो जानने वाला है!

अंतर्यामी घट सर्वव्यापक: परमात्मने कोटि ब्रह्मांड चराचर: जीवे क: अधीनम! (यजुर्वेद)

उनकी नजरों से कभी कोई एक जीव नहीं बच पाया है! चाहे कोई अपनी चतुराई से किसी कोने में छिपकर कुछ भी कर ले वहां भी उनकी नजर है! संपूर्ण ब्रह्मांड समस्त चराचर जीव उनके नेत्रों के अंदर ही है! और वही सबके अंदर भी है!

हमारे अंदर वह है और ब्रह्मांड उनके अंदर है जो बीच में है वह माया है! जिसके सहारे से प्राणी परमात्मा को भूलकर कर्म करती है! बेखबर होकर की कोई उन्हें नहीं देख रहा है! जहां पर मन, बुद्धि, चित, अहंकार! सेट हुआ है वहीं पर परमात्मा का वास है!

हमारा ध्यान सिर्फ कर्म में होता है और उनका ध्यान कर्मों को एंट्री करने में होता है!

इसलिए हर समय सावधान रहना है हर पल कर्म एंट्री हो रही है!

भगवान का दर्शन करो

कहां करें? बहुत ही सुंदर प्रसंग भक्त और भगवान के!

भक्त भगवान से एक प्रश्न करते हैं हे मुरलीधर मधुसूदन! मेरी आंखें तुम्हें देखने के लिए तरस रही है प्रभु एक बार अपना दर्शन दे दो! भगवान कहते हैं! मैं तो तुम्हारे अंदर ही हूं भक्त कहते हैं नहीं आप सामने आओ! हम आपके सामने दर्शन करना चाहते हैं! भगवान कहते हैं अगर मैं सामने आ गया तुम्हें दर्शन देने के लिए फिर तुम्हारी सांसों को कौन चलाएगा? क्या तुम अपने से खुद चला सकते हो! तो ठीक है चलाओ अपनी सांसे मैं आ रहा हूं! अगर ऐसा किया तो फिर तुम्हें ज्ञात नहीं है क्या होगा?

तुम्हारे प्राण निकल जाएंगे फिर कैसे दर्शन करोगे? सांस जब नहीं चलेगी तो कैसे दर्शन कर पाओगे? इसलिए मैं तुम्हारे अंदर ही हूं अपने अंदर मुझे महसूस करो मैं ही तुम्हारी सांस हूं,, मैं ही तुम्हारी धड़कन और मैं ही तुम्हारा जीवन हूं मुझे अपने अंदर महसूस करो मैं कहीं नहीं हूं तुम्हारे अंदर ही हूं अंतर ध्यान करके एक बार तो मुझे देख, अपनी सांसों को देख कैसे चल रहा है?

कैसे अपने आप ऊपर नीचे हो रहा है? कौन कर रहा है उसे अप डाउन! इस पर थोड़ा विचार कर? उसी में मुझे देख मैं तुम्हारा प्राण हूं! तुम्हारे अंदर ही हूं! अपनी सांसों को देख वहां मुझे ही पाओगे! मैं अगर जिस दिन निकल गया! अंदर से तो तुम्हारा जीवन ही खत्म हो जाएगा! मेरा दर्शन करना चाहते हो तो अंदर करो! मैं प्रत्यक्ष वही हूं!

मैं ही तो तुम्हारा जीवन शक्ति हूं! इसलिए जब तक जीवन है तब तक मेरा स्मरण करता रह! हो गया तुम्हें मेरा दर्शन! जहां मेरा स्मरण है जिसके अंदर मुझ पर अटल विश्वास है श्रद्धा है वहीं पर मेरा स्वरूप है! और मैं वही प्रत्यक्ष हूं जहां मेरा स्मरण है!

अपने अंतर्मन को अंदर की ओर झांक कर देखिए वही पाओगे! मैं तुम्हारे अंदर ही हूं! चेतन और प्राण जो तुम्हारे अंदर है वही मैं हूं! वैसे तो मैं सब जगह सर्वत्र व्याप्त हूं केवल दिखाई नहीं देता! भक्त मुझे जहां पर पुकारे जिस रूप में पुकारे मैं वही पर हूं!

****

माया खंड

भगवान की माया

संसार में प्रत्येक जीव ठगा गया है! भगवान की माया उसे पल-पल ठग रही है! इसका उन्हें जरा भी आभास नहीं! जैसे मदारी बंदर को नचाता है! ऐसे ही माया संपूर्ण जगत के समस्त जीवों को नचा रही है!,,,,, इंद्रिय, मन, बुद्धि सब माया का ही खेल है! भगवान ने स्वयं कही है मेरी माया को समझना जानना हर किसी के वश में नहीं है! जिस पर मैं कृपा करता हूं बस वही मेरी माया को जान पाता है!,,, इच्छा वासना लालच अहंकार ईर्ष्या मोह भय चिंता निंदा राग द्वेष यह सब माया के गुण हैं! इनमें से एक भी ऐसा बताओ जिससे जीता जा सके! है कोई सरल? होता तो कितनो जीत जाते! भगवान की माया छोटी-मोटी नहीं अनंत विराट है! महाप्रबल है! जिस पर मायाधिपति की कृपा होती है! बस वही इस माया के पर्दा को पहचान पाया है! और भगवान इस माया के अज्ञान के परदे में ढका हुआ है!,, ज्ञान बिना ईश्वर दर्शन संभव नहीं!

अगर इस माया को कोई काट पाया है जो सामर्थ है इस माया को काटने में वह है ज्ञान! इस माया को ज्ञान के तलवार से ही काटा जा सकता है और कोई विकल्प नहीं! अर्जुन को अपने रिश्ते नाते भीष्म पितामह द्रोणाचार्य से कितना उसे अटैचमेंट था जैसे ही उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई! उनका सारा मोह मिट गया!,,,, आत्म ब्रह्म ज्ञान में इतनी शक्ति है!,,, कि उनके सारे आसक्ति के बंधन को काट डालने में सामर्थ है! माया इतनी प्रभावशाली है कि भक्त को भी नहीं छोड़ती! भक्ति करने वाले को भी अपने वश में कर सकती है लेकिन जिन्होंने तत्व ज्ञान धारण किया है माया की इतनी औकात नहीं कि उसे ध्वस्त कर सके! माया उसे छू नहीं सकती! जिस पर मायाधिपति की कृपा और उनका हाथ है! भगवान श्री कृष्ण गीता में इसलिए ज्ञानी को अपनी आत्मा की श्रेणी दिया है!

माया क्या है? माया का स्थान

तीन अविनाशी तत्व है ब्रह्म, जीव और माया! जिसमें तीसरा तत्व है माया! जो भगवान की एक शक्ति है! ऐसी शक्ति जो सत्य को ढक कर रखा है सत्य का उसे पता चलने नहीं देती जैसे बादल सूर्य को ढक देता है अंधेरा छा जाता है ऐसा तो नहीं कह सकते कि सूर्य नहीं है! है पर कुछ आवरण सूर्य को ढक दिया है ऐसे ही जो परमात्मा परम सत्य को ढक दिया है वह तत्व है माया! और माया अज्ञानता का स्वरूप है! अज्ञानता ही परमात्मा को ढक कर रखी हुई है! माया एक पर्दा है जो सत्य को छिपा कर रखी है! और माया का स्थान इंद्रिय मन बुद्धि चित अहंकार इन सभी में माया का वास है!

सुख और दुख दो माया

दुख कोई पाना नहीं चाहता फिर भी उसे जबरदस्ती पाना पड़ता है और सुख हर कोई चाहता है पर किसी किसी को मिलता नहीं है अगर जीव के हाथ में होता तो इतने दिन रात संघर्ष प्रयास के बाद क्या सुखों से वंचित होता! संसार में अधिकतर प्राणी क्यों वंचित है? और भगवान परमपिता है उनके हाथ में होता तो किसी को दुख नहीं देता! यह दोनों के

हाथ में नहीं है जो दोनों के बीच में है उनके हाथ में होता है सुख और दुख! कौन है मध्य में? जीव का अपना कर्म,,, सुख और दुख केवल कर्मों का प्रावधान है! अगर बिगड़ गया तो ना चाह कर भी रो-रो कर भोगना पड़ेगा! क्योंकि यह दोनों के हाथ में नहीं सबसे बड़ा अपना कर्म! कर्मों का कानून भगवान के नियमों का उल्लंघन नहीं करता! यह कर्म इतना प्रबल है!

माया सिर्फ भगवान को ढकती है!

जैसे अंधकार,, प्रकाश को ढक देता है अज्ञान,, ज्ञान को! सुख, दुख को!! शरीर,,, आत्मा को! ऐसे ही माया किसी को नहीं सिर्फ भगवान को ढकती है! जो ब्रह्म को ढक दे

वही शक्ति माया है! माया का कार्य है जीव को परमात्मा से दूर करना चाहे किसी भी रूप में हो जो जीव को परमात्मा से दूर करें वही माया है! भगवान,, माया के क्षेत्र से परे है,, इसीलिए भगवान के विषय में कोई कितने भी बताएं उनको विश्वास नहीं हो सकता, क्योंकि सामवेद केन उपनिषद कहते हैं - परमात्मा विश्वास,,दृष्टिकोण,, अनुभूति,,, इच्छा,, प्रमाण इन सबके आवरण से परे है!

माया का अर्थ

माया का अर्थ- जो भगवान को स्वीकार न करें! अगर किसी को कहा जाए यह कार्य भगवान ने किया! तो वह स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि संसार के प्रत्येक चराचर जीव,,,माया के अधीन है,,,, माया का अर्थ यही है कि वह भगवान को स्वीकार करेंगे ही नहीं! क्योंकि भगवान की ही माया है उनकी माया स्वयं को स्वीकार करने नहीं देती! यही उनकी माया है! माया का कार्य यही है की सबको स्वीकार करेगा केवल भगवान को छोड़कर! क्योंकि जो हमें उनको स्वीकार करने नहीं दे रही यह सिर्फ उन्हीं की माया है! माया का तात्पर्य यही है जो जीव को परमात्मा की तरफ जाने ना दे! माया अपनी संपूर्ण शक्तियां लगाकर जीव को परमात्मा से दूर करने में लगी है! जो मायाधिपति को अटल रूप से पकड़ लेता है बस वही माया से पार होते हैं!

भगवान की ठगनी माया

संसार में प्रत्येक जीव ठगा गया है! भगवान की माया उसे पल-पल ठग रही है! इसका उन्हें जरा भी आभास नहीं! जैसे मदारी बंदर को नाचाता है! ऐसे ही माया संपूर्ण जगत के समस्त जीवों को नचा रही है!,,,,, इंद्रिय, मन, बुद्धि सब माया का ही खेल है! भगवान ने स्वयं कही है मेरी माया को समझना जानना हर किसी के वश में नहीं है! जिस पर मैं कृपा करता हूं बस वही मेरी माया को जान पाता है!,,, इच्छा वासना लालच अहंकार ईर्ष्या मोह भय चिंता निंदा राग द्वेष यह सब माया के गुण हैं! इनमें से एक भी ऐसा बताओ जिससे जीता जा सके! है कोई सरल? होता तो कितनो जीत जाते! भगवान की माया छोटी-मोटी नहीं अनंत विराट है! महाप्रबल है! जिस पर मायाधिपति की कृपा होती है! बस वही इस माया के पर्दा को पहचान पाया है! और भगवान इस माया के अज्ञान के परदे में ढका हुआ है!,, ज्ञान बिना ईश्वर दर्शन संभव नहीं!

सबका मूल कारण भगवान की माया ही है!

मायाजाल भगवान ने इसीलिए बिछाया है धरती पर ताकि उनका मन भगवान में ना लग सके! अनंत जन्मों से संसार के जाल में फंसा हुआ मन एक जन्म में भगवान में लग जाए संभव नहीं! यह जो हमारा मन है अनंत जन्मों से चिपका हुआ है माया में जब तक स्वयं भगवान उस पर कृपा ना करें! मन कभी भगवान में नहीं लग सकते! क्योंकि भगवान ने स्वयं बताया है मेरी माया ने जीव को अपने कब्जे में कर ली है! मन, बुद्धि, चित् का हरण कर ली है! तो मुझ में कैसे लगेगा? मेरी तरफ लाने के लिए जीव को उसके इंद्रिय, मन, बुद्धि में मुझे दिव्य शक्ति देना होता है!,, भगवान कहते हैं तब वह मेरा विचार करता है! मेरी कृपा से!,,, क्योंकि मेरी माया महा बलशाली है!

प्रत्येक जीव इन पांच के वश में है!

संसार के प्रत्येक जीव इन पांच चीजों के वश में है! क्योंकि माया ने अनंत काल से जीव को अपने कब्जे में की है!

1. काम अर्थात वासना!- इससे बच नहीं सकती कोई ध्यान में लगा है उनके सामने कोई अप्सरा आकर कहे मुझे तुम पसंद हो उनका ध्यान भटक जाएगा और उसमें मोहित हो जाएगा महान ब्रह्म ऋषि विश्वामित्र नहीं बच पाए तो क्या जीव बच पाएगी! भगवान की यह इतनी प्रबल माया है!

2. क्रोध- क्रोध को रोकने पर भी नहीं रोका जा सकता यह भी भगवान की इतनी प्रबल माया है! केवल इस पर तुकाराम जी ने जीत हासिल किया था! उनके शरीर में 100 बार थूकने पर लवलेश क्रोध नहीं मुस्कुराया था हम पर कोई एक बार थूका क्रोध भड़क जाएगा! क्रोध भगवान की इतनी प्रबल माया है!

3. लोभ- बड़े-बड़े ज्ञानी ध्यानी लोभ के शिकार हो चुके हैं कोई ध्यान में लगा है उसे पता चले ₹1,00,000 कोई देने उसे आया है! लेने के लिए चला जाएगा! चाहे कितने भी बड़े भक्त हो लोभ इतना प्रबल है! संसार इसके चपेट में है!

4. मोह- यह तो सबसे बड़ी प्रबल माया है रिश्ते नाते शरीर इसके जाल में जीव जो फंसी है! चाह कर भी मोह नष्ट नहीं किया जा सकता बाकी तो भले नष्ट हो जाएंगे पर मोह नहीं!

5. अहंकार- जीव का एक कार्य भी अहंकार रहित नहीं हो सकती उनके प्रत्येक कर्म में अहंकार छिपा हुआ है वाणी के एक-एक शब्द में अहंकार है अहंकार के आवरण से हम चारों तरफ से घिरे हुए हैं अहंकार तो कभी पता चल नहीं देती कि मैं हूं यही अहंकार है गर्भ गीता में भगवान श्री कृष्ण इसे सबसे बलवान बताया है यह उसे पता चल नहीं देती कि मेरे अंदर कोई दुर्गुण है!

अहंकार ही उसे सब करवाती है! प्रत्येक कर्म अहंकार के वश में है! अहंकार की जांच करना है तो किसी को दो शब्द कटु वचन बुरे शब्द बोलकर देखें चुपचाप रहेगा या नहीं! चुप रहने देगी नहीं तुमने मुझे क्यों बोला? क्या मैं तुम्हें कुत्ता लगता हूं नहीं जानते मैं कौन हूं? यह विकराल रूप धारण हो जाएगा! सबके अंदर बैठा है वातावरण बनते ही प्रकट हो जाता है! इसका नाश करना ही और इसका ही नहीं पूरे इन पांच का नष्ट होना ही ब्रह्म मिलन है!

यही पांच भगवान की प्रबल माया!

माया क्या है?- गीता

माया क्या है, क्यों इससे बचना चाहिए?

न मां दुष्कृतिनो मूढा: प्रपद्यन्ते नराधमा: |

माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिता: ||गीता 7/15||

अर्थ: माया ने जिनका ज्ञान हर लिया है ऐसे दुष्ट कर्म करने वाले मूढ़, नरों में अधम, और आसुरी स्वभाव वाले मेरी शरण में नहीं आते।

व्याख्या : माया का काम है फंसाना। माया का अर्थ केवल धन से नहीं होता बल्कि जिस चीज में हमारा मन अटकता है, वही हमारे लिए माया है। जैसे किसी का मन धन में अटकता है, किसी का भोग में, किसी का रूप में, किसी का शब्द में, किसी का स्वाद में, किसी का दुष्ट कर्मों में, किसी का अपने में और किसी का अपने वालों में आदि-आदि अनेक स्थानों या किसी एक स्थान पर भी यदि मन अटक जाता है वही उसके लिए माया है।

मन के माया में आते ही हमारी ऊर्जा बाहर की तरफ बहने लगती है, जिससे आत्मा का ज्ञान नष्ट हो जाता है और व्यक्ति संसार में बंधने वाले दुष्ट कर्म करने लगता है जिससे मूढ़ता को प्राप्त हो जाता है।

इस तरह के लोग आध्यात्मिक दृष्टि से सबसे निचले स्तर के होते हैं, ऐसे लोग आसुरी स्वभाव वाले कहलाते हैं। ये परमात्मा को पाने की चाह नहीं रखते, इसलिए प्रभु की शरण में नहीं आते।

समय खिसक रहा, समय किसी का मित्र नहीं

देखते देखते गर्मी निकल गई,,, वर्षा भी देखो गुजर रहा है! और 2 महीने में यह भी गुजर जाएगा! 4 महीने में शीत ऋतु आकर खड़ी हो जाएगी! उसके बाद फिर गर्मी फिर बरसात फिर ठंडी सब कुछ कालचक्र का खेल है ऐसे ही अनंत काल तक चलते रहेंगे जीव अपने कर्म के चक्र में घूमती रहेगी फिर जन्म लेगी फिर मरेगी! समस्त संसार इसी कालचक्र में फंसी है! समय हुआ उठ गए समय हुआ सो गए रात आ गया दिन आ गया! हम सब समय पर निर्भर हैं! हमें समय नचा रहा और समय को परमात्मा! जिस दिन का बरसों से इंतजार था वह दिन भी आ जाएगा और जिसका इंतजार किसी को नहीं वह भी आ जाएगा! समय पल-पल खिसक रहा है! चाहे व्यक्ति चुपचाप कुर्सी पर बैठा रहेगा समय सरकते सरकते उसे दुनिया से सरका देगा! क्योंकि समय खिसक रहा है! पर यह समय जा कहां रहा? अंत की ओर!

समय न किसी का यार है ना किसी का मित्र ना उसे दिवाली से मतलब ना होली से ना कोई त्यौहार से ना कोई बहार से चाहे किसी का जन्मदिन आए चाहे कितने भी श्रेष्ठ दिन हो जिस दिन का बरसों से इंतजार है वह दिन भी आकर खड़े हो जाएगा! समय धीरे-धीरे खिसक रहा है! सरकते सरकते प्राणी को एक दिन दुनिया से सरका देगा! समय निरंतर भाग रहा है हम भले विश्राम कर सकते हैं पर समय नहीं उनका एक मूल कार्य है संपूर्ण प्रकृति को नष्ट करना!

संसार अज्ञान का समुद्र है!

संसार अज्ञान का समुद्र है और परमात्मा ज्ञान का समुद्र! अज्ञानता परमात्मा को नहीं देख सकती! जैसे बैक्टीरिया को सूक्ष्मदर्शी के द्वारा देखा जा सकता है ऐसे ही परमात्मा को ज्ञान रूपी यंत्र के द्वारा देखा जा सकता है! आत्मज्ञान और तत्वज्ञान के द्वारा ही परमात्मा को देखा जा सकता है! भगवान को मानने से पहले जानना होगा! मान तो सब रहे हैं पर उनको जाना नहीं है! जानने के बाद मानना है! जानने से पहले मनाना नहीं! ब्रह्म तत्वों को पहले जानिए! कौन है वह? किस लिए अपने आप को छुपाया हुआ है संसार क्या है? उनके रहस्य को पहले जानना होगा फिर मानना है! सिर्फ माना जाना नहीं तो मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त करना व्यर्थ है! कुछ जानने के लिए यह बुद्धि मिला पर उसे जाना नहीं तो बुद्धि पाना तो व्यर्थ है!

माया को क्यों नहीं जाना जा सकता?

क्योंकि माया,, इंद्रियां मन बुद्धि को अपने कब्जे में की हुई है इसलिए माया को नहीं समझा जा सकता समझने वाली जो मशीन है बुद्धि वह खुद माया की बनी है विचार करने का संकल्प विकल्प ध्यान करने का जो मशीन है वह भी माया की बनी है शरीर से लेकर बुद्धि तक सब माया की बनी है! वेद कहते हैं परमात्मा माया के क्षेत्र से बाहर है! केन उपनिषद कहते हैं भगवान की बनाई हुई मशीनों के द्वारा भगवान को ग्रहण नहीं किया जा सकता! भगवान पकड़ में आया है तो केवल प्रेम के द्वारा परमात्मा के लोक में माया की गति नहीं है इंद्रिय मन बुद्धि परमात्मा तक नहीं जा सकती! यह तीनों माया में विचरण करते हैं! ज्ञान, विचार, संस्कार सब माया के अंतर्गत है! इसलिए संसार परमात्मा से दूर है! क्योंकि संसार उनकी प्रबल माया है!

माया कितने प्रकार की है?

वेद कहते हैं- तीन अविनाशी तत्व है ब्रह्म, जीव और माया! जिसमें एक परम तत्व है अर्थात् परमात्मा और दूसरा जीव यानी उनका अंश और तीसरा है माया! संसार के प्रत्येक जीव जिनके वशीभूत है! वशीकरण में है वह तत्व है माया! लेकिन यह माया भी दो प्रकार की है! एक जीव माया और एक योग माया! योग माया अर्थात प्रकृति मां दुर्गा जो प्रकृति स्वरूपा है! उसे ही योग माया कहते हैं! जिस माया से अनंत ब्रह्मांड की रचना हुई है! और एक माया है जीव माया भगवान ने अपनी एक माया प्रत्येक जीव के अंदर बिठा दी है! मन, बुद्धि, अहंकार यह तीन हुए और पांच है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश यह जो पंचमहाभूत है वह भगवान की योग माया शक्ति है! जिससे भौतिक संसार बना है! दूसरी माया जीव माया जिससे हम सब घिरे हुए हैं! मोह ममता, अहंकार का जाल भगवान की जीव माया की शक्ति है!

मोह, ही जीव का बंधन है!

मोह को त्याग दीजिए मान लीजिए! यह बहुत बड़ी चुड़ैल है! छोटी मोटी नहीं बहुत बड़ी जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता! मृत्यु भय, चिंता, अहंकार, काम, इच्छा, वासना, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या सब का कारण यही है आसक्ति! यही सबकी जननी है जननी मर गए तो संतान भी नहीं बचेंगे! यही तो जीव का बंधन है!

यह हट गया तो वही मोक्ष नष्ट नहीं हुआ तो फिर यही जन्म मृत्यु के बंधन में हमें बांधेगी! आवागमन से मुक्त होना है तो इसको त्यागना हीं पड़ेगा! इतने अच्छे मार्ग में आ गए हैं और आगे बढ़िए! खेल यही तक नहीं और आगे जाना पड़ेगा! अपने मोह तत्व को तोड़कर आगे जाना पड़ेगा! परमात्मा के लोक में उनके निज धाम में मोह तत्व का एक बहुत बड़ा विशाल पर्दा है वहां तक पहुंचने नहीं देती सृष्टि रचना में बताई गई है कारण महाविष्णु के ऊपर तीन मोह तत्व है विद्या, अविद्या और सुमना! इसे जो तोड़ेगा वही परमात्मा तक पहुंचते हैं! अपने जाल में दलदल में फंसा कर रखी है यही संसार को बांधी हुई है प्रत्येक जीव इसके वशीकरण में है!

अपना मानना ही दुख का कारण है!

माया से युद्ध करो जब तक जीत ना हो! माया हमसे हार जाए और जीत हमारी हो! माया हम पर दुखों का कितने भी लाइन लगा दे! दूसरों के जीवन में दुख आता है तो हमें कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि हम जिसको अपना नहीं मानते उसे पराया मानते हैं! और पराया में दुख नहीं होता ऐसे ही अपने जीवन को भी पराया समझो यह जीवन जिसको अपना समझा है वह भी अपना नहीं है! अपना है तो दुख है अपना नहीं तो दुख नहीं! दूसरों के जीवन में कितने भी कष्ट हो कोई फर्क नहीं पड़ता ऐसे ही हमारे जीवन में कितने भी तूफान कष्ट आ जाए फिर कोई फर्क नहीं पड़ेगा! क्योंकि यह जीवन तो पराया है! अपना है ही नहीं!

यही मायाजाल है!

यही चित् का खेल है जो किसी को नहीं छोड़ती!

सुंदर स्त्री को देखकर अपने को रोक पाना अपने मन बुद्धि पर नियंत्रण रखना,,, आकर्षित कोई होना नहीं चाहता पर हो जाता है क्रोध कोई करना नहीं चाहता फिर भी हो जाता है पैसे का लालच क्या कोई करना चाहता है नहीं! फिर भी हो जाता है,,, मोह क्या किसी से करना चाहते हैं नहीं फिर भी हो जाता है लाखों प्रयत्न करके भी इसे नष्ट नहीं किया जा सकता! अहंकार करना नहीं चाहते फिर भी आ जाता है!,, ईर्ष्या करना नहीं चाहते फिर भी लोगों के लिए हो जाता है क्योंकि यह सब माया के विकार चित् में अनंत जन्मों से बैठ गया है! इतनी आसानी से यह पीछा ही छोड़ते! यही आगे और जन्म लेंगे तो साथ जाएगा! यही हरकत अगला जन्म में फिर होगा! क्योंकि चित् कभी नहीं बदलता जिसका जैसा है वह हमेशा वैसा ही रहता है!

मोह नष्ट करो

सबसे पहले तो धन का मोह नष्ट करो जब यह हो जाएंगे उसके बाद परिवार का,,,,उसके बाद शरीर का और उसके बाद अपने प्राणों का जब यह चारों मोह नष्ट हो जाएंगे तब उसे भगवत प्राप्ति होगी! मोह को नष्ट करना ही मोक्ष है! इसे नष्ट न कर नहीं फिर से जन्म लेना है! मोह ही जीव को गर्भ में वापस लाती है!

भगवान की आठ प्रकृति (माया): पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि, अहंकार! अनंत ब्रह्मांड की सीमा इसी के घेरे में है वहां तक माया का आवरण है सब इसके जाल में है!

सबकी जननी क्या है?

जिसे कोई नहीं समझ पाया,,,, इच्छा क्यों उत्पन्न होता है मोह के कारण,, कामवासना क्यों उत्पन्न होता है मोह के कारण,, लोभ क्यों उत्पन्न होता है मोह के कारण,, अहंकार क्यों उत्पन्न होता है इसी मोह के कारण,, किसी से ईर्ष्या क्यों होता है मोह के कारण,, कपट क्यों उत्पन्न होता है मोह के कारण,, मृत्यु से भय क्यों है? मोह के कारण!,, चिंता क्यों उत्पन्न होती है मोह के कारण,,, राग द्वेष क्यों उत्पन्न होता है मोह के कारण,,, निंदा क्यों करते हैं मोह के कारण! सारे विकार उत्पन्न होते हैं इसी मोह के कारण! जितना जल्दी हो सके शीघ्र इस मोह तत्व को समझ लीजिए! सब का कारण यही है! सारे विकार एक बार में नष्ट हो जाएंगे जिनका मोह नष्ट हो गया! छोटे-छोटे बच्चों को हटाने की जरूरत नहीं! सीधे जननी को ही हटा दो बच्चे ही नहीं रहेंगे!

क्या है ईश्वर की माया?

वेदों के अनुसार,,,,,

माया (या भ्रम) शब्द का प्रयोग एक से अधिक अर्थों में होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि विचार में परिवर्तन के साथ शब्द का अर्थ बदलता गया। जब हम किसी चकित कर देने वाली घटना को देखते हैं, तो उसे ईश्वर की माया कह देते हैं। यहाँ माया का अर्थ शक्ति है। व्यक्ति अपनी चतुराई से वस्तु को विपरीत रूप में दिखाता है, यथार्थ के अभाव में भी उन्हें दिखा देता है। यह उसकी माया है। यहाँ का अर्थ मिथ्या ज्ञान या ऐसे ज्ञान का विषय है। मिथ्या ज्ञान दो प्रकार का है -- भ्रम और मतिभ्रम। भ्रम में ज्ञान का विषय विद्यमान है परंतु वास्तविक रूप में दिखाता नहीं, मतिभ्रम में बाहर कुछ होता ही नही, हम कल्पना को प्रत्यक्ष ज्ञान समझ लेते हैं।

हम में से हर एक कभी न कभी भ्रम या मतिभ्रम का शिकार होता है, कभी द्रष्टा और दृष्ट के दरमियान परदा पड़ जाता है। कभी वातावरण मिथ्या ज्ञान का कारण हो जाता है व्यक्ति की हालत में इसे अविद्या कहते है। माया व्यापक अविद्या है जिसमें सभी मनुष्य फँसे हैं। कुछ विचारक इसे भ्रम के रूप में देखते हैं, कुछ मतिभ्रम के रूप में। पश्चिमी दर्शन में कांट और बर्कले इस भेद को व्यक्त करते हैं।

ज्ञानलाभ के अनुसार आरंभ में हमारा मन कोरी पटिया के समान होता है जिस पर बाहर से निरंतर प्रभाव पड़ते रहते हैं। कांट ने कहा कि ज्ञान की प्राप्ति में मन क्रियाहीन नहीं होता, क्रियाशील होता है। सभी घटनाएँ देश और काल में घटती प्रतीत होती है, परंतु देश और काल कोई बाहरी पदार्थ नहीं, ये मन की गुणग्राही शक्ति की आकृतियाँ हैं। प्रत्येक उपलब्ध को इन दोनों साँचों में से गुजरना पड़ता है। इस क्रम में उनका रंग रूप बदल जाता है। इसका परिणाम यह है कि हम किसी पदार्थ को उसके वास्तविक रूप में नहीं देख सकते, चश्में में से देखते हैं, जिसे हम आरंभ से पहने हैं और जिसे उतार नहीं सकते।

लॉक ने बाह्म पदार्थों के गुणों में प्रधान और अप्रधान का भेद देखा। प्रधान गुण प्राकृतिक पदार्थों में विद्यमान है, परंतु अप्रधान गुण वह प्रभाव है जो बाह्म पदार्थ हमारे मन पर डालते हैं। बर्कले ने कहा कि जो कुछ अप्रधान गुणों के मानवी होने के पक्ष में कहा जाता है, वही प्रधान गुणों के मानवी होने के पक्ष में कहा जा सकता है। पदार्थ गुणसमूह ही

है और सभी गुण मानवी हैं, समस्त सत्ता चेतनों और विचारों से बनी है। हमारे उपलब्ध (Sense Experience) हम पर थोपे या आरोपित किए जाते हैं, परंतु ये प्रकृति के आघात के परिणाम नहीं, ईश्वर की क्रिया के फल हैं।

भारत में मायावाद का प्रसिद्ध विवरण है-- "ब्रह्म सत्यम, जगत् मिथ्या"। इस व्यवस्था में जीवात्मा का स्थान कहाँ है? यह भी जगत् का अंश है, ज्ञाता नहीं, आप आभास है। ब्रह्म माया से आप्त होता है और अपने शुद्ध स्वरूप को छोड़कर ईश्वर बन जाता है। ईश्वर, जीव और बाह्म पदार्थ, प्राप्त ब्रह्म के ही तीन प्रकाशन हैं। ब्रह्म के अतिरिक्त तो कुछ ही नहीं, यह सारा खेल होता क्यों है? एक विचार के अनुसार मायावी अपनी दिल्लगी के लिये खेल खेलता है, दूसरे विचार के अनुसार माया एक परदा है जो शुद्ध ब्रह्म को ढक देती है। पहले विचार के अनुसार माया ब्रह्म की शक्ति है, दूसरे के अनुसार उसकी अशक्ति की प्रतीक है। सामान्य विचार के अनुसार मायावाद का सिद्धांत उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों और भगवद गीता में प्रतिपादित है। इसका प्रसार प्रमुख रूप से शंकराचार्य ने किया। उपनिषदों में मायावाद का स्पष्ट वर्णन नहीं, माया शब्द भी एक दो बार ही प्रयुक्त हुआ है। ब्रह्मसूत्रों में शंकर ने अद्वैत को देखा, रामानुज ने इसे नहीं देखा और बहुतेरे विचारकों के लिये रामानुज की व्याख्या अधिक विश्वास करने के योग्य है। भगवद्गीता दार्शनिक कविता है, दर्शन नहीं। शंकर की स्थिति प्राय: भाष्यकार की है। मायावाद के समर्थन में गौड़पाद की कारिकाओं का स्थान विशेष महत्व का है, इसपर कुछ विचार करें।

गौड़पाद कारिकाओं के आरंभ में ही कहता है।

स्वप्न में जो कुछ दिखाई देता है, वह शरीर के अंदर ही स्थित होता है, वहाँ उसके लिये पर्याप्त स्थान नहीं। स्वप्न देखनेवाला स्वप्न में दूर के स्थानों में जाकर दृश्य देखता है, परंतु जो काल इसमें लगता है वह उन स्थानों में पहुँचने के लिये पर्याप्त नहीं और जागने पर वह वहाँ विद्यमान नहीं होता।

क्या हम भगवान की माया से जीत गए!

क्या हम भगवान की माया से जीत गए! क्या है उसका संकेत? क्या यह हम कर पाए हैं?

अगर यह कर लिया तो समझे हमने भगवान की माया से जीत गए हैं,, और भगवान की माया से जीत जाना ही भगवान को प्राप्त करना है!

1. हजारों सुंदर-सुंदर अप्सरा को देखकर,, इनके प्रलोभन से क्या कभी बच पाए हैं! स्त्री पुरुष धन सम्मान विषय भोग,, इसमें आकर्षित न होना वासना से जीत जाना है! क्या स्वयं को रोक पाए हैं!

2. अगर नाम जाप कर रहे कोई आकर दो झापड़ मार दिया तो क्रोध आएगा या नहीं! यह उनकी परीक्षा है चुप रह गए तो क्रोध से जीत गए,,, इस स्थिति में है कौन जो क्रोध को रोक पाएगा,,, तुकाराम ने ही इस माया से जीत पाया है!

3. नाम जाप कर रहे और कोई फोन लगाकर हमें यदि कहे कि तुम्हारी एक लाख की लॉटरी लगी है अभी तुरंत आओ! देरी करोगे तो नहीं मिलेगा आप क्या करेंगे? अगर फिसल गए इसमें तो लोभ से हार गए! ध्यान नहीं,, मंत्र जाप में लगे रहे तो लोभ से जीत गए!

4. कितने भी पद प्रतिष्ठा सम्मान ज्ञान बुद्धि प्राप्त करके मैं कुछ हूं यह भावना मिट जाना! सरल चुपचाप हो जाना अहंकार से जीत जाना है! पर है कौन जो हो पाया है!

5. चाहे हमारा संसार छूट जाए चाहे परिवार चाहे शरीर कुछ भी छूट जाए!

जरा भी तकलीफ दुख नहीं हुआ हमें तो मोह से जीत गए!

6. भक्ति में हो ज्ञान में प्रतिष्ठा में या धन में,, कोई हमसे आगे पहुंच जाए फिर भी कोई फर्क ना पड़े तो ईर्ष्या से जीत गए! यह सब के अंदर हावी है बड़े से बड़े भक्त और ज्ञानी भी नहीं बच पाए इससे! भक्ति को भक्ति से ज्ञानी को ज्ञानी से एक व्यापारी को दूसरे व्यापारी से,, एक छात्र को दूसरे छात्र से जो ऊंची श्रेणी में है!

7. मृत्यु आने पर भी कोई फर्क ना पड़े तो समझे भय से जीत गए!

8. लाख मुसीबत आने पर भी भक्ति अगर नहीं छूटी,, तो विश्वास से जीत गए!

इन सबसे हमें जीतना होगा! अभी हमारे अंदर बहुत ही कमी है!

जो पैसे के चक्कर में पड़ गया

जो एक बार पैसे के चक्कर में पड़ गया, जिनका मन बुद्धि चित् पैसे में अटक गया समझो उसने अपना सर्वनाश कर दिया! फिर उनको दुर्गति 84 से कोई नहीं बचा सकता! 84 के बाद बड़े कष्ट के बाद हीरा जन्म मनुष्य योनि मिले हैं विषय भोगों में फंसने के लिए नहीं! विषय भोग पूरे 84 लाख में यही खेल है कल्पना भी नहीं कर सकते नहीं जान सकते महा भयंकर कष्ट भोगने के बाद यह आपको मनुष्य योनि में जन्म मिला है! इसकी कीमत समझ नहीं आ रही माया ऐसा हावी हम पर हो गया है! धन के चक्कर में पड़ने के लिए नहीं मिला है सिर्फ भगवान का चिंतन करने के लिए यह मनुष्य योनि मिला है! जिसने जन्म दिया है उनको सब पता है पूरा व्यवस्था पहले से निर्धारित करके ही भेजा है! आप बस उनका चिंतन करें! फिर देखो योगक्षेमं वहाम्यहम् 9/22

जीवन का सफर

जीवन के सफर में कभी सुख आएंगे कभी दुख,,, कभी रोग आएंगे कभी गरीबी,,, कभी ठंडी आएंगे कभी गर्मी,,, कभी अपमान मिलेगा कभी सम्मान कभी जीत होगी कभी हार,,, इन सब के चक्कर में बिल्कुल ना पड़े आने जाने वाले लहर है !

जो इन सबको नजर अंदाज करके भगवान की तरफ बढ़ता है बस वही उनको प्राप्त करते हैं जो इसमें पड़ गए समझो माया में बह गए और जो माया में बह गए उस जीव को ईश्वर की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती!

इधर-उधर नहीं देखना है बस अपने लक्ष्य की तरफ केंद्रित रखें! मुझे उस परम शक्ति को प्राप्त करना है बस ध्यान सिर्फ उसी तरफ हो! आकर बिच्छू भी काट दे तो भी ध्यान ना भटके ध्यान सिर्फ कृष्ण में हो! गृहस्थ में रहे अपना दैनिक कर्म भी करें सबके बीच रहे पर कैसे अनासक्त भाव से! यही कृष्ण प्राप्ति का सुगम मार्ग है!

संसार दुखों का समुद्र है- गीता

मामुपेत्य पुनर्जन्म दु:खालयमशाश्वतम् ।

नाप्नुवन्ति महात्मान: संसिद्धिं परमां गता:

॥ गीता 8/5

मुसीबत से कभी भागना नहीं! संसार स्वयं दुखों का समुद्र है कहां तक भागेंगे? एक मुसीबत से भागेंगे! दूसरी मुसीबत खड़ी होगी! दूसरी से भागेंगे तीसरी खड़ी होगी! तीसरी से भागेंगे चौथी खड़ी होगी! संसार में तो मुसीबतो का लाइन लगा है! श्री कृष्ण भगवान ने संसार को दुखालय बताया है! इसलिए सार्थकता इसी में है! चाहे प्राण चला जाए अंतिम सांस तक हमें अपनी मुसीबतो से लड़ते रहना है भागना कभी नहीं! वाणी पर निरंतर राधा नाम चलता रहे और संघर्ष करते रहें! जिनके साथ सर्वशक्तिमान अनंत ब्रह्मांड अधिपति श्री कृष्ण साथ है तो फिर भय कैसा? जितना कष्ट है उतना वह करीब है!

माया क्या है?

एक उदाहरण से समझते हैं जो हमें अपने वास्तविक स्वरूप को भूलवा देती है! वही माया है जैसे एक कोई व्यक्ति मेला घूमने गया! 10:00 वहां पहुंच गया वहां के वातावरण को देखकर इतना आकर्षित हो गया कि सब कुछ वह भूल गया उनका याददाश्त खो गया! वह कहां था? उसका घर भी है वह यहां घूमने आया है सब भूल गया वहां आसक्त हो गया! उसे वहां से निकलने का मन ही नहीं हुआ घूमते घूमते शाम हो गए! जो सत्य है ही नहीं चाहे कितने भी उड़ान हम भर लें! समय तो जवाब देगा ही जो सत्य नहीं है उसे समय जवाब दे देते हैं रात हो गए सब चले गए वहां खाली हो गया रात भर तो मेला वहां रहेगा नहीं!

तब उनको याद आया अरे मुझे घर भी जाना है! तब अपनी मेला को याद करते हुए मजबूरी में वह घर गया! बस ऐसे ही हम समस्त प्राणियों को भगवान ने संसार के मेले में कुछ समय के लिए एक लिमिट मात्र भेज दिया है! यहां के आकर्षण में फंसकर हम स्वयं को भूल गए हैं स्वयं हम कौन हैं? इसकी खबर नहीं इस माया जगत में इतने आसक्त हो चुके हैं! हम कहां से आए हैं? कहां जाना है? यह मालूम ही नहीं! जब जीवन की रात हो जाएगी!

वापस जाने का समय आएगा तब याद आएगी कि हमारा वास्तविक घर यही है हम आत्मा है! परमात्मा की दुनिया से आए हैं और यही हमारा घर है यहां से जाने का समय आएगा तब स्मृति आएगी!

अभी तो माया ने भुला दी है हमें! जीव को भ्रमित करने के लिए भगवान ने यह आकर्षक युक्त संसार बना दिया है जहां से किसी को कभी निकलने का मन ना हो! मेला की तरह ही लुभाने के लिए यह जगत उन्होंने रचा है सत्य वह है जो माया ने हमें भुला दिया है जो कुछ अभी याद है वह सत्य नहीं सत्य वह है जो याद नहीं!

जहां से हम आए हैं वहां हमको जाना है यही सत्य है! बीच में जो कुछ भी हुआ बस वह सिर्फ कर्म है कर्म ही बनकर रहेगा आगे! दूसरा और कुछ रहेगा नहीं!,, ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या,, वेद!

ब्रह्म की शक्ति है- माया

नेत्रों से जो कुछ भी इस जगत में दृश्य दिखाई दे रहा है कानों से जो शब्द सुनाई दे रहा है जो जो मन को अनुभूति हो रही है जहां तक मन में विचार आ सकता है!

जहां तक इच्छा शक्ति है! संकल्प विकल्प की जो शक्ति है! बुद्धि में जितना ज्ञान भरी हुई है! बुद्धि जहां तक जा सकती है! पंचतत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश से जितने भी भौतिक सामान निर्मित है! जितने भी भगवान ने हमें सिस्टम दिया है आंतरिक सिस्टम और बाहरी सिस्टम वह सब माया है! माया से रहित कुछ भी नहीं!

पंचमहाभूत से बना हुआ शरीर,, रक्त, हड्डी, मांसपेशियां, शरीर के एक-एक अंग के एक-एक कण,, पूरी 10 इंद्रियां जो कुछ भी करती है! इंद्रियां, मन, बुद्धि की गति जहां तक जा सकती है! वह सब माया है इंद्रिय भी माया,, मन भी माया,, बुद्धि भी माया,, चित् भी माया,, अहंकार भी माया,, माया से रहित इस पूरे ब्रह्मांड में कुछ ऐसा तत्व नहीं है!

माया से अलग,,,, माया से रहित सिर्फ एक ही परम तत्व है परमात्मा! प्राकृतिक वस्तुओं की गति परमात्मा तक नहीं जा सकती! केन उपनिषद- वह अनंत ब्रह्मांड त्रिगुणात्मक अष्टआवरण प्रकृति की अंतिम एरिया से बाहर है! माया से परे है!

आध्यात्मिक ज्ञान से समझिए ब्रह्म और माया के बीच का ये संबंध

,, वेदों में माया का स्वरूप के अनेक वर्णन है जिसमें से यह एक है!

ब्रह्म की ही शक्ति है ,,, माया

जो जीवो को भ्रमित करने के लिए निर्गुण परब्रह्म ने रचा है!,,, और यह हमारे चेतन शक्ति में ही मिश्रित है! माया,,, हमारे चेतन शक्ति आत्मा में डाली गई है! इसलिए प्रत्येक जीव को संसार सच प्रतीत होता है पर वास्तविक नहीं है जो लग रहा है हकीकत वह सिर्फ भ्रम है! सत्य को जो ढक दे वही माया है यह जगत भगवान की माया है जिस पर उनकी कृपा हो जाती है बस वही उनके माया रुपी संसार को जान पाता है बाकी तो संसार में बह जाते हैं!

कोई नहीं समझ पाता! ,, माया कहीं बाहर नहीं इंद्रिय मन बुद्धि में चढ़ी हुई है! भगवान ने अपनी माया इसी चेतन शक्ति में चढ़ा दिया है माया सब के अंदर है बाहर नहीं! जिससे बाहर निकलना मायापति की कृपा के बिना संभव नहीं! उसने अपनी माया में प्रत्येक जीव को कैद करके रखा है! कोई बड़े से बड़े ज्ञानी ऋषि मुनि अपने बल पर लाख प्रयास करके भी उनकी प्रचंड माया से बाहर नहीं निकल सकता जब तक स्वयं उसकी कृपा ना हो!

जीव के अंदर त्रिगुणात्मक माया का आवरण उस परमात्मा ने चढ़ा दिया है,,, इसलिए यह नकली दुनिया असली लगती है!

माया मनुष्य के जीवन का आधार है। संसार में जो दिखता है, वह सब माया है। लेकिन इसी में संसार का अस्तित्व है। माया,, ब्रह्म की शक्ति है, जो सत्य को ढक लेती है। माया का अर्थ है- जो अनुभव तो किया जा सके, लेकिन उसका कोई अस्तित्व न हो। आभासी दुनिया इसी का नाम है।

इसका अर्थ एक ऐसी दुनिया से है, जो काल्पनिक होकर भी पूरी तरह सच प्रतीत होती है। विज्ञान वर्चुअल रियलिटी और कंप्यूटर तकनीक से एेसी दुनिया बनाता है, जिससे आभासी संसार के असली होने की अनुभूति होती है। एक कृत्रिम और त्रिआयामी वातावरण बनाया जाता है तथा उसे इस तरह पेश किया जाता है कि निस्संदेह उसे ही वास्तविक समझा और स्वीकार कर लिया जाता है।

इसे इस रूप में भले ही स्वीकार किया जाता हो, पर असल में वह बनाई गई एक कृत्रिम दुनिया है या माया है, जो हमारी सोच को ढक देती है और हम मान बैठते हैं कि सब कुछ हम ही कर रहे हैं। विज्ञान भी यही कहता है कि संसार पदार्थों से बना है और पदार्थ की अंतिम इकाई परमाणु या तरंग है। यानी यह एक विद्युत प्रवाह है और कुछ नहीं। सुख या दुख, हमें जो भी अनुभव होता है, वह सब कहीं और नहीं, बल्कि विचार और भाव जगत में होता है, जिसे चेतना कहते हैं। जिसे हम देखते और महसूस करते हैं, वह विराट ईश्वरीय कंप्यूटर प्रोग्राम की तरह है। हम लोग मिलकर इसे चला रहे हैं। आभासी वास्तविकता एक ऐसा खेल या माया है, जिसे अपने दिमाग में हम सब खेल रहे हैं। जिस दिन दिमाग काम बंद करेगा, उस दिन पता चलेगा कि जिसे हम सच समझ रहे थे, वह सिर्फ भ्रम था और कुछ नहीं।

यह भ्रम ही दुखों की जड़ है। जब हम किसी काम में सफल होते हैं, तो कहने लगते हैं हम कितने काबिल हैं, पर सच तो एक ही है। जब अच्छा काम होता है तब भी वही विद्यमान है, जो गलत काम होने पर रहता है। संसार में जो दिखता है, वह सब माया है। दरअसल संसार का दूसरा नाम ही माया है। जब हम किसी चकित कर देने वाली घटना को देखते हैं, तो उसे ईश्वर की माया कह देते हैं। माया ब्रह्म की ही शक्ति है, जो सत्य को ढक लेती है। उसकी जगह किसी दूसरी चीज के होने का भ्रम पैदा कर देती है, जैसे रस्सी से सांप का भ्रम हो जाता है।

माया ब्रह्म की शक्ति तो है, पर ब्रह्म पर माया का प्रभाव नहीं पड़ता। जादूगर के खेल की तरह माया दर्शकों को भ्रमित कर सकती है, पर खुद भ्रम में नहीं होती। इसलिए हमारे ऋषि-मुनियों और विद्वानों-मनीषियों ने कहा है कि माया से बचकर रहना चाहिए। समय-समय पर आत्मावलोकन करते रहना चाहिए कि कहीं हमारे मन-मस्तिष्क पर माया हावी तो नहीं होती जा रही है। आखिर कहा भी गया है- 'माया महाठगिनी हम जानी।'

माया का आवरण

भगवान की माया संसार में नहीं सीधे इंद्रियां मन बुद्धि पर ही हमला कर दी है! तो भगवान को कहां से किस बुद्धि से जान पाएगी! गीता में भगवान कहते हैं मेरी माया इंद्रियां मन बुद्धि सबको हरण कर ली है! अपने कब्जे में कर चुकी है इसलिए कोई पल भर भी माया से बाहर नहीं हो सकता चिंतन, इच्छा, विचार, ज्ञान, देखना, सुनना, बोलना हर क्रियाकलाप उसका माया के अंतर्गत ही है!

गर्भ से जैसे ही जीव बाहर होती है भगवान उस पर माया का आवरण डाल देते हैं! जब 9 महीने जीव मां के गर्भ में रहती है,,, उस समय वह भगवान के समक्ष रहती है उसको पूरा ज्ञान रहता है! भगवान से अटल प्रतिज्ञा करती है हे नाथ! मुझे यहां से बाहर करो यहां से निकलते ही 24 घंटे आपकी भक्ति करूंगा! बस इस कष्ट से मुझे बाहर करो!

वहां से निकलते ही बुद्धि,,मन में माया छा गई आते ही भूल गए! जन्म के क्षण से जो कुछ देखा वह सब माया है बेटा बेटी मां बाप दादा दादी इन सब ने हमको सिखा दिया कि हमारी तरफ आओ और हम यहां लटक गए जिसने भेजा उसको भूल गए! इन सबको देखते-देखते बड़े होते गए और माया में तरीके से बहुत ही बुरी तरह फंस गए!

जिस पर उसने कृपा कर दी बस वही उनको इस माया जगत में याद कर पाया है माया इतनी प्रभावशाली है कि किसी को नहीं छोड़ती! इसलिए हम ब्रह्म को नहीं जान सकते! हमारी इंद्रियां, मन, बुद्धि में माया डाल दी गई है! हमारे आंतरिक सिस्टम पूरी माया के कब्जे में है इसलिए हमारा सब कुछ माया के अंतर्गत है!

अज्ञानता भगवान की कृपा से ही जाती है

भगवान की कृपा को भी उनकी कृपा से ही जाना जा सकता है,,, जब भगवान की कृपा होती है तो सबसे पहले भगवान उनके बुद्धि की अज्ञानता का नाश करते हैं! अज्ञान जब तक मिटेगी नहीं तब तक उसे सत्य दिखाई कैसे पड़ेंगे?,,, इस पूरे ब्रह्मांड में अज्ञानता सबसे बड़ा विष है! सबसे बड़ी जहर जो जीव को खा जाती है अगर उनकी कृपा नहीं हुई! भगवान की अज्ञान माया भगवान की कृपा से ही जाता है! तब उनको धीरे-धीरे परमात्मा दिखाई देने लगते हैं और रुचि उनकी तरफ बढ़ती चली जाती है! मन, बुद्धि, इंद्रियां जो पहले शैतानी करता था वह अब नहीं करेगा क्योंकि उस पर भगवान की कृपा हो गई, बालक ध्रुव ने भगवान से कई सारे प्रश्न किया! माया के विषय पर मायापति श्री हरि ने उनके मस्तक पर हाथ जैसे ही रखा उनकी माया नष्ट हो गई!

संपूर्ण जगत को माया ही नचा रही

संसार के समस्त प्राणियों को सुबह से लेकर रात तक दो शक्ति मिलकर नचा रही है! जो प्राणी सुबह से रात तक डिस्को डांस कर रही है उसका दो ही मूल कारण है संपूर्ण जगत के समस्त प्राणियों को दो चीज ही नचा रही है! एक पहला कालचक्र दूसरा प्रकृति! जिनके प्रत्येक जीव वशीकरण में है! हर पल वह वही कर्म करेगी जिसका वह आधीन है! संसार के प्रत्येक जीव काल और प्रकृति के अधीन है! प्रकृति वह जो उनके मन बुद्धि चित् को हरण कर ली है! कालचक्र वह है जो निरंतर हर घड़ी उसे उड़ा कर मृत्यु की ओर ले जा रही है! जीव प्रकृति के वश में इतनी फंस चुकी है कि उसे समय का परवाह नहीं जो निकलता जा रहा है!,, कालचक्र को पलट कर नहीं देखती! की समय मुझे हर पल चपेट रहा है!

प्रकृति बलवान या समय

जानना है तो पूरे अंत तक इस रहस्य को समझने होंगे!

मन, बुद्धि, अहंकार यह प्रकृति है! देखो इन दोनों का खेल,,,, अंत तक पूरा पढ़िएगा और गहराई से समझना है हमको दोनों में से कौन अधिक बलशाली है? देखिए-

काल या प्रकृति

1. 1 घंटे का पेपर है पेपर चाहे बना रहे या ना बना रहे! समय खत्म हो गया पेपर जमा करना ही पड़ेगा किसी भी हाल में और उसे स्वीकार करना पड़ेगा!

2. 9:00 कहीं आपको पहुंचना है 7:00 से सोच रहे वहां जाऊं या नहीं,,, सोचते सोचते 9 हीं बज गए! फैसला हुआ ही नहीं विचार, ज्ञान,, समझने की शक्ति,, फैसला, याददाश्त, इच्छा, चिंतन, मन, बुद्धि, चित यह सब प्रकृति है,, आपका फैसला हुआ नहीं रहेगा और समय खिसक जाएगा! समय किसी के लिए रुकता नहीं! समय इतना बलवान है! प्रकृति को चपेट कर रख दिया है! समय इतना पावरफुल है! समय के आगे संसार ही नहीं अनंत ब्रह्मांड नतमस्तक है!

3. समय कहता है प्रकृति से अर्थात जीव से तुम्हारी इच्छा पूरी हो या ना हो,,,, जीवन का समय समाप्त होगा तुरंत सब छोड़ कर वापस जाना पड़ेगा! कितने भी अर्जेंट काम में चाहे फंसा रह! समय हुआ तो एक सेकंड धरती पर रहने नहीं दिया जाएगा! जब तक समय शेष है तब तक ही जीवन है तब तक ही संसार में रहना होगा!

4. पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश यह प्रकृति है! मूसलाधार बारिश तब तक ही होती है जब तक उसका समय लिखा है! ऐसा लगता है की बारिश कब बंद हो,, अधिक समय तक ना बारिश होगी ना प्रचंड गर्मी पड़ेगी और न हीं ठंडी पड़ेगी! समय इन सब को नष्ट कर देता है! बहुत तेज आंधी तूफान आया! कोई नहीं रोक सका! काल ने प्रकृति को बंद करा दी बस हो गया तुम्हारा काम!

समय के आगे प्रकृति भी लाचार है! प्रकृति को भी उनकी बात माननी पड़ती है समय इतना बलवान है! समय के आगे ना गरीबी टिक पाया ना अमीरी और ना ही सुख और ना ही दुख! दोनों समय का ही खेल है! दुख है तो आगे सुख भी आएगा और अभी सुख है तो आगे दुख भी आएगा,,, अभी रात है तो कुछ देर बाद दिन प्रवेश हो जाएगा दिन का आना रात के बाद निश्चित है और अभी दिन है तो कुछ देर बाद रात का आना निश्चित है प्रकृति के दोनों पहिए समय पर ही टिका है! समय उसे पूर्व कर्मनुसार बदल देता है! जीव प्रकृति और जड़ प्रकृति दोनों काल का ही आधीन है!

5. कभी-कभी समय को मजबूर वश काटना होता है जीव को जब दुख की घड़ी हो और कभी-कभी समय ऐसा बीत जाएगा कि उसे पता नहीं चलेगा जीवन कैसे बीत गई? जब सुख का दिन हो! समय तो दोनों को तबाह करता है! उनके आगे प्रकृति के ना सुख टिकता है और ना ही दुख! दोनों प्रकृति की लहर है सुख और दुख तो कर्म की गति है और कर्म की गति भी समय पर ही टिकी हुई है! समस्त प्रकृति काल का ही आधीन है! और काल जिनके आधीन है वह है

काल ब्रह्म महाकाल!

काल ब्रह्म महाकाल की मर्जी से कालचक्र निरंतर गतिमान है जो पल भर भी कभी किसी के लिए रुकेंगे नहीं! और समस्त प्रकृति उनके अर्थात काल के वशीभूत होकर उसके अनुसार कार्य करती है! प्रकृति मां दुर्गा है और काल सदाशिव जो त्रिगुणात्मक आवरण से ऊपर की शक्ति है! संपूर्ण जगत संपूर्ण ब्रह्मांड इन दोनों का ही खेल है! प्रकृति वह जो कार्यरत है! क्रियाशील है और काल वह है जो उन्हें उनके क्रियाकलाप कार्यरत को पल-पल तबाह कर रहा है! समय का एक मूल गुण है वह किसी को पता चलने नहीं देता कि वह खिसक रहा है बीत रहा है निकल रहा है क्योंकि जीव प्रकृति के वशीकरण में है प्रकृति,, जीव से इतनी बलवान है कि उसे कभी पता चलने देगा नहीं कि मैं गुजर रहा हूं समय मुझको बहा कर मृत्यु की ओर ले जा रहा है यह बात किसी को पता नहीं चल रहा क्योंकि जीव,, प्रकृति के

वशीभूत है माया के आधीन है प्रकृति ही माया है! चुपचाप खिसक जाता है और प्राणी को यही समय एक दिन दुनिया से खिसका देता है!

संसार के प्रत्येक जीव,,, प्रकृति के वशीभूत है जो प्रकृति उसे करावेगी! जीव को करना ही पड़ेगा! नहीं बच सकती! और प्रकृति,,, समय के वशीभूत है, काल जो कराएगा प्रकृति को उसे करना ही पड़ेगा! नहीं बच सकती! और समय,,,, परमात्मा के वशीभूत है! परमात्मा जैसे इशारा करेगा! समय को अपना चाल बदलना पड़ेगा! परमात्मा,,, अपने कालचक्र को जैसे नचाएगा! जीव और प्रकृति को स्वीकार करना ही पड़ेगा! यह दोनों समय के अंडर में है! और समय परमात्मा के अंडर में कार्य करते हैं!

और परमात्मा सर्वोच्च परम सत्तापति,, मायापति,,, प्राणपति,,, सर्वशक्तिमान,, सर्व व्यापक,, सर्वज्ञाता,,, सर्वांतरयामी,,,, जीव और माया का अध्यक्ष परम शासक वह परमात्मा परम स्वतंत्र है समय की सीमा से बाहर और प्रकृति से भी परे हैं जिनके आगे किसी की नहीं चलती! आरंभ,, मध्य,, और अंत,,,, यह तीन उनका शाश्वत खेल है! बनाना और मिटाना परमात्मा अनंत काल से यह कार्य कर रहे हैं! और आगे करते रहेंगे! जिनका ना प्रारंभ है ना अंत है!

जिनके एक संकल्प मात्र से अनंत ब्रह्मांड की रचना होती है और एक संकल्प मात्र से अनंत ब्रह्मांड का विनाश हो जाता है! वही ब्रह्म है वही परमात्मा है!

स्वप्न हकीकत क्यों लगता है?

भगवान की बनाई हुई तीन प्रकार की दुनिया है एक स्वप्न की दुनिया एक जागृत अवस्था की दुनिया और तीसरा मृतआत्मा की दुनिया,,,, तीनों ऐसा है कि कभी प्राणी को नकली नहीं लगने वाली,,,, जिसने बनाया है इस 3 दुनिया को वह परम सत्य परमात्मा है! इसलिए यह तीन दुनिया जीव को मिथ्या नहीं लगती जिसने बनाया है वह परम सत्य परमात्मा है! एक जागृत अवस्था,, एक स्वप्न अवस्था और एक तीसरा मृत्यु के बाद की दुनिया,,,

क्या किसी को ऐसा लगता है कि स्वप्न देखते समय कि मैं सपने देख रहा हूं ऐसा फीलिंग होता है कि मैं वही चला गया हूं!

जैसे जागृत अवस्था हकीकत लग रहा है स्वप्न हकीकत लग रहा है ऐसे ही मृत्यु के बाद जब जीव जाएगी तो उसे वहां हकीकत लगेगा जब भगवान नरक का वैतरणी नदी का वहां सीन दिखाएंगे अभी लग रहा है ना सबको नरक कुछ नहीं होता! सब झूठ है! वहां जाने के बाद पता चलेगा! सत्य क्या है?

वहां जाने के बाद फिर उसे वही सत्य लगेगा ऐसा ना समझे कि यह कुछ नहीं है भगवान ने सब सिस्टम वहां बनाया हुआ है 36 प्रकार के नर्क हैं! जीव का जैसा कर्म वैसा उनका फल उनके लिए तैयार है!

तब वहां पश्चाताप करती है माथा पीट-पीट कर रोती है जब यमदूत उसे पीटते हैं मैं भगवान का भजन क्यों नहीं किया? नाम जाप क्यों नहीं किया? क्या हो गया था मुझे वहां जो सत्य है भगवान उसको पल भर भी देखा ही नहीं यह सब सोचकर जीव बहुत ही पछताते हैं! मरने के बाद प्रत्येक जीव पश्चाताप करती है!

उनके चक्कर में पड़ा रहा जो अपना है ही नहीं! यह सब सोचकर रोती है! अभी यह सब झूठ इसलिए लग रहा है अभी हम पर माया हावी हो गई है! इसलिए अभी यही सत्य लग रहा है!

यहां से जाने के बाद जीव बहुत ही पछताते हैं अभी तो उनकी बुद्धि पर माया चढ़ी है इसलिए भगवान को भूल गई है!

यहां की दुनिया सब भूल जाएगी वहीं का हो जाएगी आगे जैसा उसको सीन दिखाया जाएगा वही जीव देखेगी! और तीनों कोई भी स्थाई नहीं है पूर्ण नहीं है पूर्ण कोई और है! वही परमात्मा है

ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या!

भगवान की प्रबल माया

माया में ठगा गए हो कैसी भगवान की प्रबल माया जो नहीं समझ रहे! जो दिख रहा है सब मिथ्या है कुछ भी सत्य नहीं! व्यर्थ की चेष्टा,, व्यर्थ बातें करना बंद करो! राधा नाम का जाप करो! यही परम धन साथ जाएगा! तुम्हारा झूठा मुंह यही रह जाएगा! मेरा मेरा जो कर रहे! सब स्वप्निक है! कभी विचार करें शरीर छोड़कर जब मैं अकेले जाऊंगा एक दिन तो मेरा क्या होगा? ना कभी भगवान का नाम लिया ना उनका ध्यान किया फिर तो 84 के चक्कर में घूमना पड़ेगा! अगर मनुष्य योनि दुर्लभ जन्म प्राप्त करके फिर से वही शैतानी मौज मस्ती इसके चक्कर में पड़ कर अपने आप को पुनः जन्म मृत्यु के खेल में बांधते जा रहे हैं!

उस जीव की दुर्गति क्या होती है? 10 अब वर्ष में एक बार मनुष्य योनि मिलती है! सिर्फ जन्म मृत्यु से मुक्त होने के लिए नहीं पाया तो फिर वही 84 का चक्कर! अपने बल पर कोई त्रिगुणात्मक प्रकृति पर जीत हासिल नहीं कर सकता! चाहे कितने भी बड़े योगी, तपस्वी अपने योग ध्यान से इसे जीतने की कोशिश करें! भगवान की माया इतना बलवान है इतना प्रबल की कोई उनकी माया का पार नहीं पा सकता और शब्दों द्वारा उनकी माया का व्याख्यान नहीं किया जा सकता इतना प्रबल है इतना प्रचंड है!

उनकी त्रिगुणात्मक प्रकृति इतना बलवान है! उनके प्रकृति द्वारा कोई भी एक कर्म हुआ सोच रहे हम मर जाएंगे तो सब खेल खत्म! एक-एक कर्म पीछा करेंगे,, कोई भी एक कर्मों से मुक्ति नहीं मिलेगी! उसका फल भोगना ही पड़ेगा,,, यह प्रकृति का शाश्वत नियम है यही चक्कर अनंत जन्मों से चल रहा है और चलता रहेगा जब तक माया पति पार ब्रह्म परमेश्वर भगवान श्री कृष्ण की शरण में जीव नहीं जाएगी!

प्राणी अपने कर्म से नहीं उबर पा रहा! इसलिए जन्म मृत्यु के चक्र में फंसी है और फंसी रहेगी! जब तक कर्मों का हिसाब पूरा ना हो जाए!

एक कर्म के लिए बार-बार जन्म लेने पड़ेंगे! इसीलिए तो भगवान ने बताया है स्पष्ट किया है जो मेरी शरण में आएगा बस वही मेरी माया से पार हो पाएगा! क्यों बताया है भगवान ने इसीलिए क्योंकि भगवान जानते हैं उनकी माया कितना प्रबल है उनकी प्रबल माया को जीव नहीं जानती,, जान जाए तो बात बन जाए!

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया | मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते || 7/14||,,, गीता-7/14

भोग करने वालों जान लो! सत्य को

मौज-मस्ती भोग करने वालों जान लो! सत्य को

माया में ठगा गए हो कैसी भगवान की प्रबल माया जो नहीं समझ रहे! जो दिख रहा है संसार में सब मिथ्या है कुछ भी सत्य नहीं! व्यर्थ की चेष्टा,, व्यर्थ बातें करना बंद करो! राधा नाम का जाप करो! यही परम धन साथ जाएगा! तुम्हारा झूठा मोह यही रह जाएगा! मेरा मेरा जो कर रहे! सब स्वप्निक है! कभी विचार करें शरीर छोड़कर जब मैं अकेले जाऊंगा एक दिन तो मेरा क्या होगा? ना कभी भगवान का नाम लिया ना उनका ध्यान किया फिर तो 84 के चक्कर में घूमना पड़ेगा! अगर मनुष्य योनि दुर्लभ जन्म प्राप्त करके फिर से वही शैतानी मौज मस्ती इसके चक्कर में पड़ कर अपने आप को पुनः जन्म मृत्यु के खेल में बांधते जा रहे हैं! उस जीव की दुर्गति क्या होती है? कभी जाना है? 10 अरब वर्ष में सिर्फ एक बार मनुष्य योनि मिलती है! केवल जन्म मृत्यु से मुक्त होने के लिए,, मोक्ष के लिए एक चांस दिया जाता है अवसर! मौज मस्ती किया तो गए वहां 84 में! अवसर गंवा दिया तो फिर वही 84 का चक्कर इसमें उसे जाना होता है! भगवान का मार्ग नहीं पकड़ा तो समझ ले आगे कुत्ते बिल्ली के चक्कर लगाना होगा उनकी बड़ी दुर्गति होती है! जो सत्य को नहीं जान पाया!

वासना क्या है?

किसी भी वस्तु या व्यक्ति से भोग करने की इच्छा,, भोगों की चेष्टा करना ही वासना है! यह वासना भी दो प्रकार के हैं एक वस्तु का भोग एक व्यक्ति का भोग! व्यक्ति के भोगों को कामवासना कहते हैं! और वस्तु के भोग को लोभ वासना कहते हैं! इसका संबंध धन की इच्छा से हैं ताकि इसी धन के द्वारा संसार के सारे वस्तु प्राप्त होते हैं! स्त्री और पुरुषों में आकर्षित होना यह कामवासना है! उनसे भोग करने की इच्छा उत्पन्न होना इसे कामवासना या काम उत्तेजना कहते हैं! धन और रूप इन दोनों में मोहित होना ही वासना है! वह हर चीजे माया है जो जो मन को लुभाती है!

क्रोध क्या है?

सहनशीलता की कमी ही क्रोध है जितना सहनशीलता प्रबल होगा उतना ही क्रोध नष्ट होगा! क्योंकि यह सहनशीलता क्रोध को पी जाती है! उसे रोक देती है! कितना भी बड़ा क्रोध का माहौल बन जाए यह उसे रोक देती है! अंतःकरण में एक ज्वाला उत्पन्न होना यही क्रोध है! और यह क्रोध उत्पन्न होने के तीन मुख्य कारण होते हैं! 1. इच्छा की जब पूर्ति नहीं होती 2. स्वयं का अहंकार होना 3. मोह! जब तक चित् में तीन चीजे रहेंगे अहंकार, इच्छा और मोह तो क्रोध को कभी रोका नहीं जा सकता! क्योंकि यह तीन बलवान चित् में पहले से जगह बना लिया है!

लोभ क्या है?

संतुष्टि को छीन लेना यही लोभ है! कितने भी अधिक पैसे हो शांति सुख उसे क्यों नहीं मिलता इसका कारण यही लोभ है! देखो यह लोभ कैसे जीव को अपना शिकार बनाता है! जैसे किसी को इच्छा है बस मैं काम में लग जाऊं उसे वहां पता चला तुम्हारी वेतन 15,000 रहेगी! उसने स्वीकार किया! करते-करते चार महीने हो गए! अब उसे ज्यादा पैसे

की इच्छा हुई! एक वर्ष बाद उन्हें 40,000 की नौकरी मिल गई! फिर इच्छा बढ़ गई! उनकी चाहत और भी बढ़ गई! ₹1,00,000 मुझे महीना मिले! बस यह बढ़ती जाती है नष्ट कभी नहीं होता! जब अपने पास है वह चीज तो उसकी और चाहत करना यह लोभ का लक्षण है!

मोह क्या है?

इसे अध्यात्म की भाषा में आसक्ति कहते हैं! जो माया का सबसे बड़ा पहला विकार है! दूसरे नंबर पर अहंकार! यह दोनों एक ही जगह पर दोनों एक साथ रहते हैं अहंकार और मोह! अटैचमेंट होना! किसी से अधिक लगाव करना यह मोह है! और यही सारे दुखों की जननी है! जब तक किसी से मोह है तब तक दुख है भय है चिंता है मोह नहीं तो दुख नहीं! अपने सुख के लिए किसी से संबंध बनाना और उनसे अटैच हो जाना! उन्हें हमेशा के लिए अपने पास रखने की इच्छा! वह सुख मुझे सदा मिले! यही मोह है!

अहंकार क्या है?

भगवान की सभी प्रबल माया में यह दूसरे नंबर पर है पहले नंबर पर मोह है अहंकार एक भावना है! मैं हूं हर पल यह प्रतीत होना और स्वयं को श्रेष्ठ मान लेना यह अहंकार है और किसी को अपना मान लेना यह मोह है! जो अपनी सारी बुराइयों को ढक कर रख देता है उसे पता चलने देगा ही नहीं कि उनके अंदर कोई दुर्गुण है! अहंकार स्वयं को ना देख कर माया जगत में विचरती रहती है! अहंकार एक स्वयं का मैं भाव है! मैं कुछ हूं यह फीलिंग होना ही अहंकार है! और इसका स्थान है बुद्धि!, बुद्धि की मात्रा जितनी अधिक होगी उतनी अहंकार उसे पर भारी होगी! बुद्धि कम अहंकार कम,, बुद्धि नहीं अहंकार नहीं! अहंकार का खेल बुद्धि से ही शुरू होता है!

इच्छा क्या है?

पूर्व जन्म के संस्कारों को खींच कर लाना! और उन्हें उसी दिशा में लाकर खड़ा कर देना जिसमें उसका मन अटका था! इच्छा एक भ्रांति मायाजाल है! किसी भी इच्छा की पूर्ति होने पर उसे क्षण भर के लिए सुख मिलता है और वह क्षणिक सुख जीव के लिए इतना विकराल है! उसने निश्चय कर लिया है कि मुझे संसार में सुख मिलेगा! और मिलकर रहेगा यह भ्रम जीव को बहुत गहरा है! सुख मिलेगी नहीं कभी उसे केवल भ्रम में भटक रही है! यह एक जन्म का खेल नहीं जो मिट जाएगी! अनंत जन्मों का खेल है! सुख का झूठा भ्रांति ही इच्छाओं का जाल है! जिस दलदल में जीव बुरी तरह फंसी हुई है! झूठे सुख का मायाजाल ही इच्छा है! जैसे यह पूरी हुई तो उन्हें तत्काल मोह में लपेट लेती है! यदि नहीं हुई तो क्रोध की अग्नि!

ईर्ष्या क्या है?

इसके पिता है- अहंकार और ईर्ष्या इसकी बेटी है! अहंकार से उत्पन्न होते हैं यह जो ईर्ष्या है! जो स्वयं को जिस सुख की प्रबल इच्छा है! अगर वह हमें ना मिलकर किसी अन्य प्राणी को मिल गया! तो उसी क्षण ईर्ष्या भड़क जाती है और यह ईर्ष्या एक बुरी भावना है! जो किसी के प्रति बहुत बुरी भाव रखना! यह कभी किसी से प्रेम होने नहीं देती! यह भाव

अंत: करण को जलाती है जहां ईर्ष्या है वहां प्रेम नहीं! जहां प्रेम है वहां ईर्ष्या नहीं! प्रत्येक जीव अपने सुख की प्यासी है किसी का सुख वह बर्दाश्त नहीं करती उनकी अनंत जन्मों की गहरी आदत है! इसका स्थान अध्यात्म परमात्मा जगत में भी है यह इतना बलवान है! एक भक्त को दूसरे भक्त से होता है!

माया, भगवान की शक्ति

सर्वशक्तिमान भगवान की अनंत शक्तियाँ है। उनमें से एक माया है जो पूर्णतया भगवान के द्वारा शासित है।

मायां तु प्रकृतिं मायिनं तु महेश्वरम् ।

तस्यावयव भूतैस्तु व्यापतं सर्वमिदं जगत।।

श्वेता. 4.10

परात्पर ब्रह्म की प्रमुख रूप से तीन शक्तियाँ हैं।

1.जीव शक्ति यह चेतन है तथा तटस्था शक्ति है

2.माया शक्ति यह जड़ शक्ति है तथा बहिरंगा शक्ति है

3.पराशक्ति यह चेतन है तथा अंतरंग शक्ति है

परात्पर ब्रह्म तथा जीव चेतन है और माया जड़ है । यद्यपि तीनों अनादि अनंत हैं परंतु तीनों स्वतंत्र नहीं हैं । परात्पर ब्रह्म, जीव तथा माया का शासक है ।

माया, भगवान की जड़ शक्ति है अतः स्वयं से कुछ नहीं कर सकती। यद्यपि यह भगवान की तरह न तो दिव्य है और न ही चेतन तथापि यह सृष्टि जैसे आश्चर्यजनक कार्य करती है क्योंकि यह भगवान के द्वारा नियंत्रित है।

यह तुच्छ, जड़, भगवान की बहिरंगा शक्ति इतनी बलवती है कि बड़े बड़े ज्ञानी भी इससे डरते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यह उतनी ही शक्तिशाली है जितने भगवान हैं क्योंकि यह भगवान की शक्ति से शक्तिमति बनी है।

कार्णार्णवशायी महाविष्णु के द्वारा माया पर दृष्टिपात करते ही माया कार्यशील हो जाती है।

माया के प्रकार

माया के तीन गुण होते हैं अतः इसे त्रिगुणात्मिका माया भी कहते हैं ।

सत्व गुण

प्रेम, सत्य, दया, धर्म आदि दैवीय गुण वाली सत्वगुणी माया कहलाती है। स्वर्ग लोक के देवी देवताओं में माया के इस गुण की प्रधानता होती है। सत्वगुण माया के अन्य दोनों गुणों से यह गुण उच्च है ।

रजोगुण

अपने सुख की वासना माया का रजोगुण है। मनुष्यों में माया के इस गुण की प्रधानता होती है। एक सीमा तक दूसरों की सहायता करना, ईमानदार रहना, सहनशीलता, उदारता आदि गुण माया के रजोगुण के द्योतक हैं। अर्थात इन गुणों से युक्त जीव न ही बहुत अच्छे और न ही बहुत बुरे होते हैं।

तामस गुण

मानवीय गुणों के विरोधी गुण अर्थात राक्षसी प्रवृत्ति तामस गुण कहलाता है। क्रोध, हिंसा, छल, कपट, बेईमानी, क्रूरता आदि गुण तामसी होते हैं।

माया की अभिव्यक्ति

मेज एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे पहुँच जाती है?

संसार माया की अभिव्यक्ति है। प्रत्येक मायिक पदार्थ जड़, अनित्य तथा परिवर्तनशील है। हमारा शरीर पंचमहाभूत से निर्मित है अतः यह भी अनित्य तथा परिवर्तनशील है। एक दिन यह इसका आरंभ होता है, फिर जन्म लेता है, वृद्धि होती है, ढ़लने लगता है तथा मृत्यु के पश्चात छय हो जाता है।

जड़ शरीर चेतन की भाँति अनंत क्रियाएँ यथा देखना, सुनना, सोचना, सुनना, निर्णय लेना, स्पर्श करना आदि करता है। यह कमाल हृदय में बैठी हुई चेतन आत्मा का है कि पूरे शरीर को चैतन्यवत कर्म कर देती है । जैसे कक्ष के एक कोने में रखा हुआ दीपक संपूर्ण कक्ष को रोशनी प्रदान करता है उसी प्रकार हृदय में रहकर आत्मा इंद्रिय, मन तथा बुद्धि सबको चैतन्य बना देती है।

इसको एक उदाहरण से समझते हैं। मेज जड़ वस्तु है परंतु फिर भी यह कक्ष के एक कोने से दूसरे कोने में पहुँच जाती है। कैसे? इसको हमारे चेतन हाथ उठाकर रखते हैं। इन हाथों को चेतनता हमारा मन देता है। मन भी जड़ है । इसको आत्मा से चेतना प्राप्त होती है तथा आत्मा को परमात्मा से चेतना प्राप्त होती है। परमात्मा ही भगवान है जो विभूचित है तथा सभी को चेतना प्रदान करता है। वह भगवान ही समस्त चेतना का स्रोत है अर्थात उसकी चेतना का कोई अन्य स्रोत नहीं है ।

आत्मा शरीर को चेतना प्रदान करती है यही कारण है कि जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो शरीर मृत हो जाता है। यह आत्मा शरीर के हृदय में निवास करती है।

अतः माया भगवान की जड़ शक्ति है जो कि पूर्णतया भगवान के द्वारा नियंत्रित है । पूरा संसार माया का बना है। यहाँ तक कि हमारी इंद्रियाँ, मन, बुद्धि भी मायिक हैं। आत्मा दिव्य है इसलिए मन, बुद्धि, इंद्रियों से परे है। आत्मा अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार दिव्यानंद की प्राप्ति करना चाहती है। परंतु इंद्रिय मन बुद्धि मायिक होने के कारण दिव्यानंद से अनभिज्ञ हैं ।

वे नहीं जानते कि आत्मा का आनंद कहाँ है तथा कैसे प्राप्त होगा। तो हमें क्या करना चाहिए? हमें समर्पण की भावना से दिव्य प्रेम प्राप्त मायातीत महापुरुष के पास जाकर उससे अपने आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करके उसकी

सेवा करनी चाहिए। वह तुम्हारी जिज्ञासाओं को शांत करके भगवत पथ पर सही-सही मार्गदर्शन करते हुए तुम्हें भगवान की ओर चलाता है, जो स्वयं दिव्यानंद स्वरूप है।

माया भगवान की दंड कारिणी शक्ति है जो भगवान से विमुख जीवों को मायिक वस्तुओं तथा व्यक्तियों के प्रति आकर्षित कर लेती है। जब उन व्यक्तियों तथा वस्तुओं से जीव की आनंद प्राप्ति का लक्ष्य पूर्ण नहीं होता तब जीव को ज्ञान होता है कि "ये वस्तुएँ मेरी नहीं है । मैं शरीर नहीं हूँ । मैं आत्मा हूँ तथा भगवान का अंश हूँ । मायिक वस्तुओं की प्राप्ति से दिव्य आत्मा को परमानंद नहीं मिल सकता। मैं इन व्यक्तियों तथा वस्तुओं से ममत्व क्यों बढ़ाऊँ ? सभी जीव मेरी ही तरह दिव्य प्रेम के भिखारी हैं "।

तो हमें क्या करना चाहिए?

हमें दीनता पूर्वक दिव्य प्रेम प्राप्त मायातीत महापुरुष के पास जाकर उनकी सेवा करनी चाहिए । जिज्ञासु भाव से अपनी शंकाओं के समाधान हेतु प्रश्न करना होगा । वे तुम्हारी जिज्ञासाओं को शांत करके सही-सही मार्गदर्शन करते हुए तुम्हें भगवत पथ पर अग्रसर कर देंगे ।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया । उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्तवदर्शिनः।। गी. 3.34

तस्माद् गुरुं प्रद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम्। शाब्देपरे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयम् । भा11.3.21

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं "किसी भगवत प्राप्त संत को सर्व समर्पण करके उससे विनय पूर्वक आध्यात्मिक जिज्ञासाओं के समाधान हेतु प्रश्न करो" ।

सभी के जीवन में दुख भरे अनुभव माया जनित सांसारिक बंधनों के कारण हैं। माया दुखदाई नहीं है अपितु संसार के स्वरूप को उनके व्यवहारों के द्वारा समझाती है तथा हमको सही संबंधों का ज्ञान कराती है। मायिक व्यक्ति या वस्तु हमारे दुख का कारण नहीं होते वरन उनसे सुख प्राप्त करने की अपूर्ण कामना से हमें स्वत: दुख की प्राप्ति होती है । संसारी व्यक्तियों अथवा वस्तुओं में सुख मानना दुख को निमंत्रण देने के समान है। अतः जीव को यह ज्ञान दृढ़ करना होगा कि भगवान ही आनंद है और उसकी प्राप्ति पर ही मुझे आनंद प्राप्त हो सकता है । अतः हम सभी को भगवान से प्रगाढ़ अनुराग करना होगा । यह प्रगाढ़ता "भगवान ही आनंद स्वरूप है" का पुनः पुनः चिंतन करके आएगी । यह ज्ञान जितनी मात्रा में दृढ़ होगा उतनी मात्रा में संसार से वैराग्य तथा भगवान (आनंदसिंधु) से अनुराग स्वत: होता जाएगा।

भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं -

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्तिते।। गीता 7.14

"माया दैवीय है तथा मेरी ही शक्ति है। मुझे प्राप्त करके ही माया पर विजय प्राप्त की जा सकती है। और मैं अजेय हूँ अतः माया भी अजेय है। परंतु यदि कोई मेरे पूर्ण शरणागत हो जाता है तो मेरी कृपा से वो माया के बंधनों से मुक्त हो जाता है।"

भावार्थ यह है कि भगवान के दो प्रकार के सेवक होते हैं:

एक तो संत जो हमारे सच्चे मार्गदर्शक बनकर हमें दिव्यानंद की प्राप्ति के पथ पर चलाते हैं। वो प्यार-दुलार से हमें तत्व ज्ञान कराते हैं । आनंद प्राप्ति हेतु दुख के मार्ग पर न चलने को प्रेरित करते हैं ।

परंतु यदि कोई भगवान के सच्चे संतो की बात नहीं मानता और भगवान की सेविका माया की ओर भागता है तो माया उसको सांसारिक व्यक्तियों तथा वस्तुओं में आसक्त कर देती है । सांसारिक संबंधी जब अपनी स्वार्थ सिद्धि की प्रस्तावना रखते हैं तब जीव को ज्ञान होता है कि "ये सब स्वार्थी हैं । इस संसार में हमारा सच्चा हितेषी एकमात्र गुरु तथा भगवान ही है । उनसे ही प्रेम करने से हमें हमारे लक्ष्य की प्राप्ति होगी।" इस ज्ञान से संसार से वैराग्य और हरि-गुरु में अनुराग हो जाता है

माया का स्वरूप

वेदों के अनुसार,,,,,,,

सर्वशक्तिमान भगवान की अनंत शक्तियाँ है। उनमें से एक माया है जो पूर्णतया भगवान के द्वारा शासित है।

मायां तु प्रकृतिं मायिनं तु महेश्वरम् ।

तस्यावयव भूतैस्तु व्यापतं सर्वमिदं जगत।।

यजुर्वेद (श्वेता. 4.10)

परात्पर ब्रह्म की प्रमुख रूप से तीन शक्तियाँ हैं।

1.जीव शक्ति यह चेतन है तथा तटस्था शक्ति है!

2.माया शक्ति यह जड़ शक्ति है तथा बहिरंगा शक्ति है!

3.पराशक्ति यह चेतन है तथा अंतरंग शक्ति है!

परात्पर ब्रह्म तथा जीव चेतन है और माया जड़ है । यद्यपि तीनों अनादि अनंत हैं परंतु तीनों स्वतंत्र नहीं हैं । परात्पर ब्रह्म, जीव तथा माया का शासक है ।

माया, भगवान की जड़ शक्ति है अतः स्वयं से कुछ नहीं कर सकती। यद्यपि यह भगवान की तरह न तो दिव्य है और न ही चेतन तथापि यह सृष्टि जैसे आश्चर्यजनक कार्य करती है क्योंकि यह भगवान के द्वारा नियंत्रित है।

यह तुच्छ, जड़, भगवान की बहिरंगा शक्ति इतनी बलवती है कि बड़े बड़े ज्ञानी भी इससे डरते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यह उतनी ही शक्तिशाली है जितने भगवान हैं क्योंकि यह भगवान की शक्ति से शक्तिमति बनी है।

कार्णार्णवशायी महाविष्णु के द्वारा माया पर दृष्टिपात करते ही माया कार्यशील हो जाती है।

माया के प्रकार

माया के तीन गुण होते हैं अतः इसे त्रिगुणात्मिका माया भी कहते हैं ।

सत्व गुण

प्रेम, सत्य, दया, धर्म आदि दैवीय गुण वाली सत्वगुणी माया कहलाती है। स्वर्ग लोक के देवी देवताओं में माया के इस गुण की प्रधानता होती है। सत्वगुण माया के अन्य दोनों गुणों से यह गुण उच्च है ।

रजोगुण

अपने सुख की वासना माया का रजोगुण है। मनुष्यों में माया के इस गुण की प्रधानता होती है। एक सीमा तक दूसरों की सहायता करना, ईमानदार रहना, सहनशीलता, उदारता आदि गुण माया के रजोगुण के द्योतक हैं। अर्थात इन गुणों से युक्त जीव न ही बहुत अच्छे और न ही बहुत बुरे होते हैं।

तामस गुण

मानवीय गुणों के विरोधी गुण अर्थात राक्षसी प्रवृत्ति तामस गुण कहलाता है। क्रोध, हिंसा, छल, कपट, बेईमानी, क्रूरता आदि गुण तामसी होते हैं।

माया की अभिव्यक्ति

मेज एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे पहुँच जाती है?

संसार माया की अभिव्यक्ति है। प्रत्येक मायिक पदार्थ जड़, अनित्य तथा परिवर्तनशील है। हमारा शरीर पंचमहाभूत से निर्मित है अतः यह भी अनित्य तथा परिवर्तनशील है। एक दिन यह इसका आरंभ होता है, फिर जन्म लेता है, वृद्धि होती है, ढ़लने लगता है तथा मृत्यु के पश्चात छय हो जाता है।

जड़ शरीर चेतन की भाँति अनंत क्रियाएँ यथा देखना, सुनना, सोचना, सुनना, निर्णय लेना, स्पर्श करना आदि करता है। यह कमाल हृदय में बैठी हुई चेतन आत्मा का है कि पूरे शरीर को चैतन्यवत कर्म कर देती है । जैसे कक्ष के एक कोने में रखा हुआ दीपक संपूर्ण कक्ष को रोशनी प्रदान करता है उसी प्रकार हृदय में रहकर आत्मा इंद्रिय, मन तथा बुद्धि सबको चैतन्य बना देती है।

इसको एक उदाहरण से समझते हैं। मेज जड़ वस्तु है परंतु फिर भी यह कक्ष के एक कोने से दूसरे कोने में पहुँच जाती है। कैसे? इसको हमारे चेतन हाथ उठाकर रखते हैं। इन हाथों को चेतनता हमारा मन देता है। मन भी जड़ है । इसको आत्मा से चेतना प्राप्त होती है तथा आत्मा को परमात्मा से चेतना प्राप्त होती है। परमात्मा ही भगवान है जो

विभूचित है तथा सभी को चेतना प्रदान करता है। वह भगवान ही समस्त चेतना का स्रोत है अर्थात उसकी चेतना का कोई अन्य स्रोत नहीं है ।

आत्मा शरीर को चेतना प्रदान करती है यही कारण है कि जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो शरीर मृत हो जाता है। यह आत्मा शरीर के हृदय में निवास करती है।

अतः माया भगवान की जड़ शक्ति है जो कि पूर्णतया भगवान के द्वारा नियंत्रित है । पूरा संसार माया का बना है। यहाँ तक कि हमारी इंद्रियाँ, मन, बुद्धि भी मायिक हैं। आत्मा दिव्य है इसलिए मन, बुद्धि, इंद्रियों से परे है। आत्मा अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार दिव्यानंद की प्राप्ति करना चाहती है। परंतु इंद्रिय मन बुद्धि मायिक होने के कारण दिव्यानंद से अनभिज्ञ हैं ।

वे नहीं जानते कि आत्मा का आनंद कहाँ है तथा कैसे प्राप्त होगा।

तो हमें क्या करना चाहिए? हमें समर्पण की भावना से दिव्य प्रेम प्राप्त मायातीत महापुरुष के पास जाकर उससे अपने आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करके उसकी सेवा करनी चाहिए। वह तुम्हारी जिज्ञासाओं को शांत करके भगवत पथ पर सही-सही मार्गदर्शन करते हुए तुम्हें भगवान की ओर चलाता है, जो स्वयं दिव्यानंद स्वरूप है।

माया भगवान की दंड कारिणी शक्ति है जो भगवान से विमुख जीवों को मायिक वस्तुओं तथा व्यक्तियों के प्रति आकर्षित कर लेती है। जब उन व्यक्तियों तथा वस्तुओं से जीव की आनंद प्राप्ति का लक्ष्य पूर्ण नहीं होता तब जीव को ज्ञान होता है कि "ये वस्तुएँ मेरी नहीं है । मैं शरीर नहीं हूँ । मैं आत्मा हूँ तथा भगवान का अंश हूँ । मायिक वस्तुओं की प्राप्ति से दिव्य आत्मा को परमानंद नहीं मिल सकता। मैं इन व्यक्तियों तथा वस्तुओं से ममत्व क्यों बढ़ाऊँ ? सभी जीव मेरी ही तरह दिव्य प्रेम के भिखारी हैं "।

तो हमें क्या करना चाहिए?

हमें दीनता पूर्वक दिव्य प्रेम प्राप्त मायातीत महापुरुष के पास जाकर उनकी सेवा करनी चाहिए । जिज्ञासु भाव से अपनी शंकाओं के समाधान हेतु प्रश्न करना होगा । वे तुम्हारी जिज्ञासाओं को शांत करके सही-सही मार्गदर्शन करते हुए तुम्हें भगवत पथ पर अग्रसर कर देंगे ।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया । उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्तवदर्शिनः।। गी. 3.34

तस्माद् गुरुं प्रद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम्। शाब्देपरे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयम् । भा11.3.21

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं "किसी भगवत प्राप्त संत को सर्व समर्पण करके उससे विनय पूर्वक आध्यात्मिक जिज्ञासाओं के समाधान हेतु प्रश्न करो" ।

सभी के जीवन में दुख भरे अनुभव माया जनित सांसारिक बंधनों के कारण हैं। माया दुखदाई नहीं है अपितु संसार के स्वरूप को उनके व्यवहारों के द्वारा समझाती है तथा हमको सही संबंधों का ज्ञान कराती है। मायिक व्यक्ति या वस्तु हमारे दुख का कारण नहीं होते वरन उनसे सुख प्राप्त करने की अपूर्ण कामना से हमें स्वत: दुख की प्राप्ति होती है ।

संसारी व्यक्तियों अथवा वस्तुओं में सुख मानना दुख को निमंत्रण देने के समान है। अतः जीव को यह ज्ञान दृढ़ करना होगा कि भगवान ही आनंद है और उसकी प्राप्ति पर ही मुझे आनंद प्राप्त हो सकता है । अतः हम सभी को भगवान से प्रगाढ़ अनुराग करना होगा । यह प्रगाढ़ता "भगवान ही आनंद स्वरूप है" का पुनः पुनः चिंतन करके आएगी । यह ज्ञान जितनी मात्रा में दृढ़ होगा उतनी मात्रा में संसार से वैराग्य तथा भगवान (आनंदसिंधु) से अनुराग स्वत: होता जाएगा।

भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं -

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्तिते।। गीता 7.14

"माया दैवीय है तथा मेरी ही शक्ति है। मुझे प्राप्त करके ही माया पर विजय प्राप्त की जा सकती है। और मैं अजेय हूँ अतः माया भी अजेय है। परंतु यदि कोई मेरे पूर्ण शरणागत हो जाता है तो मेरी कृपा से वो माया के बंधनों से मुक्त हो जाता है।"

भावार्थ यह है कि भगवान के दो प्रकार के सेवक होते हैं:

एक तो संत जो हमारे सच्चे मार्गदर्शक बनकर हमें दिव्यानंद की प्राप्ति के पथ पर चलाते हैं। वो प्यार-दुलार से हमें तत्व ज्ञान कराते हैं । आनंद प्राप्ति हेतु दुख के मार्ग पर न चलने को प्रेरित करते हैं ।

परंतु यदि कोई भगवान के सच्चे संतो की बात नहीं मानता और भगवान की सेविका माया की ओर भागता है तो माया उसको सांसारिक व्यक्तियों तथा वस्तुओं में आसक्त कर देती है । सांसारिक संबंधी जब अपनी स्वार्थ सिद्धि की प्रस्तावना रखते हैं तब जीव को ज्ञान होता है कि "ये सब स्वार्थी हैं । इस संसार में हमारा सच्चा हितेषी एकमात्र गुरु तथा भगवान ही है । उनसे ही प्रेम करने से हमें हमारे लक्ष्य की प्राप्ति होगी।" इस ज्ञान से संसार से वैराग्य और हरि-गुरु में अनुराग हो जाता है

प्रकृति का विधान

प्रकृति का विधान महा बलवती है!

समझिए बुद्धि में सिग्नल कहां से आता है?

लोगों को यह संदेह रहता है मृत्यु तो अपने हाथ में है! अपनी मर्जी से हम कभी भी मर सकते हैं उनके इच्छा के विरुद्ध कोई नहीं जा सकता! उनके लेख के आगे किसी की नहीं चलती! जिस क्षण जो होना है होकर रहता है! प्रकृति का विधान ऐसा है! यदि एक्सीडेंट से प्राण गया है तो वह कारण भी पहले से निर्धारित था!

जितने संसार में गाड़ी साइकिल मोटर ट्रक ट्रेन एरोप्लेन इधर-उधर चलते हैं परम शक्ति नियति के अनुसार ही सब चलते हैं! यहां तक की गाड़ी कौन सी दिशा में चल रही है? उसके अनुसार चल रहा है आगे से कौन आ रहा? पीछे से कौन आ रहा? सब उनको मालूम रहता है क्योंकि उन्हीं के अनुसार संसार चल रहा है!

सब परम शक्ति द्वारा संचालित है! बुद्धि पर उसने माया का पर्दा ऐसा डाला है कि प्राणी को लगे कि मैं कर रहा! बस यही मैं रूपी माया का भ्रम सबको मार रही है सृष्टि में कौन बचा है इससे,,,,, कोई बिरले जीव ही प्रकृति के विधान को जान पाता है!

कुर्सी पर बैठे हो दिमाग में क्या चल गया? आपको लगा कि हमने सोचा हमारी बुद्धि में हमारे अनुसार यह बात आया परंतु सुप्रीम से ही बुद्धि में वह बात आया है! जो आगे होना है! सोचा कि मुझे यहां जाना चाहिए तुरंत उठकर चल दिए कौन ले जा रहा है आपको आपका प्रारब्ध आपको खींच कर ले जा रहा है!

बुद्धि भगवान की योग माया शक्ति है क्या याद रहेगा और क्या नहीं? भगवान डिसाइड करते हैं! भगवान ने माता यशोदा को अनंत ब्रह्मांड का दर्शन कराया फिर बाद में बुद्धि में माया का पर्दा डाल दिए जिसके कारण वह भूल गई! जो कुछ बुद्धि में याद है या नहीं है बुद्धि जो कुछ भी है भगवान की शक्ति से है! जो उसने याद रखवाया है!

बस वही याद रहेगा अन्य कुछ भी याद नहीं रहेगा हमें जितना भी ज्ञान है आज मृत्यु के बाद आगे बुद्धि जाएगी ही नहीं पूरा ज्ञान यही नष्ट हो जाएगा! मृत्यु के बाद तो भगवान बुद्धि को फॉर्मेट कर देते हैं उसे कुछ याद नहीं रहता इसलिए आदि जगतगुरु शंकराचार्य ने संसार को मिथ्या कहा है क्योंकि आगे कुछ याद रहेगा नहीं! जो ज्ञान बुद्धि में यही प्राप्त हुआ और यही नष्ट हो जाएगा! हम स्त्री थे या पुरुष यह भी मालूम नहीं होगा! बुद्धि की शून्यवस्था होगी जैसे हम गर्भ में थे! इसलिए वेद कहते हैं ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या!

कुर्सी पर बैठे-बैठे बुद्धि में कुछ लहर आया और तुरंत उठकर उधर चल दिए! उधर क्या होना है? आपको नहीं पता लेकिन नियति को मालूम है आगे क्या होना है? उसी के अनुसार बुद्धि चलता है! बुद्धि,, ब्रह्मा जी की शक्ति है बुद्धि को रजोगुणी बताया है! चित को सतोगुणी जो भगवान विष्णु की शक्ति है और अहंकार तम गुण है! जो भगवान शिव जी की शक्ति है!

भगवान ने समस्त प्राणियों के अंदर एक कर्तापन भ्रम डाल दिया है मैं कर रहा हूं इसलिए नहीं समझ पा रहा! इसलिए इस भ्रम की वजह से प्राणी नहीं समझ सकता! नियति के खेल को,,,,,,, ब्रह्मांड की शक्ति से सारा जगत चल रहा है!

वह वातावरण ऐसा बनाएगा की बड़े-बड़े चालाकी चतुराई सब फेल हो जाते हैं! संसार में बड़े-बड़े विद्वान चालाकी चतुराई करने वाले हैं लेकिन जब दुख आता है तो कोई अपने आप को नहीं बचा सकता! बड़े-बड़े बुद्धिमानों की बुद्धि को भगवान फेल कर देते हैं! भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है मैं बुद्धिमानों की बुद्धि हूं! और काल का भी महाकाल मैं ही हूं!

उनके आगे,,,कितनी भी सावधानी से गाड़ी को चलाया जाए! कालचक्र ऐसा गिराएगा की बुद्धि नहीं समझ पाएगी! पूरा संसार कालचक्र का ही आधीन है! अब फिर डाउट यह है कि आत्महत्या जो करते हैं क्या वह भी लिखा है?

अवश्य वह भी लिखा होता है! आत्महत्या से प्राण जाना लिखा है तो उनकी बुद्धि प्रारब्ध के आधीन होकर उसी तरफ जाएगी जहां काल उसको बुलाएगा!

समझिए इसे गौर पूर्वक

मन,,, माया के अधीन है,,, और बुद्धि,,,, काल का अधीन है! और काल,,, प्रारब्ध का अधीन है! ब्रह्मा जी का जैसा लेख होता है अच्छा बुरा उसी के अनुसार बुद्धि कार्य करता है! और जैसा पूर्व जन्मों में हमारा संस्कार है उसी के अनुसार हमारा मन कार्य करता है! अब मन में जो विचार उत्पन्न होगा उसी के अनुसार पूरी 10 इंद्रियां कार्य करेगी!

वही हमारा पुरुषार्थ है और वही हमारा कर्म! मन से जो होता है वह कर्म है भगवान इसमें हस्तक्षेप नहीं करते! क्या चीज करने की इच्छा हो रही है? क्या चीज सोच रहे उसका फल भोगना पड़ेगा क्योंकि वह हमारा कर्म है लेकिन जो बुद्धि से होता है वह प्रारब्ध है! प्रत्येक प्राणियों के मस्तिष्क में बुद्धि में एक भंवरा डाला गया है छोटी सी आकाशगंगा जैसे ब्रह्मांड गतिमान है वैसे ही ब्रह्मांड के अनुसार बुद्धि कार्य करती है!

बुद्धि,, काल के अनुसार चलता है और काल प्रारब्ध के अनुसार! और प्रारब्ध पूर्व जन्म के कर्म के अनुसार बनता है!

काल,,, कर्म और प्रकृति

इन तीनों के खेल को समझिए! तीनों का महा विचित्र खेल है!

एक है काल जो नित्य निरंतर चुपचाप शांत रहकर चला जा रहा है भाग रहा है सबको अपनी चपेट में सारे जगत को ले चला है! और ले जा रहा है काल के मुख में समस्त ब्रह्मांड जा रहा है और एक है प्रकृति जो विचलित हल्ला गुल्ला जो हमें करवा रही है चलाएंमान करके हमें रखी हुई है अपने कब्जे में की हुई है! और जो करने वाली है वह जीव है प्रकृति नहीं,, प्रकृति सिर्फ करवाने वाली है करने वाली जीव है! और प्रकृति के अधीन होकर जो हो रही हर पल वह अपना कर्म है! बस वही अपना है जो हम कर रहे हैं! बस आगे इन्हीं का हिसाब होना है!

जो हमसे हो रहे!,,, श्री राधे

जड़ माया का सब माया जाल

कर्म करें यही मन चांडाल,,,

जड़ माया का सब माया जाल!

कभी ना समझे कोई न देख रहा,

भोगना पड़ेगा इसी को जंजाल!

देख रहा है कालों का काल,,

कर्म बुरा यहां होगा जितना!

उतना होना पड़ेगा हाल बेहाल,

जिसने रचा यह मायाजाल!

प्रत्येक कर्म जाता है उनके पास,

कब किस घड़ी मन में क्या सोचा?

अंतर्यामी से भले रह बेखबर,,

पर कुछ नहीं छिपेगा उनके पास!!

जय श्री राधे

कभी सुख कभी दुख

आंधियां चलेंगी कभी सुख की कभी दुख की,,, पर हो मन ऐसा कोई विचलित न कर पाए!!!

करो प्रार्थना बार-बार ईश्वर से चाहे ले लो तुम मेरी लाख परीक्षा,, कभी ना होगा प्रभु कि पुत्र तुम्हारा हार जाए!!

ध्रुव, प्रहलाद जैसा जब अडिग विश्वास बना ले अगर कोई,, जिनका अटल भरोसा रहा तुम पर वही भक्तों ने तुमको पाए!

सबसे बड़ी शक्ति है मोह

लोग किसी परिजन के चले जाने पर घनिष्ठ संबंध रिश्ते नाते,, मां-बाप,, पति-पत्नी,, बेटा बेटी चले जाते हैं तो विलाप क्यों करते हैं? क्यों रोते हैं? क्योंकि यह जगत भगवान की माया प्रबल है! उनकी सबसे बड़ी शक्ति है मोह,,, वेद कहते हैं- जितना भगवान बलवान है उतने ही बलवान उनकी माया शक्ति है! जीव सबसे छोटी शक्ति है उससे बलवान माया उससे बलवान परमात्मा! रिश्ते नाते संबंध जो मिला है हर किसी को सिर्फ वह भगवान की माया है और कुछ नहीं,, इस जंजाल में फंसा दिया है उनकी माया ने प्रत्येक जीव को,, अज्ञान के वशीभूत होने के कारण एक दूसरे को अपना मान बैठे हैं! यह मेरा बेटा है मेरी बेटी है यह मेरी पत्नी, मेरा पति, मेरे मां-बाप, अपना कुछ भी नहीं है सिर्फ अपना मान लिया है समझ लिया है कि यह मेरे हैं! बस यही उनके दुखों का कारण है! सारे दुखों की जननी यही मोह है!

मोह क्या है?

अंत समय किसी के चले जाने पर दुख क्यों होता है?

इस तथ्य को थोड़ा समझना है,,,, देखिए सत्य क्या है?

हमारे जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज क्या कहते हैं?

यहां संसार में किसी को किसी से प्रेम नहीं है किसी से भी प्रेम नहीं! जितने भी रिश्ते हैं सब झूठे हैं वास्तविक सत्य क्या है? इसे समझना होगा! प्रत्येक जीव अपने स्वार्थ के लिए एक दूसरे से संबंध रखता है! जिस वस्तु से या जिस व्यक्ति से जितनी मात्रा का हमें अटैचमेंट होता है हमें उतनी मात्रा का उस वस्तु से या उस व्यक्ति से उतने ही मात्रा का दुख प्राप्त होता है!

कोई पड़ोसी चला जाए या कोई अन्य उनके मृत्यु की खबर सुनकर हमें कोई फर्क नहीं पड़ता अगर हमारे भाई-बहन,, मां-बाप, पति-पत्नी या बेटा बेटी चला गया तो होश उड़ जाता है इसका कारण यही है समझिए थोड़ा!

कोई अन्य व्यक्ति चला जाए तो दुख क्यों नहीं होता? क्योंकि हमें उससे सुख प्राप्त नहीं हो रहा,,, जिससे सुख की प्राप्ति होती है इस जीवात्मा को बस उन्हीं से मोह रहता है,, और उन्हीं के चले जाने पर जीव को दुख होता है! हम रोते हैं इसीलिए क्योंकि हमारा सुख उनके चले जाने पर छिन जाता है! हम अपने सुख के चले जाने के कारण रोते हैं जो चला गया उनसे हमें प्यार नहीं है! जिस वस्तु से या जिस व्यक्ति से हमें सुख प्राप्त होता है उससे हमें उतनी ही मात्रा का मोह रहता है और जितनी मात्रा का मोह रहता है उतनी मात्रा का हमें दुख मिलता है!

जय श्री राधे

मोह महा भयंकर प्रचंड शक्ति

आईए जानते हैं विस्तार से मोह क्या है?

आसक्ति (मोह),,,,

उस निराकार अविनाशी शाश्वत ब्रह्म,, (परमात्मा) की एक बहुत बड़ी शक्ति है! महा प्रचंड शक्ति जिस पर पाना अत्यंत कठिन है कठिन नहीं असंभव है! चाह कर भी इसको कोई तोड़ नहीं सकता! क्योंकि भगवान की शक्ति है छोटी-मोटी नहीं पूरा जगत समस्त संसार श्री कृष्ण के ही मोहजाल में फंसी है! और उसने स्वयं बताया है मेरी ही कृपा से जीव को वैराग्य होता है जब तक मेरी कृपा नहीं होती तब तक संसार से उनका मन बुद्धि अटैच रहता है!

जब तक श्री कृष्ण की शरण में न जाया जाए तब तक मोह को कोई तोड़ नहीं सकता! इसे वही नष्ट कर सकते हैं! मोह पर विजई प्राप्त कोई नहीं कर सकता मोह संसार तक ही नहीं,, शरीर और प्राणों तक मोह की सत्ता है!

संसार से वैराग्य तो हो सकता है पर शरीर और प्राण की आसक्ति को जो मिटा दे वही तो परमात्मा की प्राप्ति का अधिकारी होते हैं! बिना PHD के कोई प्रोफेसर नहीं बन सकता!

ऐसे ही बिना मोह त्याग की भगवत प्राप्ति नहीं होती! बिना वैराग्य के मोक्ष संभव नहीं! यह भगवान का शाश्वत कानून है पर उनके लिए जो भगवान की शरण में नहीं जाते! लवलेश मात्र भी शरीर से मोह रहेगा!

तुरंत फिर से जन्म लेना पड़ेगा! मोह ही तो जीव को गर्भ में वापस बार-बार लाती है! इसमें भगवान की मर्जी ना चलती है ना जीव की उनको मृत्यु के समय जिस किसी से मोह है तो वापस उन्हीं के गर्भ में आना पड़ेगा! जिससे अटैचमेंट है!

इसीलिए भगवान ने भक्ति मार्ग और प्रेम मार्ग इन दोनों में चलने के लिए जीव को बताया है जो अपने आप को मुझे पूर्ण समर्पण कर देता है वही मेरी माया को पार कर पाते हैं!

भव बंधन से वही जीव छूट पाते हैं! जो भक्ति मार्ग को नहीं पकड़ा,, उस जीव के लिए भगवान का कानून ही तय करता है! आगे उसे कहां जाना है? उनके नियमों के अनुसार जीव की आगे की गति होती है!

जो भगवान को पूर्ण समर्पण कर देते हैं उनके लिए कानून नहीं भगवान उनका योगक्षेम स्वयं वहन करते हैं!

और संसार सागर से उनको पार कर देते हैं! अब बाकी जीव के हाथ में है वह अपने आप को भगवान को समर्पित करती है या अपने योग ध्यान मार्ग,, ज्ञान मार्ग से भगवान को पाना चाहती है!

और कुछ लोग हैं जो संसार में कमाने, खाने, सोने में लगे हैं भक्ति मार्ग से कोई मतलब नहीं इन सबको भगवान का कानून चलाते हैं क्या है उनका कानून जैसा जीव कर्म करती है! बस वैसे ही उनको उसके कर्म अनुसार उनको भगवान अगला शरीर में डाल देते हैं!

उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होती है भगवान अपनी तरफ से कुछ प्लस माइनस नहीं करते! जैसा कर्म वैसे उनकी गति यही उनका कानून है!

और उनका कानून सिर्फ प्रेमी भक्तों के लिए नहीं है! जो भगवान से प्रेम करते हैं वह स्वयं भगवान को खरीद लेते हैं! भगवान अपने प्रेमी भक्ति के अधीन हो जाते हैं! फिर तो भगवान की नहीं जीव की मर्जी चलती है!

जब भगवत प्राप्ति होती है तो भगवान जीव को अपनी पूरी शक्ति दे देते हैं और उसे सर्वज्ञ बना देते हैं!

जय श्री राधे

प्रेम और वासना में अंतर

प्रेम वह जो निस्वार्थ होता है परंतु वासना वह जो स्वार्थ युक्त होता है! जो भावनाओं में बह जाते हैं वह प्रेम है और जो शरीर में बह जाते हैं वह वासना है! शरीर से भोगों की चाहत वासना है! जो स्वार्थ युक्त होते हैं और प्रेम पूर्ण निस्वार्थ होता है! जिसमें लवलेश मात्र भी स्वार्थ नहीं होते!

संसार में कोई किसी का साथी नहीं कोई कहावत नहीं शास्त्र ग्रंथ की बातें नहीं,,, हकीकत है मानिए!

क्या? संसार में कोई अपना नहीं!

हमने केवल अपना माना हुआ है पर अपना कोई नहीं इस जगत में अपने कर्म के सिवा,,, यहां बस दो चीज ही सत्य है जो करने वाली है जीवात्मा (कर्म)! और दूसरा जो देखने वाला है परमात्मा (सर्व साक्षी)! तीसरा कुछ भी सत्य नहीं! तीसरा जो कुछ भी है वह सब माया है!

इस जीव को कैसे समझाया जाए! कोई अपना नहीं! प्रेक्टिकल करके देख लीजिए! 5 घंटे लगातार आप में नाम जाप करने की शक्ति है जिसको अपना माना है माता जी को या पिताजी को उसको बुलाओ और 5 घंटे बैठ कर अपने साथ जाप करवाइए!

जितना हम कर रहे हैं बिल्कुल वैसे ही वह कर सकते हैं! कभी नहीं कर सकते क्यों नहीं कर सकते! इसी में रहस्य छिपा है इसे समझने के लिए तत्वज्ञान की गहराई में जाना होगा तभी समझ आ सकता है! जिसने इसको जान लिया वह कभी किसी को अपना नहीं मान सकता! कभी किसी के धोखे में नहीं आ सकता! भगवान की माया उसे अपनी जाल मे कभी नहीं फंसा सकती! जिसने इस रहस्य को अच्छे से जान लिया है! प्रत्येक जीव सब अलग है कोई किसी का नहीं! अगर तुम्हारी बातों को मानकर कोई मोह छोड़ दिया! क्या संभव है! क्यों नहीं छोड़ पा रहे पहले इसे जानना होगा!

जब किसी के चित् की वृत्ति को बदला ना जा सके! उसको अपना मान बैठा है जीव की कितनी बड़ी नादानी है! प्रत्येक जीव अपने संस्कार के अधीन है! उसको मालूम नहीं! कहां कहां के जीवात्मा को भगवान एक जगह इकट्ठा किए हुए हैं एक कुटुंब परिवार में इकट्ठे कर दिए हैं समझिए प्रत्येक जीवात्मा अलग है अलग-अलग जगह से सब आए हैं और सबसे बिछड़ कर एक दिन अलग जगह जाएंगे!

संसार में अपने चित के संस्कार को लेकर आई है जगत में वह किसी की बात नहीं मानेगा ना सुनेगा अपने चित के अलावा किसी की बात नहीं मान सकती यह जीवात्मा याद रखिए सदा और उसको अपना मान बैठा है!

जिसने इस रहस्य को जान लिया वह संसार की माया में कभी नहीं फंस सकता! संसार भगवान की रची हुई बहुत बड़ी ठगनी माया है जो पल पल जीव को ठग रही है! और उनको खबर नहीं! ऐसी है भगवान की प्रबल माया जो संसार को अपनी चपेट में ली हुई है! जो सत्य को सबकी बुद्धि में ढक दी गई है! वही माया है!

संसार की स्थिति

भगवान प्राणी से पूछते हैं! तुम्हारे जो सगे संबंधी हैं एक पत्नी से भगवान कहते हैं- तुम्हारे पति का जाने का समय आ गया 2 दिन बाद तुम्हारे पति का संग छूट जाएगा! बताओ ले जाऊं या नहीं! कि तुम्हें ले जाऊं! पत्नी कहती है- प्रभु मैं आपसे बार-बार विनती करती हूं मेरे पति को मत ले जाना! भगवान कहते हैं तो फिर तुम्हें ले जा रहा हूं पत्नी कहती है ना ही मुझे जाना है ना ही मेरे पति को ले जाना हम दोनों को हमेशा के लिए यही रहना है- फिर भगवान कहते हैं- चलो समय बढ़ा देता हूं तुम्हारे पति का,, अब चलो तुम ही बताओ! कब ले जाऊंगा? 4 वर्ष बाद, 10 वर्ष बाद, 20 वर्ष बाद! पत्नी कहती है- 20 वर्ष बाद ले जाना! धीरे-धीरे 20 वर्ष भी बीत गया! आ गया उसके समय जाने का फिर पूछे! भगवान तुम्हारे पति के जाने का समय आ गया ले जा रहा हूं!

पत्नी कहती है मत ले जाओ ना नहीं रहना मुझे उनसे दूर भगवान पूछे तो तुम ही बताओ कब ले जाऊं!

पत्नी कहती है- कभी मत ले जाना मेरे को उनके साथ ही रहना है! हमको उनसे दूर नहीं होना! नहीं होना नहीं होना!

बस ऐसे ही संसार की स्थिति है! भगवान अगर पूछेंगे तो यही जवाब मिलेंगे!

इसीलिए भगवान बिना पूछताछ के कभी भी किसी को उठा कर ले जाते हैं! वे जानते हैं एक दूसरे का साथ कोई कभी छोड़ना नहीं चाहेंगे! किसी भी पल अपनी मर्जी से किसी को उठा कर ले जाते हैं!

त्रिविध ताप क्या है?

शास्त्रों के अनुसार

संसार में जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों को त्रिविध तापोंसे गुजरना ही पड़ता है। ये किसी का भी पक्षपात नहीं

करते और एकसमान रूप से सबको ग्रस्त और त्रस्तकरते हैं। यहाँ त्रिविध का अर्थ है "तीन प्रका र के" और "ताप" का अर्थ है अर्थात जलन।

त्रिविध ताप कितने है?

1. त्रिविध ताप कितने है?

1. आधि भौतिक ताप

2. आधि दैविक ताप

3. आध्यात्मिक ताप –

आपको नाम का अर्थ बताते ही आपको पता चलागया होगा कि तीन प्रकार के दुः ख होते है जिनसेप्रत्येक मनुष्य कभी न कभी अवश्य पीड़ित होता है। ये त्रिविध ताप हैं –

1. आधिभौतिक (अर्थात भौतिक कारणों से प्राप्त दुः ख)

2. आधिदैविक (अर्थात दैवीय कारणों से प्राप्त दुः ख)

3. आध्यात्मिक (अर्थात अज्ञानता के फलस्वरूप प्राप्त दुः ख)

अब हम इनके बारे में विषय में जानने का प्रयासकरते हैं।

1. आधिभौतिक ताप –

आधिभौतिक ताप सांसारिक वस्तुओं अथवा जीवों से प्राप्त होने वाला कष्ट होता है। अर्थात संसार के नित्यकर्मो के दौरान उत्पन्न दुः ख को आधिभौतिक ताप कहते है। ये दुः ख परिवार, नौकरी, ऑफिस, स्कूल,कॉलेज, इत्यादि किसी भी जगह पर उत्पन्न हो जातेहै। अपने आप को सही और गलत को सिद्ध करने के चक्कर में मनुष्य नाना प्रकार के कष्टों को सहन करनेके लिए विवश हो जाता है।तो जो कष्ट भौतिक जगत के बाह्य कारणों से होता है उसे आधिभौतिक या भौतिक ताप कहा जाता है। शत्रु आदि स्वयं से परे वस्तुओं या जीवों के कारण ऐसा कष्ट उपस्थित होता है।

2. आधिदैविक ताप –

आधिदैविक ताप दैवी शक्तियों द्वारा दिये गये या पूर्वजन्मों में स्वयं के किए गये कर्मों से प्राप्त कष्ट कहलाता है।

आध्यात्मिक ताप

आध्यात्मिक ताप अज्ञान जनित कष्ट होते हैं। मनुष्य जब तक ज्ञानार्जन नहीं करता तब तक वह संसार में तिरस्कृत होता रहता है। हर दूसरा इन्सान उसे दुत्कार करके चला जाता है। वह व्यक्ति विद्वानों की सभा में उसी प्रकार सुशोभित नहीं होता जैसे हंसों की सभा में कौआ। यह कष्ट उसके लिए असहनीय होता है। जब तक मनुष्य स्वाध्याय नहीं करेगा और सज्जनों की संगति में नहीं रहेगा तब तक वह अपनी अज्ञानता को कोसता रहेगा। आध्यात्मिक ताप दूर करने के लिए मनुष्य को ईश्वर के समीप जाना चाहिए। इसमें आत्मा या अपने को अविद्या, राग, द्वेष, मूर्ख मूर्खता, बीमारी आदि से मन और शरीर को कष्ट होता है। भगवद् प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील

माया क्या है? माया की परिभाषा

रामचरितमानस बालकाण्ड ११६ "जासु सत्यता तें जड माया ।"

एक वाक्य में कहें तो माया जड़ है। जैसे एक कुल्हाड़ी अपने आप कुछ नहीं कर सकती । वैसे ही माया अपने आप कुछ नहीं कर सकती । जब लकड़हारा उस कुल्हाड़ी को उठा कर

तने पर प्रहार करता है। तब वह कुल्हाड़ी लकड़ी काटती है। वैसे ही माया भगवान की शक्ति पा कर काम करती हैं।

माया की परिभाषा

भागवत २.९.३३ "जिसकी प्रतीति मेरे(भगवान के) बिना न हो । जिसकी प्रतीति मेरे(भगवान के) बिना हो ।" थोड़ी टेढ़ी परिभाषा है, हम समझाने का प्रयत्न करेंगे।'जिसकी प्रतीति मेरे बिना हो ।' इसका अर्थ है,माया वहीं होगी जहां भगवान नहीं होंगे।

चैतचैन्य चरितामृत मध्य लीला २२.३१ 'श्री कृष्ण सूर्य सम, माया होवै अंधकार, जहाँ सूर्य ताहा नहीं माया अंधकार" इस को एक उदा हरण से समझिए, सूर्य की किरण जल (तालाब) में पड़ती हैं। तो ये किरण कहाँ है? जल में हैं। तो जल में सूर्य नहीं है। सूर्य ऊपर है और किरण निचे है। यह किरण ऊपर नहीं जा सकती क्योंकि वो नीचे है। लेकिन सूर्य के बिना किरण तालाब पर नहीं पड़ सकती । किरण का अपना अस्तित्व पृथक (अलग) नहीं हैं। सूर्य से ही किरण का अस्तित्व है। जैसे किरण का अपना अलग अस्तित्व नहीं है,वैसे ही माया का अपना अलग अस्ति त्व नहीं है। जैसे से किरण जल में रहती है,सूर्य के बिना , वैसे ही माया भी रहती है भगवान के बिना ।

श्वेताश्वेताश्वतरोपनिषद १.८ में कहा गया है कि "संसार जीव, माया और तीसरा ब्रह्म से युक्त है। यह संसार में हम (जीव/आत्मा) है,माया है और जीव माया व्याप्त भगवान भी हैं। वेद शास्त्र कहते हैं कि यह संसार माया से बना है। और वेद शास्त्र यह भी कहते है कि संसार भगवान से बना है। तो इन दोनों में कौन सी बात सही है? दोनों बातें सही है। यह संसार भगवान और माया दोनों के मिलन से बना है। यह माया के अंदर भगवान व्याप्त हुए है। तुलसी दस कहते

है "घट-घट व्या पक राम" अर्थात राम एक एक कण में व्यापक/व्याप्त है।है अर्थात माया के एक एक कण में व्यापक है। अर्थात भगवान माया के साथ रहते हैं,माया के एक-एक कण में रहते हैं। भगवान माया में व्याप्त है। ऊपर दिए गए उदाहरण में किरण को माया बतया । ये किरण में सूर्य की शक्ति है। अर्थात किरण में सूर्य का अंश व्याप्त है। ऋग्वेदवे १.१६४.२० और कठोपनिषद् ३.१.१ में कहा कि यह आत्मा और भगवान के साथ एक जगह पर रहते है। अर्थात भगवान सभी जीव (आत्मा) के अंदर रहते है।

माया के प्रकार?

माया दो प्रकार की होती हैं।

१. जीव-माया या अपरा या अविद्या माया

२. गुण माया या योग माया या विद्या माया

यह जीव माया भी दो प्रका र की होती हैं।

१. अवर्णात्मिक:- माया ने जीव (आत्मा) का अपना स्वरूप भुलाया । हम आत्मा है यह भुला दिया ।

२. विक्षेपात्मिक:- माया ने संसार में आसक्ति करा दी । अर्थात माया ने संसार में हमारे मन को लगा दिया । यह जीव-माया को अपरा या अविद्या माया भी कहते हैं। गीता ७.४

"पृथ्वी , जल, अग्नि , वायु,आकाश, मन, बुद्धि अहंकार - ऐसे यह आठ प्रकार के भेदों वाली तो मेरी (भगवान की) जड़ स्वरूप अपरा माया है हमारा मन- बुद्धि माया का बना है,इसलिए हमारे विचार भी माया के अंतर्गत होते है। गुण माया को प्रकृति माया भी कहते है।

गीता ७.१४ "मेरी (भगवान की) यह गुण मयी दैवी माया बड़ी दुरत्यय है अर्थात

पार पाना बड़ा कठिन है। जो केवल मेरे ही शरण है,तो ये माया चली जाएगीं ।" गुण माया यह भगवान की शक्ति हैं,यह भगवान की शक्ति पा कर अपना काम करती हैं। क्योंकि हम जीव (आत्मा) की शक्ति वाले है, हमारी शक्ति भगवान की शक्ति से कम है इसलिए माया को हम नहीं हटा सकतें। इसलिए हमे केवल भगवान की शरण में जाना होगा । यह माया का प्रभाव हमारे मन पर होता है,काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, घृणा , ईर्ष्या , द्वेष एवं भय यह योग माया के कारण हम लोगों पर हावी हैं। काम का अर्थ है-

पुत्रैपुषत्रैणा अर्थात स्त्री अथवा पुरुष संभोग की चाह, वित्तैषत्तैणा अर्थात धन कमाने की चाह, लोकैषणा यानी यश कमाने की चाह और क्रोध, लोभ, मोह आदि ।

वैसे तो जीव-माया भी भगवान की ही शक्ति है। लेकिन गुण माया जिसे योग-माया कहते है, ये भगवन की अंतरंग शक्ति है। भगवान के सारे काम योग माया से होते है। आप जितने भी लीला पढ़ते है। ये सारे लीला योग माया के द्वारा होते है। जब भी कभी असम्भव काम लीला में भगवान करे तो समझना योग-माया से यह का म हुआ है। जैसे

श्री कृष्ण के जन्म के समय सब कारागार सो गए। ताले खुल गए अपने आप। यमुना ने मार्ग दे दिया । ये सब असंभव कार्य है। इसलिए ये कार्य योग-माया से हुआ है।

बहुत संछेप में माया के बारे में कहें तो हर वो चीज जो हम सुनते है स्पर्श करते है,सोचते है,बोलते है,देखते है,सब माया है। यह संसार माया का है और इस संसार में स्वर्ग,नर्क और पृथ्वी लोक हैं। अर्थात स्वर्ग लोक, नर्कलोक और पृथ्वी लोक माया के बने है। माया के कुल ११ लो क है इसे कभी जानते हैं!

संसार एक भ्रांति मायाजाल

संसार एक भ्रांति मायाजाल है!

जो सत्य प्रतीत होकर भी सत्य नहीं है!

जीव को भ्रमित कर रही वहीं माया है!

जिस जगत में जो कुछ भी दिख रहा वहां कुछ है ही नहीं,,, सब भ्रम है!

कौन छोड़कर चला गया जिसके लिए रोते हो संसार में कुछ है ही नहीं,,, माता-पिता भाई बंधु रिश्ते नाते जो दिख रहा है सब एक स्वप्निक है! जैसे रात को सपने देखते हैं बस ऐसे ही समस्त प्राणी सपने देख रहा है जो कुछ जीवन में हो रहा है वह सब स्वप्न है!

ना कुछ था ना कुछ रहेगा जो हकीकत लग रहा है वही माया है समझो! पर वास्तव में कुछ है ही नहीं! भगवान के सिवा! जो कुछ है एक ब्रह्म हीं है उनके सिवा दूसरा कुछ नहीं!

जो प्रतीत हो रहा वह तो माया है! चलो मान लो पति छोड़कर चला गया! उसके लिए पत्नी रो रही! जब उनका विवाह नहीं हुआ था जब छोटी सी थी 5 वर्ष की क्या तब उनको जानती थी कि यह मेरे पति होंगे! बुद्धि में था ही नहीं इसलिए बुद्धि से चला गया!

माता-पिता छोड़कर चले गए बच्चे रो रहे पहले यह तो समझो जब जन्म नहीं हुआ था तो क्या हम उनको जानते थे!

हमारे जन्म लेने के बाद बुद्धि में जो कुछ भी प्रवेश हो गए!

यह मेरी माता-पिता है यह मेरी पति, यह मेरी पत्नी यह मेरे पुत्र पुत्री हैं वह सब ज्ञान मिथ्या है! बुद्धि तो मृत्यु के बाद आगे जाएगा हीं नहीं! फिर याद कैसे रखेंगे? किस मशीन से रखेंगे? संसार के प्रपंच को! बुद्धि तो नश्वर है जैसे शरीर नश्वर है

क्योंकि बुद्धि और मन प्राकृतिक है! माया की बनी है! बुद्धि में यहां का कुछ भी ज्ञान नहीं रहेगा! यहां के कुछ भी चीज बुद्धि में सदा के लिए टिकेगा ही नहीं! मृत्यु होने के तुरंत बाद भगवान बुद्धि को फॉर्मेट कर देते हैं!

इसलिए आदि जगतगुरु शंकराचार्य ने विवेक चूड़ामणि मे एक वाक्य कही है- जो की उनके द्वारा रचित एक ग्रंथ है!

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ।

अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥

(विवेक चूड़ामणि-1)

पहले कुछ था ही नहीं तो आगे कुछ रहेगा ही कहां? सोचिए! आंधियां प्रारंभ होती है चलती है और रुक जाती है यही तो प्रकृति का शाश्वत खेल है! जो बीच में लहर चलता है उसे माया समझो!

जैसे आंधियां तेजी से चलती है फिर कुछ देर बाद अपनी शून्यवस्था में वापस आ जाती है! जैसे प्रारंभ में थी! ऐसे ही प्राणी आती है रहती है और चली जाती है! आने जाने के बीच में जो कुछ देखा सुना प्रतीत हुआ! वह माया है!

जो की सत्य नहीं है! जन्म और मृत्यु की जो अवस्था है वही सत्य है! हम शून्य अवस्था से आए हैं और वही अवस्था में हमें फिर से होना है! जैसे जन्म लिए थे तो कुछ याद नहीं था बस ऐसे ही जब जाएंगे तो कुछ याद नहीं रहेगा! पूरे 24 घंटे में भगवान के लिए किया गया कार्य ही आगे रहेगा!

बाकी का नामो निशान मिट जाएगा! कुछ आगे जाएगा ही नहीं जीव के साथ! भगवान के नाम के सिवा! भगवान का नाम ही रहेगा आगे अनंत काल तक यही संपत्ति साथ जाएगी! बाकी सब रिजेक्ट होगा! क्योंकि भगवान ही सत्य है!

यहां कुछ है ही नहीं! सारा जगत शून्यमय है किसके लिए रो रहा है? यहां तो कुछ है ही नहीं एक ब्रह्म के सिवा इसलिए किसी के लिए शोक करना व्यर्थ है!

प्राणी अपनी बुराई क्यों छिपाता है?

देखो अगर मान लो एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से पूछ रहा है बताओ तुम्हारे मन में इस पूरी दुनिया में किसके किसके लिए ईर्ष्या है? तो क्या वह व्यक्ति सामने वाले को बताएगा या नहीं! नहीं तो क्यों नहीं?

क्योंकि जीव डरती है इस बात से कि मेरी बुराई को मेरी पोल पट्टी को कोई जान ना जाए कि मेरे अंदर बुराई भी है! कोई कितने भी छिपाले अपनी बुराई को परंतु भगवान के सामने एक भी बुराई छुप नहीं पाएगी! सब कुछ सामने आएगा!

जीव की एक नेचुरल गुण है अनंत जन्मों से वह सबके सामने में अच्छा बनना चाहती है! उसके अहंकार ही उसको उनकी बुराई को छिपा कर रखता है! अहंकार बस यही कोशिश में रहता है मुझे किसी के सामने में गलत नहीं बनना है,,,

लोगों के सामने में अच्छे बनने की जीव को आदत है! इसलिए अपनी बुराई कभी किसी को नहीं बताएगी! घुट घुट कर मर जाएगी पर नहीं बताएगी! और उसे बिल्कुल भी नहीं पता! जहां पर हमारा कपट, ईर्ष्या, लालच, वासना, अहंकार, आसक्ति जिस जगह पर बनता है! जिस स्थान पर इनका डेरा है वही जगह पर तो परमात्मा भी बैठे हैं! फिर क्यों रखे हैं बुराई को भरकर! जब सब चीज उनको पता है तो फिर छिपाना क्या?

उसी जगह पर परमात्मा का वास है! दिमाग पर बिठा लेना है! जैसे लोगों के सामने में बताने के लिए शर्माते हैं ऐसे ही हमें भगवान के सामने भी शर्म महसूस करना है! और उसे त्यागने की कोशिश करनी है! जैसे लोगों के सामने में बताने के लिए हम हिचकते हैं! बस ऐसे ही भगवान को भी समझना है!

चित् की गहराई में परमात्मा का वास है!

जहां काम क्रोध लोभ मोह भरे पड़े हैं! वही जगह पर परमात्मा का डेरा है!

समय सबसे बलवान

****

आज का सबसे महत्वपूर्ण विषय

कभी भी समय का दुरुपयोग ना हो अन्यथा क्या होगा?

हम कुछ करें या ना करें समय निकल रहा है!,,,,, समय का चक्र ऐसा निरंतर है क्षण भर भी रुकने वाला नहीं,, उन्हें कौन क्या कर रहा कौन चुपचाप बैठा है यह सबसे उनको मतलब नहीं, कब दिवाली है कब होली है कब रक्षाबंधन तीज त्यौहार इन सब से उनको कोई लेना देना नहीं,,

चुपचाप शांत होकर हर पल खिसक रहा है! समस्त संसार हर पल काल के मुख पर जा रहा है प्रतिपल सब नष्ट हो रहा है समय निरंतर है बस इसी का ध्यान रहे! यह संसार प्रकृति और काल बस इन दोनों का ही खेल है!

प्रकृति वह है जिसके अधीन प्रत्येक जीव है और कालचक्र वह है जिसके अधीन समस्त प्रकृति है! और परमात्मा वह है जिसके अधीन कालचक्र भी नतमस्तक है! काल की गति अर्थात ब्रह्मांड की गति ही समय है जो टिक टिक घूम रही,, घर पर जो घड़ी है वह समय नहीं,, ब्रह्मांड की गति ही समय है!

उनके व्यवस्थित आधार पर ही ब्रह्मांड चलते हैं अपने नियमों से मंगल बुध शुक्र सब अपने-अपने चाल में गति करते हैं जैसा परमात्मा ने उन सबको बांधा हुआ है! और ब्रह्मांड के नियमों पर ही संसार टिकी हुई है! कालचक्र ही तो संसार को दौड़ा रहा है! प्रकृति भी दौड़ रही है! दौड़ाने वाला ही तो समय है! सुबह हुआ उठ गए समय हुआ काम में चले गए समय हुआ काम से आ गए रात हुआ सो गए,, दिवाली आ गया तो मना लिए होली आ गया तो रंग गुलाल रक्षाबंधन आया तो राखी, नवरात्रि आया तो मां दुर्गा,,,,

देखिए क्या हो रहा है? सब कुछ समय का ही खेल है! जैसा समय आ जाता है प्राणी को उसे करना पड़ता है! क्या कभी ऐसा हुआ है दिवाली आने के तीन दिन पहले पटाखे लोग शुरू कर देंगे! होली आने के चार दिन पहले रंग गुलाल लगा देंगे!, कोई अन्य समय पर कोई कुछ नहीं करता! समय आने पर ही उसे करते हैं! इसीलिए समय सबसे बलवान! जो प्रत्येक प्राणी जिसके अधीन है! समय आता है तब प्राणी स्कूल जाता है जन्म लेने के 4 महीने बाद क्या कोई स्कूल जाता है! समय आता है तब अपना व्यापार शुरू करता है कोई बचपन में क्या व्यापार शुरू करता है? समय आता है तो

एक दिन चला जाता है! समय के आगे इस ब्रह्मांड में किसी का नहीं चला है! जो समय हुआ उसे करना ही पड़ता है! इसलिए समय सबसे बलवान!

जो कुछ नहीं कर रहा चुपचाप बैठा हुआ है समय भी उसे बहा कर ले जा रहा है!,, कुछ लोग टाइम पास करते हैं व्यर्थ की बातें करते रहते हैं! इस बुद्धि को नहीं पता कि समय निकल रहा है हर पल यह ध्यान रहे की समय निकल रहा है! समय कालचक्र समस्त प्रकृति को अपनी चपेट में ली हुई है! इंद्रिय, मन, बुद्धि शरीर सब कुछ एकमात्र कालचक्र का ही अधीन है! सोचिए ऐसा कौन सा कार्य है जिसको करते समय समय नहीं निकल रहा! सोते भी हैं तो समय निकलता है कुछ भी करें समय निकल रहा है परंतु समय कहां जा रहा है! प्रकृति की अंत की ओर जा रहा है! शरीर आज जैसा दिख रहा है वैसा आगे नहीं रहेगा शरीर को भी बहकर समय ले जा रहा है आज से 10 वर्ष बाद बदल जाएगा उसके 10 वर्ष बाद और बदल जाएगा उसके 10 वर्ष बाद और बदल जाएगा जैसे-जैसे समय आगे जाएगा वैसे ही शरीर मुरझाता जाएगा! एक समय आएगा कि हम कुछ करें या ना करें मुरझा कर गिर जाएगा! प्रकृति समेत शरीर समय का ही अधीन है समय के अनुसार चल रहा है! इसलिए कभी भी समय का दुरुपयोग ना हो भूल कर भी नहीं!

बैठे-बैठे सोच रहे 2 मिनट के अंतर्गत फैसला करना है आपको करूं या ना करूं! प्रकृति हार जाएगी फैसला हुआ नहीं रहेगा और समय खिसक जाएगा! इसीलिए समय को सबसे बलवान कहा गया है! क्योंकि यह रुकने वाला ही नहीं निरंतर चला जा रहा है और अपने साथ हमें भी काल की ओर ले जा रहा है! कालचक्र निरंतर है! सब कुछ रुक सकता है ,, समय को रोकना संभव नहीं!

इसलिए एक भी क्षण समय व्यर्थ न जाए बस यही ध्यान रहे! जो समय को बर्बाद करता है व्यर्थ चीजों में जो समय को खो रहा है समय उनको बर्बाद कर देते हैं!

शिक्षा:- समय का कभी दुरुपयोग ना हो! व्यर्थ की चेष्टाओं में नहीं रहना है, जिसका कोई महत्व नहीं! समय का सदुपयोग सोच समझकर हजार बार लाख बार सोच कर ही बुद्धि का प्रयोग करें! क्योंकि इसके बाद ना ही मनुष्य योनि मिलेगी ना यह बुद्धि मिलेगी!

बार-बार मनुष्य योनि नहीं मिलते! एक बार समय हाथ से चला गया मानव योनि चला गया तो केवल पछताना हीं तो पड़ेगा! जो करना था वह नहीं कर पाया जो नहीं करना था उसे ही कर बैठा,, यही करते-करते समय खिसक गया अब माथा पीटना ही पड़ेगा! इसलिए समय का सदुपयोग हो!

समय की गति

महत्वपूर्ण विषय

संपूर्ण ब्रह्मांड प्रकृति (परा और अपरा) समय का ही अधीन है!

जो माया में लिप्त है वह प्राकृतिक बुद्धि लेकिन जो उन्हें बहा कर ले जा रहा है वही काल की गति! बुद्धि माया में इतनी फंस चुकी है कि उसे इस बात की भी खबर नहीं की समय निकल रहा है! जिसके लिए जिसको जानने के लिए मेरा जन्म हुआ था वह नहीं किया तो मेरा क्या होगा आगे? इसकी जरा भी

चिंता नहीं उसे वही तो माइक बुद्धि है? यही अज्ञान वश बुद्धि (प्राकृतिक बुद्धि) कालचक्र को नहीं समझ पा रही! जिस दिन समझ गई तो उसकी बात बन गई!

जन्म मरण का खेल उनका समाप्त हो जाएगा! समय चक्र को निरंतर अपने बुद्धि पर बिठाकर रखना है! जो निरंतर बीता जा रहा है! आयु नष्ट हो रही है प्रतिपल इसे हमेशा ध्यान में रखना है! भूलना नहीं है! प्राकृतिक बुद्धि माया में इतनी लिप्त है कि समय के बारे में विचार करने का उनके पास पल भर भी समय नहीं है! ऐसी है प्राकृतिक बुद्धि! माया के अधीन होने के कारण समय को ही भूल गई है!

प्राकृतिक बुद्धि कहां जान पाएगी? क्योंकि उसे तो नरक जाना है! जब कभी उस भगवान की बहुत बड़ी कृपा होती है तब प्राकृतिक बुद्धि का होश ठिकाना आता है! बुद्धि भी दो प्रकार की है एक प्राकृतिक बुद्धि! एक विवेक बुद्धि! जब भगवान जीव पर कृपा करते हैं तब उन्हें विवेक बुद्धि प्रदान करते हैं इसी बुद्धि के द्वारा जीव का कल्याण होता है किसी बुद्धि के द्वारा सत्य का बोध होता है!

प्राकृतिक बुद्धि को केवल खाने कमाने का ही ज्ञान रहता है! प्राकृतिक बुद्धि पैसे कैसे कमाया जाता है इसका उसे ज्ञान रहता है? सत्य क्या है? उसको नहीं जानती! जो सत्य को छिपाकर रखा हुआ है वही तो प्राकृतिक बुद्धि है! और जो सत्य को सामने लाकर खड़ा कर दे वही विवेक बुद्धि है!

जो सिर्फ उनकी कृपा से मिलता है! विवेक बुद्धि को हर पल बस सत्य दिखाई देता है! और प्राकृतिक बुद्धि अज्ञान युक्त माया में फंसी रहती है!

समय निरंतर गतिमान

अब तक कितने त्योहार आए होंगे हर वर्ष आ रहे हैं और जा रहे हैं अगर प्राणी के हाथ में होता तो उस त्यौहार को जाने नहीं देते! अगर मेला गए हैं तो सोच रहे कि मेला हमेशा ही रहे! रक्षाबंधन जाने ना पाए,, जन्मदिन आया तो सोच रहे कि मेरा जन्मदिन जाने ना पाए,,,, कोई खुशी आ गई तो सोच रहे यह जाने ना पाए! प्राणी यही कोशिश में रहता है कि उनका खुशी का दिन जाने ना पाए!,,,,,,,,,

समय एक निरंतर चक्र में है जो लगातार बिना रुके उसे चलते जाना है सृष्टि के महाप्रलय जो कलयुग के अंत के बाद होना है! वहां उसे पहुंचना है! इसी लक्ष्य को लेकर समय निरंतर गतिमान है! समय संपूर्ण ब्रह्मांड को खींचकर अपनी ओर ले जा रहा है! जहां वह स्वयं जा रहा है!,,,,,,

संपूर्ण ब्रह्मांड और समस्त चराचर जीव समय का ही अधीन है! इसलिए ना अपने दुख के दिन को ना सुख के दिन को कोई नहीं रोक सकता! दोनों निकल जाएगा! अनंत ब्रह्मांड समय का ही अधीन है! ग्रह, तारे, आकाशगंगा, सूरज, चांद को भी समय के आदेश का पालन करना होता है!

कोई इधर का उधर हो जाए 6:08 हुआ तो सूर्य देव निकल जाते हैं! ब्रह्मांड अपने समय की चाल को क्षण भर भी नहीं भूलते क्योंकि वह भगवान की योग माया शक्ति है! जड़ प्रकृति है परंतु वह उनकी

विद्या माया है और जीव भूल जाती है क्योंकि वह भगवान की अविद्या माया के अधीन है! लेकिन जीव भगवान की चेतन प्रकृति है!

जीव को जन्म मरण के चक्र में कालचक्र ही बांध कर रखा है! इसलिए जीव चक्र से कालचक्र बलवान है! समस्त प्रकृति कालचक्र के ही अधीन है! सबसे बलवान कालचक्र ही है जो संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने कब्जे में रखा है!

अष्टावरण

अनंत ब्रह्मांड इन्हीं आठ तत्वों से घिरा हुआ है जिसे अष्टावरण कहते हैं! संपूर्ण ब्रह्मांड भगवान की माया शक्ति है! उनकी तीन प्रमुख शक्तियों में एक शक्ति है माया! जो दो प्रकार की है एक जीव माया और एक गुण माया! जीवात्मा भगवान की चेतन प्रकृति है और पंचतत्व से जो ब्रह्मांड बने हैं वह उनकी जड़ प्रकृति है लेकिन विद्या माया है और जीव अविद्या माया से घिरी हुई है!

जो अज्ञान युक्त है! माता दुर्गा को ही भगवान की योग माया शक्ति कही गई है! जो प्रकृति स्वरूपा है और एक चेतन प्रकृति जो प्रत्येक जीव काम, क्रोध, लोभ, ममता, वासना, अहंकार से घिरी हुई है! जीव और संसार की रचना माया से ही हुई है! माया से रहित केवल एक परमात्मा है! संपूर्ण ब्रह्मांड माया का ही अधीन है!

जो सत्य को ढक दे वही माया है

जो सत्य को पूरी तरह से ढक दिया है वही माया है! हमारी इंद्रियां मन बुद्धि प्राकृतिक है माइक है माया की बनी है इसलिए इनके द्वारा उसे दिव्य परमात्मा का प्रतीत हमें नहीं हो सकता!

माया,, ब्रह्म की ही शक्ति है परंतु ऐसी शक्ति है जो सत्य को पूरी तरह से ढक दिया है जैसे बादल बारिश के समय में सूर्य को ढक देते हैं लगता है कि सूर्य नहीं है सूर्य रहते हैं प्रकाशित भी करते हैं परंतु बदल उनको ढक देते हैं बस इसी प्रकार जो सत्य को ढक दे वही शक्ति माया है!

जिनकी सत्ता का पता चलने नहीं देती जब वह परमात्मा जिस जीव पर अपनी कृपा करते हैं बस वही उनको जान सकते हैं! उनकी कृपा के बिना उनको जान पाना संभव नहीं है! माया द्वारा परमात्मा को ढक दी गई है! ऐसा ढक दिया गया है कि कोई चारों वेदों के ज्ञान हासिल करके अपनी प्राकृतिक बुद्धि द्वारा लाख कोशिश करके भी उस सर्वोपरि परमात्मा का पार नहीं पाया जा सकता!

उनकी माया शक्ति इतनी प्रचंड है इतना बलवान है इतनी प्रबल है! उनको माया द्वारा ढक दिया गया है! जिसने उनको जाना है उनका स्मरण किया है, उनकी कृपा से ही किया है! वेद कहते हैं-

इंद्रियां मन बुद्धि उनको कभी ग्रहण नहीं कर सकती! कभी नहीं क्योंकि उन पर प्रतिपल माया हावी है! और परमात्मा माया से परे है जब वह स्वयं कृपा करते हैं तब यह इंद्रिय मन बुद्धि उस दिव्य परमात्मा को जान पाते हैं!

वासना और प्रेम

संसार में जितने भी कम उम्र के लड़के या लड़की एक दूसरे में जो मोहित होते हैं और कहते हैं हम तुमसे प्रेम करते हैं उनको मालूम नहीं होता की प्रेम क्या होता है? दोनों एक दूसरे से अटैच हो जाते हैं! किसी से आकर्षित होकर अगर हम उसमें अटैच हो जाते हैं वह प्रेम नहीं है केवल वासना है! और रिश्ते नाते सगे संबंधी पुत्र पुत्री, माता पिता, भाई बहन जो एक दूसरे में अटैच है वह भी प्रेम नहीं है वह केवल मोह है! मोह और वासना की जननी स्वार्थ है! जहां स्वार्थ है वही यह दोनों है! प्रेम स्वार्थ से परे है! प्रेम में तनिक भी स्वार्थ का स्थान नहीं है! जहां स्वार्थ है वह केवल मोह और वासना हीं है! प्रेम तो निस्वार्थ, निश्चल होता है जो ब्रज की गोपियों ने भगवान श्री कृष्ण से किए थे! वह प्रेम है! प्रेम तो वह है जहां अपने प्रेमी के लिए प्राण भी चला जाए! तो कोई फर्क ना पड़े! अपने प्राणों की बाजीजो भगवान को लगा देता है! जैसे मीराबाई ने विषपान किया था! वह प्रेम है!

सबसे ज्यादा मोह

सबसे ज्यादा मोह जीव किससे करती है?

No.1- प्राणों से

No.2- शरीर से

No.3- कुटुंब परिवार से

No.4- अपनी संपत्ति से

No.5- संसार से

जब तक प्राण सही सलामत है तब तक शरीर सुहाएगा! और जब तक अपना शरीर सही सलामत है तब तक कुटुंब परिवार सुहाएगा,, और जब तक कुटुंब परिवार सही सलामत है तब तक अपनी धन संपत्ति सुहाएगा,,, और जब तक धन संपत्ति सही सलामत है तब तक संसार सुहाएगा! यह सभी नीचे वाले ऊपर वाले के मोह पर टिके हुए है! 1.

काल और प्रकृति का गहरे रहस्य

काल और प्रकृति का गहरे रहस्य जो समझ नहीं आएंगे

प्रत्येक जीव,,कर्मों के चपेट में है और कर्म, प्रकृति के और प्रकृति,, काल के चपेट में है और काल,, महाकाल के चपेट में जो किसी के चपेट में नहीं! वही कालों के काल महाकाल है जिसने काल चक्र को भी चपेट रखा है! मृत्यु भी जिससे थर-थर कांपती है! और मृत्यु के देवता यमराज भी जिससे डरते हैं! समय की चाल जिनके इशारे चलते हैं! वही परमात्मा है जो समय (भूत भविष्य वर्तमान) की सीमा से से भी परे है! समय, प्रकृति से परे है और कर्म, त्रिगुणात्मक प्रकृति के अधीन है और प्रत्येक जीव अपने कर्मों के अधीन है,, कर्म,< प्रकृति के और प्रकृति<, काल के,, काल< परमात्मा के! जो किसी के अधीन नहीं! वही ब्रह्म है!

नश्वर जगत

हर पल याद रहे जिस जगत में आया है वह नश्वर जगत है!!!

हम जिस जगत में पड़े हैं वह नश्वर जगत है यहां प्रतिपल सब कुछ काल के मुख में जा रहा है प्रतिपल हर सेकंड सब कुछ तबाह हो रहा है! फिर भी प्राणी के अंदर अज्ञानता भरी हुई है! देख रहा है सुन रहा है सब कुछ नष्ट हो रहा है फिर रात फिर दिन क्या हो रहा है? बुद्धि नहीं समझ पा रही जो सत्य है उसे माया के द्वारा उनकी बुद्धि में अज्ञानता के रूप में ढक दी गई है!

शरीर और संसार नष्ट हो रहा है हमारी आयु नष्ट हो रही है फिर भी लोगों की समझ बुद्धि सत्य को नहीं देख पा रही! माया का आवरण उस पर ऐसा चढ़ गया है! ऐसा चढ़ गया है कि उनको दुर्गति से कोई नहीं बचा सकता! अगर शरीर छूटने से पहले स्वयं अपने आप को नहीं जान पाया वह कौन है कहां से आया है कहां उसे जाना है उसका परम लक्ष्य क्या है? जो संसार दिख रहा है वह क्या है इस सत्य को नहीं जाना!

कालचक्र की गति अनंत है

कालचक्र तो समस्त प्रकृति सहित समस्त चराचर जीव को नष्ट करता हुआ आगे जा रहा है पर क्या कालचक्र कभी नष्ट होंगे कालचक्र की गति अनंत है कालचक्र कभी नष्ट नहीं होगी इसी के अनुसार सृष्टि उत्पन्न होती है और इसी के अनुसार सृष्टि का लय होता है यही मिट जाएंगे तो फिर सृष्टि किसके अनुसार होगी प्रलय किसके अनुसार होगी भगवान का विधान इसी के अनुसार होता है और यही अनंत परमात्मा है! कई लाखों युग करोड़ों युग बीत जाएंगे फिर भी समय नष्ट नहीं होंगे! क्योंकि ब्रह्मा जी का भी 100 वर्ष पूरा होना बाकी है 51 वर्ष अभी चल रहे हैं! ब्रह्मा जी का एक दिन- 4 अरब 32 करोड़ वर्ष का होता है जैसे हमारा एक दिन 24 घंटे का होता है!

लघु रूप में कालचक्र की गणना

कलयुग नष्ट होने के बाद फिर से सतयुग आएगा,, सतयुग के बाद फिर त्रेता फिर द्वापर फिर कलयुग ऐसा चक्र अनंत काल तक रिवर्स होकर चलता रहता है जीव अपने कर्म अनुसार आवागमन चक्र में जन्म लेती है फिर मरती है इसमें भटकती रहती है भगवान की सृष्टि इसी प्रकार चलती रहती है! ना सृष्टि का अंत होता है ना कालचक्र का,,, जब चारों युग बीत जाते हैं तो उसे एक महायुग कहते हैं ऐसे ही जब 1000 महायोग बीत जाते हैं तो वही ब्रह्मा जी का एक दिन होता है विचार करें इतनी बड़ी ब्रह्मा जी का एक दिन होता है!

इतनी बड़ी उनकी एक रात्रि होती है! और ब्रह्मा जी की आयु 100 वर्ष की है! समय इतना विराट है इतना आगे जाएगा! ब्रह्मा जी को नष्ट करके भी और आगे जाएगा! भगवान विष्णु और शिवजी से भी आगे जाएगा! तीनों जिससे उत्पन्न हुए हैं उसे परम शक्ति जिससे उत्पन्न हुई है कालचक्र उससे भी आगे जाएगा!

कालचक्र की गति परम शाश्वत पूर्ण ब्रह्म परमात्मा तक गई है! वहीं से सृष्टि उत्पन्न होती है और अंत में वही विलीन होती है!

थोड़ा समझिए गहरे रहस्य तत्व ज्ञान ऐसा है यह विषय की समझ आ गए तो ठीक!

मन उसी तरह ध्यान देता है जो चीजों को बुद्धि समझ पाती है जिसको बुद्धि नहीं समझ पाती मन उस तरफ कभी नहीं जाता,, कुछ विषय ऐसा रहता है जो बुद्धि को समझ नहीं आता इसलिए मन उस तरफ ध्यान नहीं देता! इंद्रियों से अधिक शक्तिशाली मन है और मन से भी अधिक शक्तिशाली बुद्धि है!

आंखों को क्या देखना है क्या सुनना है मन डिसाइड करता है और मन को क्या करना है क्या नहीं? यह बुद्धि डिसाइड करता है! और बुद्धि उसी चीजों को करने के लिए प्रेरित करती है मन को,, जैसा उनके चित् में अनंत जन्मों के संस्कार भरे हैं! बुद्धि का मालिक चित् है,, जो बुद्धि से ऊपर है इसलिए चित् को बुद्धि नहीं समझ पाती! करवाती वही है बुद्धि को पर बुद्धि इसको नहीं जानती!

जीवन का सत्य

प्रतिपल संसार काल के मुख में जा रहा है, बुद्धि की अज्ञानता नहीं समझ पा रही! सत्य को अज्ञानता ने ढक दी है! जैसे बारिश के समय में बादल सूर्य को ढक देते हैं ऐसे ही बुद्धि की अज्ञानता ने सत्य को ढक दिया है! इसलिए सारा संसार सत्य को जानकर अनदेखा की हुई है! मालूम है सबको सब कुछ एक दिन अवश्य छूटेगा! माइक बुद्धि ने निश्चय कर लिया है जब मरेंगे तब देखा जाएगा अभी कहां मर रहे! क्या देखोगे शरीर से निकलने के बाद सीधे कर्मफल भोगा जाएगा! संसार के प्रत्येक जीव प्रकृति के चपेट में, प्रकृति काल के चपेट में,, माया वही है जो जीव को भगवान की ओर जाने नहीं देती!

भगवान का ऐसा माया जाल

भगवान की माया:- वह हर एक चीज माया है जो जीव को भगवान से दूर ले जाए संसार में ऐसा जाल बिछाया है माया का,,,, मन बुद्धि भगवान में लग गए तो उनकी बहुत बड़ी कृपा से,,,,, लगेगा ही नहीं,,,गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कही है,, जिस पर मेरी कृपा होती है बस वही मेरी माया से बच पाते हैं! जिस पर मेरी कृपा नहीं उसे मेरी माया अपने जाल में ऐसा फंसा देती है! की मृत्यु के बाद फिर 84 लाख योनियों से बचाने वाला कोई नहीं रहता उसे! जिस पर मेरी कृपा रहती है बस वही 84 से बचता है! मनुष्य योनि एकमात्र केवल मोक्ष का दरवाजा है! भगवान किसी को जन्म मरण से मुक्त नहीं करते जीव को स्वयं होना पड़ता है! सब इसी भ्रम में है हमें भगवान मुक्त करेंगे!

स्वयं को मुक्त होना है!,, श्री राधे

माया के 12 प्रकार के जेल

संसार के प्रत्येक जीव अनंत अनादि काल से 12 प्रकार के जेल खाने के बंधन में बंधी हुई है! मोक्ष प्राप्त होने पर,, भगवत प्राप्ति होने पर ही जीव इस बंधन से मुक्त होती है! प्रत्येक जीव इसके बंधन में है जब तक उसे भगवत प्राप्ति ना हो जाए तब तक इसके कैद में वह फंसी रहती है! यह 12 प्रकार के माया के जेल कहे गए हैं-

जिसमें जीव अनंत काल से कैद है!

भगवत प्राप्ति होने पर ही जीव इस 12 जेल से मुक्त होती है!

1. त्रिकर्म 2. त्रिताप 3. त्रिगुण 4. त्रिदोष 5. त्रिलोक 6. पंचक्लेश 7. पंचकोश 8. पंचमहाभूत 9. अंतःकरण 10. अष्टावरण 11. पंच विकार 12. कालचक्र!

अहंकार का स्थान

1. धन 2. सुंदर रूप 3. बुद्धि 4. शरीर और 5. ताकत,, अहंकार इसी पांच जगह पर रहता है! इन पांच को प्राप्त करके चाह कर भी कोई अहंकार से नहीं बच सकता!

अहंकार एक भावना है कैसी भावना मैं रूपवान हूं मैं धनवान हूं मैं बुद्धिमान हूं मैं भक्त हूं मैं ज्ञानी हूं मेरे पास ताकत है जब तक शरीर रहेंगे तब तक अहंकार भी रहेगा! शरीर और बुद्धि यही अहंकार को जन्म देती है!

अहंकार के जाल से बाहर निकलना यही तो मोक्ष है! अहंकार दिखाई नहीं देता जैसे भगवान नहीं दिखते अहंकार प्रत्येक जीव के अंतःकरण में छिपा रहता है वातावरण प्राप्त करके बलवान हो जाता है! जरा भी किसी ने हमें बुरे शब्द बोला या गाली दी हमारा अपमान किया तो यह तुरंत खड़ा हो जाता है!

इसीलिए तो भगवान ने प्राणी को धरती पर भेजा है इसी को मिटाने के लिए जो अनंत जन्मों से मिटा नहीं है यह मिट गया तो समझो जीव और ब्रह्म का मिलन हो गया! मृत्यु लोक में उस जीव को भगवान नहीं भेजते उसे सीधे भगवत प्राप्ति हो जाती है जिनका अहंकार मिट गया! जितने जीव को अब तक भगवत प्राप्ति नहीं हुई है इसका कारण यह है कि उनका मैं मिटना अभी बाकी है! मिट गया तो यही भगवत प्राप्ति है! अहम मिटेंगे तो ही परम मिलेंगे!

प्रतिष्ठा यह धन में ही मिश्रित है धन के आने पर ही अहंकार स्वाभाविक आ जाता है! प्रतिष्ठा तो धन पर ही टिका है!

अहंकार प्रतिष्ठा का नहीं उन्हें अपने धन का होता है! बुद्धि जान जाती है कि मेरे पास वह शक्ति है जो संसार के तमाम वस्तु खरीद सकता हूं इसके बल पर सब कुछ कर सकता हूं! यहीं से अहंकार का शिकार वह हो जाता है यही उनके पतन का कारण है!

उनकी बुद्धि भूल जाती है की धन संपत्ति नश्वर है क्षणभंगुर है शरीर के साथ इनका संबंध है शरीर नश्वर है ऐसी धन भी नश्वर है शरीर के नष्ट होने पर भी धन भी जहां का तहां पड़ा रह जाता है जीव अकेले अपने सफ़र में चली जाती है!

जहां इसको भूले तो वहां पतन हुआ सदा बुद्धि में रखना है कि हमें शरीर छोड़कर एक दिन जाना है! जाना है जाना है! यहां से अपना एक कृष्ण नाम ही साथ जाएगा! यही है एक अपनी वास्तविक संपत्ति जिसे हम अनंत काल तक संभाल कर रख सकते हैं बाकी तो शरीर के नष्ट होने पर तत्काल बह जाएगा शरीर चला गया तो फिर क्या कर पाओगे! वह वास्तविक संपत्ति कमाया जा सकता है सिर्फ इस शरीर के रहते हुए! भगवान के सिवा बाकी सब कुछ मिथ्या है! विषयों में फंसकर समय को बर्बाद ना करके कृष्ण नाम धारण शीघ्र ही किया जाए भव बंधन उनका पार होना निश्चित है जिसने कृष्ण नाम रूपी अमृत धारण कर लिया! शरीर कब हमसे छीन जाए!

भगवान भक्त वत्सल हैं! अपने भक्तों का योगक्षेम वह स्वयं वहन करते हैं! भगवान सदा अपने भक्त की रक्षा के लिए हर पल तैनात रहते हैं!

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना: पर्युपासते |

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् || 22||

हरे कृष्ण

भगवान की माया, गीता और वेद के अनुसार,,,,

वेद- माया, ब्रह्म की शक्ति है!

मन बुद्धि भगवान में क्यों नहीं लगता?

मूल कारण:-

एक उदाहरण के माध्यम से समझते हैं-

अगर एक मनोहर नाम का व्यक्ति एक बाघ को आपके पास भेज दिया! और उसने आकर झपटकर आपको अपने मुख में दांतों से दबा लिया! अब आप उस बाघ के मुख में फंस गए हो! क्या उस वक्त आपका मन मनोहर में लग सकता है!

पहली चीज तो कौन मनोहर है? इसका अता पता नहीं है,,, मन तो उन्हीं में लगता है जब हमें उनका जानकारी हो! किसने भेजा उस बाघ को उनका ही जानकारी नहीं!

बाघ अपने मुख में जब आपको ले लेगा आप उस वक्त चारों तरफ से कितना परेशान रहेंगे! कभी मन को नहीं लगा सकते! ऐसे ही मनोहर रुपी परमात्मा ने बाघ रूपी माया को हमारे पास भेजा हुआ है!

और अपने दांतों में हमें पकड़ लिया है उनकी (परब्रह्म) माया ने चारों तरफ से हमें नोच नोच कर खा रही है! ऐसी स्थिति में क्या मन भगवान में लग सकता है कभी नहीं! मन बुद्धि नहीं लगने का सबसे बड़ा कारण है मायाधिपति की माया ने जीव को कसकर पकड़ ली है! अपने जाल में तरीके से फंसा डाली है!

अपने अधीन की हुई है! इंद्रिय, मन, बुद्धि, चित, शरीर सब माया के कब्जे में है इसलिए भगवान में कभी नहीं लग सकता! जब तक मायाधिपति स्वयं ना चाहे!

यह मन बुद्धि भगवान में कभी नहीं लग सकता! क्योंकि माया ने प्रत्येक जीव को अपने वश में कर ली है! बाघ रूपी माया को जिसने भेजा है वह परमात्मा है! मनुष्य के पास इतनी शक्ति नहीं की बाघ को परास्त कर सके! बाघ अधिक शक्तिशाली है मनुष्य से,,, ऐसे ही माया, जीव से अधिक बलशाली है माया से मुक्त होने के लिए उनकी शरण में जाना

आवश्यक है माया जिनकी दासी है अर्थात वह पार ब्रह्म परमेश्वर की शरण में जाने पर ही माया छोड़ती है! जिनकी माया हमें पकड़ ली है!

जीव बाघ के मुख में जाते ही जैसे ही मनोहर करके आवाज लगाइ तो उसने तत्काल आकर अपनी दासी को कहा- छोड़ दो इनको इसने मेरा नाम लिया! मुझको रो कर पुकारा!

तत्काल वह बाघ के जाल से मुक्त हो गया! यह तभी हुआ जब मनोहर ने अपनी बाघ को इशारा किया! बस इसी प्रकार माया अधिपति की इशारे से माया,, जीव को छोड़ती है! कोई अपने बल पर माया से नहीं जीत सकता गीता 7/14!

वेद कहते हैं-

जितनी शक्तिशाली ब्रह्म है उतनी ही शक्तिशाली उनकी माया है! उनकी माया सीधे इंद्रिय, मन, बुद्धि पर वार करती है! जो हमें अंदर से पकड़ी हुई है! मृत्यु के बाद फिर जन्म, जन्म के बाद फिर मृत्यु उनकी माया अनंत काल तक हमें ऐसे ही नचाती रहेगी! जब तक जीव उनकी शरण में नहीं जाती! बाहर की माया संसार से तो मुक्त मृत्यु के बाद हुआ जा सकता है लेकिन अंदर की माया से मुक्त नहीं हुआ जा सकता!

बस ऐसे ही कोई भक्त सच्चा शरणागति होकर भगवान को पुकारता है तो भगवान अपनी माया को कहता है छोड़ दे इनको यह मेरा नाम जाप करता है! भगवान की दासी, माया तत्काल उनको छोड़ देती है!

जीव, माया के बंधन से हमेशा के लिए मुक्त हो जाती है! जब तक जीव भगवान की शरण में नहीं जाती तब तक माया उनका पीछा नहीं छोड़ती! माया भगवान की ही शक्ति है! संसार के समस्त प्राणियों को जो अपने कब्जे में दिन-रात उन्हें परेशान कर रही है माया वह भगवान की दासी है भगवान की शरण में जाने पर ही माया छोड़ेगी!

माया का एक ही प्रयोजन है जो मायाधिपति की शरण ग्रहण कर लेता है माया उन्हें तत्काल छोड़ देती है! जो भगवान का ध्यान करते हैं! भगवान का नाम लेता है! भगवान का आदेश पाकर माया सदा के लिए जीव का पीछा छोड़ देती है!

जन्म मृत्यु के चक्र से वह मुक्त हो जाती है! जन्म मृत्यु का चक्र ही भगवान की माया है! इस चक्र से छूटने के लिए मायापति की शरण में जाना आवश्यक है जब तक कोई जाएगा नहीं तब तक माया पीछा छोड़ेगी नहीं!

@ जयप्रकाश वैष्णव

श्री राधे हरे कृष्ण

गीता और वेद के अनुसार,,,,

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥7/14॥

गीता 7/14

भावार्थ:- प्रकति के तीन गुणों से युक्त मेरी दैवीय शक्ति माया से पार पाना अत्यंत कठिन है किन्तु जो मेरे शरणागत हो जाते हैं, वे इसे सरलता से पार कर जाते हैं।

विस्तृत वर्णन:- कुछ लोग यह स्वीकार करते हैं कि भौतिक शक्ति मिथ्या है और इसका कोई अस्तित्त्व नहीं है। वे कहते हैं कि हमें माया की अनुभूति केवल अज्ञानता के कारण होती है!

किन्तु जब हम ज्ञान से युक्त हो जाते हैं तब माया का अस्तित्त्व समाप्त हो जाएगा। वे दावा करते हैं कि इससे हमारा भ्रम दूर हो जाएगा और हम आत्मा को परम सत्य मानने लगेंगे। किन्तु भगवद्गीता का यह श्लोक ऐसे सिद्धान्त का खण्डन करता है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि माया भ्रम नहीं है, यह भगवान की शक्ति है। श्वेताश्वतरोपनिषद् में इस प्रकार से वर्णन किया गया है-

मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्।

(श्वेताश्वतरोपनिषद्-4.10)

"माया प्राकृत शक्ति है जबकि भगवान शक्तिमान हैं।" रामचरितमानस में उल्लेख किया गया है

सो दासी रघुबीर कि समुझें मिथ्या सोपि।

"कुछ लोगों का विचार है कि माया मिथ्या अर्थात अस्तित्त्वहीन है परन्तु माया वास्तव में एक शक्ति है जो भगवान की सेवा में लगी रहती है।"

यहाँ श्रीकृष्ण कहते हैं कि माया पर विजय पाना अत्यंत कठिन है क्योंकि यह उनकी शक्ति है। यदि कोई माया पर विजय पा लेता है तब उसका अर्थ यह होगा कि उसने स्वयं भगवान को अपने वश में कर लिया है क्योंकि न तो कोई भगवान को पराजित कर सकता है और न ही माया को। मन माया से निर्मित है इसलिए कोई भी योगी, ज्ञानी, तपस्वी या कर्मी केवल अपने प्रयास से मन पर सफलतापूर्वक नियंत्रण प्राप्त नहीं कर सकता।

तब अर्जुन प्रश्न कर सकता था-"फिर मैं माया पर कैसे विजय पा सकूँगा" इसका उत्तर श्रीकृष्ण ने इस श्लोक की दूसरी पंक्ति में दिया है। वे कहते हैं-"अर्जुन, यदि तुम मेरे शरणागत हो जाते हो तब मैं अपनी कृपा से तुम्हें संसार रूपी महासागर से पार करा दूंगा। मैं माया को संकेत कर दूंगा कि यह आत्मा मेरी हो गयी है अतः इसे मुक्त करो।" भगवान का आदेश पाने पर माया शक्ति मनुष्य को अपने बंधन से मुक्त कर देती है। माया कहती है-"मेरा कार्य केवल इतना ही था कि जीवात्मा को तब तक कष्ट दिया जाए जब तक वह भगवान के चरणों का आश्रय नहीं लेती।

अब क्योंकि इस जीवात्मा ने भगवान की शरण ले ली है इसलिए मेरा कार्य संपूर्ण हो गया है।"

हम अपने जीवन की दिनचर्या के उदाहरण से भी इसे समझ सकते हैं। तुम अपने मित्र से भेंट करने के लिए उसके घर के बाहर के द्वार पर पहुँच जाते हो। उसके घर के बाहर लगे सूचना पट्ट पर 'कुत्ते से सावधान रहे' लिखा हुआ है। उसका पालतु कुत्ता जर्मन शेपर्ड उसके लॉन में खड़ा है। वह प्रशिक्षित कुत्ता तुम पर भौंकने लगता है। फिर तुम बाड़े के आस-पास जाकर पिछले द्वार से उसके घर में प्रवेश करने का प्रयास करते हो। किन्तु वही कुत्ता वहाँ भी आ जाता है

और क्रोध से गुर्राने लगता है जैसे कि यह कह रहा हो-"देखता हूँ कि तुम कैसे घर में प्रवेश करने का साहस कर सकते हो।"

जब तुम्हारे पास कोई अन्य विकल्प नहीं होता तब तुम अपने मित्र को पुकारते हो और फिर वह अपने घर से बाहर निकल कर देखता है कि उसका कुत्ता तुम्हें तंग कर रहा है। तब वह कहता है-'टॉमी नहीं! टॉमी आओ और यहाँ बैठो।' कुत्ता तुरन्त शांत हो जाता है और अपने स्वामी की ओर आकर बैठ जाता है। अब तुम भयमुक्त होकर प्रवेश द्वार खोलकर घर में प्रवेश करते हो। समान रूप से प्राकृत शक्ति माया जो हमें सताती है वह भगवान की दासी है। अपने प्रयासों से हम उस पर विजय नहीं पा सकते। उससे पार पाने का एक उपाय भगवान की शरणागति है।

इसे इस श्लोक में श्रीकृष्ण ने महत्वपूर्ण ढंग से संप्रेषित किया है। यदि हम माया पर विजय पाना चाहते हैं तब हमें केवल भगवान के शरणागत होना चाहिए। तब फिर लोग भगवान के शरणागत क्यों नहीं होते? इसकी व्याख्या श्रीकृष्ण अगले श्लोक में करेंगे।

जीव, अनंत जन्म से संसार की माया में फंसी हुई है!

क्या आप जानते हैं?

जीव अनंत जन्म से उसका मन, बुद्धि, चित्! संसार की माया में फंसी हुई है! जब भगवान की बहुत बड़ी कृपा होती है तब उस जीव का मन भगवान में लगता है! सदा याद रखो हर किसी का मन भगवान में नहीं लग सकता कभी नहीं! प्राणी इतना सामर्थ नहीं है कि अपने मन को भगवान में लगा सके उसे अनंत जन्मों से माया में रमने की आदत है! यह मन दुनिया का चक्कर लगा सकता है सब चीजों में लग सकता है पर भगवान में कभी लगेंगे नहीं! जब उनकी कृपा होती है,,! जिसका भगवान वास्तविक कल्याण चाहते हैं उनके मन बुद्धि को अपने मार्ग पर लाकर खड़ा करते हैं! अगर जानना है आपको कि आप पर भगवान की कृपा है या नहीं तो अपने मन बुद्धि की जांच कीजिए! आपका मन भगवान की तरफ जाता है या नहीं!

सुख दुख का कारण मन ही है

वास्तविक में ना संसार में सुख है ना दुख बस मन की कल्पना है! सुख दुख का कारण मन ही है! और मन बुद्धि अज्ञान का स्वरूप है और अज्ञान,,, माया का स्वरूप है वास्तव में सुख दुख कहीं नहीं है! जब तत्वज्ञान, आत्मज्ञान की प्राप्ति हो जाए! प्रकाश के आते ही अंधकार चला जाता है ऐसे ही ज्ञान प्राप्त होने पर अज्ञानता चली जाती है! भ्रम नष्ट हो जाता है!

रिश्ते नाते जो मिले हैं उनके साथ कई जन्मों का चक्कर है!

योग तत्व उपनिषद 133-135

देखिए यह वेद मंत्र क्या कह रहे हैं-

यः पिता स पुनः पुत्रो यः पुत्रः स पुनः पिता । एवं संसारचक्रं कूपचक्रेण घटा इव॥ भ्रमन्तो योनिजन्मानि श्रुत्वा लोकान्समश्नुते । त्रयो लोकास्त्रयो वेदास्तिस्रः सन्ध्यास्त्रयः स्वराः॥ त्रयोऽग्नयश्च त्रिगुणाः स्थिताः सर्वे त्रयाक्षरे । त्रयाणामक्षराणां च योऽधीतेऽप्यर्धमक्षरम्॥१३३-१३५॥

भावार्थ:- जो आपकी माता है वह कई जन्मों में आपकी बेटी थी कई जन्मों में आप उनकी बेटी थी कई जन्मों में वह आपके पति थे कई जन्मों में आप उनकी पत्नी थी आप कई जन्मों में उनकी मां थी कई जन्मों में आपके पिता,, आपके भाई थे हमारे अनंत जन्म हो चुके हैं जिनकी गिनती नहीं भगवान उलट पलट कर उस जीव को बार-बार उन्हीं के साथ कनेक्ट करते हैं!

क्योंकि इसका कारण- चित उनके साथ अनंत जन्मों से अटैच है! जब तक मन बुद्धि उनसे हटेंगे नहीं तब तक उनके साथ चक्कर चलता रहेगा वह हमें बार-बार मिलेंगे! प्राणियों को जो रिश्ते मिले हैं माता-पिता, पुत्र पुत्री, पति पत्नी उन्हीं के साथ उनका चक्कर है लाख करोड़ जन्म से नहीं अनंत जन्मों से!

किसी अन्य के साथ नहीं सिर्फ उन्हीं के साथ संबंध है जन्म-जन्मांतर से जो रिश्ते उनको मिले हैं! जो जो जीव को भगवान उनके पास भेजे हैं! उन एक दूसरे के साथ हिसाब बाकी है जिसे पूरा करने के लिए भगवान एक दूसरे के साथ जोड़ देते हैं! हिसाब जैसे ही पूरा हुआ तुरंत उनसे छीन कर भगवान ले जाते हैं! क्षण भर के लिए भी भगवान उनके साथ नहीं रखते! जब तक मन उनसे हटेंगे नहीं तब तक उनके साथ बार-बार अपना हिसाब पूरा करने के लिए आना पड़ेगा!

अनंत ब्रह्मांड की सीमा

अनंत ब्रह्मांड की सीमा कहां तक फैली है? 94 अरब प्रकाश वर्ष तक केवल 1 ब्रह्मांड का क्षेत्र है! इसी आकार के बड़े-बड़े विराट अनंत ब्रह्मांड है! वह अनंत ब्रह्मांड परमात्मा का केवल एक रोम छिद्र है! जैसे हमारे शरीर के संपूर्ण भाग में एक-एक रोम छिद्र है! परमात्मा के केवल एक रोमकुप में अनंत ब्रह्मांड लटके हुए हैं! परमात्मा का शरीर तो अनंत ब्रह्मांड से भी विराट है अनंत ब्रह्मांड तक जितने भी स्थान हैं सब परमात्मा का शरीर है हम सब उस विराट शरीर के अंदर में ही है! अनंत ब्रह्मांड उस विराट पुरुष के शरीर के अंदर मौजूद है!

परमात्मा अनंत ब्रह्मांड से भी विराट है जिनका कभी कोई पार नहीं पा सकता अगर कोई ब्रह्मांड से बाहर भी चला गया उनको देखने के लिए तब भी उन्हें नहीं देखा जा सकता क्योंकि वह विराट से भी विराट है! और सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है जो प्रत्येक जीव के अंदर मौजूद है ना सूक्ष्म को देखा जा सकता है ना विराट को! अपनी योग माया के द्वारा परमात्मा गुप्त रूप से प्रत्येक जीव के अंदर छिपे हुए हैं!

यहां समझिए विज्ञान सृष्टि के माध्यम से:-

अनंत ब्रह्मांड परमात्मा के अंदर है जिसमें से एक ब्रह्मांड,,, अनंत ब्रह्मांड के अंदर है,,, मिल्की वे आकाशगंगा उस एक ब्रह्मांड के अंदर है सौरमंडल (सोलर सिस्टम) उस 1 आकाशगंगा मिल्की वे के अंदर है,,, और एक छोटा सा ग्रह पृथ्वी उस सौरमंडल के अंदर है,,, और हम सब समस्त चराचर जीव इस पृथ्वी के अंदर है! जैसे चींटी हाथी को नहीं देख पा रही ऐसे सूक्ष्म जीव,, विराट परमात्मा को नहीं देख सकती,,, क्योंकि प्रकृति ब्रह्मांड पृथ्वी सृष्टि

के समस्त चराचर जीव सब उस परमात्मा के अंदर ही विद्यमान है! जिनके मुख में अनंत ब्रह्मांड विचरण करते हैं वही श्री कृष्ण है!

गीता के अनुसार माया क्या है?

अर्थ: माया ने जिनका ज्ञान हर लिया है ऐसे दुष्ट कर्म करने वाले मूढ़, नरों में अधम, और आसुरी स्वभाव वाले मेरी शरण में नहीं आते। व्याख्या : माया का काम है फंसाना। माया का अर्थ केवल धन से नहीं होता बल्कि जिस चीज में हमारा मन अटकता है, वही हमारे लिए माया है।

नश्वरता क्या है?

अज्ञानता ही तो नश्वर है जब तक बुद्धि पर अज्ञान का आवरण रहेंगे तब तक वह नश्वर आवागमन में भटकती रहेगी! जीव अनंत काल से जन्म मृत्यु के चक्र में अपनी अज्ञानता के कारण ही फंसी है क्योंकि स्वयं को नहीं जान पा रही! आत्मज्ञान हो गया! तो उनकी नश्वरता तत्काल मिट जाती है! शाश्वत अविनाशी वह बन जाता है! ज्ञान ही अविनाशी है शाश्वत है सनातन है और अज्ञानता ही नश्वरता का स्वरूप है! इस नश्वर जगत में तब तक आना पड़ेगा बार-बार जन्म बार-बार मृत्यु जब तक बुद्धि से अज्ञानता जाएगी नहीं! और इस नश्वर जगत से मुक्त वही हुआ है! जो यह जान लिया कि मैं स्वयं अविनाशी हूं! मुझ में कोई बंधन नहीं! बंधन तो इंद्रियां मन बुद्धि शरीर में है!

जहां अज्ञान है वही माया है

जहां अज्ञान है वही माया है जहां अज्ञान नहीं वहां माया नहीं! क्योंकि अज्ञानता ही माया का स्वरूप है! जहां अज्ञान है वहां ब्रह्म नहीं,,, ब्रह्म वही है जहां ज्ञान नहीं! क्योंकि ज्ञान ही ब्रह्म का स्वरूप है! और यह ज्ञान वही है जिस पर भगवान की कृपा है! कृपा नहीं वहां ज्ञान नहीं! श्रीमद् भागवत गीता 10/11,,,, इसमें भगवान ने स्पष्ट किए हैं- ,,,,,, प्राणी में इतना सामर्थ नहीं कि वह अपनी अनंत जन्मों की अज्ञानता को नष्ट कर सके भगवान कहते हैं जिस पर मेरी कृपा होती है सबसे पहले उनकी बुद्धि की अज्ञानता नष्ट करता हूं!

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।

नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥11॥

क्या हमारे पास भगवान के लिए समय नहीं!

हमारे पास भगवान के लिए समय नहीं यह उनका कहना गलत है उन्हें यह कहना चाहिए कि हमारा मन नहीं लगता भगवान में,,,खाने पीने सोने के लिए कैसे समय निकल जाता है? इसमें मन लगा है कई अनंत जन्मों से तभी तो समय निकल रहा! जो महत्वपूर्ण न होकर जीव को अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य प्रतीत करा रहा है! उस वास्तविक महत्वपूर्ण को छोड़कर जिसके लिए समय नष्ट कर रहा! वह कुछ नहीं सिर्फ और सिर्फ ठगनी माया है! जो जीव को ठग रही! ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या प्रथम आदि जगतगुरु शंकराचार्य विवेक चूड़ामणि इसमें उन्होंने कहा है- जो जगत दिख रहा है सत्य प्रतीत हो रहा है वह मिथ्या है सत्य नहीं!

प्रतिपल यह शरीर नष्ट हो रहा

यह जड़ शरीर मिट जाता है अनंत बार मिट चुका है और प्रतिपल यह शरीर नष्ट हो रहा है! बस नष्ट नहीं होता जीव की आशा और तृष्णा! यह तो उनके साथ चली जाती है और अपनी वही इच्छा को लेकर फिर वापस आती है फिर जाती है फिर आती है! यही इच्छा उनको अनंत काल से आवागमन चक्र में घूमाती रही है कई जन्म उनके हो चुके! यही इच्छा उन्हें जन्म मृत्यु से मुक्त होने नहीं दे रहा! सदा याद रहे एक तनिक भी इच्छा वापस जन्म लेने का कारण बनता है! शरीर कितने अनंत बार मिट गए पर उनकी इच्छा आज तक नहीं मिट पाई! इसलिए कबीर दास जी क्या कहते हैं-

माया मरी न मन मरा , मर -मर गए शरीर , आशा तृष्णा न मरी ,कह गए दास कबीर।

समय के साथ शरीर की गति है!

शरीर वृद्ध हो जाता है जर्जर हो जाता है समय के अनुसार ढल जाता है प्रतिपल शरीर नष्ट हो रहा है! बिना कुछ किए ही अपने आप एक दिन यह शरीर जर्जर होकर गिर जाता है! हम कुछ करें या ना करें समय के साथ शरीर की गति है! जैसे-जैसे समय आगे जा रहा है वैसे-वैसे शरीर नष्ट हो रहा है! समस्त प्रकृति संपूर्ण ब्रह्मांड प्रत्येक जीव को लेकर काल चपेटता हुआ निरंतर आगे जा रहा! आयु पल पल नष्ट हो रही है! केवल मन ही है जो सदा युवा रहता है, न वह वृद्ध होता है ना उनकी मृत्यु होती है! मन, बुद्धि, इंद्रिय आत्मा के साथ आती जाती है! बुद्धि की अज्ञानता नहीं जा रही समझ नहीं आ रहा इस बुद्धि को कि मैं प्रत्येक क्षण भस्म हो रहा,, इच्छा और अज्ञानता नहीं जा रही! बाकी सब कुछ नष्ट होता चला जा रहा!

जीवन बस इसीलिए मिला है

जीवन बस इसीलिए मिला है मृत्यु को जानने के लिए की मृत्यु क्या है? क्यों होता है? हम क्यों बार-बार जन्म लेते हैं क्यों मरते हैं? मृत्यु हो जाए उसके बाद क्या होता होगा? सिर्फ अभी जाना जा सकता है मृत्यु के बाद नहीं! जब तक जीवन है तब तक मृत्यु से परिचित हो जाए क्या है मृत्यु?,,, जब हो जाएगी सांस रुक जाएगा! चेतन बुद्धि चली जाएगी! सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो जाएगी तो क्या जान पाओगे फिर तो केवल पछताना ही पड़ेगा! जब तक चेतन बुद्धि सही सलामत है तब तक इसे जान लिया जाए! अन्यथा आगे किसी भी योनि में उसे डाला जा सकता है! आगे मृत्यु के बाद कुछ नहीं 84 लाख योनियां सामने खड़ा है! बस इसे बचने का उपाय ढूंढ लिया जाए यही जीवन की सार्थकता है!

जो मर जाते होंगे क्या उसका खेल खत्म हो जाता है?

90% प्राणियों को यही लगता है की जो मर जाते होंगे उसका खेल खत्म हो जाता है! शरीर नष्ट हो जाने से भी भूख प्यास सुख दुख नहीं मिटेगी क्योंकि इन सब का संबंध है शरीर से नहीं है जीवात्मा से है! इस शरीर में जो दर्द पीड़ा कष्ट होता है वह शरीर को नहीं शरीर के अंदर जो जीव है उसको होता है! शरीर मिट जाएंगे,, जीव अजन्मा है

अविनाशी है शाश्वत है,, ईश्वर अंश जीव अविनाशी,,,, खाना पीना ग्रहण करने से कभी भूख प्यास नहीं मिटेगी! जीव की तृप्ति भौतिक संसार में है ही नहीं तो मिलेंगे कहां से? खाना जो ग्रहण करते हो क्या है वह? प्रकृति वापस प्रकृति में जा रही! फिर भी जीव प्यासी रहेगी क्योंकि उनको परमात्मा की प्राप्ति होने पर ही उनकी प्यास बुझेगी! समझिए परमात्मा ही तृप्ति है!

संसार केवल भ्रम का समुद्र है!

यस्य जगतः कृते त्वं सुखं प्राप्तुं दिवारात्रौ भ्रमसि सः केवलं मायासागरः एव । त्वया अन्विष्यमाणं सुखं न विद्यते किमर्थम् । यत् अत्र मम सुखं दृश्यते तत् केवलं मनसः बुद्धिस्य च भ्रमः एव!

भावार्थ:- संसार में जिस सुख को पाने के लिए दिन रात भटक रहे हो वह संसार केवल भ्रम का समुद्र है! जिस सुख की तुम्हें तलाश है वह भौतिक जगत में नहीं है क्यों भटक रहे? जो लग रहा यहां मेरा सुख है सिर्फ वह मन बुद्धि का भ्रम है! केवल भ्रम! सुख कभी मिलेंगे नहीं! क्योंकि जाना ही नहीं सुख का संबंध किससे है? पानी से मक्खन कभी निकला है,, समझ लिया है कि यह संसार दूध है!, दूध नहीं! केवल पानी है मथने पर मक्खन कभी निकलेंगे नहीं! लाख प्रयास करने पर भी सुख कभी मिलेंगे नहीं!

पैसे का अहंकार

जितना जीवन में पैसे प्रवेश होता है उसके साथ-साथ अहंकार भी प्रवेश होता है! उनकी बुद्धि जान जाता है कि अब मैं दुनिया की सब चीज खरीद सकता हूं इसलिए अहंकार उस पर चढ़ जाता है! हालांकि पैसे से संसार की सभी वस्तु खरीदा जा सकता है पर प्राणों को नहीं बचाया जा सकता! श्रीमद् भागवत महापुराण दस स्कंध 10/27/16 कहती है- भगवान जिनका कल्याण चाहते हैं उसे अपनी सबसे बड़ी माया पैसे से दूर रखता है ताकि अहंकार उस पर चढ़ने न पाए इच्छा बढ़ने ना पाए इसलिए भगवान उनकी इच्छा को रोक देते हैं तभी अहंकार का नाश होता है और जिनका सर्वनाश करते हैं स्वयं भगवान उनके जीवन को धन संपत्ति से भर देते हैं! कहते हैं भगवान भोग लो बेटा अभी सुख क्योंकि आगे हमने तुम्हारे लिए 84 का जाल बिछाया है!

जीवन की सच्चाई

चाहे कितने भी बाग लगा ले,,, एक पत्ता साथ ना जाएगा!

चाहे कितने भी बोर खुदा ले,,, एक बूंद भी संग ना जाएगा!

चाहे कितने भी बैंक जमा ले,,, ₹1 साथ ना जाएगा!

चाहे कितने भी महल बना ले,,, एक ईंट सांग ना जाएगा!

चाहे कितने भी रूप सजा ले,,, यह राख एक दिन बन जाएगा

चाहे कितने भी साथी बना ले सबसे नाता टूट जाएगा

चाहे कितने भी मौज उड़ा ले तेरा मौज ही मौत बन जाएगा

चाहे कितने भी पाप कमा ले उनकी नजरों से न बच पाएगा

चाहे कितने भी मित्र बना ले कोई काम तेरे ना आएगा

चाहे कितने भी वासना बढ़ा ले पर नर्क से तू न बच पाएगा

प्रेम और वासना

प्रेम में वासना का कोई स्थान नहीं! जहां वासना ना हो वही प्रेम है! प्रेम को तो कोई नहीं समझ पाएगा! प्रेम क्या है स्वार्थ से परे है! प्रेम सच्चा होता है निस्वार्थ होता है! प्रेम में शरीर का स्थान ही नहीं! प्रेम तो केवल भाव देखता है शरीर नहीं! जहां शरीर को छूने की इच्छा मन में प्रकट हुई!

वहां पर वासना है प्रेम नहीं! दूर रहकर मिलन की तड़प होती है वह प्रेम है! बहुत ही सही कहा है कलयुग में अधिकांश पुरुष अपनी वासनाओं की भूख मिटाने के लिए स्त्री को खिलौना खेल तमाशा बना लिया है!

स्त्री मां दुर्गा का स्वरूप है अगर स्त्री के साथ कुछ अनर्थ हुआ तो मां दुर्गा उसे क्षमा नहीं करेंगे भगवान महादेव को भी हारना पड़ा है काली रूप जब धारण किया था! कोई नहीं बचा पाएंगे इसलिए स्त्री का सम्मान हो! प्रेम हो तो सच्चा हो! स्वार्थ प्रेम नहीं!

अहंकार का पांच लक्षण

1. मुझे उनके सामने नहीं झुकना है! पहले वह बात करेगा तब हम करेंगे! हम नहीं झुकने वाले!

2. उन्होंने मुझे कहा मेरे घर कभी मत आना तो मैं क्यों उनके घर जाऊं बेशर्म थोड़ी हूं मुझे भी कभी नहीं जाना! आज के बाद

3. उसने मुझे पागल कहा मेरा बहुत अपमान किया कितनी बार पागल पागल कहा मैं पागल थोड़ी हूं! मुझे कहा तुम बदसूरत हो,,, गरीब हो मूर्ख हो अज्ञानी हो,,, क्यों कहा उसने मुझे!

4. किसी ने पूछा यह घर किसका है? तो उसने कहा मेरा घर है दौलत किसका है? मेरा है बेटा बेटी किसका है? मेरा है यह पति किसका है? मेरा है यह पत्नी मेरी है!

5. हम लालची हैं अहंकारी हैं क्रोधी हैं क्या नहीं है हमारे अंदर पर हम अपनी बुराई को स्वीकार नहीं करते यह अहंकार का सबसे बड़ा लक्षण है किसी ने कह दिया अरे लालची तुम पहले अपने कपट को त्यागो अहंकार को त्यागो तब भक्ति तुम्हारा सफल है वह कहेगा मेरे अंदर कपट अहंकार है ही कहां!

यह अहंकार अपनी बुराइयों को पता चलने नहीं देती! अहंकार अपने दोषो को स्वीकार नहीं करता! समझता है कि मैं श्रेष्ठ हूं! यही अहंकार का लक्षण है

अष्ट आवरण प्रकृति क्या है?

जिससे मिलकर अनंत ब्रह्मांड घिरी हुई है! और माया का क्षेत्र अनंत ब्रह्मांड तक है! परमात्मा, माया के अंतिम क्षेत्र से बाहर है! माया उन्हें ग्रहण नहीं कर सकते!

5 अपरा प्रकृति + 3 परा प्रकृति

5 अपरा प्रकृति अर्थात पंच महाभूत- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश

3 परा प्रकृति- मन, बुद्धि, अहंकार!

अहंकार और मोह

जब हम किसी को अपना मान लेते हैं तो वह मोह और जब हम स्वयं को श्रेष्ठ मान ले तो वही अहंकार! जहां अहंकार है वही मोह है और जहां मोह है वहीं अहंकार है दोनों एक दूसरे से तनिक भी दूर नहीं! जैसे सूर्य और ताप! और जहां यह दोनों हैं वही वासना है वही कपट, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, राग द्वेष, भय, चिंता सब एक जगह इकट्ठे हो जाते हैं जहां अहंकार और मोह का डेरा है! बुराइयों के शाखा चित में यही से फैले हैं! अहंकार, मोह का त्याग कभी करने नहीं देता! अंत समय अहंकार छूट जाए पर मोह नहीं! यदि मोह छूट भी जाए फिर भी उसका अहंकार नहीं! देखो इन दोनों की प्रबल माया!

बुद्धि, धन, रूप का अहंकार!

जो इतनी शक्तिशाली हमें बनाया है सामर्थ दिया है सब कुछ करने की हमें ताकत दी है हाथ पैर दिया है आंखें वाणी दी है इन सब को वापस छीनने के लिए उन्हें पल भर भी नहीं लगते! उनके एक इशारे से जीवन उजड़ जाता है और एक इशारे से राजा सम्राट बनता है! जो इतनी शक्तिशाली बनाना जानता है वह नाली का कीड़ा कुत्ते बिल्ली भी बनाना जानता है! कीड़े मकोड़े सब पूर्व जन्म में कलाकार हीरो हीरोइन बड़े-बड़े धनवान थे! देखो अब उनका क्या हाल है? ऐसा क्यों? क्या था उनके अंदर- मैं धनवान, मैं बुद्धिमान, मैं रूपवान, मैं कलाकार यह सब आगे वही 84 मे जाएंगे! जो धन, रूप के मद में खो गया है! कहते हैं मेरे पास भगवान के लिए समय नहीं! भगवान सीधे उसमें डाल देते हैं जाओ तेरे पास अब समय ही समय है! करो वहां मौज!

माया का पर्दा

10 इंद्रिय, मन, बुद्धि भगवान ने अपनी माया इसी में चढ़ा दी है!

यही तीन माया का स्थान है

माया कहीं बाहर नहीं,

माया का डेरा इसी 3 में है!

उस संतान के लिए भगवान ने जिनको पैसे वाले पिता के घर जन्म दिया है! अपने पिता के पैसों को ₹40,000 यूं ही खर्च कर देगा उसे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसने कमाया ही नहीं तो फर्क क्या पड़ेगा? यह तो उनके पिता ने दिन रात परिश्रम करके अर्जित किया है! जब स्वयं परिश्रम करके ₹5,000 हासिल करेगा तो ₹50 खर्च करने के लिए उसे 100 बार सोचना पड़ेगा! करूं या नहीं! अपना किया हुआ परिश्रम का पैसा,, पैसा है और उनका पैसा, पैसा नहीं! पैसा कभी व्यर्थ खर्च न करें! अगले जन्म में कंगाल होना पड़ेगा? ठोकर खाना पड़ेगा! मां लक्ष्मी का सम्मान करें! हर जन्म में पैसे वाले पिता नहीं मिलेंगे! पूर्व प्रारब्ध वश मिला है! स्वयं कड़ी परिश्रम करके मां लक्ष्मी को लाइए!

संसार आपकी इज्जत करता है या पैसे का?

बुद्धि में बिठा लो संसार आपकी इज्जत करता है या पैसे का लोगों की जांच करना है तो परखिए!

सड़क पर भीख मांगने बैठ जाओ? कौन आएगा तुम्हें पूछने कि तुम किस हाल में हो! जितने तुम्हें आज पुष्पमाला पहना रहे! निकालो एक व्यक्ति? इसलिए संसार की सच्चाई शीघ्र ही जान लो ,,,

कोई किसी का इज्जत नहीं करता यहां सभी करते हैं पैसे का! क्योंकि सारा जगत पैसे का भूखा है और हमारा कृष्ण भाव का भूखा है संसार पैसे में बिक जाते हैं और मेरा कृष्ण,,, सच्ची श्रद्धा और भावना में बिक जाते हैं जहां प्रेम और विश्वास हो वहां श्री कृष्ण खड़े हो जाते हैं उन्हें धन दौलत से कोई मतलब नहीं इसके चक्कर में तो संसार पड़ा है क्योंकि परमात्मा मायातीत सर्वोपरि है! विदुर के घर भोजन करने वाले दुर्योधन के पास क्यों नहीं गए जिनके पास इतनी संपत्ति थी किसी चीज की उनके पास कमी नहीं थी! भगवान उनके घर गए क्यों नहीं? क्योंकि भाव नहीं था! प्रेम नहीं था! जहां प्रेम भाव है वही श्री कृष्ण है! कितने भी असंख्य दौलत उन्हें चढ़ा लीजिए! रिश्वत देकर उन्हें प्रसन्न नहीं किया जा सकता! वे प्रसन्न होते हैं सिर्फ सच्ची श्रद्धा और निष्काम भाव से!

परमात्मा के सिवा कोई अपना नहीं! इस झूठे संसार में ,,,, जब तक सुख है तब तक लोग तुम्हें घेरे रहेंगे जैसे ही दुख आएगा सब तुम्हें छोड़कर चला जाएगा कोई यह नहीं कहेगा कि मैं तुम्हारी मदद करता हूं लोग खड़े-खड़े तमाशा देखेंगे साथ केवल श्री कृष्ण हीं निभाएगा इसलिए उन्हें कसकर पकड़े रहे! उनका साथ कभी ना छूटे! जिनके जैसा कोई नहीं! कर्म दंड अवश्य देता है पर संभालता भी तो वही है!

दुनिया अच्छे-अच्छे के साथी हैं सही सलामत शरीर मिल गया तो तुम्हारी इज्जत कर रहा विकलांग हो जाते तो कोई तुम्हें पूछता! घर में ही बोझ बन जाते! फिर लगता कि कहां-कहां से मेरा जन्म हो गया! कभी सोचा करें यह संसार क्या है? एक झूठी दुनिया अच्छे-अच्छे के साथी हैं जो लग रहा है आपको कि यह मेरा है यह मेरे से प्रेम करता है यह मेरी इज्जत करता है वह सब आपका भ्रम है यहां कोई किसी से प्रेम नहीं करता स्वार्थ युक्त जगत है प्रत्येक जीव स्वार्थ की पूर्ति में लगा है! अपना किरदार पूरा होते ही ठीक समय पर जैसे निश्चित है तत्काल वापस जाना पड़ेगा! वहां कोई चालाकी नहीं चतुराई नहीं! वहां ना चलेगा बहाना किसी का!!! नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का! बस वहां

तो कर्मों की जय जयकार है जैसे यहां पैसे की जय जयकार! जैसे ही शरीर छोड़कर जाओगे तुरंत कर्मों का हिसाब शुरू हो जाएगी!

जब बुरा वक्त आएगा तो एक व्यक्ति साथ खड़ा नहीं होगा जितने सुख में लाइन लग जाएंगे,,, इसलिए सदा याद रखो इस झूठे जगत में परमात्मा के सिवा कोई अपना नहीं,,,, जो श्री कृष्ण के लिए एक कदम आगे बढ़ता है वह उनके लिए 100 कदम आगे बढ़ता है! ऐसा है हमारो गिरधर,,,,

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई

जय श्री राधे

समय की सबसे बड़ी इकाई

समय की सबसे बड़ी इकाई को कल्प कहते हैं! हमारी बुद्धि इतनी छोटी सी है! इतना जानते हैं की अक्टूबर के बाद नवंबर आता है और दिसंबर के बाद फिर जनवरी! समय आगे कहां तक गया है बुद्धि असमर्थ है! वही हमें जानना है! सतयुग के बाद त्रेता उसके बाद द्वापर उसके बाद कलयुग जब यह चारयुग बीत जाते हैं तब उसे एक महायुग कहा जाता है! जब ऐसे ही 1000 महायुग बीत जाते हैं तब ब्रह्मा जी का एक दिन होता है! उसे ही एक कल्प कहा जाता है!

कलयुग के बाद क्या आएगा?

अधिकतर लोगों को लगता है कि कलयुग समाप्त हो जाएगा फिर उसके बाद क्या होगा? फिर से सतयुग शुरू होगा! ऐसे ही यह चारों युगों का चक्र चलता रहता है! जब 1000 बार राउंड पूरा हो जाता है! तब ब्रह्मा जी का एक दिन होते हैं! ऐसे ही ब्रह्मा जी की 100 वर्ष की आयु है! उनके एक दिन को ही एक कल्प कहा जाता है! जब एक दिन उनके इतने विशाल हैं! ऐसे ही उनके एक महीने होंगे 1 वर्ष होंगे अभी ब्रह्मा जी की 51 वर्ष की आयु है! यह सृष्टि इसी आयु में चल रही है! ब्रह्मा उनका नाम नहीं यह पद है जो बदलते रहते हैं!

ब्रह्मा जी का एक दिन- 4 अरब 32 करोड़ वर्ष!

****

कर्मखंड

कर्म कैसे बनते हैं?

एक तरफ है बुद्धि अर्थात ज्ञान! और एक तरफ है चित् अर्थात संस्कार! इन दोनों से ऊपर है अहंकार! जो दोनों को कवरेज करता है! चित और बुद्धि के बीच में है "मन",,,,, संस्कार और ज्ञान अर्थात चित और बुद्धि के मिश्रण से मन में लहर आते हैं! जो अच्छा बुरा आता है! इस मन के आधार पर हमारे पूरे 10 इंद्रियां कार्य करते हैं! इंद्रियां और मन दोनों के संगम से कर्म बनते हैं! इंद्रियां और मन का क्रियाकलाप ही कर्म है! कर्म का मूल कर्ताधर्ता यही दोनों है!

चिंतन के द्वारा ही जीव का कर्म बनता है! जैसा उसका चिंतन होगा वैसा ही उनका कर्म बनेगा! अब यह प्रश्न है मन में विचार आते कहां से है? अच्छे बुरे जो चिंतन होते हैं मन में वह लहर कहां से आते हैं? अनंत जन्मों का संस्कार उनके चित् में जमा है मन और बुद्धि दोनों उसी दिशा में चलते हैं जैसा उनका संस्कार है! संस्कार के आधार पर मन में लहर आते रहते हैं! बैठे-बैठे कोई विचार आ रहा है तो चित् से आ रहा है! जो जीव का जमा पूंजी खाता है! मन तो एक कोरा कागज है! मन,, चित् के आधीन है! और बुद्धि,, अहंकार के! यह चारों मिलकर कर्म करते हैं!

कर्म करने से पहले सोच लीजिए कर्म मिटेंगे नहीं!

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं.

ना भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि।

ब्रह्मवैवर्त पुराण कहते हैं जिसे कोई मान नहीं सकता! भगवान श्री कृष्ण कहा है एक जगह पर एक बार जो अच्छे बुरे कर्म हो जाता है चाहे जानबूझकर या अनजाने में दोबारा उस कर्म को मिटाया नहीं जा सकता जब तक उसका फल ना मिले! प्रत्येक सेकंड में किया हुआ हर एक कर्म मृत्यु के बाद जीव का पीछा नहीं छोड़ेंगे! एक एक कर्म का फल भोगना पड़ेगा! अच्छा किया उसका भी और बुरा किया उसका भी चाहे कितने भी बड़े महान भक्त हो उसे भी अपने अनजान से हुए कर्मों का फल भोगना पड़ेगा ! जैसे एग्जाम पेपर जमा होने के बाद कोई प्रश्न बाद में याद आए सोचे कि हमसे यह गलत हो गया शिक्षक को पेपर वापस मांग कर दोबारा उसे सही करें तो क्या देगा नहीं! उसी टाइम तुम्हें सोचना चाहिए जितना बन गया उतना बन गया! अब कुछ नहीं किया जा सकता जैसा-जैसा बनाया पेपर में वही रिजल्ट तुम्हें मिलेगा! अब चाहे जो सोचो जो प्रतिपल हमसे कर्म हो रहा है सब भगवान के यहां हर पल जमा हो रहा है! याद रहे जो आज से पहले जितने भी कर्म हो गए हमसे वह कभी मिटेंगे नहीं! जब तक जीव को उसका फल ना मिले मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती उसे!

संसार के एक जीव भी एक क्षण को भी अकेला नहीं है! यजुर्वेद और ऋग्वेद कहते हैं-हम एक क्षण भी अकेले नहीं है जिसने हमें बनाया है 9 महीने गर्भ में वह रचनाकार वहां से हमारे साथ आया है हमें लग रहा हम अकेले हैं! वही हमें साथ लेकर आया है और वही हमें साथ लेकर जाएगा वह है तब हम जीवित हैं!जैसे किसी एक पात्र अर्थात गिलास में

जल रखा है! बिना पात्र का पानी टिक नहीं सकता! पानी किस में रहेगा? स्थान चाहिए! गिलास परमात्मा है और जो उसमें जल है वह जीव है! जीव इस शरीर में परमात्मा रूपी पात्र में टिकी हुई है!

कोई लाख करे चतुरायी

कोई लाख करे चतुरायी: करम का लेख मिटे ना रे भाई ॥

जरा समझो इसकी सच्चाई रे, करम का लेख मिटे ना रे भाई ॥

इस दुनिया में, भाग्य के आगे, चले ना किसी का उपाय,

कागद हो तो, सब कोई बांचे, करम ना बांचा जाए,

इस दिन इसी, किस्मत के कारण,

वन को गए थे रघुराई रे, करम का लेख मिटे ना रे भाई ॥

कोई लाख करे चतुरायी, करम का लेख मिटे ना रे भाई,

करम का लेख मिटे ना रे भाई ॥ काहे मनवा धीरज खोता,

काहे तू नाहक रोए, अपना सोचा कभी ना होता,

भाग्य करे तो होए,

चाहे हो राजा चाहे भिखारी, ठोकर सभी ने यहाँ खायी रे,

करम का लेख मिटे ना रे भाई ॥ कोई लाख करे चतुरायी,

करम का लेख मिटे ना रे भाई, करम का लेख मिटे ना रे भाई ॥

कर्मों का गवाह ही परमात्मा है!

भगवान श्री कृष्ण ने गीता के एक श्लोक में अर्जुन से कहते हैं-

मैं संसार के प्रत्येक जीव के संस्कारों को पकड़कर उनके अंतःकरण में विद्यमान हूं जैसा जिसका कर्म है उसी भाव से स्थित हूं और उसी के अनुसार उन्हें आगे ले जाता हूं कोई मुझे नहीं जान सकता मैं सबको जानता हूं मुझे कोई नहीं देख सकता हर पल मैं सबको देख रहा हूं मेरी आवाज कोई नहीं सुन सकता मैं सब की बातें सुन रहा हूं कोई मेरा विचार नहीं कर सकता मैं सब का विचार जानता हूं प्रत्येक जीव के कर्म के अनुसार अंदर में रहकर साक्षी भाव से अंदर मैं विद्यमान हूं उसी के अनुसार अंदर से ही जीव के आवागमन चक्र इसमें प्रत्येक जीव को घुमा रहा हूं! उनके कर्मों का साक्षी जो है कोई गवाह जो बताएगा उसे आगे मृत्यु के बाद कहां जाना है? वही गवाह,,, परमात्मा है! किस समय क्या सोचा भूल गए परंतु वह उनका साक्षी है! जो अंदर एक गवाह भेजा है!

कर लो जितनी मनमानी देखने वाला तो कोई नहीं

कर लो चाहे जितनी मनमानी देखने वाला तो कोई नहीं! जब कर्म की सजा पाएगा स्वयं समझ आ जाएगा!

पाप कर्म जितना आज मजे से कर रहे हो! उतनी सजा भोगना पड़ेगा जब इसकी सजा मिलेंगे ना तो आंखों से मूसलाधार बारिश होगा चिल्ला कर रोना पड़ेगा स्वयं अकेले को,,, करनी जिसने की है फल भी सिर्फ उन्हीं को भुगतना होता है किसी अन्य को नहीं,, ऐसी ऐसी सजा है उस मालिक के पास असहनीय दर्द पीड़ा देना वह जानते हैं करोड़ों करोड़ों रोग उनके पास है कहेंगे कि हे भगवान अब तो मेरे प्राण ले जाओ! थक चुका हूं जिंदगी से लड़ते -लड़ते,,, फिर भी प्राण नहीं निकलेंगे ऐसी होती है उनकी कर्म की गति! कभी देखा नहीं है ऐसा नजारा इसलिए अभी समझ नहीं आ रहा! क्योंकि अभी बुद्धि पर अहंकार चढ़ गया है! मेरे पास ताकत है मेरे पास शरीर है! शरीर तो छूट जाएगा पर जो किया है हरकत उसे तो स्वयं को ही भुगतना पड़ेगा! नादानी बुद्धि उनकी नजरों से नहीं बच पाएगा! समझ लिया है कि कोई नहीं देख रहा! कुत्ते बिल्ली छिपकली सूअर पशु पक्षी कुछ भी बना देंगे कुछ नहीं कर पाओगे!

एक क्षण भी कोई उनकी नजरों से अलग नहीं है! अंतर है सिर्फ हम उनको भूले है परंतु हम उनको याद हैं! परमात्मा,, प्रत्येक प्राणी की मन की एक-एक शाखा को जानते हैं किसके मन में क्या-क्या चल रहा है? अब सर्वनाश आगे दुर्गति जिनका लिख ही चुका है! उनकी बुद्धि इस परम सत्य को समझेगा ही नहीं!

10 महा पाप कर्म से बच कर रहे

1. संसार के किसी भी स्त्री को बुरी भावना से देखना! संसार के प्रत्येक स्त्री देवी दुर्गा का स्वरूप है! जिनके प्रचंड क्रोध को भगवान भी शांत नहीं कर सकते! महादेव को जमीन पर लेटना पड़ा था! महादेवी का क्रोध इतना विकराल है! इसलिए उनके अंश के साथ सावधान रहे प्रत्येक स्त्री मां दुर्गा का स्वरूप है उनका सम्मान करना मां दुर्गा का सम्मान करना है उनके प्रति गलत सोचा भी तो मां दुर्गा उसे क्षमा नहीं करेंगे भगवान भी कुछ नहीं कर सकते यदि मां दुर्गा अगर क्रोध हुए तो उनके प्रकोप से कोई नहीं बचा पाएगा!

2. किसी के लिए क्रोध करना और अपनी वाणी से किसी को बुरे शब्द बोलना कटु वचन,, हृदय को चोट पहुंचाना!

3. लोभ! जो नरक का द्वार है!

4. अहंकार! जो पापों का सम्राट है! हर पल हमारी बुद्धि पर जो मैं सवार है! जिसके कारण हम कई बातों को मानते नहीं है! कुछ को मानते हैं कुछ को नहीं! अपनी बुराई को अहंकार कभी नहीं मान सकता! इसलिए इसे पापों का सम्राट कहा गया है!

5. जीव हत्या! अर्थात जीव हिंसा!

6. शास्त्र विरुद्ध आचरण करना!

7. माता-पिता, गुरु और भगवान का निरादर करना!

8. किसी से ईर्ष्या करना!

9. किसी भी व्यक्ति में दोष देखना अर्थात राग द्वेष करना यह अच्छा है यह बुरा है! तुलना करना!

10. किसी की बुराई करना निंदा करना! जब सामने में कोई व्यक्ति रहता है तो हम उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं जब वह चला जाता है तो फिर क्या करते हैं? उनकी बुराई करते हैं! यह झूठा व्यवहार है! कपट है! भगवान ने स्वयं कही है अगर मुझ तक पहुंचना चाहते हो तो मैं ज्ञान, ध्यान, योग, तपस्या से नहीं! मिलूंगा सिर्फ इस फार्मूला से!

निर्मल मन जन सो मोहि पावा,

मोहि कपट छल छिद्र न भावा

पराई स्त्री और पराए पुरुष से संबंध की ऐसी सजा दहल जाएंगे!!!

इसके विषय में करना तो दूर सोचना भी महा अपराध है! हम उनको नहीं देख सकते वह हमें देख रहा है! हजारों नजर से परमात्मा एक प्राणी को वह देख रहे हैं! इसलिए सावधान!

® प्राणी को क्यों नहीं लगता कि कोई हमें देख रहा जानिए पूरी विस्तार से! हमसे पाप कर्म आखिर होते क्यों है? क्यों नहीं लग रहा कि वह हमें देख रहा?

श्रीमद् भागवत महापुराण में 36 प्रकार के नर्क का वर्णन है! जिसमें एक ऐसा महा भयंकर मल मूत्र से भरा हुआ नर्क है एक सेकंड रहना जहां मुश्किल है इतनी महा दुर्गंध से भरी है रौरवनर्क! जहां कामी जीवो को डाला जाता है! संसार के अधिकतर प्राणी को लगता है यह सब झूठ है फालतू की बातें हैं! उन्हें माया का नशा है इसलिए नहीं समझ पाती भगवान के खेल को भगवान ने वहां सब एक-एक सिस्टम बनाया है! शरीर से निकलने के बाद तुरंत उसे वहां जाना होता है जैसा उसका कर्म होता है! और कर्म लिखने वाला साक्षी परमात्मा जीव के साथ गर्भ में थे तब से वहां से आया हुआ है!

उसे मालूम नहीं हर पल उसके साथ कोई है! उसने शरीर के अंदर स्थित होकर प्रत्येक जीव को ऐसा उसे फीलिंग करवा दी की लगे कि मैं अकेला हूं तब स्वतंत्र होकर कर्म करेगी और हम उसको देखेंगे! कोई इस बात को माने या ना माने उसे अपने कर्म का फल भोगना पड़ेगा! अगर मेरे इस खेल को रहस्य को मान गई तो बच गई उसे भोगना नहीं पड़ेगा अगर किसी के बताने पर लगे कि यह सब झूठ है कोई देखने वाला नहीं तो फिर उसे अपने एक-एक कर्म का फल भोगना पड़ेगा!

क्योंकि आगे उन्हें किस आधार पर ले जाया जाएगा? कहां ले जाया जाएगा? यह देखने के लिए परमात्मा जीव के अंदर विद्यमान है क्या सोच रही? क्या कर रही? अंदर अंदर क्या चल रहा? उन सब का परमात्मा साक्षी है एक-एक कर्म का गवाही है उन्हें आगे उसका हिसाब करना है! अलग-अलग कर्मों के द्वारा अलग-अलग नरक जीव को प्राप्त होते हैं! जैसा कर्म होता है वैसा ही उनको आगे फल प्राप्त होता है! वैसे ही योनी में उसको जन्म मिलता है! प्राणी को लग रहा यहां हमें कोई देखने वाला नहीं जैसे मर्जी में आए वैसा करो! कोई तो रोकने वाला नहीं!

जीवो को केवल कर्म करने के लिए स्वतंत्रता दी गई है चाहे तो वह अच्छा कर ले चाहे तो बुरा! यह उनके हाथ में है पर जब उनका फल मिलेगा तो ना चाह कर भी जबरदस्ती रो रो कर उनको भोगना ही पड़ेगा! भगवान ने स्वयं कहा है- तुम्हारे जीवन के तपस्या के आगे मैं भी इसे रोक नहीं पाऊंगा कर्मों के कानून के आगे मेरी भी नहीं चलती! कर्म करने के लिए स्वतंत्र हो परंतु फल भोगने के लिए नहीं!

केवल एक जीव को परमात्मा करोड़ नजरों से देख रहे हैं पूरे 24 घंटे परमात्मा की जीव पर टकटकी नजर लगी है! मृत्यु होने के बाद जीव को उसके जन्म से लेकर मृत्यु तक के सारे कर्म स्टेटमेंट निकाल कर उसको दिखाया जाता है देख स्वयं तुमने ऐसा ऐसा किया था! भगवान सबूत के लिए उसको रिकॉर्ड करके रखते हैं! जीव नहीं मानती इसलिए उसे अंत में उसके एक-एक सेकंड में किया हुआ सारा कर्म कब किस पल झूठ बोला? क्या बात पर बोला? कब किस तारीख को किस पल क्या देखा? क्या सुना? क्या किया? हार्ड डिस्क परमात्मा में वह सब कुछ रिकॉर्ड हो जाता है उसे वहां दिखाया जाता है इस बात को कोई नहीं मान सकता!

यह एक रहस्य है जो कोई नहीं समझ पाया! सृष्टि को उसने रचा ऐसा है कि लगेगा ही नहीं कि वह देख रहा! उनको सत्य परमात्मा को और उनके खेल को पूरी तरह ढक दिया है यही उनकी माया है!

जब खुद अपने कर्म को देखती है तब उन्हें यकीन होता है मानना पड़ता है हां मैंने किया था! भगवान हर चीज सबूत के साथ करते हैं! क्योंकि सत्यनारायण को भी जीव मिथ्या मानती है! एक-एक कर्म का प्रमाण भगवान रखते हैं! भूल गई है तो उसे देख कर भगवान याद दिलाते हैं तब उसे मानना पड़ता है!

भगवान ने गीता 18 अध्याय में कहा है- 18/66

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज |

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच: || 66||

भगवान कहते हैं अगर चाहते हो कि मेरे कर्म सामने ना आए तो इसका एक ही शर्त है अपने इंद्रियां, मन, बुद्धि को मुझे समर्पित कर दो! अहंकार और मोह रहित होकर अपने को अधम पतित मानकर मेरी शरण में तुम्हें आनी होगी! सारे कर्म धर्म त्याग कर मेरी शरण में आजा मैं तुम्हें सारे पापों से मुक्त कर दूंगा! अगर नहीं आया! अपने आप को मुझे समर्पित नहीं किया तो फिर उसके लिए मेरे कर्मों का कानून तय करेगा कि उसे आगे कहां जाना है? अपने कर्मों से बचना है तो मेरी शरण में शीघ्र आजा मैं तुम्हें मुक्त कर दूंगा मेरे सच्चे भक्तों का कभी पतन नहीं हो सकता! उनकी रक्षा मैं स्वयं करता हूं! शरण में नहीं आया तो एक-एक कर्म का हिसाब होगा!

कौन देख रहा था? कौन साक्षी है? यह तो उसे मृत्यु के बाद पता चलते हैं जब माया का आवरण नष्ट हो जाती है जीव जब शरीर के बंधन से बाहर चली जाती है शरीर के अंदर जीव जब तक है तब तक माया का आवरण है शरीर छूट जाने के बाद उसे मालूम चल जाता है कि किसी ने मुझे छिपकर देखा था जब यहां उसे पता चलता है तब चीख चीखकर रोती चिल्लाती है हर प्राणी करने के बाद वहां पछताते हैं मैं भगवान का भजन क्यों नहीं किया नाम क्यों नहीं लिया? वहां उसके साथ क्या होता है इसे यहां के लोग नहीं जानते क्योंकि माया में फंसे हैं!

जन्म और मृत्यु के बीच में माया का आवरण है जो जीव को पता चलने नहीं देती की कोई उसको देख रहा है! इसलिए हर पल सावधान रहें एक परमात्मा की हर पल नजर है!

इसलिए पाप कर्म उनसे होते हैं माया जो ठगनी है! उसे पाप करवा देती है और चली जाती है! फिर भोगना माया को नहीं! स्वयं जीव को पड़ता है इसलिए भगवान ने सबसे कीमती वस्तु हमें बुद्धि दी है! इसके द्वारा तुम अपने आप को संभाल कर रखो! नहीं रखा तो इसका परिणाम तुम्हें भोगना पड़ेगा!

पराई स्त्री और पराए पुरुष से संबंध की ऐसी सजा

प्रेम को संसार में ईश्वर का रुप कहा गया है। लेकिन प्रेम अगर मर्यादा और नीतियों को ताक पर रखकर काम भावना में बदल जाए तो इससे बड़ा पाप कुछ भी नहीं है। इस पाप की ऐसी सजा है जिसे जानेंगे तो आपका दिल दहल जाएगा।

ऐसी सजा, किसी को आलिंगन करने से पहले लाख बार सोचेंगे

गरुड़ पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति मर्यादा की रेखा पार करके परस्त्री अथवा परपुरुष से संबंध बनाता है उसके लिए यमराज ने बड़ा ही कठोर दंड निर्धारित किया है।

ऐसे स्त्री और पुरुष की जीवात्मा को दहकते लोहे के खंभे का आलिंगन करवा जाता है। इससे जीवात्मा का शरीर जल जाता है। जीवात्मा उस क्षण को याद करके रोता है जब उसने अवैध संबंध बनाया था।

इससे भी यमराज के दूतों के हृदय नहीं पिघलता हैं और बार बार दहकते लौह स्तंभ का आलिंगन करवाते हैं।

मनुस्मृति में परस्त्री संबंध की तीन खौफनाक सजा

मनुस्मृति में बताया गया है कि मनुष्य को संयम से काम लेना चाहिए और परस्त्री संबंध से बचना चाहिए। मनु स्मृति में यह भी बताया गया है कि जो व्यक्ति काम भावना के वशीभूत होकर गुरु पत्नी से संबंध जोड़ता है उसके परलोक में उसके सिर पर योनि का चिन्ह बना दिया जाएगा। यह चिन्ह अगले जन्म में व्यक्ति के सिर पर नजर आएगा।

आग में लाल हुई स्त्री की मूर्ति का आलिंगन करना होगा जब तक व्यक्ति को अग्नि शुद्घ नहीं कर देती। ऐसे व्यक्ति के लिए तीसरी सजा यह है कि उसे अपने लिंग और अंडकोष को अपने हाथों से काटकर दक्षिण पश्चिम दिशा में चलना होगा जब तक उसकी मृत्यु नहीं हो जाती है।

कामवासना का क्या फल है? गरुड़ पुराण

श्रीमद् भागवत महापुराण,, और अन्य धर्म ग्रंथ के अनुसार जानते हैं क्या कहते हैं?

प्रेम को संसार में ईश्वर का रुप कहा गया है। लेकिन प्रेम अगर मर्यादा और नीतियों को ताक पर रखकर काम भावना में बदल जाए तो इससे बड़ा पाप कुछ भी नहीं है। इस पाप की ऐसी सजा है जिसे जानेंगे तो आपका दिल दहल जाएगा।

ऐसी सजा, किसी को आलिंगन करने से पहले लाख बार सोचेंगे!

गरुड़ पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति मर्यादा की रेखा पार करके परस्त्री अथवा परपुरुष से संबंध बनाता है उसके लिए यमराज ने बड़ा ही कठोर दंड निर्धारित किया है।

ऐसे स्त्री और पुरुष की जीवात्मा को दहकते लोहे के खंभे का आलिंगन करवा जाता है। इससे जीवात्मा का शरीर जल जाता है। जीवात्मा उस क्षण को याद करके रोता है जब उसने अवैध संबंध बनाया था।

इससे भी यमराज के दूतों के हृदय नहीं पिघलता हैं और बार बार दहकते लौह स्तंभ का आलिंगन करवाते हैं।

मनुस्मृति शास्त्रों में परस्त्री संबंध या परपुरुष संबंध की तीन खौफनाक सजा

मनुस्मृति में बताया गया है कि मनुष्य को संयम से काम लेना चाहिए और परस्त्री संबंध से बचना चाहिए। मनु स्मृति में यह भी बताया गया है कि जो व्यक्ति काम भावना के वशीभूत होकर गुरु पत्नी से संबंध जोड़ता है उसके परलोक में उसके सिर पर योनि का चिन्ह बना दिया जाएगा। यह चिन्ह अगले जन्म में व्यक्ति के सिर पर नजर आएगा। आग में लाल हुई स्त्री की मूर्ति का आलिंगन करना होगा जब तक व्यक्ति को अग्नि शुद्घ नहीं कर देती। ऐसे व्यक्ति के लिए तीसरी सजा यह है कि उसे अपने लिंग और अंडकोष को अपने हाथों से काटकर दक्षिण पश्चिम दिशा में चलना होगा जब तक उसकी मृत्यु नहीं हो जाती है।

हरे कृष्ण जय श्री राधे

शव यात्रा के दौरान क्यों बोलते हैं 'राम नाम सत्य है' ,

क्या कहते हैं शास्त्र? जाने-

महाभारत के अनुसार,,,, यह प्रचलन क्यों शुरू हुआ?

जो जीवन भर कभी भगवान को मुड़कर नहीं देखा और चला गया उनके कान में राम नाम की ध्वनि पड़नी चाहिए! राम नाम में इतनी शक्ति है इसमें पूरा ब्रह्मांड समाया है सुनने मात्र से जीव के कल्याण होते हैं!

राम ब्रह्म स्वरुप है! वहीं प्रत्येक जीव की आत्मा है! उनके बिना जीव की गति नहीं! जन्म मृत्यु के चक्र से छुड़ाने वाला एकमात्र श्री राम नाम ही है उनके अलावा और कोई शक्ति ताकत नहीं जिससे जीव की मुक्ति हो आवागमन से मुक्त हो! अब जानते हैं पूरी विस्तार से राम नाम सत्य है क्यों कहा जाता है?

शव को अंतिम संस्कार के लिए श्मशान ले जाते समय सभी लोग बार-बार 'राम नाम सत्य है' बोलते हैं. धर्मराज युधिष्ठिर ने एक श्लोक के माध्यम से इसका सही अर्थ बताया है!

शव यात्रा के दौरान क्यों बोलते हैं 'राम नाम सत्य है' , क्या कहते हैं शास्त्र? जानें

अंतिम संस्कार नियम

हिंदू धर्म से जुड़ी कई परंपराएं सदियों से चली आ रही है और सभी परंपराओं से विशेष कारण और महत्व जुड़े होते हैं. हिंदू धर्म में किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी अंतिम क्रिया या अंतिम संस्कार का विधान है. अंतिम क्रिया में मृतक की शवयात्रा निकाली जाती है और शव को दाह संस्कार के लिए श्मशान ले जाया जाता है.

आपने देखा होगा कि शवयात्रा के दौरान परिजन और मौजूद लोग पूरे रास्ते बार-बार 'राम नाम सत्य है' कहते हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि आखिर शवयात्रा के दौरान 'राम नाम सत्य है' क्यों कहा जाता है और इसके पीछे क्या कारण है?

धर्मराज युधिष्ठिर ने बताया 'राम नाम सत्य है' का अर्थ

महाभारत के मुख्य पात्र और पांडवों में सबसे बड़े धर्मराज युधिष्ठिर ने एक श्लोक के बारे में बताया है. इस श्लोक के माध्यम से इसके सही अर्थ का पता चलता है.

'अहन्यहनि भूतानि गच्छंति यममन्दिरम्।

शेषा विभूतिमिच्छंति किमाश्चर्य मत: परम्।।'

अर्थ है- मृतक को जब श्मशान ले जाया जाता है तब सब कहते हैं 'राम नाम सत्य है' लेकिन अंतिम संस्कार के बाद जब सब घर लौट जाते हैं तो राम नाम को भूलकर मोह माया और मृतक की संपत्ति में लिप्त हो जाते हैं. 'राम नाम सत्य है, सत्य बोलो गत है' . राम नाम सत्य है मृतक को सुनाने के लिए नहीं कहा जाता है बल्कि यह मृतक के साथ चल रहे परिजन और लोगों को सुनाया जाता है कि, राम का नाम ही सत्य है. जब राम बोलोगे तब ही गति होगी.

शवयात्रा में 'राम नाम सत्य है' कहने के 3 मुख्य कारण

राम नाम सत्य है कहने के कई कारणों में एक है कि, शव को श्मशान ले जाने वाले मौजूद व्यक्तियों को यह मालूम हो कि, मृत्यु के बाद संसार में हर कुछ धरा का धरा रह जाता है. केवल कर्म ही साथ जाते हैं. क्योंकि कर्म श्रीराम की तरह अमर हैं. इसलिए जीवन में रहते हुए अच्छे कर्म करें.

राम नाम सत्य है कहे जाने के अन्य कारण यह भी है, यह शब्द सुनने के बाद मार्ग पर चल रहे लोगों का ध्यानाकर्षण हो और वे समझ जाए कि शवयात्रा जा रही है, जिससे शवयात्रा के लिए मार्ग खाली छोड़ दे. क्योंकि शवयात्रा को कहीं भी रोकना अशुभ माना गया है और इसलिए शवयात्रा घर से निकलने के बाद श्मशान तक लगातार चलती रहती है.

राम नाम सत्य है कहने का एक कारण यह भी है कि, मान्यता है कि मृत्यु के बाद भी हमारे कुछ अंग सक्रिय होते हैं, जिनमें कान भी एक है. इसलिए अंतिम समय में अमृतरूपी राम का नाम लिया जाता है. जिससे यह शब्द मृतक के कान में जाए और उसे मोक्ष की प्राप्ति हो.

इंद्रियां और मन! और कर्म हमें करवाती कौन है? भगवान की त्रिगुणात्मक माया (प्रकृति) प्रत्येक जीव को जबरदस्ती कर्म करने के लिए प्रेरित करती है! इस तरह अच्छे बुरे कर्म होते हैं!

पाप कर्म क्या है?

वासना (दुर्भावना), क्रोध, लोभ, अहंकार,, ईर्ष्या, राग द्वेष, कपट, जीव हत्या,, असत्य वचन बोलना, किसी के हृदय को गहरे चोट पहुंचाना, किसी की निंदा करना, अधिक व्यर्थ बातें करना,, शास्त्र विरुद्ध आचरण करना, भगवान से विमुख होकर कोई भी कार्य किया जाए वह सब पाप कर्म में आते हैं!

धरती पर दो कारण से आना हुआ है!

जीवात्मा को इस संसार में मां के गर्भ में उसे दो कारण से आना हुआ है! धरती पर उसे केवल दो कारण के लिए लाई गई है! सिर्फ दो कारण तीसरा और कोई कारण नहीं!

1. पूर्व जन्मों के अच्छे बुरे कर्म फल का हिसाब क्लियर करने के लिए! पाप किया है तो दुख, कष्ट और पुण्य किया है तो सुख उसे भोगवाने के लिए भगवान ने धरती पर उसे भेजा है! क्योंकि उनका कानून है थोड़ा भी हिसाब कर्मों का बाकी रहा तो जन्म लेना पड़ेगा!

2. मोक्ष प्राप्ति के लिए यह जन्म मिला है अवसर मिला है! अपनी साधना करके अपनी विवेक बुद्धि के द्वारा जो मैंने तुम्हें दिया है अपनी बिगड़ी तुम बना सकते हो! जन्म मरण के बंधन से बाहर हो सकते हो! मोक्ष के लिए चांस दी है मैंने तुम्हें! यदि मुक्त नहीं हुए तो फिर कर्मों का हिसाब होगा! जो अच्छे बुरे हुए हैं!

कर्म कभी नहीं मिटेंगे

इस भ्रम में ना रहे भगवान हमें क्षमा कर देंगे! कर्म की गति अटल है!

कर्म करने से पहले हजार बार करोड़ों बार सोच लेना है जो एक बार हो गए चाहे जानबूझकर या अनजाने में उस कर्म को लाख उपाय करके भी मिटाया नहीं जा सकता! पूरे जीवन की तपस्या एक तरफ है और दूसरी तरफ उनके कर्मों का हिसाब है! भक्ति तपस्या नाम मंत्र जाप इसका हिसाब अलग होता है और उनके कर्मों का हिसाब अलग होता है! जो भजन भक्ति किया उसका भी फल मिलेगा लेकिन जो साथ-साथ जन्म से लेकर अब तक पाप कर्म हुए हैं उसका भी फल मिलेगा उसे नष्ट नहीं किया जा सकता स्वयं को ही भोगना पड़ेगा! कर्म कभी पीछा नहीं छोड़ेंगे इसका साक्षी गवाही परमात्मा जो प्रत्येक सेकंड अंदर बैठा है वह नहीं छोड़ेगा जिसने देखा है सारे कर्मों को वह सर्व साक्षी परमात्मा उन्हें फिर से नया शरीर में ले जाएगा! सारा हिसाब पूरा हो जाना है…

प्रायश्चित की अग्नि

प्रायश्चित की अग्नि में जब तक जीव तपेगी नहीं तब तक कर्म नष्ट नहीं होते!

इसके लिए सबसे बड़ी शक्ति की शरण में जाना होगा! पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण जिनके वशीकरण में होते हैं जिनके आदेश के बिना श्री कृष्ण कुछ नहीं करते! वह है श्री राधा रानी! जो श्री राधा रानी की भक्ति नहीं करते उन्हीं के लिए भगवान श्री कृष्ण का कर्मों का कानून लागू है! जो श्री जी की शरण में चले गए!

सिर्फ एक इसी के लिए श्री कृष्ण को अपने कर्मों का कानून तोड़ना पड़ता है! जिस जीव से श्री राधा रानी प्रसन्न हो गई! उन्हें हमेशा के लिए कर्मों के बंधन से मुक्त स्वयं कर देती है अनंत ब्रह्मांड समस्त चराचर जीव के कर्मों की चाबी निकुंजेश्वरी महारानी के हाथ में ही होता है! जो उनके चरण शरण पकड़ लिया! उनकी मुक्ति निश्चित होती है! जो श्री कृष्ण के करोड़ों जन्मों के तपस्या से नहीं मिलते जो श्री राधा रानी की शरण में जाने पर प्राप्त हो जाते हैं! इसलिए हर पल राधा राधा का उच्चारण होता रहे यही जीवन की सार्थकता है!

चार प्रकार के पुरुषार्थ

(धर्म अर्थ काम और मोक्ष)

पुरुषार्थ से तात्पर्य मानव के लक्ष्य या उद्देश्य से है ('पुरुषैर्थ्यते इति पुरुषार्थः')। पुरुषार्थ = पुरुष+अर्थ =पुरुष का तात्पर्य विवेक संपन्न मनुष्य से है अर्थात विवेक शील मनुष्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है। प्रायः मनुष्य के लिये वेदों में चार पुरुषार्थों का नाम लिया गया है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसलिए इन्हें 'पुरुषार्थचतुष्टय' भी कहते हैं। महर्षि मनु पुरुषार्थ चतुष्टय के प्रतिपादक हैं।

चार्वाक दर्शन केवल दो ही पुरुषार्थ को मान्यता देता है- अर्थ और काम। वह धर्म और मोक्ष को नहीं मानता। महर्षि वात्स्यायन भी मनु के पुरुषार्थ-चतुष्टय के समर्थक हैं किन्तु वे मोक्ष तथा परलोक की अपेक्षा धर्म, अर्थ, काम पर आधारित सांसारिक जीवन को सर्वोपरि मानते हैं। योगवासिष्ठ के अनुसार सद्जनो और शास्त्र के उपदेश अनुसार चित्त का विचरण ही पुरुषार्थ कहलाता है।

भारतीय संस्कृति में इन चारों पुरूषार्थो का विशिष्ट स्थान रहा है। पुरुषार्थ चतुष्टय का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस सिद्धान्त की संरचना भारत के ऋषियों, मुनियों और विद्वज्जनों ने मानव-जीवन के आध्यात्मिक को दृष्टि में रखकर की थी। वस्तुतः प्राचीन काल के भारतीय विचारकों ने मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक, भौतिक और नैतिक दृष्टि से उन्नत करने के निमित्त पुरुषार्थ की योजना की थी। जीवन में भौतिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक सुख भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। वस्तुतः भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों जीवन परस्पर सम्बद्ध हैं। धर्म अर्थ काम ये तीनों पुरुषार्थ को अच्छी तरह कर लेने से ही मोक्ष की प्राप्ति सहज हो जाती है। [1]

1. धर्म:-

प्राचीन काल में ही भारतीय मनीषियों ने धर्म को वैज्ञानिक ढंग से समझने का प्रयत्न किया था। धर्म का विवेचन करते समय समझाया गया है कि धर्म वह है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि हो-

यतो अभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। (कणाद, वैशेषिकसूत्र, १.१.२)

'अभ्युदय' से लौकिक उन्नति का तथा 'निःश्रेयस' से पारलौकिक उन्नति एवं कल्याण का बोध होता है। अर्थात जीवन के ऐहिक और पारलौकिक दोनों पक्षों से धर्म को जोड़ा गया था। धर्म की इससे अधिक उदार परिभाषा और क्या हो सकती है? धर्म शब्द का अर्थ अत्यन्त गहन और विशाल है। इसके अन्तर्गत मानव जीवन के उच्चतम विकास के साधनों और नियमों का समावेश होता है।

धर्म कोई उपासना पद्घति न होकर एक विराट और विलक्षण जीवन-पद्घति है। यह दिखावा नहीं, दर्शन है। यह प्रदर्शन नहीं, प्रयोग है। यह चिकित्सा है मनुष्य को आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त कर सार्थक जीवन तक पहुँचाने की। यह स्वयं द्वारा स्वयं की खोज है। धर्म, ज्ञान और आचरण की खिड़की खोलता है। धर्म, आदमी को पशुता से मानवता की ओर प्रेरित करता है। अनुशासन के अनुसार चलना धर्म है। हृदय की पवित्रता ही धर्म का वास्तविक स्वरूप है। धर्म का सार जीवन में संयम का होना है।

2. अर्थ:-

मनुष्याणां वृत्तिः अर्थः । (कौटिल्यीय अर्थशास्त्र)

अर्थात जो भी विचार और क्रियाएं भौतिक जीवन से संबंधित है उन्हें 'अर्थ' की संज्ञा दी गयी है।

धर्म के बाद दूसरा स्थान अर्थ का है। अर्थ के बिना, धन के बिना संसार का कार्य चल ही नहीं सकता। जीवन की प्रगति का आधार ही धन है। उद्योग-धंधे, व्यापार, कृषि आदि सभी कार्यो के निमित्त धन की आवश्यकता होती है। यही नहीं, धार्मिक कार्यो, प्रचार, अनुष्ठान आदि सभी धन के बल पर ही चलते हैं। अर्थोपार्जन मनुष्य का पवित्र कर्त्तव्य है। इसी से वह प्रकृति की विपुल संपदा का अपने और सारे समाज के लिए प्रयोग भी कर सकता है और उसे संवर्द्धित व संपुष्ट भी। पर इसके लिए धर्माचरण का ठोस आधार आवश्यक है। धर्म से विमुख होकर अर्थोपार्जन में संलग्न मनुष्य एक ओर तो प्राकृतिक सम्पदा का विवेकहीन दोहन करके संसार के पर्यावरण संतुलत को नष्ट करता है और दूसरी ओर अपने क्षणिक लाभ से दिग्भ्रमित होकर अपने व समाज के लिए अनेकानेक रोगों व कष्टों को जन्म देता है। धर्म ने ही हमें यह मार्ग सुझाया है कि प्रकृति से, समाज से हमने जितना लिया है, अर्थोपार्जन करते हुए उससे अधिक वापस करने को सदैव प्रयासरत रहें।

शास्त्रों ने अर्थ को मानव की सुख-सुविधाओं का मूल माना है। धर्म का भी मूल, अर्थ है (चाणक्यसूत्र १/२) । सुख प्राप्त करने के लिए सभी अर्थ की कामना करते हैं। इसलिए आचार्य कौटिल्य त्रिवर्ग में अर्थ को प्रधान मानते हुए इसे धर्म और काम का मूल कहा है। भूमि, धन, पशु, मित्र, विद्या, कला व कृषि सभी अर्थ की श्रेणी में आते हैं। इनकी संख्या निश्चित करना सम्भव नहीं है क्योंकि यह मानव जीवन की आवश्यकताओं पर निर्भर करती है। मनुष्य स्वभावतः कामना प्रधान होता है, यह कहना भी गलत नहीं होगा वह कामनामय होता है। इन सभी कामनाओं की पूर्ति का एक मात्र साधन अर्थ है। आचार्य वात्स्यायन 'अर्थ' को परिभाषित करते हुए विद्या, सोना, चांदी, धन, धान्य गृहस्थी का सामान, मित्र का अर्जन एवं जो कुछ प्राप्त हुआ है या अर्जित हुआ है उसका वर्धन सब अर्थ है। (विद्या भूमि हिरण्य पशुधान्य भाण्डोपस्कर मित्रादि नामार्जन मर्जितस्य विवर्धनमर्थः।)[2]

3. काम

महर्षि वात्स्यायन के अनुसार,

श्रोत्रत्ववच्क्षुर्जिह्वा घ्राणानामात्म संयुक्ते नमन साधिष्ठितानां स्वेषु स्वेषु विषयेष्वानुकूल्यतः प्रवृतिः कामः।

स्पर्शविशेषविषयात्तवस्यामिमानिकसुखानुविद्धा।
फलवत्यर्थप्रलीतिःप्राधान्यात्कामःतंकामसूत्रान्नगरिकजनसमवियच्च प्रतिपद्येत।

एषां समवाये पूर्वः पूर्वो मरियान् अर्थस्व राज्ञः। तन्मूलवाल्लोकयात्रायाः। वेश्यायाश्वेतित्रिवर्गप्रतिपत्तिः।

अर्थात् काम ज्ञान के माध्यमों का उल्लेख करते हुये कहा गया है कि आत्मा से संयुक्त मन से अधिष्ठित तत्व, चक्षु, जिव्हा, तथा घ्राण तथा इन्द्रियों के साथ अपने अपने विषय - शब्द, स्पर्श, रूप, रस, तथा गंध में अनुकूल रूप से प्रवृत्ति 'काम' है। इसके अलावा स्पर्श से प्राप्त अभिमानिक सुख के साथ अनुबद्ध फलव्रत अर्थ प्रीतति काम कहलाता है। इसके अलावा अर्थ, धर्म तथा काम की तुलनात्मक श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुये कहा गया है कि त्रिवर्ग समुदाय में पर से पूर्व श्रेष्ठ है। काम से श्रेष्ठ अर्थ है तथा अर्थ से श्रेष्ठ धर्म है। परन्तु व्यक्ति व्यक्ति के अनुसार यह अलग-अलग होता है। माध्वाचार्य के अनुसार विषयभेद के अनुसार काम दो प्रकार का होता है। इनमें से प्रथम को सामान्य काम कहते हैं। जब आत्मा की शाब्दिक विषयों के भोगने की इच्छा होती है तो उस समय आत्मा का प्रयत्न गुण उत्पन्न होता है। अर्थात आत्मा सर्वप्रथम मन से संयुक्त होती है तथा मन विषयों से। स्रोत, त्वच, चक्षु, जिव्हा तथा ध्राण इन्द्रिय की क्रमशः स्पर्श, रूप, रस, गन्ध में प्रवृत्त होते हैं। काम की इस प्रकृति में न्याय वैशेषिक मत अधिक झलकता है। इसके अनुसार शब्दादि विषयणी बुद्धि ही विषयों के भोग के स्वभाव वाली बुद्धि ही विषयों के भोग वाली स्वभाव वाली होने के कारण उपचार से कम कही जाती है। अर्थात् आत्मा बुद्धि के द्वारा विषयों को भोगता हुआ सुख को अनुभव करता है। जो सुख है, सामान्य रूप से वही काम है।

4. मोक्ष:-

आत्मा को अमर कहा गया है। यह एक नित्य अनादि तत्व है जो बंधन अथवा मुक्ति (मोक्ष) की अवस्था में रहती है। बद्ध अवस्था में इसे अपने कर्मों के अनुसार इसी जन्म अथवा अगले जन्मों में कर्मफल भोगने पड़ते हैं। मनुष्य के अलावा सभी शरीर मात्र भोग योनि हैं, मानव शरीर कर्म योनि है। योगी सद्गुरु के मार्गनिर्देशन में 'विकर्म' द्वारा अपने शुभ-अशुभ कर्मों से ऊपर उठ जाता है और शरीर रहते ही परमात्मा की प्राप्ति कर लेता है। इसे ही योग (आत्मा एवं परमात्मा का मिलन) कहा गया है। अब वह अकर्म की स्थिति में है और इस शरीर में प्राप्त प्रारब्ध भोग को समाप्त कर लेने के बाद वह अपने शरीर से विदेहमुक्त हो जाता है। उसे अब नया जन्म नहीं लेना पड़ता, वह बंधन से मुक्त हो जाता है। मोक्ष को प्राप्त कर लेना ही आत्मा का मुख्य उद्देश्य है जो कि मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इन चारों का खेल अनंत जन्मों से चला आ रहा है! शरीर छूट जाती है यह चारों मरने के बाद दूसरे शरीर में चले जाते हैं!,,, मन अपने से कुछ नहीं करता! उसके पास कुछ है ही नहीं स्वयं अकेले क्या कर पाएगा? अपने दोनों बड़े भाई बुद्धि और चित् के सहयोग से ही मन कार्य करता है! बुद्धि बताता है मन को जो ज्ञान उसके पास है उसी के अंतर्गत उसको करवाता है और चित् बताता है जो उसने पूर्व जन्म में किया था उसी के आधार पर मन को करवाता है!

कर्मों के नियम में क्षमा का प्रावधान नहीं

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं.

ना भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि।

कर्मों के नियम में क्षमा का प्रावधान नहीं

सुख दुख पूर्व कर्मों का परिणाम है!

संसार के कोई भी माता-पिता अपने संतान को सुख देने की कोशिश कर सकते हैं पर दे नहीं सकते! संतान अपने माता-पिता को सुख देने की कोशिश कर सकते हैं पर दे नहीं सकते! संसार के सभी पति अपनी पत्नी को सुख देने की कोशिश कर सकते हैं पर दे नहीं सकते! इस संसार में ना कोई किसी को सुख देता है ना कोई किसी को दुख! प्रत्येक जीव को सुख-दुख उसके अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार प्राप्त होता है! जीव को अपने प्रारब्ध से सुख-दुख मिलता है बच्चों को जो माता-पिता से सुख प्राप्त हो रहा है! उसने अपने ललाट में प्रारब्ध में लिखा कर आया है तब उसे सुख दिया जा रहा है! सुख का कारण उसके माता-पिता नहीं, उसका प्रारब्ध है! याद रखो इस जगत में कोई किसी को सुख नहीं दे सकता! कोई किसी को दुख नहीं दे सकता! स्वयं भगवान भी किसी को सुख-दुख नहीं दे सकते! तो माता-पिता, पति-पत्नी, बेटा बेटी कोई एक दूसरे को सुख-दुख नहीं दे सकते! जीव इस संसार में अपने कर्मों से अकेले आती है! और अपने कर्मों से सुख-दुख पाती है स्वयं अकेले कर्म करती है और अपने कर्मों से ही अकेले चली जाती है! सुख दुख जो मिलता है उसका जिम्मेदार स्वयं जीव है स्वयं दोषी है ना संसार के रिश्ते ना भगवान!

युवावस्था में सबसे ज्यादा माया भारी

जो युवावस्था में माया से बच गया वही श्रेष्ठ है यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें माया से बच पाना संभव नहीं,,,, इस अवस्था में माया सबसे ज्यादा उस पर आक्रमण करती है बचपन में कम और बुढ़ापे में मोह ममता और अधिक बढ़ जाती है! अगर युवावस्था में शैतानी किया होगा! माया में जितना अधिक आसक्त होगी! संसार से वापस जाना उतना ही कठिन होगा!

बुढ़ापे में मोह ममता इतनी बढ़ेगी की संसार छोड़ना बहुत ही कठिन होगा! नाती पंथी बेटा बेटी मां-बाप इसका चिंतन सताएगा! किसी का चिंतन करते गए तो फिर दुर्गति होगी 84 के चक्कर लगाना पड़ेगा!

जो युवावस्था में संभल गए बुढ़ापा भी उसका सुधर गया और जिनका बुढ़ापा सुधर गया! कभी उसका मन, बुद्धि, चित गलत ट्रैक पर नहीं जा सकता! जो युवावस्था में अपने को संभाल लिया संसार की माया से खुद को बचा लिया! आगे मृत्यु के बाद उनकी कभी दुर्गति नहीं हो सकती!

अगर इस अवस्था में माया से नहीं बचा तो श्रीमद् भागवत महापुराण कहती है ऐसे जीव को नरक की प्राप्ति होती है 36 प्रकार के महा भयंकर नर्क हैं जो भगवत विमुख है! गलत आचरण वाले जीव है! काम, क्रोध, लोभ इसमें जो जीव लिप्त है! गीता में भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं कही है काम, क्रोध, लोभ अर्थात काम आकर्षण,, दूसरा गुस्सा करना,, तीसरा पैसे का लालच अगर यह तीनों महापापिनी नष्ट नहीं हुआ! यही तीनों नरक का द्वार है इसे तत्काल छोड़ देनी चाहिए!

इस शरीर के अंदर जीव आत्मा का वास है! वही जीवन शक्ति है जो शरीर से कोई पृथक वस्तु है! शरीर और जीव दोनों अलग-अलग चीजे हैं और अलग-अलग जगह से आए हैं एक साथ दोनों को मिश्रित कर दिया गया है पर एक दिन दोनों को अलग होना पड़ेगा! जीव, शरीर और परमात्मा तीनों एक ही जगह पर रहते हैं! जीव एक दिन शरीर से बाहर निकलेगी! जीवात्मा,, जब शरीर छोड़ती है तो उनके छोड़ने का दो प्रकार है! एक शरीर को अपार कष्ट देकर बाहर निकलती है और एक आसानी से निकल जाती है! और शरीर से प्राण कैसे निकलेंगे? यह उसके कर्म पर निर्भर करता है! जैसा कर्म होता है वैसे ही उनके प्राण निकलते हैं!

अनंत जन्मों के पाप नष्ट करने का उपाय है एकमात्र--- भगवान के 13 करोड़ नाम जाप,,,, जो इस जन्म में संभव नहीं इसलिए कर्म की गति बलवान है जो हमारा पूर्व संस्कार हमें इतना नाम जाप करने ही नहीं देंगे क्योंकि आगे कई बार अभी हमारे जन्म होंगे! कर्म की गति को नियमों को तोड़ना है जिसका उल्लंघन भगवान भी नहीं करते,, उन्होंने बताया है कर्मों के कानून बस एक ही शर्त में टूट सकता है जो यह उपाय कर लेगा! इतने भगवान का नाम जाप करना ही पड़ेगा! ऋग्वेद यजुर्वेद इसमें भगवान ने स्वयं बताया है! ,,,, जो मान लेगा वह आवागमन से बच जाएगा नहीं माना तो वह अनंत काल तक जन्म मृत्यु के चक्र में भटकती रहेगी! क्योंकि एक धोखे से हुए कर्म भी जीव को फिर से वापस गर्भ मे लाती है! और कई बार हमें लाया है कई बार भगवत प्राप्ति तक हम पहुंच भी गए हैं फिर वापस रिटर्न आना पड़ा है! ऐसे ही हमारा कर्म हमें कई जन्म से घूमा रहा है!

कर्मों का चक्कर

कर्मों का चक्कर:- एक व्यक्ति था भगवान की भक्ति भी करता था और दिन-रात परिश्रम करता था लाख परिश्रम करने पर भी उसे सफलता नहीं मिलता था पास के किसी साधु महात्मा को जाकर पूछे मेरे संघर्ष में असफलता क्यों है बाबा जी बोले पुत्र आपके प्रारब्ध में धन सुख नहीं है जो है उसे स्वीकार करें यही एक उपाय है वह व्यक्ति कोशिश करता सफल नहीं होता तो फिर क्रोध करता वाणी से उल्टे सीधे शब्द निकल जाता! भगवान पर गुस्सा करता! भगवान यह नहीं देखते क्या बीत रहा उस पर, चुपचाप उनके बुरे कर्म नोट कर रहे! एक दिन वह व्यक्ति मर गया! भगवान पैसे वाले के घर जन्म दिया लेकिन रोगी बना दिए! संघर्ष करके ना मिला लो उसका फल क्रोध किया उसका फल! फिर से क्रोध आने लगा! आगे फिर वही चक्कर इसलिए जो हो रहा चुपचाप सहना है!

प्रारब्ध एक सर्प के समान है

प्रारब्ध एक सर्प के समान है उसके साथ छेड़खानी ना कीजिए वरना डस लेगा आपको,, चुपचाप बस निकलने दीजिए! जैसा-जैसा जिस जिस रास्ते से जा रहा है उसे चुपचाप जाने दीजिए दूर से देखो उनकी तरफ बढ़ना नहीं! उसको छूना भी मत! चाहे जो हो जाए चाहे अपना प्राण चला जाए उस प्रारब्ध रूपी सर्प से सदा बचकर रहे! अगर उनको टच करोगे तो मालूम है कितनी बड़ी हानि होगी आपकी! इसलिए सदा उनसे सावधान रहें! चुपचाप जाने दीजिए उनको जैसे ही टच करोगे पलट कर स्वयं पर हमला करेगा! ऐसा करेगा कि 100 जन्म तक फिर चक्की पीसना पड़ेगा! अनंत जन्मों से हम उस सर्प को छेड़ते हुए आ रहे हैं! इसीलिए जन्म मरण का कष्ट भोग रहे! मुक्त होना है तो अनासक्त भाव से कर्मफल भोगे नया कर्म बिल्कुल ना करना!

पुरुषार्थ स्वयं को करना पड़ेगा

एक विद्यार्थी है जो पेपर दिलाने आया है और चुपचाप बैठा हुआ है! पेपर नहीं बना रहा! वह अपने शिक्षक को कहता है की गुरुजी प्लीज मुझे पास कर दीजिए ना पेपर हमसे नहीं बन रहा! अगले कक्षा में जाना है! तो शिक्षक क्या कहेगा?

अरे तुम्हें मेहनत करनी है अपने परिश्रम से तुम्हें पेपर बनाना है हम तुम्हें पास नहीं कर सकते! तुम पेपर में जैसा बनाओगे वैसा ही तुम्हें फल मिलेगा! बस ऐसे ही हम सब विद्यार्थी हैं! हमसे जन्म से लेकर अब तक कई अपराध हुए हैं और हो रहे हैं भगवान को कह रहे प्रभु!

मुझे क्षमा कर दो अब नहीं करूंगा! तो भगवान क्या कर देंगे नहीं! उसके लिए साधना करनी होगी नाम जाप करना होगा यह कड़ी परिश्रम करके अंत: करण को पूर्ण निष्पाप बनानी होगी! तब क्षमा होंगे! जितने नाम हम लेंगे उतने अपराध नष्ट होंगे! अब यह देखना है कि भूतकाल में पाप कर्म हमसे कितने हुए हैं?

उसी आधार पर नाम जाप की मात्रा बढ़ानी होगी! जितना वाणी पर भगवान का नाम चलेगा उतना ही अपराध नष्ट होंगे! बैठे-बैठे देखेंगे कि भगवान मुझे क्षमा करेंगे मैं उनकी शरण में हूं! जो पाप कर्म उसने किया है उसके प्रायश्चित के लिए उसे कुछ करनी होगी! साधना करनी होगी,, तपस्या जो पाप कर्म कर डाला वह कहां जाएंगे? उसे तो स्वयं को ही भोगना पड़ेगा! यदि अपने पापों का प्रायश्चित नहीं किया नाम की मात्रा नहीं बढ़ाया प्रायश्चित की आग में अगर

डूब कर आंसू बहाकर नाम जाप करके इसी जन्म में पूर्व अपराधों को पूर्व संस्कारों को धो लिया! तभी अपराध क्षमा हो सकते हैं! अन्यथा कर्म की गति इतना प्रबल है! जीव के एक-एक कर्म का हिसाब होता है!

पाप कर्मों का प्रायश्चित

जब तक अपने पाप कर्मों का प्रायश्चित न किया जाए,,,, प्रायश्चित के आंसू बहाकर अपने पूर्व जन्म के संस्कारों को जब तक आंसुओं से धूल नहीं जाती! तब तक पाप कर्म को नहीं मिटाया जा सकता! भगवान के नाम जाप,, ध्यान सिर्फ करने से नहीं,, जनम जनम की बिगड़ी कभी नहीं बनेगी!

प्रायश्चित के आंसुओं से अपने अंतःकरण को धोना होगा! जो अनंत जन्मों से हमसे पाप होता आया है और हो रहा है और आगे होगा! जो अनंत पाप कर्म चित् में जमा है! उसे मिटाने की कोशिश करना प्रायश्चित की आंसू बहाना! यही साधना जब होगी तभी जीव और ब्रह्म का मिलन संभव है!

पाप कर्म क्या है?

किसी की हत्या करना, मांस भक्षण करना,,, चोरी करना ,,,, हिंसा करना सिर्फ यही पाप नहीं है! पाप कर्म वह है जो हमारे 10 इंद्रियां,, मन, बुद्धि, चित् इसमें सवार है! हमारे आंखों में पाप है कानों में पाप है पूरी इंद्रियों में पाप है मन में पाप है बुद्धि में पाप है चित् में पाप है गलत ट्रैक पर जाना ही पाप है भगवान को भूलकर जो कुछ भी करो वह सब पाप कर्म है! भगवान श्री कृष्ण गीता में कहे हैं कि अर्जुन मेरा चिंतन करते हुए तुम अपना युद्ध करो तुम्हें कोई भी पाप कर्म नहीं लगेगा! मेरा चिंतन करते हुए पाप कर्म भी धर्म है और मुझे भूलकर सत्कर्म करना भी पाप है!

पूर्ण निष्पाप हो जाना ही भगवत प्राप्ति है! जो अधिक नाम जाप से ही संभव है! अंदर में जो कपट, वासना, क्रोध, लालच, ईर्ष्या, राग द्वेष, अहंकार, मोह अंदर चित् में इन सब पापों का डेरा है! यही पाप कर्म है भगवान कह रहे जब तक इन पापों का त्याग ना हो तब तक मेरी प्राप्ति नहीं हो सकती!

अर्जुन जैसे जब जीव पूर्ण निष्पाप हो जाएगी तब उन्हें भगवान का दर्शन प्राप्त होगा! अर्जुन एक ऐसे महापुरुष हैं जो संपूर्ण माया के विकार पर विजय प्राप्त किया था! रंभा, मेनका, उर्वशी जैसे महान स्वर्ग के अप्सराओं को अर्जुन ने परास्त किया था इसलिए भगवान ने निष्पाप कहकर अर्जुन को संबंधित करते थे और उन्हें विराट रूप का दर्शन कराया!

प्रारब्ध एक सर्प

प्रारब्ध एक सर्प है उसे चुपचाप निकलने दो उसके साथ छेड़खानी बिल्कुल ना करना,,,, सर्प अगर हमारे सामने से चुपचाप निकल रहा है अगर हमने उसके साथ उनको छेड़ा तो क्या करेगा? वह हमको काट देगा! अगर कुछ नहीं किया तो चुपचाप अपने रास्ते से निकल जाएगा बस ऐसे ही प्रारब्ध है उसे चुपचाप निकलने दो उसके साथ भूल से भी छेड़ना नहीं है! अगर प्रारब्ध के साथ कुछ किया! तो वह सीधे कर्म बिगाड़ कर रहेगा या तो अच्छा होगा या तो बुरा होगा! इसका परिणाम यही होगा! उस कर्म फल का चक्कर आगे फिर चलेगा! सुदामा इसलिए चुप रहते थे भली-भांति उनको यह ज्ञान था एक कर्म आगे हमें छोड़ेंगे नहीं!

इसलिए बिल्कुल चुप रहो प्रारब्ध को निकलने दो,, अनासक्त भाव से उसे चुपचाप भोगना है! कुछ किया तो नया कर्मों का चक्कर आगे फिर चलेगा!

दुख कष्ट कैसे जाएगा?

प्रत्येक जीव की एक आदत है अनंत जन्मों का नेचुरल गुण है दुख कष्ट पाना नहीं चाहती और पाप कर्म छोड़ना नहीं चाहती,,,,, जब तक पाप कर्म नहीं छूटेगा तब तक दुख कष्ट कैसे जाएगा? दुख तो रहेंगे ही जब तक पाप कर्म है पाप कर्मों का परिणाम ही तो दुख है चाहे शारीरिक पीड़ा हो या मानसिक दोनों अपने ही किए हुए पूर्व जन्म के कर्मों का फल है,,, यदि पाप कर्म को नहीं छोड़ पा रहे तो हमारे अंदर दुख कष्ट को स्वीकार करने की भी साहस होनी चाहिए! इसे स्वीकार करना होगा क्योंकि गलती ही हमने की है! तो सजा के भी अधिकारी हैं हम,, और कभी दुख कष्ट नहीं पाना है तो इसका बस एक ही उपाय है पाप कर्मों का त्याग! पूर्ण निष्पाप हो जाना ही दुख निवृत्ति है!

धर्म के लक्षण

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शोचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धी विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

अर्थात धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रियों का संयम, सद्बुद्धि, विद्या, सत्य बोलना, क्रोध न करना- धर्म के दस लक्षण हैं।

कर्म की गति-1

ऽमहत्वपूर्ण विषय

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'

न भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि||

इसी पुराण में एक संत की कथा है- जिसे सुनने पर ही मालूम चलेंगे कर्म की गति कैसी होती है? उस कथा को समझते हैं-

प्राचीन युग में एक बहुत बड़े संत हुए थे जो भगवान नारायण के ध्यान में मग्न थे उनकी भक्ति में लीन थे! श्री हरि के भक्त थे शालिग्राम को लेकर भगवान की भक्ति करते थे! अचानक उस संत को 90 लोग तलवार पकड़ कर मारने के लिए उनकी ओर आ रहे थे!

अपनी दिव्य शक्ति से भगवान को पूछे प्रभु! मैं अपने जीवन काल में कभी एक चींटी नहीं मारी है कभी किसी को बुरे शब्द नहीं बोला तो फिर मेरी हत्या क्यों हो रही है? भगवान उनके सामने प्रकट हुए और बोले! तुमने पूर्व जन्म में 90 लोगों की हत्या की थी! जब तक यह पाप कर्म कटेंगे नहीं तब तक मोक्ष नहीं मिल सकते तुम्हें!

महाभारत के समय हर एक लोगों को अंतिम हिसाब में प्राण देने पड़े अर्जुन, युधिष्ठिर नकुल सहदेव धृतराष्ट्र सभी को अपना कर्मफल भोगना पड़ा है तब उन्हें मोक्ष मिला था!

जिन्हें भी मोक्ष चाहिए! उनका मूल कर्तव्य है अपने अच्छे बुरे कर्मों को पूरे चुकता करके वह मेरे पास आए! तभी उन्हें मेरी प्राप्ति होती है! इसलिए मेरे भक्तों को अधिक दुख कष्ट भोगना पड़ता है जितना मेरे रास्ते पर आएगा उतना ही अधिक कष्ट भोगना पड़ेगा क्योंकि उनके पाप कर्मों को जल्दी-जल्दी नष्ट करता हूं ताकि शीघ्र उन्हें मेरी प्राप्ति हो!

मेरी प्राप्ति के अब तुम निकट आ चुके हो इसलिए अपने इस कर्म का फल को भी भोगना पड़ेगा! मेरी भक्ति जो तुम कर रहे हो उसका प्रभाव यह है कि तुम्हें यह एक साथ मारेंगे अन्यथा 90 बार तुम्हें जन्म लेना पड़ता! अपना हिसाब पूरा करने के लिए!

जब कोई पाप कर्म भोगना बाकी नहीं रहेगा! हिसाब जब पूरे चुकता हो जाएगा फिर उसके बाद मोक्ष को प्राप्त होंगे! ऐसा कहकर भगवान चले गए उन शत्रुओं ने उनकी हत्या कर दी और वह संत को भगवान के धाम में वास मिला!

जो भगवान के ध्यान में मग्न रहते हैं उन्हें भी अपना कर्म फल भोगना पड़ता है लेकिन कम रूप में जिन्होंने भक्ति नहीं की उन्हें और भी अधिक कष्ट भोगने पड़ते हैं! यही है भक्ति का प्रभाव परंतु कर्म कदापि नष्ट नहीं होते! जब तक उसका परिणाम हमको ना मिले!

श्री हित हरिवंश प्रेमानंद बाबा जी इसी कथा को और इस श्लोक को बताया है! उसको आप तक पहुंचाने की कोशिश करेंगे! उनकी कथा को गौरपूर्वक समझिएगा जो प्रेमानंद बाबा जी इस श्लोक का वर्णन करेंगे! इसी कथा को 2 मिनट

में लघु रूप में बताए हैं! आप सभी से निवेदन है विनती है उनके माध्यम से इसी कथा को आप समझने की कोशिश करें!

श्री राधे हरे कृष्ण

ब्रह्मवैवर्तपुराण- 17/37 कर्म की गति-2

ब्रह्मवैवर्तपुराण- 17/37 कहती है-

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'

न भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि||

भावार्थ:- जो भी कर्म किया जाता है, उसे हर हाल में किसी भी कीमत में भोगना ही पड़ता है, यह वेद व्यास जी द्वारा रचित श्लोक कहते हैं कई युगों युगों तक एक धोखे से जाने अनजाने में हुए कर्म हमारा कभी पीछा नहीं छोड़ते! भोगवा कर रहता है! यानी, जैसा कर्म किया जाएगा, उसके अनुरूप फल मिलेगा. बिना भोगे, करोड़ों कल्पों के गुज़रने पर भी कर्म नहीं टल सकता. मन से, वाणी से, और शरीर से किए गए शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य मिलकर रहता है! इसलिए कोई भी कर्म करने से पहले हजार बार हमें सोचना होगा! एक बार जो हो गया सो हो गया! फिर वह टलेंगे नहीं! मन से, वाणी से, और शरीर से किए गए शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य मिलकर रहता है!

कर्म की गति-3

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं.

ना भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि. (ब्रह्मवैवर्तपुराण)

तत्काल फल न मिले तो भ्रम में न पड़ें। बीज बोने पर फल पाने में कुछ समय लग जाता है, इसी प्रकार कर्म का प्रतिफल मिलने में थोड़ी देर लगने से अधीर लोग आस्था खो बैठते हैं और दुष्कर्म के दण्ड से बचे रहने की बात सोचने लगते हैं। विलम्ब के कारण कोई आस्था न खोयें यह चेतावनी देते हुए शास्त्र कहते हैं-

नाधर्मः कारणापेक्षी कर्तारमभिमुंचति। कर्ताखलु यथा कालं ततः समभिपद्यते॥ (महा० शान्ति० अ॰ 298)

अधर्म किसी भी कारण की अपेक्षा से कर्ता को नहीं छोड़ता निश्चय रूप से करने वाला समयानुसार किये कर्म के फल को प्राप्त होता है। 8।

कृतकर्म क्षयोनास्ति कल्पाकोटि शतैरपि। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्॥ (शिव॰ कोटी रुद्र० अ॰ 23)

किये हुए कर्म का सौ करोड़ कल्प तक भी क्षय नहीं होता, किया हुआ शुभ तथा अशुभ कर्म अवश्य ही भोगना पड़ेगा। 39।

अवश्यमेव लभते फलं पापस्य कर्मणः।

भर्तः पर्यागते काले कर्ता नास्त्यत्र संशयः॥ (बाल्मी. युद्ध. स॰ 111)

पाप कर्म का फल अवश्य ही प्राप्त होता है। हे पते! समय आने पर कर्त्ता फल पाता है इसमें संशय नहीं है। 25।

हे उत्तम पुरुष! जो कोई शुभ या अशुभ कर्म करता है वह पुरुष अवश्य ही उसके फल को प्राप्त होता है इसमें संशय नहीं है।

यदा चरति कल्याणि शुभं वा यदि वा शुभमं।

तदेव लभते भद्रे कर्त्ता कर्मजमात्मानः॥

(बाल्मी. अयो. स॰ 63)

अवश्यं लभते कर्ता फलं पापस्य कर्मणः।

घोरं पर्थ्यागते काले द्रुमः पुष्पमिवार्तपम्॥

(बाल्मी.अरण्य. स॰ 29)

हे कल्याणी! यदि जो कुछ भी शुभ-अशुभ करता है करने वाला वही अपने किये कर्मों के फल को प्राप्त होता है। 6।

करने वाला अपने पाप कर्मों का फल घोर काल आने पर अवश्य प्राप्त करता है। जैसे मौसम आने पर वृक्ष फूलों को प्राप्त होते हैं। 8।

यथा धेनु सहस्त्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्॥

एवं पूर्व कृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति।

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च॥

तत्कालं नाति वर्तन्ते तथा कर्म पुराकृतम्॥

(महा. अनु. अ॰ 7)

नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्मं शुभाशुभम्॥

(ब्रह्मवैवर्त. प्रकृति. अ॰ 37)

जैसे हजारों गौवों में से बछड़ा अपनी माँ को ढूँढ़ लेता है।22। ऐसे ही पूर्व किया हुआ कर्म कर्त्ता को प्राप्त होता है। बिना प्रेरणा के ही जैसे फूल और फल। 23।

अपने समय का उल्लंघन नहीं करते। वैसे ही पूर्व में किया हुआ कर्म समय का उल्लंघन नहीं करता। 24।

सौ करोड़ कल्पों तक भी किया हुआ कर्म बिना भोगे क्षय नहीं होता। किया हुआ शुभ तथा अशुभ कर्म अवश्य ही भोगना पड़ता है। 17।

----*----

कर्म की गति-4

श्रीमद् भागवत गीता 5/15

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभु: |

अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तव: || 15||

भावार्थ:- सर्वव्यापी भगवान किसी के भी पाप या पुण्य कर्मों में शामिल नहीं होते। जीवात्माएँ इसलिए भ्रमित रहती हैं क्योंकि उनका आंतरिक ज्ञान अज्ञान से ढका हुआ है।

अर्थात भगवान किसी के भी पाप कर्म और पुण्य कर्म में दखल नहीं देते हस्तक्षेप नहीं करते! जो जीव जैसा कर्म करते हैं उसे उसके अनुरूप बिल्कुल वैसे ही फल मिलता है! भगवान ने केवल कर्म करने के लिए स्वतंत्रता दी है परंतु फल होने के लिए जीव उसके बंधन में है! कर्मफल से बचा नहीं जा सकता क्योंकि कर्म करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है!

विस्तृत वर्णन:-

भगवान किसी के पुण्य कर्मों या पाप कर्मों के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। इस संबंध में भगवान का कार्य तीन गुना है: 1) वह आत्मा को कर्म करने की शक्ति प्रदान करता है। 2) जब हम अपने द्वारा दी गई शक्ति से कर्म करते हैं, तो वह हमारे कर्मों को नोट करता है। 3) वह हमें हमारे कर्मों का फल देता है।

आत्मा को अपनी स्वतंत्र इच्छा के अनुसार अच्छे या बुरे कर्म करने की स्वतंत्रता है। यह स्वतंत्र इच्छा ही सृष्टि के खेल का आधार है और यह अस्तित्व में रहने वाली आत्माओं के बीच चेतना की विविधताओं का कारण है। भगवान का काम क्रिकेट मैच में अंपायर की तरह है। वह लगातार नतीजे देता रहता है, "चार रन!" "छह रन!" "वह आउट हो गया!" अंपायर को इस फैसले के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि यह खिलाड़ी के प्रदर्शन पर आधारित था।

कोई पूछ सकता है कि भगवान ने आत्मा को स्वतंत्र इच्छा क्यों दी। ऐसा इसलिए है क्योंकि आत्मा भगवान का एक छोटा सा अंश है और उसमें भगवान के गुण बहुत कम मात्रा में होते हैं। भगवान अभिज्ञ स्वराट (सर्वोच्च स्वतंत्र) हैं, और इसलिए आत्मा के पास भी अपनी इंद्रियों, मन और बुद्धि का अपनी इच्छानुसार उपयोग करने की थोड़ी सी स्वतंत्रता है।

इसके अलावा, स्वतंत्र इच्छा के बिना कोई प्रेम नहीं हो सकता। एक मशीन प्रेम नहीं कर सकती क्योंकि उसके पास चुनने की स्वतंत्रता नहीं है। केवल एक व्यक्तित्व जिसके पास चुनने की क्षमता है, उसके पास प्रेम करने का विकल्प होता है। चूँकि ईश्वर ने हमें उससे प्रेम करने के लिए बनाया है, इसलिए उसने हमें स्वतंत्र इच्छा से संपन्न किया है।

हमारी अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग अच्छे और बुरे कर्मों का परिणाम है, और हमें उनके लिए ईश्वर को दोष नहीं देना चाहिए।

अज्ञानता में कुछ आत्माएँ यह भी नहीं समझ पातीं कि उन्हें अपने कर्म चुनने की स्वतंत्रता है और वे अपनी गलतियों के लिए भगवान को जिम्मेदार ठहराती हैं। दूसरों को पता है कि उनके पास स्वतंत्र इच्छाशक्ति है, लेकिन वे शरीर होने की अहंकारी धारणा में कर्तापन का अभिमान पालते हैं। यह भी अज्ञानता का ही एक लक्षण है। श्रीकृष्ण आगे बताते हैं कि इस तरह के अज्ञान को कैसे दूर किया जा सकता है।

कर्मों का प्रावधान

कर्मों का प्रावधान:- पाप कर्म से उतना ही डरना चाहिए जितना मृत्यु से डरते हो मृत्यु के समय कितनी पीड़ा होती है यह मालूम है अनुभव है जीव को इसीलिए तो डरती है अगर अपने शरीर की टुकड़ा टुकड़ा करके हम बलि चढ़ा भी देंगे मस्तक रगड़ रगड़कर भगवान के सामने माफी भी मांगोगे तब भी अपराध क्षमा नहीं होंगे! एक बार जो जाने अनजाने में कर्म हो गया उसे हर हाल में भोगना ही पड़ता है इसी भ्रम में संसार पड़ा है मेरे पाप भगवान क्षमा कर देंगे! कर्म क्षमा होता ही नहीं! जितना जल्दी संभल जाओ उतना अच्छा है अन्यथा सिर्फ पछताना ही पड़ेगा! आज से महात्मा सत्पुरुष बन भी जाओगे तब भी भूतकाल के अपराध भोगना हीं पड़ेगा! ऋषि मुनि तपस्वी साधु संत कर्म किसी को नहीं छोड़ते!

संसार एक कर्मभूमि

यह संसार एक कर्मभूमि है यहां वही मिलता है जो जैसा करता है! आज जो कुछ भी मिल रहा है उसका संबंध इस जन्म के कर्म से नहीं है चाहे तपस्या करो चाहे पाप क्या मिलना है क्या नहीं पहले से सब निर्धारित हो चुका है वह तो मिलकर रहेगा! बड़े से बड़े धर्मात्मा को दुख भोगना पड़ा है और बड़े से बड़े पाप आत्मा को सुख! इसी विधान के द्वारा पूर्व जन्म के नियमों के अनुसार यह जन्म सेट होता है! जो दोगे रिटर्न होकर वहीं वापस मिलेगा! पूर्व जन्म में दया नहीं किया तो हम पर भी कोई दया नहीं करेंगे! भिखारी के घर जन्म उनको मिलता है जिसने पूर्व जन्म में कभी दान नहीं किया! अभी धन संपत्ति मिल रहा वह तो पूर्व का विधान है! अभी का कर्म कहां जाएगा? वो आगे मिलेंगे!

कर्म एक अग्नि के समान है

अग्नि में अगर हाथ धोखे से भी चला जाए तो अग्नि नहीं मानता जला देता है!

ऐसे ही कर्म भी धोखे को नहीं मानता! अनजाने में हो चाहे जानबूझकर

उसे हर हाल में भोगना हीं पड़ता है!

भूल से भी यह अपराध कभी ना हो

भूल से भी यह अपराध कभी ना हो माता-पिता के साथ किया गया दुर्व्यवहार भगवान क्षमा नहीं करते! यह तीन नामाअपराध की श्रेणी में आते है!

1.माता-पिता का अपमान,

2. गुरु का अपमान और

3. वेद पुराण शास्त्रों का अपमान!

बड़े से बड़े भक्त को इसका फल भोगना हीं पड़ता है! सन्यासियों के लिए अलग नियम है और गृहस्थियों के लिए अलग नियम है! गृहस्थ का नियम है माता-पिता का सदा सम्मान करना अपना कर्तव्य करते हुए भगवान का स्मरण करना! और सन्यासियों के नियम है माया को पलट कर भी नहीं देखना! माया के विषय पर तनिक भी विचार न आना! सदा ब्रह्म में लीन रहना! पूर्ण त्याग इनका परम कर्तव्य है! और गृहस्थियों का कर्तव्य अपना कर्म निभाते हुए पुत्र धर्म,, पिता धर्म,, पत्नी धर्म पति धर्म इनका पालन करते हुए पूरा करते हुए भगवान का स्मरण करना उनकी भक्ति करना नाम जाप करना,,, यही कर्म सन्यास की साधना है! भगवान को प्राप्त करने का सन्यासियों और गृहस्थियों का यही नियम है पद्म पुराण,,,,इसमें बताया गया है दोनों का कर्तव्य क्या है?

श्री राधे हरे कृष्ण

****

तत्व खंड

मन में विचार कहां से आते हैं?

शरीर नष्ट हो जाती है लेकिन शरीर के नष्ट होने के बाद उनका जो अंदर का डाटा है उसे परमात्मा एक शरीर से निकालकर दूसरे शरीर में फिट कर देते हैं इस डाटा को चित कहा जाता है जिसमें अनंत जन्मों के संस्कार भरे हुए हैं! पूर्व जन्म में जैसा हरकत उसने किया था वह उसके चित् में जमा है फिर नया शरीर प्राप्त हुआ वही डाटा फिर से वापस आ गया अब मन में क्या विचार आएगा? कुछ नया नहीं!

वही जो उसने पूर्व जन्मो में किया था! पूर्व जन्म के आधार पर ही मन बुद्धि कार्य करते हैं! यह दोनों सिस्टम सबके पास है परंतु इनका क्रियाकलाप सबके अलग है क्योंकि सब के संस्कार अलग है!

भगवान ने गीता में कहा भी है मैं किसी के संस्कार में हस्तक्षेप नहीं करता उस जीव को डाटा को निकाल कर सीधे दूसरे शरीर में डाल देता हूं फिर से वह वही हरकत करेगी जो उसने पूर्व में किया था हर जन्मों का यह खेल है! एक जन्म का नहीं! हर जन्म में जीव वही हरकत करती है! भगवान कहते हैं उसके अलावा जीव एक तिनका भी अलग नहीं कर सकती! संस्कार ही जीव को कर्म करवाते हैं!

सब की इच्छा अलग-अलग क्यों है?

मन, बुद्धि सबके पास है!

लेकिन सब की इच्छा अलग-अलग क्यों है? यह उनके संस्कार पर निर्भर करता है हर जन्मों में उस जीव को क्या प्राप्त करने की इच्छा है उस पर निर्भर करता है हमारी इस जन्म की इच्छा जो उसने अनंत जन्मों में वह क्या चीज की प्यासी है कौन सी चीज की उनको प्रबल चाहत है अंत समय प्राणी मर जाता है हर बार मर चुका है लेकिन उनकी इच्छा समाप्त नहीं होती यह उससे भी आगे जाती है! इसी इच्छा के कारण उसे फिर से जन्म मिलता है नए शरीर प्राप्त होता है! जब तक इच्छा समाप्त नहीं होगी तब तक आवागमन चलता रहेगा! फिर जन्म फिर मृत्यु इस चक्र में अनंत काल तक जीव घूमती रहती है जब तक उनकी इच्छा नष्ट ना हो जाए! दो प्राणी को एक इच्छा कभी नहीं हो सकती कभी नहीं! क्योंकि दोनों अलग जीव हैं!

भाई बहन हैं अवश्य परंतु दोनों अलग-अलग जगह से आए हैं जीव अलग है संबंध शरीर का है जीव कोई भाई बहन नहीं उसे तो अपनी इच्छा के अनुसार अलग जगह से आया फिर अलग जगह उसे जाना पड़ेगा!

मन चंचल क्यों है?

क्योंकि ब्रह्मांड चंचल है प्रश्न यह है कि ब्रह्मांड कैसे चंचल हुआ? जहां तक ब्रह्मांड है वहां तक के कोई भी मटेरियल स्थिर नहीं है ग्रह तारे सब चलायमान है गतिशील है एक सेकंड के लिए भी कोई रुकती नहीं है! भगवान श्री कृष्ण गीता में अपनी प्रकृति का वर्णन किया है!

मेरी आठ प्रकार की प्रकृति है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश, मन, बुद्धि, अहंकार यह आठ भगवान की प्रकृति है और प्रकृति का अर्थ है चंचलता! जैसे ब्रह्मांड प्रतिपल गतिमान है ऐसे ही मन, बुद्धि भी प्रतिपल गतिमान है! एक क्षण के लिए भी मन बुद्धि को रोका नहीं जा सकता! ब्रह्मांड और मन, बुद्धि प्रकृति के तत्व हैं इसलिए सब गतिशील है पूरे ब्रह्मांड में स्थिर कुछ भी नहीं है और ना ही कभी स्थिर हो सकते हैं प्रकृति का यह गुण है स्थिर केवल परमात्मा है और जो अपने विचलित मन, बुद्धि को स्थिर करेगा वही स्थिर परमात्मा को प्राप्त करता है!

सृष्टि चक्र

सबसे नीचे है 10 इंद्रियां,, उससे ऊपर है मन और उससे ऊपर है बुद्धि और उससे ऊपर चित् उससे ऊपर है अहंकार और उससे ऊपर है मोह तत्व और उससे ऊपर है त्रिगुणात्मक अष्ट आवरण यहां तक जितने भी हैं माया की सत्ता है यह सब माया से नीचे हैं इन सबसे ऊपर है माया और उससे ऊपर है उस विराट के एक दिव्य अंश अर्थात आत्मा और उससे ऊपर है परमात्मा! सबसे ऊपर है परमात्मा,,, इसलिए परमात्मा किसी के पकड़ में नहीं आते हैं इंद्रियां, मन, बुद्धि की गति माया तक है! प्राकृतिक वस्तु परमात्मा तक नहीं जा सकते! क्योंकि परमात्मा सर्वोपरि है! संपूर्ण ब्रह्मांड के एरिया से बाहर है!

24 मह तत्व

जिस 24 तत्वों से मिलकर सृष्टि की रचना हुई है!

(1) 5 ज्ञानेंद्रिय- 1. आंख, 2. कान, 3. नासिका, 4. जीव्हा, 5. त्वचा!

(2) 5 कर्मेंद्रियां- 1. हाथ, 2. पैर, 3. वाणी, 4. लिंग, 5. गुदा!

(3) 5 प्राण इंद्रिय- 1. प्राण, 2. अपान, 3. समान, 4. उदान, 5. व्यान!

(4) 5 तन्मात्राएं- 1. शब्द, 2. रूप, 3. रस, 4. गंध, 5. स्पर्श!

(5) 4 अंत: करण- 1. मन, 2. बुद्धि, 3. चित, 4. अहंकार

पूरे 24 तत्व से सृष्टि बनी है!

कौन किसके अधीन है?- तत्वज्ञान

अब हम चलते हैं अपने तत्वज्ञान में

आईए जानते हैं पूरी विस्तार से कौन किसको गवर्न करता है! इस तत्व को ध्यान से समझिएगा!

® हमारे कर्म कैसे बनते हैं?

® मन किसके गुलाम है?

पूरे 10 इंद्रियों को मन कब्जे करके रखा है और इस मन को दो तत्वों ने मिलकर बुद्धि और चित् कब्जा करके रखे हैं यह मन संसार में किसी का बात नहीं मानता! बेटा बेटी पति पत्नी मां-बाप रिश्ते नाते किसी का नहीं! ना वह किसी की सुनता है ना किसी की मानता है! वह केवल दो लोगों की बात मानता है! कौन है वह बुद्धि और चित्! जो उसके पास ज्ञान है और दूसरा जो उसका पूर्व जन्मों का संस्कार है! वही करेगी अलग कुछ भी नहीं कर सकती! पूर्व जन्म में प्राणी जैसा हरकत करता है वही हरकत इस जन्म में करता है! जहां उसके मन की गाड़ी मृत्यु के समय रुक जाती है वहीं से उसकी अधूरी कहानी फिर से शुरू होता है! अगला जन्म में!

शरीर बदल जाते हैं बुद्धि भी बदल जाता है हर जन्म में जीव को नया ज्ञान प्राप्त होता है! मन और चित् दोनों हर जन्मों में वही रहता है यह दोनों कभी नहीं बदलते! अगर बुद्धि भगवान वही दे दिए तो पूर्व जन्म सबको याद रहता! भगवान बुद्धि बदल देते हैं ताकि पूर्व जन्म किसी को याद ना रहे! हर जन्म में बुद्धि में नया ज्ञान नया डाटा भर देते हैं! ताकि उसी के आधार पर उनका कर्म बने! भगवान उनके चित् को कभी नहीं बदलते जो उनके अनंत जन्मों का संस्कार बन गया है! आदत जो उनको बन गई है! चित् में जम गया है! उसी के आधार पर उनके मन में विचार आता है और उसी के आधार पर उनको बारंबार जन्म मिलता है संस्कार ही उसको गर्भ में फिर से वापस लाती है वेदों में इसी को जन्म मृत्यु का मूल कारण कहा गया है भगवत प्राप्ति होने पर ही यह नष्ट होती है जिसे कारण शरीर भी कहा जाता है!

ज्ञान और संस्कार इन दोनों के मिश्रण से उनके मन में लहर आती है! इच्छा बनता है! विचार आता है और इस मन के आधार पर उसके पूरे 10 इंद्रियां कार्य करती है! इस प्रकार जीव के कर्म बनते हैं!

2 मिनट के लिए किसी के मन को पकड़कर अपने अनुसार करने की जांच करके देखें हमारे अनुसार करेगा या नहीं! वह 2 मिनट के लिए किसी के पास नहीं बैठ सकता माया के वशीभूत होने के कारण वह चारों चलायमान है!

प्रत्येक जीव अपने पूर्व जन्म का आधीन है उसे कुछ अच्छा लगेगा ही नहीं वही अच्छा लगेगा जो उसने हर जन्मो में किया है जो उसकी बार-बार करने की आदत बन गई है! जिसे छोड़ पाना असंभव है! कुछ दिन तक त्याग हम करेंगे फिर उसके बाद वही पुरानी आदत पुराने संस्कार फिर से मन को तबाह कर देते हैं! यही चित् का खेल है!

मन,, इन दोनों के वश में है बुद्धि अर्थात ज्ञान और चित् अर्थात संस्कार के अधीन है यह मन अपने से कुछ नहीं कर सकती! इसके पास कुछ नहीं है मन एक Blank पेपर है वह जो कुछ भी करता है उन दोनों के आधार पर क्योंकि डाटा उन दोनों के पास है मन के पास कुछ नहीं है!

यह बस विचार करने का एक मशीन है सिस्टम है इच्छा करने का एक मशीन है! उसे किस चीज की इच्छा होगी इच्छा मशीन तो सबके पास है लेकिन सब की इच्छा अलग-अलग है क्यों? वह दोनों मशीन सबकी अलग है जिसके आधार पर मन कार्य करता है! इन दोनों पर निर्भर करता है- बुद्धि और चित्! दो प्राणी का बुद्धि और चित् कभी एक समान नहीं हो सकते! चाहे भाई बहन हो चाहे बेटा बेटी चाहे मां-बाप सब की रचना अलग-अलग हुई है! दोनों बुद्धि और चित् प्रत्येक जीव के अलग हैं

इन दोनों के बिना मन अकेला कुछ नहीं कर सकता! उसके पास कुछ नहीं है जो कुछ है उन दोनों के पास है और इन दोनों को कब्जा कर लिया है अहंकार ने इसलिए ज्ञान, संस्कार और विचार सब अहंकार के अंडर में कार्य करते हैं!

हमारे सारे आंतरिक मशीन को अहंकार ने कब्जा किया हुआ है!

कितने भी करीबी रिश्ते हो मन का सच्चा मित्र- बुद्धि और चित् ही है बस उन्हीं का बात मानता है उन्हीं के सहारे लेकर मन कार्य करता है और इस बुद्धि और चित् को अहंकार अनंत जन्मों से कब्जा करके रखा है! और अहंकार को मोह कब्जा करके रखी हुई है! और मोह तत्व को त्रिगुणात्मक माया! और माया,, ब्रह्म की एक शक्ति है! माया जड़ है परमात्मा की चेतन शक्ति को प्राप्त करके माया कार्य करती है!

जैसे मोबाइल में कोई भी डाटा अपने आप डिलीट नहीं हो सकती! उसे नहीं पता की किसको डिलीट होना है किसको नहीं! उसे तो कोई चेतन शक्ति ही बताएगा किसको डिलीट करना है? बस इसी तरह परम चेतन परमात्मा की शक्ति को प्राप्त करके जड़माया संसार में कार्य करती है!

मन, बुद्धि, चित्, अहंकार यह सब जड़ है! अपने बल पर कुछ नहीं कर सकते जब तक उन्हें परम चेतन परमात्मा से चेतन शक्ति ना मिले!

इंद्रिय, मन,, बुद्धि चित, अहंकार सब माया से बने हैं सब प्राकृतिक है और परमात्मा माया से बाहर है!

इसलिए ऋग्वेद, यजुर्वेद का एक शाखा के केन उपनिषद कहते हैं- माया के मशीनों द्वारा परमात्मा को ग्रहण नहीं किया जा सकता! जब परमात्मा स्वयं अपनी कृपा से उनके प्राकृतिक यंत्र को दिव्य बनाते हैं तब वह ब्रह्म को जानने में सामर्थ होता है! जब तक उनकी कृपा नहीं होती तब तक कोई परमात्मा को नहीं जान सकता!

हरे कृष्ण जय श्री राधे

प्रत्येक जीव अपने पूर्व जन्म के संस्कार के वशीभूत है!

प्रत्येक जीव अपने पूर्व जन्म के संस्कार के वशीभूत है अपने संस्कार से बाहर तो वह कभी नहीं जा सकता! कोई किसी के विचार को बदल नहीं सकता!

जो जैसा अपने चित् में अनंत जन्मों से भरा हुआ है! अपनी संस्कार के वशीकरण में होने के कारण जीव ना किसी की बात को सुनता है ना मानता है! श्री राधा रानी महारानी असंख्य ब्रह्मांड के सर्वस्वामिनी से बैर रखकर कोई भी देवी देवता पर ब्रह्म की तपस्या कर ले!

चाहे दिन रात श्री कृष्ण की तपस्या किया जाए कुछ नहीं होगा! भगवान स्पष्ट कह दिए हैं गीता 6/43 उसको भी जन्म लेना पड़ेगा जो संसार से पूर्ण वैराग्य होकर मेरी दिन रात तपस्या में लीन है उसको भी जन्म लेना पड़ेगा! उसे आवागमन से इतनी शीघ्र मुक्ति नहीं मिलती!

जब तक सर्वेश्वरी श्री राधा रानी की शरण में जीव नहीं जाती! कल्याण कभी नहीं होगा! श्री राधा रानी ही भक्ति है श्री राधा रानी ही मुक्ति है! चाहे कितने भी साधना तपस्या किया जाए श्री राधा रानी से विमुख होकर मुक्ति संभव नहीं! किसी भी भगवान की शरण में चला जाए!

सदा याद रखना है बुद्धि पर-

अनंत ब्रह्मांड के सारे देवी देवता यहां तक की पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण की चाबी ठकुरानी महारानी राधा रानी के पास ही होते हैं! श्री कृष्ण भी अपनी मर्जी से ब्रह्म होकर कुछ नहीं कर सकते! उनके कानून ही सृष्टि को चलाता है! वह स्वयं नहीं! जो श्री राधा रानी की शरण में नहीं जाते, जीव के कर्मों का कानून ही उनको सेट करते हैं? आगे कहां जाना है? किस योनि में जाना है? जिसने श्री जी को प्रसन्न कर लिया उनका भव बंधन आवागमन एक क्षण में छूट जाता है!

अगर राधा रानी ने नहीं चाहा तो जीव को श्री कृष्ण के चरणों में स्थान कभी नहीं मिल सकता! उन्हें स्थान महारानी ही दिलाती है जो परम करुणामई है! घनघोर तपस्या करने पर भी श्री कृष्ण इतनी शीघ्र प्रसन्न नहीं होते,,,इसलिए राधा जी की शरण में जाना होता है!

सदा याद रहे- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर महा विष्णु, सदाशिव,, काल ब्रह्म,, अक्षर ब्रह्म,, निर्गुण ब्रह्म,, सच्चिदानंद परमात्मा अनंत ब्रह्मांड श्री राधा रानी के अधीन है! परम ठकुरानी मालकिन से बैर रखकर नीचे वाले की भक्ति कोई कितने भी करें,, प्रसन्न कभी नहीं होते जब तक श्री राधा रानी की शरण में न जाया जाए!

श्री राधे हरे कृष्ण

आंखें नहीं, मन देखता है!

आंखें नहीं देखती जो कुछ संसार में हम देखते हैं उस मन देखता है,,, मन ही सुनता है मन ही बोलता है प्रत्येक कर्म का मन ही कर्ता है! इंद्रियों को गवर्न मन करता है और मन को गवर्न बुद्धि करता है और बुद्धि में चेतन शक्ति आत्मा से है बुद्धि से ऊपर है आत्मा,,, जीव शक्ति सबसे नीचे है बीच में है माया शक्ति उससे ऊपर है परमात्मा! जीव और परमात्मा के बीच में माया का पर्दा है परमात्मा और जीव के बीच माया का आवरण है,,, इस कारण जीव,, परमात्मा की अनुभूति नहीं कर पाता! परमात्मा जब जीव पर अपनी कृपा करते हैं तब उनके प्राकृतिक इंद्रिय, मन, बुद्धि में दिव्य शक्ति देते हैं तब वह उनको जान पाता है प्राकृतिक सिस्टम के द्वारा परमात्मा पकड़ में नहीं आ सकते केन उपनिषद मंत्र 1-7 इसका प्रमाण है! क्योंकि परमात्मा माया से सर्वथा परे है! सिर्फ उनको जान पाना उनकी कृपा से ही संभव है!

दो प्रकार की बुद्धि

बुद्धि दो प्रकार की होती है एक प्राकृतिक बुद्धि एक दिव्य बुद्धि!

® भगवान की कृपा?

प्राकृतिक बुद्धि परमात्मा हर किसी को प्रदान करते हैं पर दिव्य बुद्धि की गिने चुने जिस पर उनकी कृपा होती है उन्हीं को यह बुद्धि मिलता है!

प्राकृतिक बुद्धि को किस चीज का ज्ञान रहता है? पैसा कैसे कमाया जाता है खाना सोना संसार में कर्म करना लोगों के साथ एक दूसरे से बात करना माया के विषय पर,, इस बुद्धि को सांसारिक ज्ञान होता है! अच्छे बुरे कर्म इसी बुद्धि के द्वारा होता है! लेकिन यह केवल बुद्धि है इससे ऊपर विवेक बुद्धि अर्थात दिव्य बुद्धि होता है जो केवल भगवान की कृपा से मिलता है! भगवान ने स्वयं कहे हैं गीता में यह बुद्धि मैं हर किसी को नहीं देता केवल मेरे कृपा पात्र जीव को ही मिलता है,, जिनको यह बुद्धि मिल जाता है! वह निरंतर यह चिंतन करता है मैं कौन हूं कहां से आया हूं मेरा परम लक्ष्य क्या है मुझे तृप्ति कहां मिलेगी यह संसार जो दिख रहा है वह क्या है दिव्य बुद्धि का यही लक्षण है!

अगर ऐसा ख्याल आ रहा हो तो समझ लीजिए हम पर भगवान की बहुत बड़ी कृपा है सांसारिक ज्ञान आना कोई बड़ी चीज नहीं है भगवान हर किसी को प्रदान किए हैं उनकी खोज करना,, उन्हें जानने की इच्छा उत्पन्न होना यही दिव्य बुद्धि है हर प्राणी में उसे परमात्मा दिखने लगते हैं प्राकृतिक बुद्धि को संसार सत्य दिखाई देता है और दिव्य बुद्धि को संसार मिथ्या दिखाई पड़ता है!

उनका सारा भ्रम दूर हो जाता है! भगवान जिस जीव को अपनी प्राप्ति कराना है उन्हें अपनी कृपा से दिव्य बुद्धि देते हैं! तब वह भगवान को प्राप्त करने में सामर्थ होती है!

प्राकृतिक बुद्धि को सत्य का ज्ञान नहीं रहता वह अज्ञानता वश संसार में आसक्त रहती है! और झूठे सुखों में माया में भटकती रहती है!

और दिव्य बुद्धि संसार के बंधन से उसे मुक्त करती है! अब हम इससे पता लगा सकते हैं कि क्या हम पर भगवान की कृपा है या नहीं!

आप किस निरंतर चीज का चिंतन करते हैं संसार का या भगवान का!

भगवान की खोज करना उनकी तरफ ध्यान लगाना यही भगवान की कृपा है! श्रीमद् भागवत गीता अध्याय 10/10,10/11 में अर्जुन को इस बात को बताएं मन बुद्धि का निरंतर मुझमें लगना ही मेरी कृपा है!

जब तक भगवान जीव पर कृपा ना करें तब तक उनका मन बुद्धि चित्त संसार की माया में भटकती रहती है! सत्य का ज्ञान उनकी कृपा से ही होता है! और सदा के लिए अज्ञानता मिट जाती है! जिस पर भगवान कृपा करते हैं!

तत्वज्ञान- 4 अंत: करण

तत्वज्ञान- 4 अंत: करण कैसे कार्य करते हैं?,,, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार

बुद्धि आत्मा को क्यों नहीं जान सकती? क्योंकि आत्मा,,, बुद्धि से ऊपर है! मन और बुद्धि दोनों अलग सिस्टम है चारों मन,, बुद्धि, चित, अहंकार अलग-अलग सिस्टम है चारों के कार्य अलग हैं! एक के कार्य को कोई दूसरा नहीं ले

सकता! मन को कोई भी चीज की जानकारी उसके पास कुछ ज्ञान नहीं है मन अबोध है मन सिर्फ वह संकल्प विकल्प विचार करता है इच्छा शक्ति है! बुद्धि के बदौलत ही तो मन पूरा कार्य करता है!

क्योंकि सारी चीजों का ज्ञान तो बुद्धि को है! एक तीसरा आ गया संस्कार चित्,,,, यह बताएगा अब करना क्या है? तीनों एकजुट हो जाते हैं! चौथा आ गया कर्तापन अहंकार,,, अब यह तीनों को अपनी कब्जे में कर लेता है! फिर चारों मिलकर इंद्रियां सहित कर्म करते हैं! जैसा पूर्व जन्म में उसने किया था!

मन में मलीनता क्यों?

वाणी चुप नहीं रहती उसे बात करना अच्छा लगता है वाणी में इतनी गंदगी भरी हुई है भगवान का नाम लेना नहीं चाहती क्यों? इसका कारण क्या है? क्योंकि मन में गंदगी है मन को भगवान नहीं सुहाते यह उसकी अनंत जन्मों की आदत है वाणी मन के ही आधीन है! आखिर मन में इतनी इतनी गंदगी क्यों है? क्योंकि चित् पहले से गंदा है! जो अनंत जन्मों का जीव का हार्ड डिस्क है! पर यह गंदा है क्यों? क्योंकि अनंत जन्मों में कभी हमने साधना नहीं की सिर्फ पूजा पाठ किया अंदर में गंदगी भरी रह गई कभी साफ नहीं किया! कभी भगवान का नाम नहीं लिया! शुद्धता की ओर कभी अपना ध्यान नहीं दिया! माया अशुद्ध आवरण है और परमात्मा शुद्ध आवरण!

हमारे तीन प्रकार के शरीर

हमारे तीन प्रकार के शरीर हैं!

1. सूक्ष्म शरीर! 2. स्थूल शरीर! 3. कारण शरीर!

स्थूल शरीर वह है जो भौतिक पिंड प्रकृति से बना हुआ जो हमें दिखाई दे रहा है जिसमें इस जीवात्मा का वास है वह पांच तत्व से बनी है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश,,,,,सूक्ष्म शरीर वह है जो इस भौतिक शरीर के अंदर विद्यमान है सूक्ष्म रूप में जो 18 तत्वों से मिलकर बनी है पांच ज्ञानेंद्रिय,, पांच कर्मेंद्रियां,, पांच प्राण इंद्रियां और तीन मन, बुद्धि, अहंकार! और कारण शरीर वह है जिसे चित् भी हम कहते हैं! जो जीव के जन्म मृत्यु का मूल कारण है! इसी के द्वारा जीव का बारंबार जन्म होता है इसमें उसका अनंत जन्मों का संस्कार भरी हुई है यही उसे जन्म देती है! इसी को कारण शरीर कहा गया है!

मन का दृष्टा बनिए

हमें संसार का दृष्टा नहीं,,, इस मन का दृष्टा बननी है! इस मन को अनंत जन्मों से संसार में फंसने की बहुत गहरी आदत है इसकी चाल बाजी को पकड़िए! 24 घंटे इस पर तैनात रहना होगा! कब कहां चला जाए कब क्या कर दे? इसलिए इसे रोक कर हर पल अपनी नियंत्रण में रखना होगा! बार-बार निरीक्षण करनी होगी कहीं किसी विषय में फंस तो नहीं रहा है! फंसी मतलब दुर्गति,,, माया से बच गई यही सद्गति है! वेद कहते हैं मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है! माया से निकल गई तो वही मोक्ष है नहीं निकल पाई तो वही फिर से जन्म मृत्यु का बंधन है! आवागमन के कैद से

वह कभी मुक्त नहीं हो सकती जिसका मन, माया में लिप्त है! मन,, प्रत्येक जीव का अपना शत्रु है और वही अपना मित्र! जो मोक्ष के मार्ग पर हैं वह अपना मित्र,, जो माया के मार्ग में है वह अपना शत्रु!

चित् को कभी जाना नहीं जा सकता!

पहले तो इस विराट चक्र को समझ कर देखिए समझ आ गए तो ठीक,,,, क्योंकि यह प्राकृतिक बुद्धि परमात्मा तक नहीं जा सकती- केन उपनिषद 1-7

जो जान गया बस वही जान गया! इसका कारण क्या है? थोड़ा ध्यान से समझिएगा! जब यह चक्र ही समझ नहीं आ रहा तो परमात्मा कहां से समझ आएंगे? पहले इस चक्र को समझो!,,, हमारी जो बुद्धि है वह माया की बनी है! माया की बुद्धि द्वारा परमात्मा को नहीं जाना जा सकता! माइक बुद्धि,,, सिर्फ माया की चीजों को ही जानती है!

विराट चक्र

मन,,, इंद्रियों से परे है

बुद्धि,,,मन से परे है और

चित्,,, बुद्धि से परे है और

अहंकार,, चित् से परे है और

मोह तत्व, अहंकार से परे है और आत्मा,, मोह से परे है और

परमात्मा,, आत्मा से परे है,,,, अगर यह चक्र समझ आ जाए तो बहुत बड़ी बात है,, चित् को तो कभी जाना नहीं जा सकता! क्योंकि चित्,, बुद्धि से ऊपर है! कैसे जानेंगे? किस मशीन से जानेंगे? ऐसा कोई मशीन नहीं! बुद्धि नीचे है चित ऊपर है!

इंद्रियां,,,मन,, बुद्धि तीनों चित् के ही कब्जे में है और चित्,,,, अहंकार के कब्जे में! और अहंकार,,, मोह तत्व के कब्जे में है! और मोह तत्व,, माया के अधीन है! इससे परे है आत्मा,,,,, परमात्मा तो आत्मा की शक्ति से भी परे है!

यही है तत्वज्ञान का सबसे बड़ा चक्र!

परमात्मा क्यों किसी को समझ नहीं आते,,, क्योंकि वे माया से सर्वथा परे है! परमात्मा,, प्रकृति के आवरण से बाहर है त्रिगुणात्मक से बाहर है! माया के सिस्टम उनको ग्रहण नहीं कर सकते,,,

केन उपनिषद इसका प्रमाण है! इंद्रिय, मन, बुद्धि परमात्मा तक नहीं जा सकती! यह सभी माया के सिस्टम है! माया के सिस्टम द्वारा परमात्मा को ग्रहण नहीं किया जा सकता जब तक स्वयं परमात्मा इंद्रियां, मन, बुद्धि में दिव्य शक्ति देकर उसको दिव्या ना बना दे कोई परमात्मा को नहीं जान सकता! जो परमात्मा को जान पाया है तो सिर्फ उनकी कृपा से ही उनको जान पाया है!

अगर परमात्मा की कृपा नहीं हुई तो माया उसको अपने कब्जे में करके बहा ले जाएगी! आवागमन में उसको भटकाती रहती है! जो अपने स्वयं वास्तविक स्वरूप को नहीं जान पाई कि मैं कौन हूं? यह कौन है? और वह कौन है? मैं कहां से आई हूं मेरा लक्ष्य क्या है? मुझे भौतिक संसार में तृप्ति क्यों नहीं मिलती? जो अपने आप को नहीं जान पाई!

वाणी अत्यधिक बात क्यों करती है?

जो वाणी किसी के साथ बात करती है क्यों करती है?

महत्वपूर्ण विषय

थोड़ा गहराई से समझना होगा! इस विषय को तत्व ज्ञान में चलते हैं! हमसे कर्म कैसे होते हैं?

(मन, बुद्धि, चित, अहंकार का खेल)

क्योंकि बात करने वाला वाणी नहीं! उसे मन ही बात करवाता है उसके पास वाणी नहीं,, तो वह चाहती है मैं अपना विचार बाहर करूं तो मन,, वाणी की मदद लेकर अपना विचार बाहर करती है!

और मन को बात करने के लिए चित्,,,,, प्रेरित करता है इसके पास बुद्धि नहीं तो मन,,, बुद्धि की सहायता लेता है!

क्योंकि इसके पास ज्ञान है! ज्ञान बिना बात करना संभव नहीं शब्दों का ज्ञान नहीं होगा तो बात कैसे करेगा? इसीलिए भगवान ने 5 ज्ञानेंद्रिय दी है शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श इन पांच विषयों का ज्ञान!

और चित्,, बिना लहर आना संभव नहीं! जो मन को अत्यधिक करने की इच्छा होती है बार-बार मन वही तरफ जाता है क्योंकि वह डाटा हमारे चित् में जमा है! कई अनंत जन्मों से! उसी का असर हमारे मन पर पड़ता है! मन के पास कुछ नहीं है मन को जो चीज की इच्छा उत्पन्न हो रही है! जो उसे प्राप्त करने की प्रबल इच्छा है? अब क्या चीज की इच्छा है हर प्राणी को अलग-अलग इच्छा है!

यह उनके चित् पर निर्भर करता है! चित् में जमा क्या है? जो अनंत जन्मों से जमा होगा वही लहर मन में आएगा! जो उसने भर कर रखा हुआ है! मृत्यु के समय जो इच्छा बाकी रह जाती है वह चित् में जमा रहता है! अगले जन्म में पूरे सिस्टम फिर हमें वापस मिलता है! पुरानी आदत अगले जन्म में चला जाता है!

मन के पास कोई ज्ञान नहीं! यह तो संकल्प विकल्प करने का यंत्र है! ज्ञान तो बुद्धि के पास है जो इससे ऊपर है! बुद्धि से ऊपर है चित्, और चित्, अहंकार के कब्जे में है! अहंकार,,, माया के कब्जे में है! और माया,, भगवान की शक्ति को प्राप्त करके कार्य करती है!

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहे हैं प्राणी जो प्रत्येक क्षण कर्म करते हैं उसको मेरी माया त्रिगुणात्मक प्रकृति ही कर्म करवाती है! बैठे-बैठे एक विचार भी आ रहा है!

मन में तो पूर्व जन्म के अनुसार ही आता है! समझो मन एक एटीएम मशीन है और चित्, अकाउंट है! जितना पैसा होगा मशीन उतना ही हमें देगा! चित् में जैसा डाटा जमा होगा वैसा ही तो मन विचार करेगा!

चित क्या है? अनंत जन्मों का संस्कार है वह करने की उसकी आदत है ना चाह कर भी जिसको हम छोड़ नहीं सकते! जैसे क्रोध को छोड़ने की कोशिश किया 2 महीने तक क्रोध नहीं किया 5 महीने तक भी नहीं किया छठवें महीने में क्रोध हो गया! लालच, ईर्ष्या, वासना, क्रोध, अहंकार, मोह,, यह अनंत जन्मों से चित् में हमारी जमा है!

इसीलिए इसको त्याग पाना अत्यंत कठिन है जो चित् में जम गया है साधना और भक्ति के द्वारा ही इसे समाप्त किया जा सकता है! जो जो चीजे हम इस जन्म में नहीं छोड़ पाया! वहीं अगले जन्म में चला जाता है! मृत्यु के समय हमारे अंतःकरण की कहानी जहां से रुक जाती है अगले जन्म में वहीं से शुरू होती है!

जो कभी नष्ट नहीं होते! पिछला जन्म,,, इस जन्म और अगले जन्म तीनों स्थिति में हमारा स्वभाव एक ही रहता है!

मन, भगवान में क्यों नहीं लगता?

महत्वपूर्ण विषय

मन बुद्धि भगवान में क्यों नहीं लगता इसका कारण यहां मिलेंगे! जिसका लगता है तो क्यों लगता है? अगर यह जानना है तो पूरे अंत तक आपको पढ़ना होगा,, यजुर्वेद, गीता,, और सामवेद क्या कहते हैं????

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्य: परं मन: |

मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धे: परतस्तु स: गीता ||3/42||

यत् मनसा न मनुते येन आहुः मनो मतम् । तत् एव बृह्म त्वं विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥५॥

यत् वाचा अनभ्युदितम् येन वाक् अभ्युद्यते । तत् एव बृह्म त्वं विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥४॥

न तत्र चक्षुः गच्छति न वाक् गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो यथा एतत् अनुशिष्यात् अन्यत् एव तत् विदितात् अथो अविदितात् अधि । इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नः तत् व्याचचक्षिरे ॥३॥

(सामवेद,, केन उपनिषद वेद मंत्र)

अंतःकरण का युद्ध

हमारे अंतःकरण में अनंत काल से राम और रावण का युद्ध चल रहा है! जिस दिन हमारे अंदर राम की जीत हो गई! रावण, असत्य मिट गए! बस वही दिन हमारा दशहरा है! बाकी तो केवल एक प्रचलन है! वास्तविक दशहरा जब हमारे जो अंदर रावण अनंत जन्मों से बैठा है! जिस दिन यह मिट गए! अंतःकरण में जो रावण का डेरा है! इसका मिट जाना

ही दशहरा है और यही जीव और ब्रह्म का मिलन है! जो सत्य के मार्ग पर चलता है सदा उनका जीत होती है जो असत्य के मार्ग पर चलते हैं हार उनकी निश्चित होती है! उदाहरण रावण, हिरण्यकश्यप, दुर्योधन, शिशुपाल कोई नहीं बचे,, युद्ध में अर्जुन की जीत क्यों हुई? क्योंकि वे पांचों श्री कृष्ण के अनुसरण सत्य के मार्ग पर थे!

तत्वज्ञान, महत्वपूर्ण विषय

तत्वज्ञान में चलते हैं!

थोड़ा एक-एक शब्दों पर ध्यान देना होगा अगर अपने आंतरिक सिस्टम को जानना है!,,,, महत्वपूर्ण विषय!

सबसे नीचे है इंद्रियां! पूरे 10 इंद्रियों को ड्राइविंग "मन" करता है! इंद्रियां तो छोटे-छोटे बच्चे हैं इसको मन ही उसका पिता संभालता है! मन के आधार पर ही इंद्रियां उठक बैठक करते हैं! जैसा मन कहता है 10 इंद्रियों को उसकी बात मानना पड़ता है! अब मन किसके हिसाब से चलता है? उसे जानना है! मन अपने से कुछ नहीं कर सकता! मन

गधा है कुछ नहीं जानता!

जो कुछ भी है उन दोनों के पास है जो मन से ऊपर है! कौन है इस मन से ऊपर? जो मन से भी अधिक शक्तिशाली है

बुद्धि और चित्!

जिसमें से एक ज्ञान का सिस्टम है और दूसरा अनंत जन्मों का संस्कार! जीव की उस कार्य को बार-बार करने की आदत जो बार-बार उसे करवाती है ना चाह कर भी उसे करवाती है मृत्यु से पहले जो चीज हम नहीं छोड़ पाए! वह चित् में जमा हो जाता है और वहीं अगले जन्म में चला जाता है! पिछले जन्म की हरकत इस जन्म में आती है और इस जन्म की हरकत अगले जन्म में चला जाता है यही चित् का खेल है!

दो अलग-अलग शक्ति मिलकर(बुद्धि और चित्) उनके ही द्वारा यह मन चलता है! एक शक्ति ज्ञान अर्थात बुद्धि दूसरी शक्ति संस्कार अर्थात चित्! चित के पास ज्ञान नहीं और बुद्धि के पास संस्कार नहीं थोड़ा समझिए! भगवान की बनाई हुई दोनों अलग-अलग सिस्टम है! एक के पास ज्ञान है तो एक के पास संस्कार! अब मन को क्या करना है? क्या नहीं! उन दोनों पर निर्भर करता है!

दोनों बहुत बड़ी सिस्टम है इसको समझना होगा अच्छे से ,, जो कुछ भी मन में लहर आता है उन दोनों के द्वारा ही आता है! बुद्धि ज्ञान भेजता है और चित् संस्कार भेजता है! तब जाकर मन कार्य कर पाता है! और यह दोनों बुद्धि और चित्,,, अहंकार के कब्जे में है! दोनों जो कुछ भी करेंगे अहंकार के अंतर्गत ही रहेगा!

मन, बुद्धि, चित् तीनों अहंकार के अधीन है! संस्कार विचार और ज्ञान तीनों अहंकार से संबंधित है!

और ऊपर चलिए अब देखो अहंकार,,, मोह के कब्जे में है बताया गया है मोह तत्व अहंकार से भी बलवान है गर्भ गीता में भगवान ने बताया है अहंकार सबसे बलवान है और मोह तो इससे भी बलवान है अहंकार एक बार छूट सकता है पर

मोह को नष्ट कर पाना असंभव है! बड़े-बड़े महान ज्ञानी पुरुष तपस्वी ही इसे नष्ट कर पाते हैं! साधारण जीव के वश में नहीं!

इस प्रकार चक्र है! क्यूंकि मृत्यु के समय अहंकार मिट जाता है लेकिन हमारी आसक्ति साथ चली जाती है! जिसके कारण फिर से जन्म होता है!

मोह सबसे बलवान है! उससे ऊपर त्रिगुणात्मक और उससे ऊपर परमात्मा है! संसार के समस्त प्राणी प्रतिपल जो कुछ भी करते हैं भगवान की शक्ति को प्राप्त करके ही करते हैं!

गीता में भगवान ने कहे हैं प्राणी जो कुछ भी कर्म करती है मेरी त्रिगुणात्मक प्रकृति ही उसे करवाती है! मेरी माया के पार नहीं जा सकती उसे करना ही पड़ेगा जो मेरी प्रकृति उसे करवाएगी!

मेरी देवी प्रकृति माया जीव को कर्म करने के लिए प्रेरित करती है बाधित करती है! तब इंद्रियां, मन, बुद्धि कर्म करने के लिए तैयार होते हैं! वेद कहते हैं-

इंद्रियां, मन, बुद्धि यह सब जड़ है इनके पास अपने से कुछ शक्ति नहीं!

ब्रह्म की शक्ति को प्राप्त करके यह सभी क्रिया करते हैं! मन, बुद्धि, चित, अहंकार ब्रह्म की माया शक्ति है! यह सभी भगवान की माया शक्ति है! इसलिए हमारा सब कुछ माया के अंतर्गत है!

विचार भी आएगा तो माया के अंतर्गत,, बुद्धि में जो ज्ञान है वह भी माया के अंतर्गत चित् में जो संस्कार है वह भी माया के अंतर्गत अहंकार तो माया है ही और उससे ऊपर मोह भी माया है भगवान श्री कृष्ण गीता 7/14 में कहे हैं जो जीव मेरी शरण में आता है बस वही मेरी प्रबल माया को पार कर पाते हैं! अन्यथा कोई भी इस अनंत ब्रह्मांड में मेरी माया को क्रॉस नहीं कर सकता!

जब तक जीव मेरी शरण में ना आए! माया से पार होने के लिए जीव को मायापति की शरण ग्रहण करना आवश्यक है!

चित् क्या है?- तत्वज्ञान

चित् क्या है?,, विस्तृत वर्णन

चित् हमारे अनंत जन्मों का संस्कार है जो बुद्धि से ऊपर है यह चित्,,, बुद्धि से भी बलवान है और बुद्धि,, मन से बलवान है और मन,,, इंद्रियों से बलवान है! मन, बुद्धि, चित् इन तीनों को जो अपने कब्जे में रखता है अपने वशीकरण में वह है अहंकार!

यह तीनों अहंकार के पार नहीं जा सकते! तीनों में अहंकार समाया है इन तीनों मशीन को अहंकार ने घेर लिया है! इन तीनों के द्वारा जो कुछ भी होगा अहंकार के अंतर्गत ही रहता है! जितने मायाबद्ध जीव है इस पूरी सृष्टि में सब अहंकार के आवरण मे हीं है! चित्र क्या है जिसे हम छोड़ने का प्रयास कर रहे और वह नहीं छूट रहा बार-बार उसे करने का मन होता है! हर थोड़ी-थोड़ी देर में अपने आप उसी तरफ खींचकर हम चले जाते हैं! मन को वह कार्य बार-बार

करवाता है! यही चित् का खेल है! चित् एक जीवात्मा की अनंत जन्मों की आदत है! जैसे कोई करीबी संबंध छोड़ कर चला जाए तो उसके याद में रो-रो कर कुछ लोग जी नहीं पाते इसीलिए कि उनके चित् में वह उनके साथ रहने की आदत जम जाती है!

इसीलिए तकलीफ होता है! मन पूरा जीवन जो कुछ भी करता है वह सब चित् में Save हो जाता है! इसे सीधी सी भाषा में समझ सकते हैं!

चित् क्या है?

देखिए संसार में कई प्रकार की आनंद है आनंद सभी चाहते हैं क्योंकि जीव ईश्वर का शाश्वत अंश है! आनंद तो संसार में सभी जीवात्मा चाहते हैं पर एक समान नहीं! प्रत्येक जीव की अलग-अलग दृष्टिकोण है किसी को किसी चीज में आनंद मिलता है तो किसी को किसी चीज में जीव को संसार के जिस आनंद की लत लग जाती है! उसे नशा चढ़ जाता है उस आनंद का क्योंकि वह आनंद की अनुभूति उसके चित् में जमा हो जाता है इसलिए जीव को प्रताड़ित करती है उसे बार-बार करने के लिए चित् प्रेरित करती है! चित् एक आनंद का पुंज है! क्योंकि वह सच्चिदानंद परमात्मा का अंश है!

सच्चिदानंद परमात्मा तीन चीजों से परिपूर्ण है सत्,, चित और आनंद! इसलिए प्रत्येक जीव आनंद चाहती है लेकिन जिस आनंद की उसे नशा चढ़ जाता है वह उसके चित् में जमा हो जाता है और अगले जन्म में जब चित उसे फिर वापस मिलता है तो उसी आनंद की तरफ फिर से चली जाती है!

अनंत जन्मों से जो आनंद हमें प्राप्त करने की आदत बन गई है आज भी हम वही कर रहे हैं चित् कभी परिवर्तन नहीं होता जो बन गया वह बन गया! जैसा हमारे संस्कार हैं जैसी हमारी आदत है हम वही करेंगे अलग तिनका मात्र भी नहीं कर सकते हैं यही चित् का खेल है! सुखों की आदत और आनंद ढूंढने की अलग-अलग दृष्टिकोण ही चित् है!

परमात्मा के दिए हुए मशीन

अगले जन्म में अगर नेत्र सही सलामत पाना है तो नेत्रों का कभी गलत उपयोग भूल कर भी ना हो कर्मों का जजमेंट करने वाला नेत्र के अंदर बसा हुआ है! अगले जन्म में सही सलामत वाणी पाना है तो कभी किसी को कटु वचन इस वाणी से ना निकले! किसी के लिए अपशब्द ना निकले जिससे किसी को ठेस पहुंचे! हर पल यह ध्यान हो! अगर अगले जन्म में हाथ पैर सही सलामत पाना है तो इसका कभी दुरुपयोग ना हो हाथ पैरों से कभी किसी का अहित न हो! पाप कर्म ना हो! जिसने इन सब मशीन को दिया है सही सलामत इन्हें छीनने में उन्हें सेकंड मात्र भी नहीं लगेगा! इस जन्म में अच्छा-अच्छा मिला है तो पूर्व जन्म के अनुसार मिला है! जैसा इस जन्म में कर्म होगा वैसा ही अगले जन्म में शरीर मिलेगा! इसलिए परमात्मा के दिए हुए मशीनों का सदा सदुपयोग हो!

कैचिंग पॉवर सबको अलग मिला है?

जो इस बुद्धि में हमें समझने की शक्ति मिली है वह सबको अलग-अलग मिली है! उसके पूर्व जन्म के संस्कार के अनुसार ही उनको बुद्धि मिली है! जिस चीजों को एक व्यक्ति समझ रहा है उसको दूसरा व्यक्ति नहीं समझ सकता!

कैचिंग पॉवर प्रत्येक जीव की अलग है उसके पूर्व जन्म के कर्म के अनुसार ही भगवान ने उनको बुद्धि दिया है! उनकी बुद्धि उसी चीज को समझ सकती है जो उसने पूर्व जन्म में जैसा कर्म किया था! हमारी बुद्धि क्या चीज को समझ पा रही क्या चीज को नहीं वह हमारे पूर्व जन्म के संस्कार पर निर्भर करता है! इसलिए एक ही विषय हर कोई नहीं समझ सकते! कैचिंग पॉवर सबकी अलग-अलग है! हां जो चीज बुद्धि ने समझ ली इसका अर्थ है उसने पूर्व जन्म में वह कार्य किया था!

जैसा चित् वैसी गति

आगे की गति ना कर्म के हिसाब से होती है ना मन के हिसाब से और ना ही बुद्धि के हिसाब से और ना ही इंद्रियों के हिसाब से जितना जल्दी हो सके जान जाओ! वास्तविक चीज को पकड़िए! जिसके द्वारा कर्म बनता है! कहां से बनता है? कैसे बनता है? क्यों बनता है! उसी के आधार पर गति होती है जहां से कर्म बनता है! विचार आता है? कहां से आता है? विचार इसको समझने होंगे!

इंद्रियां, मन, बुद्धि यह सब असली नहीं है नकली हैं! असली तो इससे ऊपर है कौन है उसी को तो जानना है?,,,

अनंत जन्म हमारे बीत गए हमने सब कुछ जानकार बैठा है! कई जन्मों में बुद्धि को भी जान चुका है बस अपने चित् को नहीं जान पाया इसीलिए भगवत प्राप्ति नहीं हो पाई,,,,,

भगवत प्राप्ति में तो सिर्फ इसी की योग्यता चाहिए, जप, तप, पूजा पाठ योग ध्यान से कुछ नहीं होगा कई जन्मों में हमने इसको करके बैठा है भगवत प्राप्ति बस होने ही वाली थी कि इस चित् ने माया जगत में हमें फिर से गिरा दिया!

जीव के आगे की गति उसके चित् के अनुसार ही होती है! दूसरा किसी के अनुसार नहीं! कहां जन्म होगा? किस जगह होगा? कैसी स्थिति मिलेगी? वहां का वातावरण कैसा होगा? कैसा शरीर मिलेगा? कुत्ते बिल्ली पशु पक्षी या मनुष्य! इसी चित् पर निर्भर करता है यही हमें अगले जन्म में सेटअप करेगा! जैसे इस जन्म में हमें किया है!

इसलिए इसे जान जाओ! क्योंकि शरीर छूटने के बाद कुछ नहीं किया जा सकता केवल भोगना ही पड़ेगा! अभी अपने चित् को सुधारने का अवसर है! अवसर गया तो सब कुछ गया! आगे शरीर छोड़ने के बाद कुछ नहीं किया जा सकता सिर्फ कर्मफल ही भोगना पड़ेगा!

शरीर छूटने से पहले इस चित् को जान लेना है की मन और चित् में क्या अंतर है? अनंत जन्मों की गति इसी चित् के आधार पर होती है! क्योंकि इंद्रियां, मन, बुद्धि सब इसी के अधीन है! इस तत्व को समझ गए तो नीचे वालों को जानने की जरूरत नहीं जिसने अपने चित् को जान लिया उसने सब कुछ जान लिया!

इंद्रिय, मन, बुद्धि तो उनके अनुसरण में है! असली चीज तो चित् है और सारा खेल इसी का है! भगवान मृत्यु के बाद हमें कहां ले जाएंगे? जानना है अगर तो अपने चित् को देख लो जैसा चित होगा!

बिल्कुल वैसे ही गति होगी!,,,,

चित् में जो कुछ जमा होगा! उसी के आधार पर बिल्कुल अगला जन्म होगा! हमारा इस जन्म भी इसी के आधार पर हुआ है अब देखना तो यह है कि इस चित् में क्या जमा है?

इसको जाने बिना चित्त को तोड़ा नहीं जा सकता यह बहुत बलवान है पहले तो इसे जानना होगा! चित के वृत्ति तो इसे जानने पर ही बदलेगी जानने के बाद ही चित का परिवर्तन संभव है! अन्यथा यह जैसा का तैसा रहेगी! अनंत जन्मो तक आगे अनंत काल तक! उसी को पकड़ कर आओ उसी को पकड़ कर जाओ बस यही चलती रहेगी! जब तक इस चित् को जीव जान नहीं लेती!

मोह,, चित् का ही खेल है!

किसी करीबी संबंध के चले जाने पर माया बद्ध जीव को उनकी याद क्यों आती है? कारण- देखिए जन्म से लेकर अब तक जिसके साथ हम अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं जिसके साथ हम रह रहे हैं! माता-पिता पुत्र पुत्री पति पत्नी इनके सब भाव भाव रहन-सहन बीते पल सुख-दुख उनकी आवाज, रूप सब कुछ हमारे चित् में प्रतिपल जमा हो रहा है अभी इसकी खबर नहीं, जान लीजिए! उनके जाने के बाद पता चलेगा अभी नहीं! तब चित का रंगत देखिए! लेकिन एक दिन वह तो चले जाएंगे परंतु उनकी यादें चित में रह जाएगी! यही चित अंत समय में बहुत परेशान करेगी इसलिए चित् को अभी से संभाल लेना है! श्री कृष्ण को बिठाकर ताकि चित् से मोह मिट जाए!

मोह,, चित् का ही खेल है!

बुद्धि चित्त के अधीन है या चित्त बुद्धि के

बुद्धि चित्त के अधीन है या चित्त बुद्धि के अधीन है!

तत्व ज्ञान में चलते हैं! देखिए हमारे आंतरिक सिस्टम की रचना कैसे हुई है? कभी सोचा नहीं जिस मशीन से प्राणी कर्म करता है! उस मशीन के बारे में कभी विचार नहीं करता! भगवान ने प्राणी को चार मशीन दिए हैं कम करने के लिए मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार! चारो अलग-अलग कार्य करते हैं! सबसे नीचे इंद्रियां उससे ऊपर मन है उससे ऊपर बुद्धि,, उससे ऊपर चित्त है उससे ऊपर अहंकार! यही अहंकार इंद्रिय, मन, बुद्धि चित चारों को अपने कब्जे में करके रखी हुई है! इंद्रिय मन बुद्धि पूर्व जन्म के संस्कार के अनुसार कार्य करता है और चित् अहंकार के कब्जे में और अहंकार भगवान की माया शक्ति है! तत्वज्ञान का विस्तार बहुत ही लंबा है! तत्वज्ञान माइक बुद्धि से परे है!

दो प्रकार के मन

मन दो प्रकार के हैं एक चंचल मन एक स्थिर मन,,,,,,

प्राणी का सबसे बड़ा शत्रु उसका चंचल मन है,,,और उसका सबसे बड़ा मित्र उनका स्थिर मन है! शत्रु और मित्र का क्या अर्थ है?,,,, पूरी विस्तार से जानते हैं!

जिसका मन स्थिर हो गया वही अपना मित्र है कैसे? उनका जन्म मरण से छुट्टी हो जाती है मुक्ति मिल जाती है! और जिसका मन संसार में उड़ रहा है चलाएमान है,,,, इधर-उधर भटक रही है!

उसे 84 लाख योनियों में चक्कर काटनी होगी 84 के जेल में भगवान बंद कर देते हैं कितने बड़े कष्ट उसे उठाना होता है! इस चंचल मन ने कभी न सोचा है ना जाना है उनकी क्या दुर्गति होती है? स्वयं चंचल मन को नहीं पता! उनकी चंचलता का क्या परिणाम होता है?

जो अपने आप को स्वयं 84 में डाल दे वह स्वयं ही अपना शत्रु है! जो अपने आप को खुद कष्ट में डालता जा रहा है वही तो अपना शत्रु है जिसे अपना भला बुरा का ज्ञान नहीं? मेरा क्यों जन्म हुआ है?

जिसको इसका ही ज्ञान नहीं! उनकी नादान बुद्धि यही समझ लिया है मेरा जन्म बस मौज मस्ती के लिए हुआ है! माया ने उनकी बुद्धि का हरण कर ली है इसलिए नहीं समझ पा रही,,, सत्य को उनकी बुद्धि में ढक दी गई है माया के द्वारा!

अपने परम लक्ष्य को जो नहीं जान पाया वही तो अपना शत्रु है जो स्वयं खुद अपना सर्वनाश कर रहा है! जो खुद को नर्क में डालता जा रहा है वही तो अपना शत्रु है!

जो मोक्ष के मार्ग पर चले अपने को संसार के बंधन से मुक्त करें! वही अपना मित्र है जो अपना भला जानता है जो अपना भला नहीं जानता वह अपना स्वयं शत्रु है! जिसका मन बुद्धि स्थिर नहीं हुआ!

मृत्यु के बाद की गति सिर्फ मन के अनुसार ही होती है दूसरा किसी के अनुसार नहीं! याद रखना है इसे सदा हर पल! जैसा मन होगा बिल्कुल आगे वैसी गति होगी!

प्राणी का अपना मित्र और शत्रु उसका मन ही है भगवान श्री कृष्ण ने गीता में इस बात को अर्जुन को बताया है! प्राणी खुद अपना सर्वनाश करता है और खुद अपने को मुक्त करता है!

भगवान इसमें हस्तक्षेप नहीं करते स्वयं प्राणी अपनी सद्गति और दुर्गति खुद करता है! यही है मित्र और शत्रु का अर्थ जो भगवान ने बताया है! जिसे हमने विस्तार से समझा यही साधना हमें करनी है अपने मन को स्थिर शांत करके भगवान का ध्यान करें तभी मोक्ष संभव है!

मोक्ष के लिए एकमात्र गुण चाहिए- मन बुद्धि की स्थिरता, संयम और वैराग्य!

चित् की शुद्धि

अगर आप किराए के मकान ढूंढ रहे हैं,,, एक मकान मिला है! जो 15 वर्षों से खंडहर पड़ा है गंदगी से भरा हुआ है! कचरा इतना गंदा भरा पड़ा है कि देखने लायक नहीं तो बताओ उस मकान में आपको जाना है और रहना है तो उसे साफ करने में कितना मिनट लगेगा! 2 मिनट 5 मिनट 10 मिनट 15 मिनट,, एक घंटा दो घंटा कितना समय लगेगा!

क्या जल्दी साफ हो सकता है?

कम से कम 2 से 3 दिन लगेगा लंबे समय से गंदगी है तो साफ करने में समय लगेगा!

बस इसी प्रकार जो प्राणी का चित् है उसमें अनंत जन्मों से कचरा कबाड़ी भरा हुआ है! अनंत जन्मों की गंदगी को शुद्ध करने में कई जन्म लग जाते हैं कई जन्मों के साधना और भक्ति से ही चित् की शुद्धि होती है! दिन रात तपस्या करके भी एक जन्म में चित शुद्ध नहीं हो सकता!

अगर हो गया एक जन्म में तो समझ लीजिए उसने कई जन्मों से प्रयास करता आ रहा है तभी संभव है जो इस जन्म में शुरू करेगा उसे आगे कई जन्म लगेगा! इसलिए जीव को भगवान तक पहुंचने के लिए कई जन्म लग जाते हैं! जितना जल्दी चित् शुद्ध होगा उतना जल्दी भगवत प्राप्ति होती है! भगवान की प्राप्ति के लिए कोई और योग्यता नहीं चाहिए केवल चित् की शुद्धि ही चाहिए!

चित् को किसने बिगाड़ा है?

जितना अंदर जाओगे उतना परमात्मा शीघ्र मिलेंगे!

भगवान ने हमें एक आउटपुट यंत्र दिया है उसका नाम वाणी है! दो इनपुट दिए हैं एक आंखें और एक कान जो बाहर की चीजों को अंदर लाता है आउटपुट जो अंदर की चीजों को बाहर करता है वाणी! जो एक कर्म इंद्रियां है! अंदर की चीजों को बाहर करने के लिए वाणी की सहायता लेनी होती है वाणी की रचना इसीलिए हुई है अंदर के डाटा को बाहर करने के लिए भगवान ने इसे रचा है! वाणी एक बहिर्मुखी यंत्र है अगर वाणी नहीं होता प्राणी के पास तो ऑलरेडी चित् शुद्ध ही रहता! इधर की बातों को उधर,, उधर की बातों को इधर,,इधर-उधर के चक्कर में कौन पड़ी रहती है निंदा चुगली कौन करती है वाणी सेकंड मात्र भी चुप नहीं रहती! किसी किसी का लगातार चलता रहता है व्यर्थ की बातें करते रहते हैं! व्यर्थ की बातें करना सब पाप कर्म में एंट्री होता है!

वाणी मिला है सिर्फ भगवान का नाम जाप करने के लिए दूसरा और किसी कारण के लिए नहीं!

कई जन्मों के सौभाग्य से वाणी मिलता है जिसका सदुपयोग बस भगवान का नाम लेना ही है इसके अलावा कोई भी कार्य किया वाणी से तो दोबारा वाणी मिलेंगे या नहीं इसकी कोई गारंटी नहीं है!

सबसे ज्यादा पाप यही करती है वाणी! जो महापापिनी है! इसी ने बिगाड़ा है चित् को,,, बाहर के वातावरण को पकड़ पकड़ कर कहां-कहां से ढूंढ कर संसार के प्रपंच को लाकर यही अपने अंदर गंदगी भर डाली है!

जो चित् में जमा हो गया है! इसलिए चित् की शुद्धि का एकमात्र उपाय बताया गया है मौन! जिसने धारण कर लिया! उनके चित्त की शुद्धि में तनिक भी देरी नहीं है! मौन हीं तो चित् को शुद्ध करता है! जितनी बातें कम होगी उतना ही चित् शुद्ध होगा! क्रोध आया तो शांत रहो, वासना आया तो शांत रहो, लालच आया तो शांत रहो, अहंकार आया तो शांत रहो, ईर्ष्या आया तो शांत रहो हर स्थिति में बस शांत रहो हो गई चित की शुद्धि! मन में विकार आया तो उसे काटते चलो! और अपने इंद्रियों को नियंत्रण में रखते हुए भगवान का नाम लेते चलो! चित् को शुद्ध करने का यही एक उपाय है!

मौन एक अंतर्मुखी साधना है! और सबसे बड़ी साधना बड़े-बड़े ऋषि मुनियों ने इसी साधना के द्वारा मोक्ष प्राप्त किया है! बहिर्मुखी को जब तक धारण किए रहेंगे तब तक चित गंदा रहेगा! बहिर्मुखी यंत्र को तोड़कर फेंकना होगा! वाणी को! अंतर्मुखी साधना करनी होगी! मन बुद्धि इंद्रियों को खींचकर अंदर की गहराई में आत्मा में प्रवेश करना होगा! आत्मा में प्रवेश हो गए तो बस परमात्मा मिल गए! इसके लिए अंदर की गहराई में जाना होगा! जितना अंदर जाओगे जितना गहराई में जाओगे उतने परमात्मा शीघ्र मिलेंगे! परमात्मा अंतःकरण की गहराई में उनका वास है जिसे आत्मा कहते हैं जो अंतःकरण की सीमा से भी अंदर है वही आत्मा, परमात्मा का घर है!

परमात्मा तक पहुंचना है तो सबसे पहले आत्मा की गहराई में पहुंचना होगा! ध्यान साधना भक्ति और नाम जाप के द्वारा हम परमात्मा से मिल सकते हैं!

चित् क्या है?

देखिए एक छोटा सा उदाहरण से समझते हैं! कि किसी को भी समझ आ जाएगा! सरल भाषा में इसे व्यक्त करने की कोशिश कर रहे हैं!

किसी को हमने कहा कि मौन धारण कीजिए! सबसे पहले तो बातें कम कीजिए अपनी वाणी को रोकने की आदत बनाएं! अगर भगवान को प्राप्त करना है पूरे इंद्रिय को अपने अधीन बनाओ! इंद्रियां और मन को पहले जीतना होगा! पूजा पाठ भजन भक्ति कुछ भी करो कुछ नहीं होगा यह सब बाहरी फिजिकल है! अंदर की सफाई करनी होगी! यदि भगवत प्राप्ति चाहिए तो उसने संकल्प किया अब कल से बातें मैं पक्का कम करूंगा,,,! कल पूरा दिन मौन रहूंगा! यह उसने प्रतिज्ञा की! संकल्प करके रात को सो गए जब सुबह उठे तो क्या हुआ जानते हैं तुरंत उठते ही 10 मिनट बाद अपने परिवार के साथ बात करना फिर शुरू कर दिया,, प्रतिज्ञा को भूल गए! वाणी फिर अपनी असली औकात में आ गई!

कोई कितने भी प्रतिज्ञा कर ले! फिर भी इंद्रियां संयम नहीं हो सकती! क्योंकि यह उनके अनंत जन्मों की स्वभाव बन चुकी है! चित् में जमा हो चुका है इसलिए भूल जाती है और ना चाह कर भी उसे जबरदस्ती करवा देती है यही चित् का खेल है! लालच, क्रोध, वासना, अहंकार, ईर्ष्या सब इसी का खेल है!

इन सब का स्वभाव बन चुका है आदत बन चुकी है चित् में जमा हो चुका है इसलिए लाख प्रयास करने पर भी पीछा नहीं छोड़ते,,, इसी स्वभाव के कारण प्राणी फिर जन्म लेती है फिर मरती है फिर वही कार्य करती है फिर चली जाती है फिर मरती है बस ऐसे ही चक्र चलता रहता है इसी अपने स्वभाव के कारण उनका बार-बार जन्म होता है!

जो प्राणी को जो-जो चीजों की आदत है वह उनके अनंत जन्म की आदत है! बात करने की,,, विषयों में फंसने की,,, इधर-उधर भटकने की उनको आदत पड़ चुकी है!

प्राणी अपने इंद्रियों से हार चुकी है यह समझ ली है कि हम नहीं कर सकते,, मोह माया को नहीं छोड़ सकते! इसलिए अपने मन बुद्धि को संसार में फंसा डाली है,, और चित को बिगाड़ दिया है इसका परिणाम यही होगा कि आगे उनको अनंत बार जन्म लेना पड़ेगा और मरना पड़ेगा उनकी मुक्ति कभी संभव नहीं,,,

जिनका चित बहुत बुरी तरह बिगड़ा हुआ है! इसलिए नियंत्रण कर पाना उनके लिए अत्यंत कठिन है! ,,,

महत्वपूर्ण बातें:-

प्राणी एक विचार भी करता है हंसता भी है कुछ सोचता भी है तो वह अपने पूर्व जन्म के संस्कार वश होकर वह कार्य करता है! जो कुछ भी करेगा अपने पूर्व जन्म के संस्कार के द्वारा ही करेगा! अन्य कुछ भी अलग नहीं उनके संस्कार का साक्षी परमात्मा अंदर विद्यमान है! प्रत्येक जीव के बही खाता को पकड़कर भगवान सबके अंदर बैठे हुए हैं! एक एक जीव के अंदर परमात्मा का वास है! दो प्राणी के संस्कार को इधर-उधर होने नहीं देते,, वही संभाल कर रखते हैं और उनके संस्कार के अनुसार जीव को अलग-अलग शरीर में उनका साक्षी परमात्मा उनको भ्रमण कराते हैं! अपने अनुसार कुछ भी प्लस माइनस नहीं करते,,,,,

जीव के उनके स्वभाव के अनुसार,,,,,

भगवान श्री कृष्ण गीता में इस बात को बताया है!

आत्मा क्या है?

आत्मा को अगर ऊर्जा समझे तो आत्मा एक प्रकार की ऊर्जा है वह अपने मुख्य ऊर्जा स्रोत से निकली है

जिन्हे परमात्मा कहते है। जैसे की सूर्य। ऊर्जा कभी भी नष्ट नहीं होती सिर्फ अपने एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती रहती है। त्वरित क्षीण अवश्य होता है लेकिन ऊर्जा पूरी तरह से नष्ट कभी नहीं होती है। ऊर्जा का क्षीण या प्रवल होना उसके वर्त्तमा न के कर्मो पर निर्भर करता है और क्षीण या प्रवल होने से विविध योनियों में जन्म लेता रहता है।

शुभाशुभ कर्मो का फल भोगते हुए कई प्रका र के उतार-चढावों को पार करना मानो उस ऊर्जा की नियति बन जाती है। इसके साथ-साथ अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ओलावृष्टि, सुनामी, बाढ़, भूकम्प आदि दैविक तापों उसे सताते रहते हैं, मनुष्य को उनसे मुक्ति नहीं मिलती जब तक वह इन सब को भोग नहीं लेता।

सांसारिक विघ्न-बाधाएँ भी उसे कदम-कदम पर डराती रहती हैं और तब मनुष्य विवश होकर अपने खोल में एक कछुए की भाँति सिमट जाता है। इसे ही वह अपने भाग्य का फैसला मानकर अपना सर झुक लेता है।

चित् क्या है?

चित् क्या है मन और चित् दोनों अलग-अलग तत्व है! विचार शक्ति इच्छा शक्ति संकल्प शक्ति मन है तो आदत स्वभाव चित् है जैसे देखिए चित् क्या है झूठ बोलने की आदत क्रोध करने की आदत कामवासना की आदत लालच करने की आदत अहंकार करने की आदत ईर्ष्या करने की आदत वही चीजों को बार-बार देखने सुनने की आदत एक दूसरे के संगत में रहने की आदत यही आसक्ति का बंधन है!

जो भी अच्छी बुरी आदतें हैं वही चित् है और चित् का संबंध हजार लाख जन्मों से नहीं है अनंत जन्मों से है! शरीर बदलता है जन्म नया होता है पर चित संस्कार वही रहता है जो अनंत जन्मों से जिसकी जैसी आदत है! चित् कभी परिवर्तन नहीं होते सदा याद रहे! जीव जिस शरीर में जाएगी उनकी वैसी ही आदत रहेगी!

जीवन में लड़ाई झगड़ा क्यों होती है?

कारण:- विपरीत संस्कार (मैं भाव)

बहुत ही सुंदर प्रसंग अंत में बताया गया है कि इस प्रसंग से हमें क्या शिक्षा मिलती है? इसलिए पूरा पढ़ें-

एक घर में पति-पत्नी की लड़ाई चल रही है! पति समझ रहा है की पत्नी गलत है और पत्नी समझ रही है की पति गलत है! पति कह रहा है उनकी पत्नी कभी प्रेम व्यवहार से नहीं रहती चिल्लाती रहती है तो मैं क्यों उनके साथ प्रेम व्यवहार से रहूं,,,

पत्नी भी यही कह रही है जब उनके मन में मेरे लिए कड़वाहट है तो मैं कैसे उनके साथ प्रेम व्यवहार करूं! दोनों के अंदर प्रतिकूलता है इसलिए लड़ाई बढ़ जाती है! जब दोनों के अंदर अहंकार बढ़ गया हो तो घर कैसे चलेगा? एक को तो विनम्र होना पड़ेगा! अहंकार ही तो हमें अपनी गलती का आभास होने नहीं देता! सबको गलत समझता है तुम गलत हो यह गलत है वह गलत है और मैं अच्छा हूं स्वयं को अच्छा समझना यही अहंकार का मूल कार्य है!

पत्नी ने कह दिया पति को घर से निकल जा तो उसने तुरंत छोड़कर निकल गया! क्षमा मांग लेता तो क्या हो जाता! पर नहीं उनका अहंकार कैसे झुकने देगा!

उनके बच्चे ने उनसे कहा जब दोनों के बीच अहंकार रहेगा! तो कैसे घर चलेगा? एक को तो विनम्र होना पड़ेगा! बच्चों ने माता जी को समझाया माताजी आप चुप रहो पापा को क्षमा कर दो! लड़ाई मत करो शांत हो जाओ!

माताजी ने अपने बच्चों को कह दिया अपने पिता को समझाओ मेरी क्या गलती है? जिसमें मुझे समझा रहे,, उनको क्यों नहीं बोल रहे? घर में कुछ खाने की व्यवस्था नहीं करता और अकड़ मारता है मैं कैसे सहन करूं!

बच्चों ने अब माता को छोड़कर अपने पिता को समझाया आप चुप रहे,, माता जी को क्षमा कर दो और उनके साथ प्रेम से रहो! उसने भी कह दिया अपनी माता जी को समझाओ जाकर मेरी गलती नहीं उनकी गलती है! उनको जाकर कह दो पहले कि घर में शांत रहे! जब दोनों और अहंकार है तो प्रेम कैसे टिक सकता है? किसी से मोह करना प्रेम नहीं है किसी की विपरीत संस्कार को स्वीकार कर लेना और उसे क्षमा कर देना यही प्रेम है!

ऐसा होता है अहंकार कोई अपनी गलती मानना नहीं चाहता! कलयुग की यही स्थिति है कैसे मिलेंगे? भगवान ऐसी स्थिति में! अंतःकरण में तो चारों तरफ अहंकार का साया है! इसलिए सबसे प्रेम व्यवहार से रहे! अहंकार से ही तो झगड़ा लड़ाई बढ़ जाता है कोई हमारे साथ बुरा व्यवहार कर भी रहा है तो हमें उनके साथ अच्छा व्यवहार करना है! वही तो महान है! जो बुरे के साथ अच्छा व्यवहार करता है! बुरे के साथ बुरे व्यवहार करने वालों की संख्या तो करोड़ों है

परंतु बुरे के साथ अच्छे व्यवहार करने वालों की संख्या कितनी है? भगवान कह रहे हैं मेरे लिए अधिक महत्वपूर्ण इस बात की है कि बुरे के साथ तुम कितने अच्छे व्यवहार कर रहे?

शिक्षा:- भगवान ने एक ही बात कहा है- श्रेष्ठ वही है जो प्रतिपुलता को गले लगाता है! उन्हीं को मैं मिलता हूं! इस प्रसंग से हमें क्या शिक्षा मिलती है! भगवान ने स्पष्ट बता दिया है कि अगर मुझ तक पहुंचना चाहते हो तो पहले यह कार्य तुम्हें करने होंगे!

मैं भक्ति ज्ञान, ध्यान इन सब से नहीं मिलता मैं मिलता हूं सिर्फ इसी भाव से! जब अंत: करण अहंकार रहित हो जाता है! जब मैं मिट जाता है! भगवान कह रहे-

मुझे पाना चाहते हो तो पहले यह करो!

जो तुमसे बुरा व्यवहार कर रहा है तुम उनके लिए अच्छे व्यवहार करो जो तुम्हारे लिए कांटे बो रहा है तुम उनको पुष्प माला पहनाओ! जो तुम्हारे साथ कटु वचन से बात करें तुम उनके साथ मीठे वचन से बात करो!

हमने कोई गलती नहीं की फिर भी किसी ने कह दिया तुम्हारी गलती है तो स्वीकार कर लो कि मेरी ही गलती थी हमें क्षमा कर दो! हर किसी से क्षमा मांगते चलो दिमाग में भर लो कि हमारी गलती है हमारी गलती है हर समय बना कर रखो,,, हम पाप आत्मा है अपने को स्वयं को समझते चलो!

हम हर समय गलती कर रहे! बिना गलती के किसी ने आकर दो झापड़ मार दिया तो बिल्कुल चुपचाप सह लो! इसी उद्देश्य से कि वह है जो मुझे हर पल देख रहा है! इसलिए कभी अहंकार को ना आने दे यही कोशिश रहे! अहंकार आया तो भगवान चले गए!

इसलिए गोपी गीत की रचना हुई ब्रज की गोपियों ने रो-रो कर भगवान को पुकारा तब भगवान फिर से आए अहंकार में भगवान चले जाते हैं! जब कोई भक्त अहंकार रहित हो जाता है तो भगवान शीघ्र उन्हें मिल जाते हैं! उनको शीघ्र ही अपना लेते हैं!

जय श्री राधे

भक्ति खंड

घातक रोग का एकमात्र उपचार

शरीर में यदि बहुत बड़ा घातक रोग हो गया हो जिसका कोई इलाज नहीं बड़े से बड़े डॉक्टर चाहे अमेरिका का बहुत बड़ा डॉक्टर हो,,,, इस मंत्र के सामने सब फेल है! यह मंत्र नहीं महामंत्र है जिसने इसकी महिमा जान ली! चार वेद और 18 पुराण में ऐसा कोई मंत्र नहीं जिस मंत्र का मुकाबला कोई दूसरा मंत्र कर सके!

कहा गया है जितने भी मंत्र है सब इससे नीचे है! इस मंत्र की शक्ति अपार है! कितने भी बड़े रोग हो,, यजुर्वेद में इसकी महिमा बताई गई है! और वेद कहते हैं- जो अपने अंतःकरण में इस महामंत्र को प्रत्येक सेकंड धारण करके रखता है! रोग उनके शरीर को कभी छूने के लिए डरती है! स्वयं भगवान रोगों के स्वामी शिव जी ने कहा है! भगवान महादेव रोगों के ईश्वर है! शरीर में रोग उनकी ही परमिशन से आते हैं! जानिए कौन सा महामंत्र?- वह मंत्र है- महामृत्युंजय मंत्र,,, आज से अभी से इस महामंत्र को धारण कर ले!

राधा और कृष्ण एक ही है!

अधिकतर लोगों को यह भ्रम है की राधा और कृष्ण दोनों को विश्व के अधिकांश प्राणी अलग-अलग समझ बैठे हैं! यह बिल्कुल भी नहीं जानते कि दोनों एक ही परम तत्व है जिसने उस परब्रह्म परमात्मा ने लीला करने के लिए दो रूप धारण किया है! परम तत्व श्री कृष्ण है! जैसे हमारे इस शरीर के अंदर आत्मा का वास है ऐसे ही उस परम तत्व परमात्मा श्री कृष्ण के अंदर भी आत्म तत्व विद्यमान है! जैसे प्रत्येक जीव को अपने आत्मा से ही प्यार है! ऐसे ही उस परब्रह्म को भी अपने आत्मा से प्रेम है! परम तत्व एक है! उन्होंने प्रेम लीला करने के लिए अपनी आत्मा को एक रूप दिया है उसी का नाम श्री राधा रानी है! वही राधा तत्व है! अब इस भ्रम को हटा दें दोनों एक ही हैं! जैसे पुष्प और सुगंध अलग नहीं हो सकते! ऐसे ही राधा और कृष्ण एक परम तत्व है!

मन का मंदिर

मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे चर्च जहां कोई अधिक समय तक नहीं रह सकता या तो उसे बंद कर दिया जाएगा आधी रात को वहां जाने नहीं दिया जाएगा! क्योंकि वह अपना नहीं उनके चक्कर में ना रहो! कभी भी वहां नहीं जा सकते! कोई भी समय वहां नहीं जाया जा सकता!

इसलिए भगवान ने हमें एक ऐसा मंदिर दिया है जहां 24 घंटे हम भगवान के दरबार में जा सकते हैं और आधी रात को जब समय मिले तब वहां जा सकते हैं और उनके पास रह सकते हैं भगवान ने इतना श्रेष्ठ मंदिर हमें दिया है वह है-

मन का मंदिर जहां कोई दरवाजा नहीं कोई गेट नहीं! जब चाहे भगवान के यहां जा सकते हैं कोई मना करने वाला नहीं! यही एक पर्सनल मंदिर है! जो भगवान को अत्यंत प्रिय है! जितना प्रिय बाहर का मंदिर नहीं है! उतना उन्हें मन का मंदिर प्रिय है!

एक जगह बैठकर पूरे तीर्थ का चक्कर लगा लो बस सोचो मैं वृंदावन में बांके बिहारी के सामने खड़ा हूं!

भगवान कहते हैं- तुम्हें आने की जरूरत नहीं तुम बस सोचो! मेरे अनुसार तुम मेरे पास आ ही गए! मैं मन के संकल्प को ग्रहण करता हूं! तुम आ सको या नहीं कैसे आओगे? इससे मुझे कोई मतलब नहीं!

एक जगह बैठकर दीन हीन भाव जो मेरा सच्चा ध्यान लगाता है मैं स्वयं अपना धाम छोड़कर उनके पास चला जाता हूं! और जो मेरे धाम आया है उनका ध्यान कहीं और लगा है! तो उसे वही फल मिलेगा जहां उनका ध्यान लगा है! मैं तो केवल मन को देखता हूं ना तन को ना धन को! किसका मन कहां लगा है? भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं- जिस भाव से जो मुझे याद करता है मैं भी उन्हें उसी भाव से उनको याद करता हूं! जो मुझे नहीं भूलता मैं भी उन्हें नहीं भूलता! जो जितना याद करता है मुझे मैं भी उसे उतना ही याद करता हूं!

मुझे वश में करना चाहते हो तो पहले अपने मन को वश में कर लो! संसार को खरीदने के लिए धन चाहिए परंतु मुझे खरीदने के लिए सिर्फ मन जो खरीदना चाहता हो मुझे वह खरीद ले! पर उन्हें मेरी अपनी कीमत देनी होगी! जो मेरा कीमत है!-

!!!!!मन का भाव!!!!!

हरे कृष्ण जय श्री राधे

श्री प्रिया जी की नामावली

****

श्री हित हरिवंश संप्रदाय प्रेमानंद बाबा जी द्वारा रचित लाडली किशोरी की नामावली

जिसे प्रत्येक दिन करने से वाणी पर इन नामो को लेने से भगवान श्री कृष्ण की विशेष कृपा प्राप्त होती है! और अंत में उसे गोलोकधाम (परमधाम) की प्राप्ति होती है!

1. श्री राधा,,,, 2. नित्य किशोरी,,,,, 3. वृन्दावन विहारिणी,,,, 4. बनराज रानी निकुंजेश्वरी,,,, 5. रूप रँगीली,,,,, 6. छबीली,,,, 7. रसीली,,,,, 8. रस नागरी,,,,, 9. लाडिली,,,,, 10. प्यारी सुकुंवारी,,,,, 11. मोहनी,,,, 12. लाल मुखजोहनी,,,, 13. मोहन मन मोहनी,,,,,, 14. रति विलास विनोदनी,,,,, 15. लाल लाड़ लडावानी,,,, 16. रंग केलि बढ़ावनी,,,, 17. सुरत चंदन चर्चिनी,,,,, 18. कोटि दामिनी दमकनी,,,,, 19. लाल पर लटकनी,,,,, 20. नवल नासा चटकनी,,,,, 21. रहसि पुंजे वृन्दावन प्रकासिनी,,,,, 22. रँग विहार विलासिनी,,,,, 23. सखी सुखनिवासिनी,,,, 24. सौंदर्य रासिनी,,,,, 25. दुलहिनी,,,,,, 26. मृदु हांसिनी,,,,, 27. प्रीतम नैन निवासिनी,,,,, 28. नित्यानन्द दारसिनी,,,,29. उरजनी पिय परसिनी,,,,, 30. अधर सुधारस बरसिनी,,,,, 31. प्राणनि रस सरसनी,,,,, 32. रँग विहारनि,,,,,, 33. नेह निहारनि,,,,, 34. पिय हित सिंगार सिंगरिनी,,,, 35. प्यारे सों प्यारे को ले उर धारनि,,,,,, 36. मोहन मैन विथा निवारिनी,,,,,, 37. जानि प्रवीण उदार संभारनी,,,, 38. अनुराग सिन्धे,,,,, 39. स्यामा,,,,, 40. बामा,,,,, 41. भामा,,,, 42. भाम,,,,, 43. भांवती,,,,,, 44. जुवतिन जूथ तिलका,,,,, 45. वृन्दावन चंद्र चंद्रिका,,,,, 46. हांस परिहांस रसिका,,,, 47. नवल रंगीनी,,,,,,, 48.अलकावली छवि फंदिनी,,,,, 49. मोहन मुसकिनी मंदिनी,,,,, 50.

सहज आंनद कंदिनी,,,,, 51. नेह कुरंगिनी,,,,,, 52. नैनविसाला,,,,, 53. महामधुर रस कंदिनी,,,,, 54. चंचल चित्त आकर्षिणी,,,,, 55. मदन मान खंडिनी,,,,, 56. प्रेम रंग रंगिनी,,,,,, 57. बंक कटाक्षनी सकल विद्या विच्छिनी,,,,,, 58. कुँवर अंक विराजनी,,,, 59. प्यार पट निवाजनी,,,,,, 60. सुरत समर दल साजिनी,,,,, 61. मृगनैनी,,,,, 62. पिकबैनी,,,,, 63. सलज्ज अंचला,,,,, 64. सहज चंचला,,,,,, 65. कोक कलानि कुशला,,,,, 66. हाव भाव चपला,,,,,, 67. चातुर्य चतुरा,,,,,, 68. माधुर्य मधुरा,,,,, 69. बिनु भूषण भूषिता,,,,,, 70. अवधि सौन्दर्यता,,,,,,, 71. प्राण वल्लभा,,,,,, 72. रसिक रवनी,,,,, 73. कामिनी,,,,,, 74. भामिनी,,,,,, 75. हंस कलि गामिनी,,,,,, 76. घनश्याम अभिरामिनी,,,,, 77. चंद विपिनी,,,,, 78. मदन दवनी,,,,, 79. रसिक रवनी,,,,, 80. केलि कमनी,,,,, 81. चित्तहरनी,,,,, 82. लाल उर पर चरणधरनी,,,,,, 83. छवि कंज वदनी,,,,,, 84. रसिक आंनदिनी,,,,,, 85. रूप मंजरी,,,,,, 86. सौभाग्य रसभरी,,,,,, 87. सर्वांग सुंदरी,,,, 88. गौरांगी रतिरस रँगी,,,,, 88. विचित्र कोक कला अंगी,,,,, 89. छवि चंद वदनी,,,,, 90. रसिक लाल बंदनी,,,,, 91. रसिक रंग रंगिनी,,,,, 92. सखिनु सभामंडिनी,,,,,, 93. आनंद कंदिनी,,,,,, 94. चतुर अरु भोरी,,,,,, 95. सकल सुख रासि सदने,,,,,,

दोहा – प्रेम सिंधु के रत्न ये , अद्भुत कुँवरि के नाम ।

जाकी रसना रटे 'ध्रुव' सो पावे विश्राम ।।

ललित नाम नामावली , जाके उर झलकन्त ।

ताके हिय में बसे रहै , स्यामा स्यामल कन्त ।।

सभी प्रभु प्रेमियो को प्रेम भरी राधे राधे –

ध्रुव दास द्वारा रचित बयालीस लीला

महान किशोरी भक्त ध्रुव दास द्वारा रचित ब्रजभाषा में बयालीस लीला

सहज सुभाव परयौ नवल किशोरी जू कौ,

मृदुता, दयालुता, कृपालुता की रासि हैं ।

नैकहूं न रिस कहूं भूले हू न होत सखि,

रहत प्रसन्न सदा हियेमुख हासि हैं ।

ऐसी सुकुमारी प्यारे लाल जू की प्रान प्यारी,

धन्य, धन्य, धन्य तेई जिनके उपासिहैं ।

हित ध्रुव ओर सुख जहां लगि देखियतु,

सुनियतु जहां लागि सबै दुख पासि हैं ।

- श्री ध्रुवदास, श्रृंगार शत, बयालीस लीला

श्री राधा रानी के स्वभाव का वर्णन करते हुए श्री ध्रुवदास जी कहते हैं कि हमारी किशोरीजी का स्वभाव अत्यंत ही सरल और मधुर है और कभी भी इनको क्रोध नहीं आता और निरंतर इनके चेहरे पर मृदु मुस्कान रहती है। यह मृदुता, कृपालुता और दयालुता की साक्षात मूर्ति एवं राशि हैं। यह प्यारे श्री कृष्ण की प्राण से भी अधिक प्यारी हैं और राधा रानी के उपासक धन्य, धन्य, धन्य हैं। ध्रुवदास जी के शब्दों में, ऐसी राधारानी कि उपासना को छोड़कर अन्य संपूर्ण सुख, दुख रूप ही हैं।

संत:श्री हित ध्रुवदास

ग्रंथ: बयालीस लीला

धारा और राधा

जो प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर बहे उसे कहते हैं धारा परंतु जो प्रवाह विपरीत नीचे से ऊपर की ओर बहे उसे कहते हैं राधा!

गोलोक परमधाम में जल का प्रवाह नीचे से ऊपर बहती है परंतु पृथ्वी में जल प्रवाह ऊपर से नीचे बहती है परमधाम में विपरीत बहता है! कहा गया है इसका संकेत यह है प्रेम और भक्ति की धारा जो नीचे से ऊपर खींच ले जाती है वही है राधा लेकिन जो ऊपर से नीचे प्रवाहित होती है वह है केवल धारा,,,,, राधा नहीं! राधा वह है जो जीव को खींचकर नीचे से ऊपर ले जाए ब्रह्मतत्व से मिला दे उनका भक्ति, प्रेम प्रदान करें उसे नीचे से खींच कर ऊपर ले जाए वही है राधा वही है हमारी लाडली श्री राधा रानी! यही है राधा तत्व! जो प्रेम, करुणा और कृपा की मूर्ति है!

भगवान श्रीकृष्ण के प्राकट्य कथा

भगवान श्री कैसे प्रकट हुए थे? लोग कहते हैं जन्माष्टमी पर यह जन्माष्टमी नहीं भगवान जन्म नहीं लेते! गर्भ में नहीं आते! परमात्मा जन्म मृत्यु से परे है केवल प्रकट होते हैं यह रोहिणी नक्षत्र पूर्ण ब्रह्म परमात्मा का अवतार अष्टमी है!

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कहते हैं, क्योंकि यह दिन भगवान श्रीकृष्ण का जन्मदिवस माना जाता है। इसी तिथि की घनघोर अंधेरी आधी रात को रोहिणी नक्षत्र में मथुरा के कारागार में वसुदेव की पत्नी देवकी के गर्भ से भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था। यह तिथि उसी शुभ घड़ी की याद दिलाती है और सारे देश में बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है।

जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण की जन्म संबंधी कथा भी सुनते-सुनाते हैं, जो इस प्रकार है-

'द्वापर युग में भोजवंशी राजा उग्रसेन मथुरा में राज्य करता था। उसके आततायी पुत्र कंस ने उसे गद्दी से उतार दिया और स्वयं मथुरा का राजा बन बैठा। कंस की एक बहन देवकी थी, जिसका विवाह वसुदेव नामक यदुवंशी सरदार से हुआ था।

एक समय कंस अपनी बहन देवकी को उसकी ससुराल पहुंचाने जा रहा था।

रास्ते में आकाशवाणी हुई- 'हे कंस, जिस देवकी को तू बड़े प्रेम से ले जा रहा है, उसी में तेरा काल बसता है। इसी के गर्भ से उत्पन्न आठवां बालक तेरा वध करेगा।' यह सुनकर कंस वसुदेव को मारने के लिए उद्यत हुआ।

तब देवकी ने उससे विनयपूर्वक कहा- 'मेरे गर्भ से जो संतान होगी, उसे मैं तुम्हारे सामने ला दूंगी। बहनोई को मारने से क्या लाभ है?'

कंस ने देवकी की बात मान ली और मथुरा वापस चला आया। उसने वसुदेव और देवकी को कारागृह में डाल दिया।

वसुदेव-देवकी के एक-एक करके सात बच्चे हुए और सातों को जन्म लेते ही कंस ने मार डाला। अब आठवां बच्चा होने वाला था। कारागार में उन पर कड़े पहरे बैठा दिए गए। उसी समय नंद की पत्नी यशोदा को भी बच्चा होने वाला था।

उन्होंने वसुदेव-देवकी के दुखी जीवन को देख आठवें बच्चे की रक्षा का उपाय रचा। जिस समय वसुदेव-देवकी को पुत्र पैदा हुआ, उसी समय संयोग से यशोदा के गर्भ से एक कन्या का जन्म हुआ, जो और कुछ नहीं सिर्फ 'माया' थी।

जिस कोठरी में देवकी-वसुदेव कैद थे, उसमें अचानक प्रकाश हुआ और उनके सामने शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किए चतुर्भुज भगवान प्रकट हुए। दोनों भगवान के चरणों में गिर पड़े। तब भगवान ने उनसे कहा- 'अब मैं पुनः नवजात शिशु का रूप धारण कर लेता हूं।

तुम मुझे इसी समय अपने मित्र नंदजी के घर वृंदावन में भेज आओ और उनके यहां जो कन्या जन्मी है, उसे लाकर कंस के हवाले कर दो। इस समय वातावरण अनुकूल नहीं है। फिर भी तुम चिंता न करो। जागते हुए पहरेदार सो जाएंगे, कारागृह के फाटक अपने आप खुल जाएंगे और उफनती अथाह यमुना तुमको पार जाने का मार्ग दे देगी।'

उसी समय वसुदेव नवजात शिशु-रूप श्रीकृष्ण को सूप में रखकर कारागृह से निकल पड़े और अथाह यमुना को पार कर नंदजी के घर पहुंचे। वहां उन्होंने नवजात शिशु को यशोदा के साथ सुला दिया और कन्या को लेकर मथुरा आ गए। कारागृह के फाटक पूर्ववत बंद हो गए।

अब कंस को सूचना मिली कि वसुदेव-देवकी को बच्चा पैदा हुआ है।

उसने बंदीगृह में जाकर देवकी के हाथ से नवजात कन्या को छीनकर पृथ्वी पर पटक देना चाहा, परंतु वह कन्या आकाश में उड़ गई और वहां से कहा- 'अरे मूर्ख, मुझे मारने से क्या होगा? तुझे मारनेवाला तो वृंदावन में जा पहुंचा है। वह जल्द ही तुझे तेरे पापों का दंड देगा।' यह है कृष्ण जन्म की कथा।

भागवत स्थल पर बैठ जाने से ही कल्याण नहीं होगा!

श्रीमद् भागवत महापुराण या शिव महापुराण केवल उस स्थल पर बैठ जाने से ही कल्याण नहीं होगा! वहां पर जाने के बाद देखा है- लोगों की मन और चित् इधर-उधर भटकता रहता है जब कथा वाचक की बातों को एक-एक शब्दों को ध्यान लगाकर सुना जाए शुरू से पूरे अंत तक तभी उसका कल्याण होगा! धुंधकारी महान पाप आत्मा का तभी

कल्याण हुआ था जब उन्होंने बांस पर बैठकर एक चित् होकर ध्यान लगाकर पूरे 7 दिन कथा श्रवण की थी! अनंत जन्मों की चित् की दुष्प्रवृत्ति जब तक नहीं बदलेगी! तीर्थ धाम चाहे चले जाओ चाहे मंदिर चाहे भागवत,, चित्त की दशा ही नहीं बदली तो सब उनका व्यर्थ है! इस कलयुग में जीव का कल्याण एकांत युक्त होकर नाम जाप करने से ही होगा! इधर-उधर भटकने से नहीं!

सबसे बड़ी साधना

अपने मन को स्थिर करना ही सबसे बड़ी साधना है पूजा पाठ कर रहे मंत्र कर रहे मन वैसा का ही वैसा है तो कोई काम का नहीं; क्योंकि इनकी चंचलता प्रवृत्ति इधर-उधर भटकने की इसको माया से बचा कर रखो माया इनका मित्र है भक्ति और ज्ञान इनका शत्रु इससे वह दूर भागती है!

क्योंकि अनंत जन्मों से माया का नशा चढ़ा है इनको इसको गहरी आदत है! एक दो हजारों जन्म की बात नहीं जो इतनी आसानी से अपने वश में हो जाए! अनंत जन्मों कि इनको आदत है! जब तक अभ्यास करके उस आदत को मिटाया न जाए तब तक वह समाप्त नहीं हो सकता जहां जन्म होगा शरीर बदल जाएगा पर हमारा मन वही रहेगा!

फिर जहां भी जाएगा शैतानी फिर वैसा ही करेगा! जिसका मन बिना साधना के शांत हो गया है क्यों हुआ है क्योंकि उसने कई जन्मों से साधना किया हुआ है मन को स्थिर करने का एकमात्र उपाय!

अभ्यास, अंतरध्यान,,और नाम जाप!

कृपा क्या है?

भक्त पूछते हैं भगवान से प्रभु कैसे पहचाने कि हम पर आपकी कृपा है या नहीं भगवान बोले सुनो मेरी कृपा क्या है?

प्राणी बारंबार जन्म लेती है और मरती है! प्रत्येक जीव अनंत जन्मों से मेरे से विमुख है! माया में लिपटी हुई है जब तक मेरी कृपा नहीं होती बुद्धि की अज्ञानता नहीं जाती! जिस जन्म में बुद्धि सत्य को जान लेती है! वही मेरी कृपा है!

1. बुद्धि से अज्ञान का नष्ट होना! आत्मज्ञान की प्राप्ति होना!

2. उनका मन बुद्धि चित् मेरी तरफ आता है जब मैं कृपा करता हूं तो उनके मन बुद्धि को खींचकर संसार से अपने मार्ग पर लाकर खड़ा करता हूं जिसका मैं वास्तविक कल्याण चाहता हूं हर किसी पर मेरी कृपा नहीं होती!

मेरी कृपा होते ही उसे केवल सत्य दिखाई पड़ता है!

भक्ति किसे कहते हैं?

भक्ति किसे कहते हैं? एक सच्चा भक्त का लक्षण क्या होता है?

एक भगवान श्री कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे! प्रतिपल निरंतर उनकी वाणी पर कृष्ण नाम की ध्वनि चलती रहती थी! हर पल कृष्ण के ध्यान में मग्न रहते थे! लेकिन उनके जीवन मे चारों तरफ से मुसीबत घेरे रहते थे! दुख कष्ट उनका पीछा नहीं छोड़ते! अपने नगर में सबसे निर्धन और रोगी वह थे! पर भगवान के नाम में इतने मस्त रहते थे कि उन्हें दुख का अनुभव होता ही नहीं था! उसे लगता ही नहीं था कि मेरे जीवन में दुख है! उन्हें यही लगता था कि पूरे जगत में सबसे बड़ा सखी अगर कोई है तो वह हम हैं! क्योंकि सर्वशक्तिमान श्री कृष्ण हमारे साथ है! एक दिन वह कहीं जा रहे थे तो एक सांसारिक व्यक्ति रास्ते में उनको मिले! उन्होंने रोक कर उस भक्त से कुछ बात करने लग गए!

उनके नगर के व्यक्ति उनका पूछे-

भाई तुम दिन रात भगवान का नाम लेते हो! कितने वर्ष हो गए तुम्हें भगवान का नाम लेते तुम्हारे दुख कष्ट क्या भगवान को दिखाई नहीं देता! तुम्हारा घर भी ठीक से नहीं है शरीर भी स्वस्थ नहीं है और गरीबी की तो बात ही क्या है? क्या मिलता है तुम्हें भगवान की भक्ति करने से! नहीं करना चाहिए तुम्हें जब उन्हें तुम्हारा परवाह नहीं!

छोड़ दीजिए उनका मार्ग में! जिसके लिए कर रहे हो बताओ मुझे! तुम इतनी उनकी भक्ति कर रहे हो उन्होंने तुम्हें क्या दिया है? कुछ भी तो नहीं दिया!

वह भक्त देखो कितनी सुंदर बात कही है-

प्रभु जी आप मुझे पहले यह बताइए

आप हमें कह रहे हैं कि उन्होंने क्या दिया है? आपको उस परमेश्वर ने अनंत जन्मों में सांसे दी! अनंत बार मनुष्य योनि में जन्म दिया! सही सलामत आंख वाणी हाथ पैर दिए! बताओ आपने अभी तक उनके लिए क्या किया? तनिक स्वार्थ की सीमा से बाहर निकल कर सोचो कि उनका एहसान हम पर कितना है?

प्रभु जी भक्ति स्वार्थ का विषय नहीं है! जो निस्वार्थ हो वही भक्ति है अनंत जन्मों में जो उस परमात्मा का हम पर इतने एहसान है उसे कभी नहीं चुकाया जा सकता! चाहे हम कितने भी उनका नाम ले गुणगान करें! जब वह परमात्मा निस्वार्थ रूप से हमें प्रतिदिन 24,000 सांसे देते हैं तो क्या हमारा कर्तव्य नहीं है कि उनका एक दिन में कम से कम 24 नाम तो ले!

उस व्यक्ति की आंखें खुल गई, उनकी यह बातें सुनकर और भगवान की भक्ति में लीन हो गए! यही एक सच्चा भक्त का लक्षण है! उनकी दृष्टि इसमें नहीं रहती कि भगवान ने हमें क्या दिया? बल्कि इसमें रहता है कि हमने भगवान के लिए क्या किया?

शिक्षा:- हमें इस प्रसंग से यह शिक्षा मिलती है कि जीवन में चाहे कितने भी विकट परिस्थिति आ जाए! भगवान का नाम नहीं छोड़ना है! बालक धुन जैसे मीराबाई प्रहलाद जैसे मन में अटल विश्वास रखकर कि वह मेरे साथ है! भगवान के मिलन में देरी नहीं है! फिर देरी किस बात की है? दृढ़ विश्वास होना अभी हमारा बाकी है! जिस दिन हो गई तो वही जीव और ब्रह्म का मिलन है!

@ जयप्रकाश वैष्णव

भक्ति क्या है?

पूजा पाठ व्रत उपवास धर्म कर्म सेवा यह सब भक्ति नहीं है,,, अपने मन को निरंतर परमात्मा से जोड़कर रखना प्रति क्षण अपने मन को भगवान में अटैच रखना यही भक्ति है! वाणी पर निरंतर उनके नाम चलते रहना, एक सेकंड भी उनको ना भूलना,,, संशय रहित होकर अपनी सारी बाग डोर उस पर छोड़ देना,,,अपने आप को भगवान को पूर्ण समर्पण करना,, जो स्वार्थ रहित होकर निष्काम रूप से किया जाए वही भक्ति है भक्ति के 6 प्रमुख लक्षण

1. ईश्वर से प्रेम! 2. अटल विश्वास 3. सहनशीलता 4. पूर्ण समर्पण 5. कृष्ण का निरंतर चिंतन 6. निष्कामता!

कृष्ण मिलन की तीव्र उत्कंठा

कृष्ण-भक्ति-रस-भाविता मतिः

कृत्याम यदि कुतो 'पि लभ्यते

तत्र लौल्यम् अपि मूलम् एकलम्

जन्म-कोटि-सुकृतैर न लभ्यते,

(चैतन्य चरितामृत मध्य लीला-8.70)

जब तीव्र उत्कंठा जागृत हो जाती है कृष्ण मिलन की तब उसे श्री कृष्ण की प्राप्ति होती है!

अनुवाद

"कृष्ण भावनामृत में शुद्ध भक्ति सेवा सैकड़ों और हज़ारों जन्मों में भी पुण्य कर्म करके नहीं पाई जा सकती। इसे केवल एक कीमत चुकाकर प्राप्त किया जा सकता है - यानी इसे पाने के लिए तीव्र लालच। अगर यह कहीं उपलब्ध है, तो इसे बिना देरी किए खरीद लेना चाहिए।"

पिछले दो श्लोक श्रील रूप गोस्वामी द्वारा संकलित पद्यावली (13, 14) में सम्मिलित हैं। श्लोक 69 में श्रद्धापूर्वक भक्ति सेवा का उल्लेख है, तथा श्लोक 70 में तीव्र लोभ से की गई भक्ति सेवा का उल्लेख है। प्रथम में विधि-विधान के अनुसार की गई भक्ति सेवा है, तथा दूसरे में बाह्य प्रयास के बिना भगवान की सहज प्रेममयी सेवा का उल्लेख है। इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु और रामानन्द राय के बीच वार्तालाप का मूल सिद्धांत भगवान की सहज प्रेममयी सेवा होगी। शास्त्रों के अनुसार विधि-विधान आवश्यक हैं, जब तक कि व्यक्ति की मूल सुप्त कृष्ण चेतना सहज रूप से जागृत न हो जाए। सहज क्रिया का एक उदाहरण नदियों का समुद्र में बहना है। पानी के इस प्रवाह को कोई नहीं रोक सकता। इसी प्रकार, जब किसी की सुप्त कृष्ण चेतना जागृत हो जाती है, तो वह सहज रूप से बिना किसी बाधा के कृष्ण के चरण कमलों की ओर प्रवाहित हो जाती है। इसके बाद रामानन्द राय द्वारा सहज प्रेम के आधार पर जो कुछ

भी कहा जाएगा, वह श्री चैतन्य महाप्रभु को स्वीकार्य होगा, और भगवान इस विषय पर उनसे अधिक से अधिक पूछेंगे।

भगवान अगर पूछे बताओ इन दोनों में तुम्हें क्या चाहिए?

1. पैसा 2.श्री कृष्ण,,,,
   क्या जवाब मिलेगा? पैसा ही सर्वनाश का कारण है! पैसे की चाहत किया तो समझो यही दुर्गति! जब साधक सामने पड़े हुए 50 करोड रुपए को ठुकरा कर इनको बिना देखे ही कृष्ण मिलन के लिए भाग पड़ता है! हजारों बड़े-बड़े सुंदरी अप्सरा को ठुकरा कर जब आगे बढ़ जाता है! जो ना दुख दुविधा में फसता है ना सुख सुविधा मे वही श्री कृष्ण तक पहुंच पाते हैं! पैसा सुंदर रूप प्रतिष्ठा उनकी यह माया उनकी तरफ जाने देंगे ही नहीं! जो उनकी माया को परास्त करता है उन्हीं को माया अधिपति मिलते हैं!

प्रयास ही सफलता है!

जैसे एक भक्त भगवान की मंदिर में गया है जहां शिवलिंग स्थापित है अगरबत्ती जला रहा है और वहां हवा चल रही है चार बार, पांच बार कोशिश करते हुए उनको हो गया फिर भी अगरबत्ती नहीं जल रही 10 बार कोशिश किया फिर बुझ जा रहा है 15 बार कोशिश किया फिर भी नहीं जल रहा! कोशिश करते-करते परेशान हो गए नहीं जल रहा फिर क्या करेगा?

फिर नहीं जलाएगा ऐसे ही पूजा करके चला जाएगा! साधना में कई बाधाएं आएंगी! हवा जो अग्नि को बुझा रही ऐसे ही माया,, भक्ति और ज्ञान को बुझाने में लगी है! हार ना मानिए डटे रहिए बार-बार जलाते रहें जब तक जल न जाए 20 बार कोशिश कीजिए 100 बार कोशिश कीजिए एक दिन अवश्य जलेगा! जलाना छोड़ देंगे तो काम आपका कैसे बनेगा? जीवन भगवान की परीक्षा है कसौटी है! बालक ध्रुव की तरह जो डटा रहेगा वही उनको पाएगा! जीवन एक तूफान है! प्रयास ही सफलता है!

रक्षाबंधन मुहूर्त विशेष

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को रक्षाबंधन का त्योहार मनाया जाता है. इस दिन बहनें भाई की कलाई पर प्रेम और स्नेह का रक्षासूत्र बांधती हैं. साथ ही बहनें अपनी भाइयों की लंबी उम्र की प्रार्थना भी करती हैं और भाई बदले में अपनी प्यारी बहनों को रक्षा का वचन देते हैं.

रक्षाबंधन का त्योहार इस बार 19 अगस्त 2024, सोमवार के दिन मनाया जाएगा

जानकारों की मानें तो रक्षाबंधन पर भद्रा का साया रहेगा. माना जाता है कि भद्रा जैसी अशुभ घड़ी में राखी नहीं बांधनी चाहिए

*रक्षाबंधन का पर्व श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है. पूर्णिमा तिथि इस बार 19 अगस्त की सुबह 3 बजकर 04 मिनट पर शुरू होगी और तिथि का समापन 19 अगस्त की रात 11 बजकर 55 मिनट पर होगा.

भद्रा का साया

ज्योतिषाचार्यों के अनसार, 19 अगस्त की *रात 2 बजकर 21 मिनट पर भद्रा लग जाएगी

सुबह 09 बजकर 51 मिनट से 10 बजकर 53 मिनट तक पर भद्रा पुंछ रहेगा

फिर, सुबह 10 बजकर 53 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 37 मिनट तक भद्रा मुख रहेगा

इसके बाद, भद्रा का समापन दोपहर 1 बजकर 30 पर होगा

ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक, *भद्रा को बहुत ही अशुभ समय माना जाता है और इस काल में कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए. और 19 अगस्त को दोपहर 1 बजकर 30 मिनट के बाद ही राखी बांधी जा सकती है

भद्रा काल में राखी बांधने का परिणाम

भद्रा काल में राखी बांधने का परिणाम क्या होता है? किस लिए नहीं बांधा जाता?

यह वह समय है जिसमें कोई भी शुभ कार्य करना वर्जित माना गया है! कहते हैं रावण की बहन सूर्पणखा इसी समय पर लंकापति को राखी बांधी थी और इसका परिणाम यही हुआ 1 साल के अंतर्गत रावण की मृत्यु हो गई! उसी समय से इस वक्त राखी बांधना शास्त्रों में वर्जित की गई है जिसको राखी बांधा गया है उनके लिए अशुभ हो सकता है उनका जीवन खतरे में पड़ सकता है! अगर इस समय राखी बांधा गया तो कुछ भी हो सकता है! इस टाइम को अशुभ समय कहा गया है इस वक्त ब्रह्मांड में एक बड़ा बुरे संयोग बनता है! कोई भी शुभ कार्य इस बीच में नहीं करना चाहिए!,,,,, 19 अगस्त को सुबह 2:00 से दोपहर के 2:00 बजे तक रहेगी इसके बाद भद्रा काल का समय चली जाएगी उसके बाद राखी बांधा जा सकता है 2:00 से रात 9:00 तक!

रक्षाबंधन की शुरुआत कहां से हुई है?

परंपरा कब से चली आ रही है? जानिए पूरी विस्तार से-हम चलते हैं विष्णु पुराण में और इसके साथ-साथ महाभारत में भी यह प्रचलन त्रेता युग से चली आ रही है क्या है और कैसा है? इसकी पूरी सच्चाई जानिए!

एक समय की बात है त्रेता युग की घटना है राजा बलि के अहंकार को तोड़ने के लिए भगवान नारायण माता अदिति के पुत्र के रूप में एक अवतार लिया जिसका नाम है वामन अवतार! उनके यज्ञशाला में भगवान पहुंचे और राजा बलि से कहा- मुझे तीन पग भूमि चाहिए राजा बलि ने यह बात तत्काल स्वीकार कर ली और कहा ठीक है प्रभु! हम देने को तैयार हैं दान देने का संकल्प ले लिया!

भगवान ने एक पग मे पूरी पृथ्वी को और दूसरे पग मे पूरे अनंत ब्रह्मांड को नाप लिया! अब तीसरे पग के लिए कोई जगह नहीं बची तब भगवान ने उनसे पूछा तीसरा पैर कहां रखूं राजा बलि ने कहा मेरे मस्तक पर रख दो!

भगवान विष्णु ने उनके दान से प्रसन्न होकर उन्हें रसातल का स्वामी बना दिया! राजा बलि ने भगवान से एक वरदान और यह मांगा कि मैं जब भी देखूं तो आपका दर्शन मुझे होता रहे सोते जागते हर समय आपको देखता रहूं भगवान ने कहा तथास्तु! भगवान वरदान देकर स्वयं फस गए! भगवान विष्णु को उनके रसातल में अब रहना पड़ा!

इससे माता लक्ष्मी चिंतित हो गई अब मैं अकेले कैसे रहूं? माता लक्ष्मी ने नारद को अपनी मन की बात बताई! नारद ने उन्हें सलाह दिया माता आप एक काम कीजिए! रूप बदलकर रसातल में चले जाइए और उनसे कहना रोते हुए मेरा कोई भाई नहीं है अगर वह भाई बन गए तो भाई का एक कर्तव्य है बहन को गिफ्ट देना तो आप गिफ्ट में भगवान विष्णु को ले लेना! इस तरह आपका काम हो जाएगा! अभी जाइए वहां!

माता लक्ष्मी ने जाकर ऐसा ही किया माता रोते-रोते वहां पहुंची! बली ने पूछा? क्या बात है आप रो क्यों रहे हैं? माता लक्ष्मी एक कन्या के रूप में थी! उसने कहा बली से मेरा कोई भाई नहीं है मैं क्या करूं?

बली ने कहा- मैं आपका भाई बन जाता हूं! सिर्फ कहने और बोलने से भाई बहन नहीं हो जाता इस कारण माता ने उनके बात को स्वीकार करके इस रिश्ता को पक्का करने के लिए उनकी कलाई में एक रेशम की धागा बांधी! ताकि यह रिश्ता कभी मिथ्या ना हो अपने वचनों में राजा बलि बंध जाए! उसी दिन से राजा बलि और माता लक्ष्मी भाई बहन हो गए!

तब मैया ने कहा- राजा बलि से अब आपको मुझे कुछ देने होंगे उसने कहा बोलो क्या चाहिए? तो श्री हरि को मुझे दे दो! उसने दे दिया इससे पहले से भगवान ने एक कानून बना रखा था भाई का परम कर्तव्य है अपने बहन को कुछ प्रदान करना! इसलिए राजा बलि को भगवान श्री हरि को ना चाह कर भी माता लक्ष्मी को देना पड़ा! इस तरह भगवान नारायण अपने बैकुंठ में वापस आ गए!

उसी दिन से श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को यह अनोखा दिन जो माता लक्ष्मी ने राजा बलि को एक धागा बांधी थी वही आज पावन दिन है जो त्रेता युग में घटी थी!

उसी दिन से भगवान ने यह परंपरा भारत में शुरू कर दी इसी तिथि को हर वर्ष प्रत्येक बहनों को अपने भाई की कलाई में एक धागा बांधना होगा! मंगल टीका लगाएंगे इससे उनके भाई की यह तिलक रक्षा करेगी!

और भाई को भी इस दिन वचन लेनी होगी अपने पूरे वर्ष बहन की मुसीबत में संकट आए तो उनके लिए तैनात रहना! हर विपत्ति में उनके साथ खड़े रहना! एक भाई का परम कर्तव्य है यह परंपरा भगवान श्री कृष्ण ने बनाया है! यह श्री कृष्ण का बनाया हुआ कानून है और स्वयं श्री कृष्ण ने साबित भी किया है शिशुपाल का वध करते समय उनका सुदर्शन चक्र जब वापस लौटे तो हाथ की उंगली कट गए थे तब द्रौपदी ने देखा तो बर्दाश्त नहीं कर सकी उनकी दया इतनी टूट पड़ी!

अपनी साड़ी के किनारे को फाड़ कर तुरंत भगवान की उंगली पर पट्टी बांधी! भगवान यह देखकर चकित रह गए तुमने मेरे लिए इतना किया जो यहां खबर किसी को नहीं था यह देखकर भगवान अत्यंत प्रसन्न हुए! भगवान कहते हैं- द्रौपदी अब हम तुम्हारे ऋणी हो गए!

समय आने पर एक एक धागे का कर्ज़ मैं चुकाऊंगा! भगवान को अर्पित किया गया कोई भी चीज एक पत्ता क्यों ना हो! भगवान नहीं रखते! जीव को वापस लौटा देते हैं! जब द्रोपदी का चीर हरण हुआ तो भगवान साड़ी का लाइन लगा दिया! दुशासन खींचते खींचते थक गए!

इस तरह भगवान श्री कृष्ण अपने भाई का फर्ज निभाएं! पिता, पुत्र, पति, माता सब का रिश्ता भगवान श्री कृष्ण ने निभाया है! ध्रुव, प्रहलाद के लिए पिता का,,, गोपियों के लिए पति का,,, द्रोपदी के लिए भाई का एक वृद्ध महिला भक्त थी उनके लिए पुत्र बनकर आए थे! भक्त अपने भाव से जो श्री कृष्ण को रिश्ता बना लेता है! स्वयं भगवान को कांटों पर चलकर उनकी रक्षा करते हैं!

तब भगवान ने उनके एक-एक धागा का ऋण चुकाने के लिए जब द्रोपदी पर मुसीबत आई तब उनके साथ श्री कृष्ण स्वयं आकर निभाए! राजा बलि के समय से यह परंपरा तब से त्रेता युग के बाद चली आ रही है और जब तक सृष्टि रहेगी तब तक यह रक्षाबंधन का पर्व चलता रहेगा!

भाई बहन का पवित्र पावन पर्व आप सभी को शुभकामनाएं बहन हो द्रौपदी की तरह और भाई हो तो श्री कृष्ण जैसा!!!!! **हरे कृष्ण जय श्री राधे**

मां दुर्गा स्तुति

नव दुर्गा रूपेण प्रणिपतनम

प्रथम: शैलपुत्री च

द्वितीयं ब्रह्मचारिणी नमस्तुभ्यं

तृतीयं अर्धचंद्रधारणीय चंद्रघंटा देवी प्रणांभ्यम

प्रणामी ब्रह्माण्ड रचनी मां कुष्मांडा चतुर्थकम्

स्कंदमाता जगजननी पंचमं च

षष्टः महिषासुरमर्दिनी कात्यानी च

सप्तम महागौरी शिवआर्धांगिनी नामों नम:

नवम सिद्धिदात्री मां सिद्ध सर्व करेशु सर्वदा।।

शैलपुत्री

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।

वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥

माँ दुर्गा अपने पहले स्वरूप 'शैलपुत्री' के नाम से जानी जाती हैं। पर्वतराज हिमालय के वहाँ पुत्री के रूप में उत्पन्न होनेके कारण इनका यह 'शैलपुत्री' नाम पड़ा था। वृषभ-स्थिता इन माताजीके दाहिने हाथ में त्रिशूल और बायें हाथ में कमल पुष्प सुशोभित है। यही नव दुर्गाओं में प्रथम दुर्गा हैं।

अपने पूर्वजन्म में ये प्रजापति दक्ष की कन्या के रूपमें उत्पन्न हुई थीं। तब इनका नाम 'सती' था। इनका विवाह भगवान् भगवान शंकर से हुआ था। एक बार प्रजापति दक्ष एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। इसमें उन्होंने सारे देवताओं को अपना-अपना यज्ञ-भाग प्राप्त करनेके लिये निमन्त्रित किया। किन्तु शंकर जी को उन्होंने इस यज्ञ में निमन्त्रित नहीं किया।

शिवजी के मना करने के बाद भी माता सती अपने पिता के घर बिन बुलाये चली जाती हैं। जहां उन्हे बिना बुलाये आने पर अपमानित किया जाता है। दु:खी होकर माता सती वहीं अग्निकुंड मे कूदकर अपने प्राण त्याग देती हैं। जैसे हीं भगवान शंकर को यह दु:खद समाचार मिलता है वे क्रोधित होकर पूरी सृष्टि में तांडव मचा देते हैं।

माता सती हीं अपने अगले जन्म में शैलराज हिमालय की पुत्री के रूपमें जन्म लेती हैं शैलराज की पुत्री होने के कारण वह 'शैलपुत्री' नाम से जानी जाती हैं।

दूसरी माता : ब्रह्मचारिणी

दधाना करपद्माभ्याम अक्षमालाकमण्डलू ।

देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा ।

मां दुर्गा की नव शक्तियों का दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी का है। यहाँ 'ब्रह्म' शब्दका अर्थ तपस्या है। ब्रह्मचारिणी अर्थात् तपकी चारिणी- तप का आचरण करने वाली।

कहा भी है – वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म

वेद, तत्त्व और तप 'ब्रह्म' शब्द के अर्थ हैं। ब्रह्मचारिणी देवी का स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय एवं अत्यन्त भव्य है। इनके दाहिने हाथ में जप की माला एवं बायें हाथ में कमण्डलु रहता है।

अपने पूर्वजन्म में जब ये हिमालय के घर पुत्री रूप में उत्पन्न हुई थीं तब नारद के उपदेश से इन्होंने भगवान् शंकर को पति-रूप में प्राप्त करने के लिये अत्यन्त कठिन तपस्या की थी। इसी दुष्कर तपस्या के कारण इन्हें तपश्चारिणी अर्थात् ब्रह्मचारिणी नाम जाना जाता है। नवरात्रि के दूसरे दिन माता ब्रहंचारिणी की हीं पूजा की जाती है।

तीसरी माता : चन्द्रघण्टा

पिण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता।

प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ॥

माँ दुर्गाजी की तीसरी शक्ति का नाम 'चन्द्रघण्टा' है। नवरात्रि- उपासना में तीसरे दिन इन्हीं के विग्रह का पूजन-आराधन किया जाता है। इनका यह स्वरूप परम शान्तिदायक और कल्याणकारी है।

इनके मस्तक में घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र है, इसी कारणसे इन्हें चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता है। इनके शरीरका रंग स्वर्णके समान चमकीला है। इनके दस हाथ हैं। इनके दसों हाथोंमें खड्ग आदि शस्त्र तथा बाण आदि अस्त्र

विभूषित हैं। इनका वाहन सिंह है। इनकी मुद्रा युद्धके लिये उद्यत रहनेकी होती है। इनके घण्टेकी- सी भयानक चण्डध्वनिसे अत्याचारी दानव-दैत्य-राक्षस सदैव प्रकम्पित रहते हैं।

चौथी माता : कूष्माण्डा

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिरापतमेव च।

दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे ॥

माँ दुर्गाजी के चौथे स्वरूप का नाम कूष्माण्डा है। अपनी मन्द, हलकी हँसी द्वारा अण्ड अर्थात् ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करनेके कारण इन्हें कूष्माण्डा देवी के नाम से जाना जाता है। जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार परिव्याप्त था, तब इन्हीं देवी ने अपने 'ईषत्' हास्य से ब्रह्माण्ड की रचना की थी। अतः यही सृष्टि की आदि-स्वरूपा, आदि शक्ति हैं। इनके पूर्व ब्रह्माण्डका अस्तित्व था ही नहीं।

इनकी आठ भुजाएँ हैं। अतः ये अष्टभुजा देवीके नामसे भी विख्यात हैं। इनके सात हाथोंमें क्रमशः कमण्डलु, धनुष, बाण, कमल-पुष्प, अमृतपूर्ण कलश, चक्र तथा गदा है। आठवें हाथमें सभी सिद्धियों और निधियोंको देनेवाली जपमाला है। इनका वाहन सिंह है। संस्कृत भाषामें कूष्माण्ड कुम्हडे (कोहड़े) को कहते हैं।

बलियों में कुम्हडे की बलि इन्हें सर्वाधिक प्रिय है। इस कारण से भी ये कृष्माण्डा कही जाती हैं। नवरात्र पूजनके चौथे दिन कूष्माण्डा देवीके स्वरूपकी ही उपासना की जाती है।

पाँचवी माता : स्कन्दमाता

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।

शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी।।

माँ दुर्गाजी के पाँचवें स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। ये भगवान् स्कन्द की माता हैं जो 'कुमार कार्तिकेय' नाम से भी जाने जाते हैं। ये प्रसिद्ध देवासुर संग्राम में देवताओं के सेनापति बने थे। पुराणों में इन्हें कुमार और शक्तिधर कहकर इनकी महिमा का वर्णन किया गया है।

इन्हीं भगवान् स्कन्द की माता होने के कारण माँ दुर्गाजी के इस पाँचवें स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। इनकी उपासना नवरात्रि पूजा के पाँचवें दिन की जाती है। इनके विग्रह में भगवान् स्कन्दजी बालरूप में इनकी गोद में बैठे होते हैं।

छठी माता : कात्यायनी

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।

कात्यायनी शुभं दद्यादेवी दानवघातिनी ।।

माँ दुर्गा के छठ: वें स्वरूपका नाम कात्यायनी है। इनका कात्यायनी नाम पड़ने की कथा इस प्रकार है–कत नामक एक प्रसिद्ध महर्षि थे। उनके पुत्र ऋषि कात्य हुए। इन्हीं कात्य के गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन उत्पन्न हुए थे। इन्होंने भगवती पराम्बा की उपासना करते हुए बहुत वर्षों तक बड़ी कठिन तपस्या की थी। उनकी इच्छा थी कि माँ भगवती उनके घर पुत्री के रूपमें जन्म लें। माँ भगवती ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली थी।

कुछ काल पश्चात् जब दानव महिषासुर का अत्याचार पृथ्वी पर बहुत बढ़ गया तब भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनोंने अपने-अपने तेजका अंश देकर महिषासुरके विनाशके लिये एक देवीको उत्पन्न किया। महर्षि कात्यायनने सर्वप्रथम इनकी पूजा की। इसी कारण से यह कात्यायनी कहलायीं। दुर्गापूजा के छठवें दिन इन्हीं की उपासना की जाती है।

सातवीं माता : कालरात्रि

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।

लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी ॥

वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टक ।

वर्ध-मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी ।।

माँ दुर्गाजी: की सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती है। इनके शरीर का रंग घने अन्धकार की तरह एकदम काला है। सिर के बाल बिखरे हुए हैं। गले में विद्युत की तरह चमकने वाली माला है। इनके तीन नेत्र हैं। ये तीनों नेत्र ब्रह्माण्ड के सदृश गोल हैं। इनसे विद्युत के जैसी चमकीली किरणें निकलती रहती हैं। इनकी नाक के श्वास-प्रश्वास से अग्नि की भयङ्कर ज्वालाएँ निकलती रहती हैं। इनका वाहन गर्दभ – गदहा है।

माँ कालरात्रि दुष्टोंका विनाश करनेवाली हैं। दानव, दैत्य, राक्षस, भूत, प्रेत आदि इनके स्मरणमात्रसे ही भयभीत होकर भाग जाते हैं। ये ग्रह-बाधाओंको भी दूर करनेवाली हैं। इनके उपासकको अग्नि-भय, जल-भय, जन्तु-भय, शत्रु-भय, रात्रि-भय आदि कभी नहीं होते। इनकी कृपासे वह सर्वथा भय मुक्त हो जाता है। दुर्गा पूजा के सातवें दिन माता कालरात्रि की हीं पूजा की जाती है।

आठवीं माता : महागौरी

श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।

महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा।।

माँ दुर्गाजी: की आठवीं शक्ति का नाम महागौरी है। इनका वर्ण पूर्णत: गौर है। इस गौरता की उपमा शङ्ख, चन्द्र और कुन्द के फूल से दी गयी है। इनकी आयु आठ वर्ष की मानी गयी है-'अष्टवर्षा भवेद् गौरी' । इनके समस्त वस्त्र एवं आभूषण आदि भी श्वेत हैं। इनकी चार भुजाएँ हैं। इनका वाहन वृषभ है।

अपने पार्वती रूप में इन्होंने भगवान् शिव को पति रूप में प्राप्त करनेके लिये बड़ी कठोर तपस्या की थी। इनकी प्रतिज्ञा थी कि 'व्रियेऽहं वरदं शम्भुं नान्यं देवं महेश्वरात्।' (नारदपाञ्चरात्र)। गोस्वामी तुलसीदासजी के अनुसार भी इन्होंने भगवान् शिव के वरण के लिये कठोर संकल्प लिया था–

जन्म कोटि लगि रगर हमारी।

बरउँ संभु न त रहउँ कुआरी ॥

दुर्गा पूजा के आठवें दिन माता महागौरी की हीं पूजा की जाती है।

नौवीं माता : सिद्धिदात्री

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।

सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी ॥

माँ दुर्गाजी: की नवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियों को देनेवाली है। मार्कण्डेयपुराण के अनुसार अणिमा, महिमा, गरिमा, लधिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व-ये आठ सिद्धियाँ होती हैं।

माँ सिद्धिदात्री भक्तों और साधकों को ये सभी सिद्धियाँ प्रदान करनेमें समर्थ हैं। देवीपुराणके अनुसार भगवान् शिवने इनकी कृपा से ही इन सिद्धियों को प्राप्त किया था। इनकी अनुकम्पा से ही भगवान् शिव का आधा शरीर देवी का हुआ था। इसी कारण वह लोक में 'अर्द्धनारीश्वर' नामसे प्रसिद्ध हुए।

नवरात्र पूजन के नवें दिन इनकी उपासना की जाती है। इस दिन शास्त्रीय विधि-विधान और पूर्ण निष्ठा के साथ साधना करनेवाले साधक को सभी सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। सृष्टि में कुछ भी उसके लिये अगम्य नहीं रह जाता। माता सिद्धिदात्री की सम्पूर्ण कथा, महत्व, पूजन विधि को विस्तार से जानने के लिए यहाँ क्लिक करें।

नवरात्रि मे नौ दिनों तक चलने वाले अनुष्ठान मे माता के इन्हीं नौ रूपों की उपासना की जाती है। भक्त को चाहिए की नवरात्रि के नौ दिनों तक सात्विक जीवन अपनाकर शुद्ध मन से माता की पुजा अर्चना करे क्यूंकि सच्चे ह्रदय से आराधना करने वालों की पुकार माँ जरूर सुनती हैं

भक्ति और प्रेम

जब तक ज्ञान में भक्ति और प्रेम मिश्रित नहीं होगा तब तक कभी परमात्मा की प्राप्ति नहीं होगी चाहे कितने भी तपस्या किया जाए सिर्फ और सिर्फ कृष्ण नाम,,, केवल कृष्ण नाम का निरंतर जाप इसके बिना उनका कल्याण नहीं हो सकते! ज्ञान योग में जीव को अहंकार का एक नशा चढ़ा रहता है भक्ति और प्रेम में जब अहंकार धुल जाते हैं तब उन्हें सर्वोच्च माया अधिष्ठाता परमात्मा की प्राप्ति होती है! जब कर्तापन का पूर्ण त्याग हो काम क्रोध लोभ मोह इन पर विजई प्राप्त हो! पूरी 10 इंद्रियां अपने अधीन हो,,,, स्थित प्रज्ञ

(सुख दुख ठंडी गर्मी मान अपमान इनमें एक समान) जो हो जाए बस वही मोक्ष अधिकारी होता है!

कलिसंतरण उपनिषद

नारदः पुनः पप्रच्छ तन्नाम किमिति । स होवाच हिरण्यगर्भः । हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ इति षोडशकं नाम्नां कलिकल्मषनाशनम् । नातः परतरोपायः सर्ववेदेषु दृश्यते ॥ षोडशकलावृतस्य जीवस्यावरणविनाशनम् । ततः प्रकाशते परं ब्रह्म मेघापाये रविरश्मिमण्डलीवेति ॥ २॥

पुनर्नारदः पप्रच्छ भगवन् कोऽस्य विधिरिति । तं होवाच नास्य विधिरिति । सर्वदा शुचिरशुचिर्वा पठन् ब्राह्मणः सलोकतां समीपतां सरूपतां सायुज्यमेति । यदास्य षोडशकस्य सार्धत्रिकोटीर्जपति तदा ब्रह्महत्यां तरति । तरति वीरहत्याम् । स्वर्णस्तेयात् पूतो भवति । वृषलीगमनात् पूतो भवति । पितृदेवमनुष्याणामपकारात् पूतो भवति । सर्वधर्मपरित्यागपापात् सद्यः शुचितामाप्नुयात् । सद्यो मुच्यते सद्यो मुच्यते इत्युपनिषत् ॥ ३॥

(कलिसंतरण उपनिषद, कृष्ण यजुर्वेद वेद मंत्र 2, 3)

अहंकार रहित भक्ति और प्रेम बिना जीव ब्रह्म का मिलन संभव नहीं! भगवान सिर्फ और सिर्फ मिलेंगे भक्ति प्रेम, और पूर्ण समर्पण से ज्ञान ध्यान योग से नहीं! नाम जाप करें इस कलयुग में कृष्ण नाम के सिवा दूसरा और कोई सहारा नहीं उपाय नहीं भगवान को प्राप्त करने का,,, अधिक से अधिक नाम जप कीजिए,,, जितना नाम जाप करेंगे उतनी शीघ्र श्री कृष्ण की प्राप्ति होगी! सब किया,,, यह नहीं किया तो सब कुछ व्यर्थ है!

नाम जप की महत्ता - प्रेरक कहानी

एक बार की बात है राजा एवं महामंत्री ने मार्ग में किसी ब्राह्मण को भीख माँगते देखा। राजा ने महामंत्री से पूछा: यह क्या है? महामंत्री ने तत्काल कहा: महाराज! भूला हुआ है। राजा ने कहा: तो इस पण्डित को रास्ते पे लाओ। महामंत्री ने कहा: आ जायेगा, राजन! पर समय लगेगा। कृपया तीन माह की अवधि दीजिये। राजा ने स्वीकृति दे दी।

शाम को महामंत्री ब्राह्मण के घर गया और ब्राह्मण से विद्वान होकर भीख मांगने का कारण पूछा। ब्राह्मण के बताने पर महामंत्री ने कहा, कल से प्रात: आप चार बजे जाग जायँ और मेरे लिये दो घण्टे हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे नाम जप करें, शाम को एक स्वर्ण मुद्रा रोज आपके घर पहुँचा दी जायेगी।

ब्राह्मण को पहले तो यह सुन कर आश्चर्य हुआ, किन्तु मन ही मन सोचा कि ऐसा करने में क्या हर्ज है…

नामजप का महत्व

प्रातः सायं जो हम नित्यकर्म करते हैं, वही हमारे जीवन की एक मुख्य लाभ की बात है। उसकी ओर हमें अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। प्रायः लोग नित्य कर्म को बेगार की तरह करते हैं और उसमें चित्त नहीं लगाते। यही कारण है कि उससे जो लाभ होना चाहिए, वह नहीं होता।

चौबीस घंटे के भीतर जितना समय इस नित्यकर्म में लगता है, वही परम उत्तम और परम पुण्यकाल है। दोनों काल रात और दिन की संधियों में जो हम संध्योपासना करते हैं, वही ईश्वरोपासना है। प्राणायाम, ध्यान, जप, गीतापाठ, स्तोत्रपाठ, स्तुति आदि उपासना ही है। यह उपासना ही ईश्वर की वास्तविक पूजा है।

संध्योपासनादि नित्य कर्म में जितना ध्यान देना चाहिए उतना ध्यान हम नहीं देते हमारे नित्य के जीवन से उसका घना- गहरा संबंध प्रतीत नहीं होता। प्रायः लोगों को मन धोखा देता हैसंध्या शीघ्र कर लेने की इच्छा कसी तरह कर डालें जिसमें भार उतर जाये- ऐसा भाव बहुधा हमें संध्योपासना आदि नित्य कर्त्तव्य का आनन्द नहीं लेने देता और हम वास्तविक उपासना से बहुत दूर हो जाते हैं। यह मन का पाजीपन (दौरात्म्य) है।

यह बुरी आदत है। यह आदत प्रायः सभी में पायी जाती है। इस नित्य कर्म को यदि आदर और प्रेम के भाव से किया जाये तो बहुत शीघ्र लाभ हो सकता है। उपासना में प्रेम और आदर ही मुख्य बात है। प्रेम में मुग्ध होकर जो कुछ भी किया जाता है, उसका प्रभाव अमिट होता है, स्थायी होता है और वह बहुत शीघ्र लाभ देने वाला होता है।

आदर और प्रेम के बिना वर्षों तक की हुई उपासना का विशेष लाभ नहीं दिखेगा, परन्तु एक दिन, एक बेला भी प्रेम और आदर से पूर्ण मनोयोग के साथ जो उपासना होगी, उसका परम महान फल बहुत शीघ्र दिखलायी पड़ेगा और हृदय में एक अपूर्व आनन्द और शान्ति मिलेगी।

उपासना में हृदय का पूर्ण योग होना चाहिए। ध्यान, जप, प्राणायाम में संपूर्ण मनोयोग रहे- इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नाम जप के समान सरल और साथ ही साथ महान साधन दूसरा है ही नहीं। जप में अधिक फल देने वाला जप गुप्त जप ही है। जप अत्यन्त गुप्त होना चाहिए। कोई जान न जाये। किया हुआ गुप्त जप यदि किसी पर प्रगट कर दिया जाता है तो उसका महत्व घट जाता है। किसी प्रकार, संकेत से भी उसे प्रकाशित नहीं करना चाहिए।

स्मरण रहे, जप जितना ही गुप्त होगा उतना ही लाभदायक होगा। गुप्त जप का फल अद्भुत होता है। गुप्त पाप और गुप्त पुण्य- दोनों का ही फल अधिक होता है। गुप्त साधन से ईश्वर में प्रेम बढ़ता है। और चित्त में शान्ति और प्रसन्नता होती है|

जप करते समय उसके अर्थ का ख्याल अवश्य करना चाहिए। अर्थ पर जितनी अधिक दृष्टि जायेगी, जप में उतना ही अधिक रस आयेगा।

और उसके द्वारा अधिकाधिक आनन्द उमड़ेगा। उदाहरणार्थ इस मंत्र के अर्थ पर ध्यान दीजिये-

हरे राम हरे राम,,, हरे राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण,, कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

इस मंत्र में हरि, राम और कृष्ण- ये तीन नाम आगे-पीछे सोलह बार आये हैंइस मंत्र का जप करते समय भगवान राम, कृष्ण और हरि के रूप का स्मरण करना चाहिये। ये नाम साकार-निराकार दोनों के बोधक हैं। वास्तव में ये नाम एक प्रभु के हैं। इसलिए इसका जप करते समय जिसका जो इष्टदेव हो वह उसी का ध्यान करे। भगवान राम, कृष्ण, और विष्णु- तीनों एक ही हैं। सृष्टि के आदि में भगवान विष्णु हुए।

त्रेता में भगवान राम और द्वापर में भगवान कृष्ण का आर्विभाव हुआ। यह इनका सगुण साकार दिव्य रूप है। इनका ध्यान करना चाहिए। जप करते समय अपने जो इष्टदेव हों, उनकी मूर्ति मन के सामने स्पष्ट आ जानी चाहिये।

दूसरा अर्थ निराकारपर इस प्रकार है- राम का अर्थ है सर्वत्र रमने वाला सच्चिदानन्दघन परमात्मा, जो कण-कण में व्याप्त है, या योगी लोग जिसमें रमते हैं। कृष्ण में 'कृष' का अर्थ है सत् और 'ण' का अर्थ है 'आनन्द'। जिस आनन्द का कभी अभाव नहीं होता, जो आनन्द नित्य है, अविनाशी है, वही 'कृष्ण' है।

'हरि' का अर्थ है जो सब पापों को हर लेता है, जिसके उच्चारण से ही सब पाप भस्म हो जाते हैं। वही 'हरि' है। 'हरि' नाम लेते ही सब पाप मिट जाते हैं। जप करते समय इन अर्थों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। विश्वास रखना चाहिए कि सर्वव्यापी परमात्मा ही इस रूप में हमारे सामने आया है।

इसमें अद्भुत शान्ति मिलती है अथवा जप करते समय निरन्तर अपने इष्ट की मूर्ति का ध्यान रखना चाहिए। उस समय चित्त ध्यान में ही डूबा रहे|

'तज्जपस्तदर्थभावनम्'

किसी प्रकार की कामना नहीं रहनी चाहिए प्रह्लादजी ने कहा है कि वरदान की इच्छा से जो भक्ति करता है वह तो वणिक् है। भगवान ने उनसे जब वर मांगने के लिए बहुत अधिक आग्रह किया तब प्रह्लाद ने यही वरदान मांगा कि मेरे मन में मांगने की इच्छा ही न हो। मूर्ति और अर्थ का ख्याल रखते हुए इस प्रकार निष्काम भाव से जप करना चाहिए। जप निरन्तर हर समय उठते-बैठते, सोते-जागते करना चाहिए। प्रिय के स्मरण से ही हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। प्रेम में मग्ध होकर भगवान के नाम का जप और स्वरूप का ध्यान करना चाहिए|

ओम श्री राधा

कृष्ण नाम की महिमा

सहस्त्रनाम्नां पुण्यानां त्रिरावृत्या तु यत्फलम्।

एकावृत्या तु कृष्णस्य नामैकं तत् प्रयच्छति॥३३॥

अमृतप्रवाह भाष्य

(विष्णु के) पवित्र सहस्त्र नामों का तीन बार पाठ करने से जो फल होता है, कृष्ण नाम एकबार उच्चारण करने से ही वही फल प्रदान करते हैं। तात्पर्य यह है कि, एक राम नाम सहस्त्र विष्णु नाम के समान है। अतएव तीन बार राम नाम का फल एकबार कृष्ण नाम में ही प्राप्त होता है।

मम नाम शतेनैव राधा नाम सकृत सममं ।

य: स्मरते सर्वदा राधां न जाने तस्य किं फलम ।।

- कुलदीपिकायाम

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि जिसने मेरे 100 नाम लिए और श्री राधा का एक नाम लिया वो दोनों समान फल देते हैं किंतु जो सदा सर्वदा श्री राधा नाम का भजन करता है उनकी महिमा अपरम्पार है, उन को मैं भी नहीं जानता हूँ कि कौन सा फल मिलता है ।

श्री राधा रानी की महिमा

राधा नाम लेने वाले को क्या मिलता है?

अनंत ब्रह्मांड में सबसे बड़ी संपत्ति परम धन श्री राधा नाम को कहा गया है! इस संपत्ति को इकट्ठा करके भक्त सच्चिदानंद पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण को खरीद लेता है!

भगवान श्री कृष्ण उस भक्त का अनंत काल के लिए आधीन हो जाते हैं श्री राधा नाम का निरंतर जो जप करते हैं! राधा नाम की महिमा ऐसी है कि इस शब्दों द्वारा बताया नहीं जा सकता और यह एक छिपा गुप्त रहस्य है! इसका फल पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण के पास भी नहीं है!

आइए 18 पुराणों के अनुसार जानते हैं श्री राधा नाम की महिमा,,,

ब्रह्मवैवर्त पुराण क्या कहते हैं-

चैतन्य चरितामृत मध्य लीला 9.33 इसमें बताया गया है श्री राधा रानी की महिमा

राधा नाम महिमा की कहानी कथा

मम नाम शतनैव राधा नाम मंत्र राधा रानी 16 नाम मंत्र

राधा नाम की महिमा श्री कृष्ण,भगवान नारायण द्वारा की गई

राधा नाम की महिमा अपरम्पार है।

श्री राधा रानी श्री कृष्ण की सखी और उपासिका थी। राधा रानी को कृष्ण वल्लभा कहा गया है। वह श्री कृष्ण की अधिष्ठात्री देवी है। श्री राधा नाम जपने से श्री कृष्ण शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। श्री राधा और कृष्ण निस्वार्थ और अटूट प्रेम के प्रतीक हैं।

राधा-राधा रटत ही भव व्याधा मिट जाय।

कोटि जनम की आपदा राधा नाम लिये सो जाय।।

भावार्थ:-

श्री राधा नाम स्मरण करने से ही हमारे जीवन समस्त सब व्याधा बाधा ही मिट जाती हैं और राधा नाम लेने से करोड़ों जन्मों के लोग दोष पाप और शुभाशुभ कर्म रोगों से मुक्ति मिल जाती हैं।

'रा' शब्दं कुर्वतस्त्रस्तो ददामि भक्तिमुत्तमाम्।

'धा' शब्दं कुर्वतः पश्चाद् यामि श्रवणलोभतः॥

भावार्थ:- श्री कृष्ण कहते हैं कि किसी के मुख से " रा" शब्द सुनते ही मैं उसे भक्ति प्रदान करता हूं और "धा" शब्द सुनते ही राधा रानी का नाम सुनने के लालसा में उसके पीछे-पीछे चला जाता हूं.

मम नाम शतेनैव राधा नाम सकृत समम।

य: स्मरते सर्वदा राधा न जाने तस्य किं फलम॥

भावार्थ:-

भाव- श्री कृष्ण कहते हैं कि जिस भक्त ने मेरे 100 नाम का स्मरण किया और श्री राधा रानी का एक बार नाम लिया दोनों का फल एक समान होगा। लेकिन जो भक्त सदा सर्वदा राधा नाम का जाप करते है उनको क्या फल मिलता है मैं भी नहीं जानता।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के श्री कृष्ण जन्म खंड में भगवान नारायण ने नारद जी से राधा रानी के 16 नामों की महिमा कहीं है।

1. राधा 2.रासेस्वरी 3. रासवासिनी 4. रसिकेश्वरी। 5. कृष्णप्राणाधिका 6. कृष्णप्रिया 7. कृष्णस्वरूपिणी।। 8. कृष्णवामांगसम्भूता 9. परमानन्दरूपिणी। 10. कृष्णा 11. वृन्दावनी 12. वृन्दा 13. वृन्दावनविनोदिनी।। 14. चन्द्रावली 15. चन्द्रकान्ता 16. शरच्चन्द्रप्रभानना

नामान्येतानि साराणि तेषामभ्यन्तराणि च।।

राधा रानी के नामों का अर्थ

1.राधा- 'राधा' शब्द का 'रा' प्राप्ति का वाचक है और 'धा' निर्वाण का। राधा मुक्ति, निर्वाण (मोक्ष) प्रदान करने वाली हैं।

2.रासेस्वरी- वह रासेश्वर श्रीकृष्ण की प्राणप्रिया अर्धांगिनी हैं, अत: 'रासेश्वरी' कहलाती हैं।

3. रासवासिनी-उनका रासमण्डल में निवास है, अतः वह 'रासवासिनी' कहलाती हैं।

4. रसिकेश्वरी- समस्त रसिक देवियों की सर्वश्रेष्ठ स्वामिनी हैं, इसलिए उन्हें 'रसिकेश्वरी' कहलाती है।

5. कृष्णप्राणाधिका- श्रीकृष्ण को वे प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं।इसलिए उनको 'कृष्णप्राणाधिका' कहा जाता है।

6.कृष्णप्रिया-वे श्रीकृष्ण की परम प्रिया हैं या श्रीकृष्ण उन्हें परम प्रिय हैं, इसलिए उन्हें 'कृष्णप्रिया' कहा जाता हैं।

7. कृष्णस्वरूपिणी-वे श्रीकृष्ण का रूप धारण करने में समर्थ हैं और वे स्वरूपत: श्रीकृष्ण के समान हैं; इसलिए 'कृष्णस्वरूपिणी' कहलाती हैं।

8.कृष्णवामांगसम्भूता-वे श्रीकृष्ण के वामांग से प्रकट हुई हैं, इसलिए उन्हें —'कृष्णवामांगसम्भूता' कहा जाता हैं।

9.परमानन्दरूपिणी- वे भगवान की परम आनंदस्वरूपा आह्लादिनी शक्ति है, इसलिए उन्हें 'परमानन्दरूपिणी' नाम से जाना जाता है।

10.कृष्णा- वे श्रेष्ठ मोक्ष प्रदान करने वाली होने के कारण 'कृष्णा' कहलाती है ।

11.वृन्दावनी-वृन्दावन उनकी मधुर लीलाभूमि है तथा वे वृन्दावन की अधिष्ठात्री देवी हैं, अत: इन्हें 'वृन्दावनी' नाम से भी जाना जाता है।

12. वृन्दा- 'वृन्द' शब्द का अर्थ है सखियों का समुदाय और 'आ' सत्ता का वाचक है अर्थात् वे सखियों के समुदाय की स्वामिनी हैं इसलिए वे "वृन्दा" कहलाती है ।

13. वृन्दावनविनोदिनी- समस्त वृन्दावन को उनके कारण आमोद(आनंद) प्राप्त होता है इसलिए उन्हें 'वृन्दावनविनोदिनी' कहा जाता हैं ।

14. चन्द्रावली-इनके मुख पूर्ण चंद्रमा के सदृश्य है। इसलिए उनका नाम रखा है– 'चन्द्रावली' ।

15.चन्द्रकान्ता-उनके शरीर पर अनन्त चन्द्रमाओं की सी कांति रात-दिन जगमगाती रहती है , इसलिए उन्हें 'चन्द्रकान्ता' कहते हैं ।

16.शरच्चन्द्रप्रभानना-इनका मुखमण्डल शरत्कालीन चन्द्रमा के समान प्रभावान है, इसलिए उन्हें — 'शरच्चन्द्रप्रभानना' भी कहा जाता हैं।

राधा रानी के नामों से स्पष्ट है कि वह श्रीकृष्ण की अभिन्न शक्ति है।

राधा रानी के सोलह नामों का जाप करने श्री कृष्ण की भक्ति प्राप्त होती है। माना जाता है कि षोढ़स नाम स्त्रोत्र पढ़ने से श्री कृष्ण के समान तेज, भगवान शिव के समान दान शक्ति, योग शक्ति और स्मृति प्राप्त होती है। राधा रानी के नाम जाप की बहुत महिमा है। कई जन्म तक श्री कृष्ण की सेवा करने पर उनके धाम की प्राप्ति होती है लेकिन राधा रानी की दया कृपा होने पर भक्त शीध्र ही उनके गोलोक को प्राप्त कर लेता है।

राधा रानी के 28 नामों की महिमा

ऋग्वेदीय श्रीराधोपनिषत् में ब्रह्मा जी ने सकादिक मुनियों को राधा रानी के 28 नामों की महिमा कहीं है।

राधा रासेश्वरी रम्या

कृष्णमन्त्राधिदेवता ।

सर्वाद्या सर्ववन्द्या च वृन्दावनविहारिणी ॥

वृन्दाराध्या रमाशेषगोपीमण्डलपूजिता ।

सत्या सत्यपरा सत्यभामा श्रीकृष्णवल्लभा ॥

वृषभानुसुता गोपी मूलप्रकृतिरीश्वरी ।

गान्धर्वा राधिकारम्या रुक्मिणी परमेश्वरी ॥

परात्परतरा पूर्णा पूर्णचन्द्रनिभानना ।

भुक्तिमुक्तिप्रदा नित्यं भवव्याधिविनाशिनी ॥

इत्येतानि नामानि यः पठेत् स जीवन्मुक्तो भवति ।

इत्याह हिरण्यगर्भो भगवानिति ।

1.राधा 2. रासेश्वरी 3. रम्या 4. कृष्णमंत्राधिदेवता 5. सर्वाद्या 6..सर्ववंद्या 7. वृंदावनविहारिणी 8. वृंदाराधा 9. रमा

10. अशेषगोपीमन्डलपुजिता 11.सत्या 12. सत्यपरा 13. सत्यभामा 14. श्रीकृष्णबल्लभवा 15. वृषभानुसुता 16. गोपी 17. मूलप्रकृति 18.ईश्वरी 19. गान्धर्वा 20. राधिका 21. रम्या 22. रुक्मणी 23.. परमेश्वरी 24. परात्परता 25. पूर्णा 26. पूर्णचंद्रविमानना 27.भुक्ति मुक्तिप्रदा 28. भवव्याधि विनाशिनी जो राधा रानी के इन 28 नामों का जाप करता है वह शीघ्र ही इसी जन्म जीवन के आवागमन से मुक्त हो जाता है।

राधा नाम की महिमा की कहानी

-:वृन्दावन में एक संत जी थे जो कि प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का एक अध्याय का पढ़ते और उसे श्रद्धा से श्री राधा रानी जी को अर्पण करते थे। बहुत वर्षों से वह लगातार इस नियम का पालन कर रहे थे। कभी ऐसा नहीं हुआ था कि उन्होंने श्री राधा रानी को भागवत का अध्याय न सुनाया हो।

लेकिन एक दिन जब वह भागवत का अध्याय पढ़ने बैठे तो उन्हें उसके अक्षर दिखाई नहीं दिये। जिस कारण वह कुछ भी पढ़ नहीं पाएं। उनकी आंखों से अश्रु धारा बह रही थी कि मैं आज श्री राधा रानी को भागवत का अध्याय सुना नहीं पाया। उस दिन ना उन्होंने कुछ खाया और ना ही पिया रोते रोते पूरा दिन निकल गया। क्योंकि उनका नियम था कि भागवत पाठ करने के पश्चात ही भोजन करते थे।

रात को एक छोटा सा बालक उनके पास आया और पूछने लगा कि बाबा ! आप क्यों रो रहे हो ? क्या आपकी आंखों की रोशनी नहीं है! क्या आप इसलिए रो रहे हैं?

संत कहने लगे कि नहीं बेटा! मैं तो इसलिए रो रहा हूं कि आज मेरा नियम टूट गया कि मैं राधा रानी को भागवत कथा नहीं सुना पाया।

लड़का कहने लगा कि बाबा मैं यह पट्टी अपनी आँखों पर बाँध देता हूं इससे आपकी आंखें ठीक हो जाएगी। संत को लगा कि यह बालक वृन्दावन के किसी वैद्य का बेटा होगा जो आंखों का इलाज करना जानता होगा।

संत आंखों पर पट्टी बांध कर सो गए। सुबह उठकर जब पट्टी आंखों से उतारी तो सब साफ़ साफ़ दिखाई दे रहा था। संत बहुत प्रसन्न हुए और सोचने लगे कि देखूं बालक ने पट्टी पर ऐसी कौन सी औषधि लगाई थी कि एक बार मैं ही पट्टी बांधने से ही मुझे साफ़ साफ़ दिख रहा है। संत जी ने जैसे ही पट्टी पर नजर दौड़ाई उस पर राधा रानी का नाम लिखा था।

राधा नाम की महिमा देख कर संत जी की आंखों से अश्रु धारा बहने लगी। संत जी कहने लगे कि किशोरी जी आपके नाम की महिमा अपरम्पार है आपने जो मुझ पर यह कृपा की है। लगता है मेरे मुख से भागवत पाठ सुनकर आपको भी आनंद आता है।

ऐसी है सर्वेश्वरी महारानी परम करुणामई राधा रानी की महिमा

अद्भुत अलौकिक है जो उनका अनन्य भाव से नित्य निरंतर ध्यान करता है! उन्हें शीघ्र ही महारानी अपने भक्त को आवागमन के चक्र से पार कर देती है!

श्री राधे हरे कृष्ण

मम नाम सहस्राणि राधानाम सकृत् स्मरन्

मुच्यते भवतो जापे न जाने तस्य किं फलम् ॥

- वृहद्वामन पुराण

श्री कृष्ण कहते हैं कि मेरे एक हज़ार बार नाम को जो जपता है और श्री राधा नाम का केवल एक बार स्मरण ही कर लेता है वह भव बंधन से छूट जाता है । जो सदा श्री राधा नाम को भजता है उसे क्या फल मिलता है यह तो मैं भी नहीं जानता ।

एक नाम जिसमें समाहित है समूचा कृष्णधाम, जानिए पुराणों में महत्व

राधा कृष्ण की अद्भुत दिव्य लीला

निष्काम प्रेम

आईए जानते हैं उनके कुछ रहस्य

श्री कृष्ण विश्व के संपूर्ण आत्माओं का परमात्मा है! तो श्री राधा रानी उस परमात्मा की आत्मा है! राधा तत्व यही है जो निराकार पूर्ण ब्रह्म की आत्मा है!

पुराणों में राधा नाम की महत्ता बताई गई है। राधा जी के पूजन से कृष्ण के पूजन का फल मिलता है।

कहने को एक नाम मात्र है राधा! लेकिन इन दो अक्षरों में समाहित है भक्ति, प्रेम और जीवन का यथार्थ। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के 15 दिनों बाद राधाष्टमी का पर्व ब्रज में उसी उत्साह के साथ मनाया जाता है।

या कहें उससे भी अधिक उल्लास के साथ। ब्रज की रानी राधा और कृष्ण के प्रेम को तर्कों से नहीं अपितु सिर्फ प्रेम और भक्ति से ही समझा जा सकता है। इस बात का प्रमाण कई पुराणों में भी लिखा है।

पुराणों के आधार पर धर्म वैज्ञानिक पंडित वैभव जोशी ने राधा रानी के कृष्णभक्ति में महत्व के प्रमाण दिए। उन्होंने बताया कि

जहां कृष्ण राधा तहां,,, जहं राधा तहं कृष्ण।

न्यारे निमिष न होत कहु समुझि करहु यह प्रश्न।।

राधा नाम की महिमा अपरंपार है। श्री कृष्ण स्वयं कहते हैं- जिस समय मैं किसी के मुख से 'रा' सुनता हूं, उसे मैं अपना भक्ति प्रेम प्रदान करता हूं और धा शब्द के उच्चारण करनें पर तो मैं राधा नाम सुनने के लोभ से उसके पीछे चल देता हूं। राधा कृष्ण की भक्ति का कालान्तर में निरन्तर विस्तार हुआ। निम्बार्क, वल्लभ, राधावल्लभ, और सखी समुदाय ने इसे पुष्ट किया।

कृष्ण के साथ श्री राधा सर्वोच्च देवी रूप में विराजमान् है। कृष्ण जगत् को मोहते हैं और राधा कृष्ण को। 12वीं सदी में जयदेवजी के गीत गोविन्द रचना से सम्पूर्ण भारत में कृष्ण और राधा के आध्यात्मिक प्रेम संबंध का जन-जन में प्रचार हुआ।

भागवत में राधिका-प्रसंग

अनया आराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतोयामनयद्रहः।

प्रश्न उठता है कि तीनों लोकों का तारक कृष्ण को शरण देनें की सामर्थ्य रखने वाला ये हृदय उसी आराधिका का है, जो पहले राधिका बनी। उसके बाद कृष्ण की आराध्या हो गई। राधा को परिभाषित करनें का सामर्थ्य तो ब्रह्म में भी नहीं। कृष्ण, राधा से पूछते हैं- हे राधे !

भागवत में तेरी क्या भूमिका होगी ? राधा कहती है- मुझे कोई भूमिका नहीं चाहिए कान्हा ! मैं तो तुम्हारी छाया बनकर रहूंगी। कृष्ण के प्रत्येक सृजन की पृष्ठभूमि यही छाया है। चाहे वह कृष्ण की बांसुरी का राग हो या गोवर्धन को उठाने वाली तर्जनी या लोकहित के लिए मथुरा से द्वारिका तक की यात्रा की आत्मशक्ति।

आराधिका में आ को हटाने से राधिका बनता है। इसी आराधिका का वर्णन महाभारत या श्रीमद्भागवत में प्राप्त है और श्री राधानाम का उल्लेख नहीं आता। भागवत में श्रीराधा का स्पष्ट नाम का उल्लेख न होने के कारण एक कथा यह भी आती है कि शुकदेव जी को साक्षात् श्रीकृष्ण से मिलाने वाली राधा हैं!

और शुकदेव जी उन्हें अपना गुरु मानते हैं। कहते हैं कि भागवत के रचयिता शुकदेव जी राधाजी के पास शुक रूप में रहकर राधा- राधा का नाम जपते थे। एक दिन राधाजी ने उनसे कहा कि हे शुक ! तुम अब राधा के स्थान पर श्रीकृष्ण !

श्रीकृष्ण ! का जाप किया करो। उसी समय श्रीकृष्ण आ गए। राधा ने यह कह कर कि यह शुक बहुत ही मीठे स्वर में बोलता है, उसे कृष्ण के हाथ सौंप दिया। अर्थात् उन्हें ब्रह्म का साक्षात्कार करा दिया। इस प्रकार श्रीराधा शुकदेव जी की गुरु हैं और वे गुरु का नाम कैसे ले सकते थे ?

राधा प्रेम की पवित्र गहराई कृष्ण के विराट को समेटने के लिए जिस राधा ने अपने हृदय को इतना विस्तार दिया कि सारा ब्रज उसका हृदय बन गया।

इसलिए कृष्ण भी पूछते हैं- बूझत श्याम कौन तू गौरी ! किन्तु राधा और राधा प्रेम की थाह पाना संभव ही नहीं। कुरूक्षेत्र में उनके आते ही समस्त परिवेश बदल जाता है। रूक्मणि गर्म दूध के साथ राधा को अपनी जलन भी देती है।

कृष्ण स्मरण कर राधा उसे एक सांस में पी जाती है। रूक्मणि देखती है कि श्रीकृष्ण के पैरों में छाले हैं, मानों गर्म खोलते तेल से जल गए हों। वे पूछती हैं ये फफोले कैसे ? कृष्ण कहते हैं - हे प्रिये ! मैं राधा के हृदय में हूं। तुम्हारे मन की जिस जलन को राधा ने चुपचाप पी लिया, वही मेरे तन से फूटी है। इसलिए कहते हैं कि-

तत्वन के तत्व जगजीवन श्रीकृष्णचन्द्र और कृष्ण कौ हू तत्व वृषभानु की किशोरी है।

जब श्राप बना वरदान राधा द्वापर युग में श्री वृषभानु के घर प्रगट होती हैं। कहते हैं कि एक बार श्रीराधा गोलोकविहारी से रूठ गईं।

इसी समय गोप सुदामा प्रकट हुए। राधा का मान उनके लिए असहय हो हो गया।

उन्होंने श्रीराधा की भर्त्सना की, इससे कुपित होकर राधा ने कहा- सुदामा! तुम मेरे हृदय को सन्तप्त करते हुए असुर की भांति कार्य कर रहे हो, अतः तुम असुरयोनि को प्राप्त हो।

सुदामा कांप उठे, बोले-गोलोकेश्वरी! तुमने मुझे अपने शाप से नीचे गिरा दिया। मुझे असुरयोनि प्राप्ति का दुःख नहीं है, पर मैं कृष्ण वियोग से तप्त हो रहा हूं। इस वियोग का तुम्हें अनुभव नहीं है अतः एक बार तुम भी इस दुःख का अनुभव करो।

सुदूर द्वापर में श्रीकृष्ण के अवतरण के समय तुम भी अपनी सखियों के साथ गोप कन्या के रूप में जन्म लोगी और श्रीकृष्ण से विलग रहोगी। सुदामा को जाते देखकर श्रीराधा को अपनी त्रृटि का आभास हुआ और वे भय से कातर हो उठी।

तब लीलाधारी कृष्ण ने उन्हें सांत्वना दी कि हे देवी! यह शाप नहीं, अपितु वरदान है। इसी निमित्त से जगत में तुम्हारी मधुर लीला रस की सनातन धारा प्रवाहित होगी, जिसमे नहाकर जीव अनन्तकाल तक कृत्य-कृत्य होंगे। इस प्रकार पृथ्वी पर श्री राधा का अवतरण द्वापर में हुआ।

पुराणों के अनुसार,,,

नृग पुत्र राजा सुचन्द्र और पितरों की मानसी कन्या कलावती ने द्वादश वर्षो तक तप करके श्रीब्रहमा से राधा को पुत्री रूप में प्राप्ति का वरदान मांगा। फलस्वरूप द्वापर में वे राजा वृषभानु और रानी कीर्तिदा के रूप में जन्मे। दोनों पति-पत्नी बने।

धीरे-धीरे श्रीराधा के अवतरण का समय आ गया। सम्पूर्ण व्रज में कीर्तिदा के गर्भधारण का समाचार सुख स्त्रोत बन कर फैलने लगा, सभी उत्कण्ठा पूर्वक प्रतीक्षा करने लगे। वह मुहूर्त आया। भाद्रपद की शुक्ला अष्टमी चन्द्रवासर मध्यान्ह के समये आकाश मेघाच्छन्न हो गया। सहसा एक ज्योति प्रसूति गृह में फैल गई यह इतनी तीव्र ज्योति थी कि सभी के नेत्र बंद हो गए।

एक क्षण पश्चात् गोपियों ने देखा कि शत- सहस्त्र शरतचन्द्रों की कांति के साथ एक नन्हीं बालिका कीर्तिदा मैया के समक्ष लेटी हुई है। उसके चारों ओर दिव्य पुष्पों का ढेर है। उसके अवतरण के साथ नदियों की धारा निर्मल हो गई, दिशाएं प्रसन्न हो उठी, शीतल मन्द पवन अरविन्द से सौरभ का विस्तार करते हुए बहने लगी।

पद्मपुराण में राधा का अवतरण,,,,,,पद्मपुराण में भी एक कथा मिलती है कि श्री वृषभानुजी यज्ञ भूमि साफ कर रहे थे, तो उन्हें भूमि कन्या रूप में श्रीराधा प्राप्त हुई। यह भी माना जाता है कि विष्णु के अवतार के साथ अन्य देवताओं ने भी अवतार लिया, वैकुण्ठ में स्थित लक्ष्मीजी राधा रूप में अवतरित हुई।

कथा कुछ भी हो, कारण कुछ भी हो राधा बिना तो कृष्ण हैं ही नहीं। राधा का उल्टा होता है धारा, धारा का अर्थ है करंट, यानि जीवन शक्ति। भागवत की जीवन शक्ति राधा है।

कृष्ण देह है, तो श्रीराधा आत्मा। कृष्ण शब्द है, तो राधा अर्थ।

कृष्ण गीत है, तो राधा संगीत। कृष्ण वंशी है, तो राधा स्वर। भगवान् ने अपनी समस्त संचारी शक्ति राधा में समाहित की है।

श्री राधे हरे कृष्ण

महामृत्युंजय मंत्र की रचना

जानें कैसे हुई महामृत्युंजय मंत्र की रचना, दीर्घायु बनाने वाले इस मंत्र की पौराणिक कथा भी जानें

महामृत्युंजय मंत्र को दीर्घायु और स्वास्थ्य का मंत्र कहते हैं. हिंदू धर्म शास्त्र में इसे महामंत्र भी कहा गया है. मान्यता है कि इस मंत्र के जप से व्यक्ति को लंबी आयु प्राप्त होती है तथा वह निरोगी रहता है. आइये जानें इस महामंत्र की उत्पत्ति कैसे हुई?

जानें कैसे हुई महामृत्युंजय मंत्र की रचना, दीर्घायु बनाने वाले इस मंत्र की पौराणिक कथा भी जानें

शिव भगवान

धार्मिक मान्यता है कि महामृत्युंजय मंत्र के जाप से व्यक्ति को लंबी आयु प्राप्त होती है और यमराज भी इन्हें कोई कष्ट नहीं देते हैं. महामृत्युंजय मंत्र की उत्पत्ति के बारे में यह पौराणिक कथा प्रचलित है. कथा के अनुसार, शिव भक्त ऋषि मृकण्डु ने संतान प्राप्ति के लिए भगवान शिव की कठोर तपस्या की. तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने ऋषि मृकण्डु को इच्छानुसार संतान प्राप्त होने का वर तो दिया. परन्तु शिव जी ने ऋषि मृकण्डु को बताया कि यह पुत्र अल्पायु होगा. कुछ समय बाद ऋषि मृकण्डु को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई. ऋषियों ने बताया कि इस संतान की उम्र केवल 16 साल ही होगी. यह सुनते ही ऋषि मृकण्डु विषाद से घिर गए.

यह देख जब उनकी पत्नी ने दुःख का कारण पूंछा तो उन्होंने सारी बात बताई. तब उनकी पत्नी ने कहा कि यदि शिव जी की कृपा होगी, तो यह विधान भी वे टाल देंगे. ऋषि ने अपने पुत्र का नाम मार्कण्डेय रखा और उन्हें शिव मंत्र भी

दिया. मार्कण्डेय शिव भक्ति में लीन रहते. जब समय निकट आया तो ऋषि मृकण्डु ने पुत्र की अल्पायु की बात पुत्र मार्कण्डेय को बताई. साथ ही उन्होंने कहा कि यदि शिवजी चाहेंगें तो इसे टाल देंगें.

माता-पिता के दुःख को दूर करने के लिए मार्कण्डेय ने शिव जी से दीर्घायु का वरदान पाने के लिए शिव जी आराधना शुरू कर दी. मार्कण्डेय जी ने दीर्घायु का वरदान की प्राप्ति हेतु शिवजी की आराधना के लिए महामृत्युंजय मंत्र की रचना की और शिव मंदिर में बैठ कर इसका अखंड जाप करने लगे.

महामृत्युंजय मंत्र : ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

समय पूरा होने पर मार्कण्डेय के प्राण लेने के लिए यमदूत आये परंतु उन्हें शिव की तपस्या में लीन देखकर वे यमराज के पास वापस आकर पूरी बात बताई. तब मार्कण्डेयके प्राण लेने के लिए यमराज स्वयं आये. यमराज ने जब अपना पाश जब मार्कण्डेय पर डाला, तो बालक मार्कण्डेय शिवलिंग से लिपट गए.

ऐसे में पाश गलती से शिवलिंग पर जा गिरा. यमराज की आक्रमकता पर शिव जी बहुत क्रोधित हुए. और यमराज से रक्षा के लिए भगवान शिव प्रकट हुए. इस पर यमराज ने विधि के नियम की याद दिलाई. तब शिवजी ने मार्कण्डेय को दीर्घायु का वरदान देकर विधान ही बदल दिया.

कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि सफला एकादशी

पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि सफला एकादशी

सफला एकादशी, जानें इस दिन क्यों नहीं करते चावल का सेवन!

पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि सफला एकादशी के नाम से जानी जाती है। सफला एकादशी पर पूरे दिन उपवास रखने से मनोकामनाओं की पूर्ति के साथ ही समस्त कार्यों में सफलता मिलती है।

पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि सफला एकादशी के नाम से जानी जाती है। सफला एकादशी की विशेष महत्ता है। सनातनी मान्यताओं के अनुसार, वह तिथि आने वाली है जब व्रत रहकर भगवान विष्णु का पूजन करके आप जीवन में सफल हो सकते हैं। वह तिथि है सफला एकादशी।

इस बार यह 26 दिसंबर को पड़ेगी। इस विशेष तिथि पर पूरे दिन उपवास रखने से मनोकामनाओं की पूर्ति के साथ ही समस्त कार्यों में सफलता मिलती है।

व्रत-विधि: व्रत के दिन ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक कामों से निवृत्त होकर अपने आराध्य देवी-देवता की पूजा-अर्चना के बाद सफला एकादशी के व्रत का संकल्प लेना चाहिए। पूरे दिन उपवास रखकर जल आदि कुछ भी ग्रहण नहीं करना चाहिए। विशेष परिस्थितियों में दूध या फलाहार लिया जा सकता है। भगवान श्रीहरि की विशेष अनुकंपा प्राप्ति एवं उनकी प्रसन्नता के लिए 'ऊँ नमो नारायण या 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का अधिक से अधिक जप करना चाहिए।

इस तिथि पर चावल का सेवन वर्जित है, भले ही आप व्रत न रहें। धार्मिक मान्यता के अनुसार, आदिशक्ति के क्रोध से बचने के लिए महर्षि मेधा ने शरीर का त्याग कर दिया था। उसके बाद उनका अंश धरती में समा गया। जिस दिन उनका अंश पृथ्वी में समाया उस दिन एकादशी तिथि थी। माना जाता है कि इसके बाद उन्होंने चावल और जौ के रूप में उत्पन्न हुए इसलिए इस दिन चावल नहीं खाना चाहिए।

भगवान की कृपा

जब भगवान की बहुत बड़ी कृपा होती है जीव पर तब उन्हें अपने स्वयं का पाप कर्म दिखाई देता है जब भगवान की सबसे अधिक और कृपा होती है तब उन्हें अपने पाप कर्मों का पश्चाताप होता है अपने पापों का प्रायश्चित करती है जब और अधिक कृपा होती है तब वह अपने पाप कर्मों को छोड़ने की कोशिश करती है! जब सबसे अधिक भगवान की कृपा होती है उस पर,, तब वह अर्जुन जैसे पूर्ण निष्पाप हो जाती है! पूर्ण निष्पाप (निर्विकार) हो जाना ही भगवत प्राप्ति है!

श्री कृष्ण के अवतार थे चैतन्य महाप्रभु

भगवान श्री कृष्ण के अवतार थे चैतन्य महाप्रभु, कई पुराणों में मिलता है प्रमाण!

चैतन्य महाप्रभु के बारे में तो हम सभी जानते हैं किंतु यह नहीं पता कि वह कौन थे? हमारे पुराण कहते हैं जानेंगे पूरी प्रमाण के साथ कहां-कहां पर कही गई है!

चैतन्य महाप्रभु भगवान श्री कृष्ण के अवतार थे! श्री राधा रानी के प्रेम के कर्ज को चुकाने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने चैतन्य महाप्रभु के रूप में धरती पर आए थे! जब वह वापस गए तो उन्होंने यह कहकर गए थे कि कलयुग में अंतिम बार ब्रह्म ज्ञान संसार को देने के लिए स्पिरिचुअल ज्ञान ब्रह्म तत्व का बोध कराने के लिए एक बार फिर कलयुग में मेरा अवतरित होगा! जो 1922 में पंचम मौलिक जगतगुरु श्री कृपालु जी महाराज के रूप में आए थे यह दोनों भगवान श्री कृष्ण के अवतार हैं!

चैतन्य महाप्रभु वैष्णव धर्म के प्रचारक, महान संत, कवि और वैदिक आध्यात्मिक नेता थे. उन्होंने वैष्णवों के गौड़ीय संप्रदाय की नींव रखी और संकीर्तन आंदोलन की शुरुआत की थी. भगवान कृष्ण के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा थी. उन्हें श्रीकृष्ण प्रेमी कहा जाता था. पुराणों में तो उन्हें श्रीकृष्ण का अवतार भी माना गया है.

चैतन्य महाप्रभु के नाम का अर्थ है- चैतन्य 'जागरुक' , महा यानी 'महान' और प्रभु यानी 'भगवान या गुरु' . चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का अवतार मानते हैं. हरे कृष्ण मंत्र को लोकप्रिय बनाने का श्रेय चैतन्य महाप्रभु को ही दिया जाता है. कहा जाता है कि चैतन्य महाप्रभु का जन्म भगवान श्रीकृष्ण के समान विशेषताओं के साथ हुआ था. वैदिक साहित्य में जिस तरह से श्रीकृष्ण के होने के प्रमाण उपलब्ध है, उसी प्रकार चैतन्य महाप्रभु के भी हैं. हालांकि चैतन्य महाप्रभु ने कभी भी स्वयं को भगवान के अवतार रूप में प्रकट नहीं किया और संपूर्ण जीवन श्रीकृष्ण भक्त बने रहे.

लेकिन पुराणों, उपनिषदों, शास्त्रों और महान आध्यात्मिक गुरुओं द्वारा चैतन्य महाप्रभु के श्रीकृष्ण अवतार होने की पुष्टि की गई है. चैतन्य महाप्रभु का जन्म, रूप, शारीरिक विशेषताओं और लीलाओं में वह सब कुछ निहित है जो वैदिक साहित्य में भविष्यवाणी के अनुरूप हैं

पुराणों के अनुसार चैतन्य महाप्रभु के श्रीकृष्ण अवतार के प्रमाण

अहं पूर्णो भविष्यामि युगसन्धौ विशेषतः।

मायापुरे नवद्वीपे भविष्यामि शचीसुतः।।

(गरुड़ पुराण)

मैं मायापुर नवदीप धाम में कलियुग की प्रथम संध्या में शची के पुत्र के रूप में अपने पूर्णरूप में प्रकट होऊंगा.

प्रमाण- चैतन्य महाप्रभु का जन्म भी मायापुर (नवद्वीप, पश्चिम बंगाल के शहर का एक उपखंड) में कलियुग की शुरुआत के लगभग 4,5०० साल बाद 1486 में श्रीमती शची देवी के पुत्र के रूप में हुआ था.

कले: प्रथमसंध्यायां गौरांगोऽहम् महीतले।

भागिरथितटे भूम्नि भविष्यामि सनातनः।।

(ब्रह्म पुराणे)

कलियुग के पहले भाग में, सुनहरे रंग में सर्वोच्च भगवान लक्ष्मी के पति बनेंगे। तब वे संन्यासी बन जाएंगे और भगवान जगन्नाथ के पास निवास करेंगे।

प्रमाण- चैतन्य महाप्रभु का पहला विवाह भी श्रीमती लक्ष्मीप्रिया के साथ हुआ था. हालांकि सांप के काटने के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी.

पौर्णमास्यम फाल्गुनस्या फाल्गुनी-रक्ष-योगतः

भविष्यये गौरा-रूपेण सचि-गर्भे पुरंदरत

(वायु पुराण)

फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन, मैं फाल्गुनी नक्षत्र के साथ, शची के गर्भ में पुरंदर द्वारा उत्पन्न स्वर्ण रूप में प्रकट होऊंगा.

प्रमाण- चैतन्य महाप्रभु का जन्म भी फाल्गुन मास की पूर्णिमा तिथि के दिन हुआ था. उनके पिता जगन्नाथ मिश्रा जोकि पुरंदर मिश्रा के नाम से जाने जाते थे.

मुंडो गौराह सु-दिरघंगस त्रि-श्रोत-तिरा-संभव:

दयालु कीर्तन-ग्रही भविष्य्यामी कलौ युगे

(मत्स्य पुराण)

कलियुग में मैं सुनहरे रंग का हो जाऊंगा. मैं लंबा हो जाऊंगा और मेरा सिर मुंडा होगा, जिस स्थान पर मेरा जन्म होगा वहां तीन नदियों का मिलन स्थल होगा. मैं बहुत दयालु होऊंगा और पवित्र नामों का जाप करने में लगूंगा.

प्रमाण- चैतन्य महाप्रभु का एक एक-दंड संन्यासी होने के नाते पूरी तरह से मुंडा सिर था जैसा कि ऐसे संन्यासियों के लिए प्रथा थी. तीन नदियां गंगा, यमुना और सरस्वती नवद्वीप में ही बहती हैं.

आनंदश्रु-कला-रोमा-हर्सा-पूर्णम तपो-धन सर्वे

मामा एव द्रक्ष्यंति कलौ संन्यास-रूपिनम

(भविष्य पुराण)

हे तपस्वी ऋषि, कलियुग में हर कोई मेरे दिव्य रूप को संन्यासी के रूप में देखेगा. मैं आनंद के आंसू बहाने और परमानंद के अंत में खड़े बाल जैसे लक्षण प्रदर्शित करूंगा.

प्रमाण- चैतन्य महाप्रभु भी हमेशा कृष्ण के नाम का जप करते हुए और संकीर्तन के दौरान नृत्य करते हुए पारलौकिक परमानंद के सागर में विलीन हो गए थे. उन्होंने भगवान से तीव्र अलगाव महसूस किया और उन भक्ति भावनाओं के कारण कृष्ण के लिए शुद्ध प्रेम के विभिन्न उत्साहपूर्ण लक्षण प्रदर्शित हुए.!

हमें परमात्मा पर विश्वास है या नहीं?

हमें भगवान पर विश्वास कैसा होना चाहिए जैसा विश्वास मीराबाई को श्री कृष्ण पर था भक्त प्रहलाद को श्री हरि पर,, गुरु नानक को वाहेगुरु पर,, माता शबरी को श्री राम पर,, रानी चांगुणा को भगवान शिव जी पर,, ध्रुव दास को श्री राधा रानी पर यह सभी महान भक्त हैं उस भगवान को पाया है सिर्फ विश्वास के बल पर! योग ध्यान से भगवान नहीं मिलेंगे जब तक इनके जैसा पूर्ण विश्वास ना हो हमारा विश्वास अभी मर्केट है! परीक्षा लेना शुरू करेगा अगर भगवान तो सब फेल हो जाएंगे भगवान परीक्षा उन्ही की लेते हैं जिनका विश्वास अटल हो चुका है क्या हम मीराबाई की तरह विष को पी सकते हैं विश्वास करके उसने ग्रहण किया तो परिणाम क्या निकला वह अमृत बन गया भगवान को पाना चाहते हो भक्ति करते हो पर यह विचार करो क्या मीराबाई की तरह हमें अपने परमात्मा पर विश्वास है या नहीं विश्वास यह नहीं देखता कि यह जहर है विश्वास तो एक प्रेम है जिसकी खातिर हम जहर को भी पी सकते हैं हमें भगवान पर ऐसा विश्वास हो जैसा विश्वास मीराबाई को था जैसा विश्वास प्रहलाद को था दीवाल तोड़कर आना पड़ा! भक्ति की सबसे अंतिम स्टेज है पूर्ण विश्वास और समर्पण जिसने इन दोनों को पार कर लिया उसके बाद ही जीव को भगवत प्राप्ति होती है!

मनुष्य के बार-बार जन्म-मरण का क्या कारण है?

एक बार द्वारकानाथ श्रीकृष्ण अपने महल में दातुन कर रहे थे ।

रुक्मिणी जी स्वयं अपने हाथों में जल लिए उनकी सेवा में खड़ी थीं।

अचानक द्वारकानाथ हंसने लगे। रुक्मिणी जी ने सोचा कि शायद मेरी सेवा में कोई गलती हो गई है; इसलिए द्वारकानाथ हंस रहे हैं।

रुक्मिणी जी ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा ' प्रभु ! आप दातुन करते हुए अचानक इस प्रकार हंस क्यों पड़े, क्या मुझसे कोई गलती .....हो गई ? कृपया, आप मुझे अपने हंसने का कारण बताएं

श्रीकृष्ण बोले– 'नहीं, प्रिये ! आपसे सेवा में त्रुटि होना कैसे संभव है ? आप ऐसा न सोचें, बात कुछ और है।' रुक्मिणी जी ने कहा– 'आप अपने हंसने का रहस्य मुझे बता दें तो मेरे मन को शान्ति मिल जाएगी; अन्यथा मेरे मन में बेचैनी बनी रहेगी।'

तब श्रीकृष्ण ने मुसकराते हुए रुक्मिणी जी से कहा– 'देखो, वह सामने एक चींटा चींटी के पीछे कितनी तेजी से दौड़ा चला जा रहा है। वह अपनी पूरी ताकत लगा कर चींटी का पींछा कर उसे पा लेना चाहता है।उसे देख कर मुझे अपनी मायाशक्ति की प्रबलता का विचार करके हंसी आ रही है।'

रुक्मिणी जी ने आश्चर्यचकित होते हुए कहा 'वह कैसे प्रभु ? इस चींटी के पीछे.... चींटे के दौड़ने पर आपको अपनी..... मायाशक्ति की प्रबलता कैसे दीख गई ?'

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा 'मैं इस चींटे को चौदह बार इंद्र बना चुका हूँ। चौदह बार देवराज के पद का भोग करने पर भी इसकी..... भोगलिप्सा समाप्त नहीं हुई है। यह देख कर मुझे हंसी आ गई।'

इंद्र की पदवी भी भोग योनि है। मनुष्य अपने उत्कृष्ट कर्मों से इंद्रत्व को प्राप्त कर सकता है। सौ अश्वमेध यज्ञ करने वाला व्यक्ति .....इंद्र-पद प्राप्त कर लेता है। किन्तु जब उनके भोग पूरे हो जाते हैं तो उसे पुन: पृथ्वी पर आकर जन्म ग्रहण करना पड़ता है।

प्रत्येक जीव इंद्रियों का स्वामी है; परंतु जब जीव इंद्रियों का दास बन जाता है तो जीवन कलुषित हो जाता है और बार-बार जन्म-मरण के बंधन में पड़ता है। वासना ही पुनर्जन्म का कारण है। जिस मनुष्य की जहां वासना होती है,उसी के अनुरूप ही अंत समय में चिंतन होता है और उस चिंतन के अनुसार ही मनुष्य की गति–ऊंच-नीच योनियों में जन्म होता है।

अत: वासना को ही नष्ट करना चाहिए। वासना पर विजय पाना ही सुखी होने का उपाय है ।

बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ, विषय भोग बहु घी ते।

अग्नि में घी डालते जाइये,.....वह और भी धधकेगी, यही दशा काम की है । उसे बुझाना हो तो संयम रूपी शीतल जल डालना होगा ।

संसार का मोह छोड़ना बहुत कठिन है वासनाएं बढ़ती हैं तो भोग बढ़ते हैं, इससे संसार कटु हो जाता है। वासनाएं जब तक क्षीण न हों तब तक मुक्ति नहीं मिलती है।पूर्वजन्म का शरीर तो चला गया परन्तु पूर्वजन्म का मन नहीं गया ।

नास्ति_तृष्णासमं_दु:खं #नास्ति_त्यागसमं_सुखम्।

सर्वान्_कामान्_परित्यज्य_ब्रह्मभूयाय_कल्पते ।।

तृष्णा के समान कोई दु:ख नहीं है और

त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

समस्त कामनाओं मान,बड़ाई,स्वाद,शौकीनी, सुख-भोग, आलस्य आदि का परित्याग करके केवल भगवान की शरण लेने से ही मनुष्य ब्रह्मभाव को प्राप्त हो जाता है।

कृष्ण संग रुक्मिणी राधे राधे

रासलीला का रहस्य क्या है?

भगवान श्री कृष्ण ने रासलीला क्यों रचाई थी? इसका अद्भुत रहस्य क्या है?

जानते हैं महापुराण के अनुसार श्रीमद् भागवत महापुराण और ब्रह्मवैवर्त पुराण,,, गर्ग संहिता क्या कहते हैं हमारे धर्म ग्रंथ! इसका रहस्य क्या है परमात्मा ने यह लीला क्यों किया था? किस कारण किया था? प्राणी को किस चीज को समझाने के लिए यह लीला की थी? जानते हैं पूरी विस्तार से!

जो भगवान ने रासलीला किया था इसमें एक ऐसा रहस्य छिपा है जिसे जानना प्रत्येक जीव के लिए असंभव है! क्योंकि बुद्धि इस लीला को सिर्फ गलत दृष्टि से देखती हैं जिसने भी इसे बिना जाने समझे बगैर गलत दृष्टि से देखा वह नरक का भागी बन जाता है पहले जानिए कि यह क्या है?इसका वास्तविक रहस्य क्या है?

रासलीला है- ब्रह्म और जीव का मिलन! अर्थात आत्मा,, परमात्मा का मिलन ही रासलीला है! जब तक जीव उन गोपियों की स्थिति में नहीं पहुंच जाती उन प्यासी आत्माओं को परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती! जब रासलीला हुआ तो एक-एक गोपियों के लिए भगवान अलग-अलग श्री कृष्ण रूप धारण किए थे सबके लिए पर्सनल बनकर आए थे? प्रकृति और पुरुष से सृष्टि की रचना हुई है!

जिसमें पुरुष केवल एक परमात्मा है जो श्री कृष्ण है! पूरे अनंत ब्रह्मांड में पुरुष केवल एकमात्र श्री कृष्ण है उनके अलावा जो भी हैं सब स्त्री हैं प्रकृति से युक्त है आत्मा को भी स्त्री कही गई है! प्रकृति भी स्त्री! पुरुष केवल श्री कृष्ण है जब उन गोपियों के जैसा प्रेम जिस जीव के अंदर उत्पन्न होगी! उनका प्रेम और तड़प परमात्मा के लिए ऐसी होगी जैसे मछली को जल से बाहर करने पर जल के लिए तड़पती है! यही स्थिति जब जीव की होगी एक फड़फड़ाहट मछली की तरह! उस परमात्मा के लिए तड़पेगी! उसी दिन उनको ब्रह्म की प्राप्ति होगी!

यही जीव,, ब्रह्म का मिलन है! जब प्यासी आत्मा,,, परमात्मा के तड़प में फड़फड़ाएगी! व्याकुलता उत्पन्न होगी उनसे मिलने की प्रबल इच्छा होगी तब जीव को परमात्मा की प्राप्ति होती है! एक एक जीव के साथ परमात्मा पर्सनल हैं लेकिन जीव, जब गोपियों की स्थिति में पहुंचेगी तब जीव और ब्रह्म का रासलीला संपन्न होती है आत्मा और परमात्मा का मिलन आनंद प्राप्ति,, माया निवृत्ति परमानंद को प्राप्त करना ही रासलीला है!

स्त्री और पुरुष का मिलन अर्थात आत्मा और परमात्मा का मिलन ही रासलीला है!

सबसे बड़ा आभूषण

परमात्मा तक पहुंचना है तो इन 16 आभूषण को अभी से धारण करना होगा! भगवान श्री कृष्ण जो 16 कलाओं से परिपूर्ण है! और भगवान श्री राम 12!

1. धैर्य,,,,,,2. सहनशीलता

3. विश्वास,,,,,, 4. प्रेम

5. निर्भयता,,,,, 6. प्रसन्नता

7. संयम,,,, 8. दया,,,,, 9. क्षमा

10. संतोष,,,, 11. वैराग्य,,,12.निष्काम

13.ज्ञान,,,, 14. स्थित प्रज्ञ (स्थिरता),,, 15. भक्ति!

16. सरलता!,,,,,16 महान गुण!

संतोष ही परम धन क्यों है?

धर्म रथ के रथी की ढाल विरति है और संतोष ही कृपाण है। संसार ही शत्रु है। ये शत्रु काम,क्रोध, लोभ के द्वारा रथी को पराजित करना चाहता है। रथी अपनी रक्षा के लिए विरति की ढाल और संतोष की कृपाण हाथ में लिए है। मनुष्य को संतोष तभी हो सकता है जब उसका प्रारब्ध पर विश्वास हो। बिना प्रारब्ध पर विश्वास किए मनुष्य संतुष्ट नहीं हो सकता। और संतोष से ही लोभ का अंत होता है।

जिमि लोभहिं सोखइ सतोषा।

गोस्वामी जी कहते हैं कि संतोष लोभ का शोषण करता है। योग दर्शन में भी कहा गया है कि-

संतोषादनुत्तम सुख लाभ:

संतोष से प्राणी को अनुत्तम सुख की प्राप्ति होती है। अनुत्तम सुख क्या है? जिससे उत्तम और कुछ भी न हो, उसे "अनुत्तम सुख" कहते हैं और वही ब्रह्म सुख भी है। मानस के उत्तर कांड में श्री कागभुशुण्डि जी गरुण जी को समझाते हुए कहते हैं-

बिनु संतोष न काम नसाहीं, काम अछत सुख सपनेहुं नाहीं

बिना संतोष के मनुष्य की इच्छा का नाश नहीं हो सकता। और जब-तक इच्छाएं विद्यमान हैं तब-तक स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता। और संतोष भी सहज होना चाहिए।

कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिनु।

चलइ कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि मरिअ।

सहज संतोष के बिना क्या किसी को विश्राम मिला है? जैसे जल के बिना नाव नहीं चल सकती है, उसी प्रकार सहज संतोष के बिना विश्राम नहीं मिल सकता। यहां संतोष के साथ सहज विशेषण लगने से ऐसा लगता है कि संतोष भी दो प्रकार का होता है एक होता है कृत्रिम संतोष, और दूसरा होता है सहज संतोष।

कृत्रिम संतोष उसे कहते हैं कि हम किसी वस्तु को पाने का प्रयत्न करते हैं जब वो नहीं मिली तो मन को समझाते हैं कि अब संतोष करो। परन्तु ऐसे में पूर्ण रूप से शान्ति नहीं मिलती, यदि उसको यह पता चल जाय कि

इच्छा पूरी हो सकती है तो पुनः वो उस ओर प्रवृत्त हो जाता है। लेकिन सहज संतोष मनुष्य के मन को बिल्कुल ही शान्त बना देता है।तो वो संतोष कैसे होता है? हमारे गुरुदेव भगवान कहते हैं कि जब-तक मनुष्य को परमेश्वर की उपलब्धि न हो जाए तब-तक सहज संतोष नहीं होता। सामान्य संतोष से उस अनुभूति की ओर बढ़ता है और उसके बाद सहज संतोष होता है तब प्राणी को विश्राम मिलता है। तो ये वैराग्य और संतोष ढाल और कृपाण है।

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि प्रारब्ध कैसे बनता है और कैसे उसका क्षय होता है। तो इस सम्बंध में परम पूज्य गुरुदेव भगवान शंकराचार्य जी महाराज कहते हैं कि हमारे शास्त्रों में चार पुरुषार्थ बताए गए हैं। अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।इन चारों में दो पुरुषार्थ के अधीन हैं और दो प्रारब्ध के अधीन हैं।इस तरह से दोनों का विभाजन कर लेना चाहिए।अर्थ और काम प्रारब्ध के अधीन, धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ के अधीन हैं। धर्म प्रारब्ध से नहीं मिलता। धर्म के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए।

मोक्ष भी प्रारब्ध से नहीं होगा। इसके लिए भी आपको पुरुषार्थ करना होगा। परन्तु अर्थ और काम यदि आपके प्रारब्ध में नहीं है तो आप लाख प्रयत्न कर लें आपको नहीं मिलेगा। और आपके प्रारब्ध में है तो कोई लाख बाधा डाले फिर भी आपको मिल कर रहेगा।

एक महात्मा कह रहे थे कि एक बार यमराज बैकुंठ धाम में भगवान श्री मन्नारायण के दर्शन करने के लिए गए तो देखा कि वहां पर एक पक्षी बैठा हुआ था। यमराज ने उसे घूरकर देखा तो वह पक्षी डर गया। यमराज की दृष्टि पड़ गई, लगता है कि अब हमारी मृत्यु का समय निकट आ गया है। घबराए हुए पक्षी ने गरुण जी से निवेदन किया कि भगवन्! आज यम की क्रूर दृष्टि मुझ पर पड़ गई है। लगता है कि अब शीघ्र ही हमारी मृत्यु हो जाएगी, आप यमराज

से हमारी रक्षा करें। गरुण जी ने कहा कि हम ऐसी जगह तुमको छिपा देंगे कि यमराज को पता ही नहीं चलेगा। और उसे अपनी पीठ पर बिठाकर सुमेरु पर्वत की एक गहन गुफा में पहुंचा दिए। दूसरे दिन फिर यमराज आए तो पक्षी को वहां न देखकर गरुण जी पूछा कि कल यहां एक पक्षी था आज नहीं दिख रहा है। तो गरुण जी ने कहा कि अब आपको उसका पता ही नहीं चलेगा। आप क्यूं पूछ रहे हैं उसको? तो यमराज ने कहा कि असल में उसकी मृत्यु सुमेरु पर्वत की एक गुफा में होने वाली थी और वो यहां बैठा था, इसकी मृत्यु वहां कैसे होगी। तो गरुण जी ने कहा अरे! हम तो उसको वहीं पहुंचा आए। इसको कहते हैं प्रारब्ध।

तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिलइ सहाइ।

आप न आवइ ताहि पहं, ताहि तो लइ जाइ।।

जैसा प्रारब्ध होता है, वैसा ही मनुष्य वहां पहुंच जाता है। ये प्रारब्ध की प्रबलता है। जिसको धन मिलना है वो अगर मिट्टी को भी छू ले तो सोना बन जाता है। गांवों में लोग खलिहान में अनाज रखते हैं। उसको उड़ाते हैं तो कोई प्रारब्ध वाले ऐसे होते हैं कि उनके सामने भूसा निकलता ही नहीं है अनाज ही अनाज निकलता है। तो खेत में काम करने वाले लोग कहते हैं कि बाबू! आप यहां से चले जाइए, पशुओं के लिए भी चारा चाहिए। आप तो अनाज ही अनाज गिरा रहे हैं। तो जिसके प्रारब्ध में धन रहता है उसको मिल कर रहता है जिसको नहीं है उसको नहीं मिलता। इसलिए प्रारब्ध पर विश्वास रखना चाहिए। और दूसरी बात यह है कि अगर दुःख आ जाता है तो भी घबराना नहीं चाहिए क्यूंकि संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसको सुख ही सुख मिलता है, दुःख नहीं मिलता। प्रारब्ध का क्षय भोगने से ही होता है।

प्रारब्धस्य तु भोगा क्षय:

एक कथा सुनी थी कि एक बार समर्थ रामदास के दर्शन करने के लिए शिवा जी महाराज गए। उस समय उनको ज्वर आया हुआ था। और वे ज्वर से कांप रहे थे। जब सुने कि शिवाजी महाराज आए हैं और कुछ आवश्यक परामर्श चाहते हैं तो उन्होंने अपने योग बल से अपना ज्वर अपने कम्बल को दे दिया। तो उनके स्थान पर कंबल कांपने लगा। और समर्थ रामदास जी ने शिवा जी से बात की। इसी बीच शिवाजी ने कंबल की ओर देखा तो पूछा कि महाराज ये कंबल कैसे हिल रहा है? तो बोले कि तुम्हारे आने के पहले मुझे ज्वर आ गया था। तुमसे बात करनी थी इसलिए थोड़ी देर के लिए ज्वर इसको दे रखा था। शिवाजी ने कहा कि जब आपमें इतनी शक्ति है कि आप ज्वर कंबल में पहुंचा सकते हैं तो आप उसको हटा ही क्यूं नहीं देते? उसको रखे क्यूं हैं? तो गुरु जी ने कहा कि प्रारब्ध का क्षय तो भोगने पर ही होता है। ये ज्वर जो आया है वो भोग कर ही समाप्त हो सकता है। भोग से यदि इसका क्षय नहीं होगा तो कभी नहीं होगा। इसका सामना तो करना ही पड़ेगा। इसलिए जीवन में जो भी सुख दुःख आए उसका स्वागत करना चाहिए। तो अर्थ और काम प्रारब्ध के अधीन तथा धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ के अधीन हैं। इसलिए संतोष ही परम धन है।

गो धन गज धन बाजि धन, और रतन धन खान।

जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

इसलिए- विरति चर्म संतोष कृपाना

इच्छा पूर्ति में क्या सुख है!

सारा संसार इच्छा पूर्ति करने में लगा हुआ है ताकि मुझे सुख मिले! अब तक कितनी इच्छा पूरी हो गई! तृप्ति मिला! नहीं! फिर भी लालसा नहीं गई! सब इसी भ्रम में बह रहे मुझे सुख मिलेगा आज नहीं तो कल मिलेगा पर अवश्य मिलेगा! अब तक कितनी इच्छा पूरी हो गई क्या सुख मिला? नहीं मिला तो आगे क्या मिलेगा? कितने कई वर्षों से त्योहार में जश्न मनाते आया, बड़े-बड़े विषय इंद्रिय भोग किया मिठाई रसमलाई ग्रहण किया कहां गए? मिला तृप्ति? नहीं! फिर भी इच्छा नहीं गई! ना ही इच्छा जा रही है ना तृप्ति मिल रही है! जो समस्त प्राणी सुख चाहते हैं उसका संबंध ना इच्छा से है ना संसार से है! ना इंद्रिय मन बुद्धि से है! हमारे सुख का संबंध किससे है? पहले उसे जानना होगा!

चतुश्लोकी भागवत

श्रीभगवानुवाच

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परम्।

पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥(१)

भावार्थ:- श्री भगवान कहते हैं - सृष्टि के आरम्भ होने से पहले केवल मैं ही था, सत्य भी मैं था और असत्य भी मैं था, मेरे अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं था। सृष्टि का अन्त होने के बाद भी केवल मैं ही रहता हूँ, यह चर-अचर सृष्टि स्वरूप केवल मैं हूँ और जो कुछ इस सृष्टि में दिव्य रूप से स्थिति है वह भी मैं हूँ, प्रलय होने के बाद जो कुछ बचा रहता है वह भी मै ही होता हूँ।(१)

ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि।

तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः ॥(२)

भावार्थ:- मूल तत्त्व आत्मा जो कि दिखलाई नहीं देती है, इसके अलावा सत्य जैसा जो कुछ भी प्रतीत देता है वह सभी माया है, आत्मा के अतिरिक्त जिसका भी आभास होता है वह अन्धकार और परछांई के समान मिथ्या है।(२)

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।

प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्॥(३)

भावार्थ:- जिसप्रकार पंच महाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) संसार की छोटी या बड़ी सभी वस्तुओं में स्थित होते हुए भी उनसे अलग रहते हैं, उसी प्रकार मैं आत्म स्वरूप में सभी में स्थित होते हुए भी सभी से अलग रहता हूँ।(३)

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः।

अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा॥(४)

भावार्थ:- आत्म-तत्त्व को जानने की इच्छा रखने वालों के लिए केवल इतना ही जानने योग्य है कि सृष्टि के आरम्भ से सृष्टि के अन्त तक तीनों लोक (स्वर्गलोक, मृत्युलोक, नरकलोक) और तीनों काल (भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यकाल) में सदैव एक समान रहता है, वही आत्म-तत्त्व है।(४)

॥ हरि: ॐ तत् सत् ॥

जन्माष्टमी व्रत कब पूरे होते हैं?

जो जन्माष्टमी का व्रत रहते हैं उनके लिए एक महत्वपूर्ण संदेश! उनका कोई फल उन्हें नहीं मिलता उनका फल उन्हें तभी मिलता है जब वह राधा अष्टमी का भी व्रत रहता है! राधा के बिना कृष्ण अधूरे और कृष्ण के बिना राधा अधूरे!

अपने व्रत से अपनी भक्ति से जितना प्रसन्न वह नहीं होते उतना प्रसन्न श्री राधा रानी की भक्ति से वह होते हैं हजारो जन्म के कठिन साधना तपस्या के फल स्वरुप जो कृष्ण मिलते हैं वह श्री जी की भक्ति से मात्र एक जन्म में श्री कृष्ण मिल जाते हैं जो श्री लाडली राधा रानी को छोड़कर केवल कृष्ण के ध्यान में लगा है तो भगवान उनसे प्रसन्न नहीं होते! परंतु क्यों?

क्योंकि भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि जीव जब तक मेरी राधे अर्थात राधा अष्टमी का व्रत नहीं रहता तब तक उसे मेरे व्रत जन्माष्टमी का फल नहीं मिलता! मेरा ध्यान करने से पहले मेरी राधे का ध्यान करो! उनको प्रसन्न रखो! मैं तुम्हें शीघ्र ही मिल जाऊंगा!

गीता प्रेस में कौन से पुराण की कितनी कीमत है?

यही कीमत पर मिलेंगे आपको वहां,,, आर्डर करके अपने घर पर ही मंगा सकते हैं!

1. ब्रह्म पुराण- 160/

2. पद्म पुराण- 400/

3. विष्णु पुराण- 200/

4. नारद पुराण- 300/

5. मार्कंडेय पुराण- 150/

6. अग्नि पुराण- 300/

7. ब्रह्म वैवर्त पुराण- 300/

8. लिंग पुराण- 350/

9. वराह पुराण- 170/

10. स्कंद पुराण- 530/

11. कूर्म पुराण- 200/

12. मत्स्य पुराण- 430/

13. गरुड़ पुराण- 250/

14. शिव पुराण- 300/

15. वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत एक भाग- 500/

इसके कुल 6 भाग हैं!

16. वाल्मीकि रामायण- 350/

17. विवेक चूड़ामणि- 30/

18. श्रीमद् भागवत महापुराण प्रथम खंड- 380/

द्वितीय खंड- 380/.

सबसे कम कीमत में और सबसे सटीक वर्णन करने वाले एकमात्र गीता प्रेस प्रकाशन हीं है! बाकी प्रशासन मे एक पुस्तक की कीमत बहुत ही अधिक है! इसलिए गीता प्रेस का ही बुक खरीदें!

अगर अध्ययन करनी हो! इसके अलावा जो भी ग्रंथ,,, योग दर्शन और भी बहुत सारे हैं,, यह तो बहुत थोड़े हैं और भी कई सारे ग्रंथ हैं नारद पंचरात्र,,,,राधा सुधा निधि,,, ब्रह्म संहिता,,, गर्ग संहिता,, उनकी कीमत आपको जानना है! उसके लिए आप कोई भी एडमिन से सलाह ले सकते हैं!

स्कन्द पुराण

इस महापुराण के विषय में जानते हैं!

18 महापुराण में सबसे पहला स्थान इन्हीं का है जिसमें 81000 श्लोक हैं! दूसरे स्थान पद्म पुराण का है! स्कंद पुराण में शिव जी का वर्णन है तो पद्म पुराण में भगवान विष्णु का वर्णन किया गया है! और इसमें 84 लाख योनियां,,, कलयुग में नाम जप की महिमा! भगवान के गहरे रहस्य इसी पद्म पुराण में बताए गए हैं! जो अत्यंत ही श्रेष्ठ है!

अब जानते हैं स्कंद पुराण के विषय मे

विभिन्न विषयों के विस्तृत विवेचन की दृष्टि से स्कन्दपुराण सबसे बड़ा पुराण है। भगवान स्कन्द (कार्तिकेय) के द्वारा कथित होने के कारण इसका नाम 'स्कन्दपुराण' है। इसमें बद्रिकाश्रम, अयोध्या, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, कन्याकुमारी, प्रभास, द्वारका, काशी, शाकम्भरी, कांची आदि तीर्थों की महिमा; गंगा, नर्मदा, यमुना, सरस्वती आदि

नदियों के उद्‌गम की मनोरथ कथाएँ; रामायण, भागवतादि ग्रन्थों का माहात्म्य, विभिन्न महीनों के व्रत-पर्व का माहात्म्य तथा शिवरात्रि, सत्यनारायण आदि व्रत-कथाएँ अत्यन्त रोचक शैली में प्रस्तुत की गयी हैं। विचित्र कथाओं के माध्यम से भौगोलिक ज्ञान तथा प्राचीन इतिहास की ललित प्रस्तुति इस पुराण की अपनी विशेषता है। आज भी इसमें वर्णित विभिन्न व्रत-त्योहारों के दर्शन भारत के घर-घर में किये जा सकते हैं।

इसमें लौकिक और पारलौकिक ज्ञान के अनन्त उपदेश भरे हैं। इसमें धर्म, सदाचार, योग, ज्ञान तथा भक्ति के सुन्दर विवेचन के साथ अनेकों साधु-महात्माओं के सुन्दर चरित्र पिरोये गये हैं। आज भी इसमें वर्णित आचारों, पद्धतियों के दर्शन हिन्दू समाज के घर-घर में किये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें भगवान शिव की महिमा, सती-चरित्र, शिव-पार्वती-विवाह, कार्तिकेय-जन्म, तारकासुर-वध आदि का मनोहर वर्णन है।[1]

इस पुराण के माहेश्वरखण्ड के कौमारिकाखण्ड के अध्याय २३ में एक कन्या के पालन के फल को दस पुत्रों के बराबर कहा गया है-

दशपुत्रसमा कन्या दशपुत्रान्प्रवर्द्धयन्।

यत्फलं लभते मर्त्यस्तल्लभ्यं कन्ययैकया॥ २३.४६ ॥

(एक पुत्री के पालन पोषण के पुण्य दस पुत्रों के समान है। कोई व्यक्ति दस पुत्रों के लालन-पालन से जो फल प्राप्त करता है वही फल केवल एक कन्या के पालन-पोषण से प्राप्त हो जाता है।

यह खण्डात्मक और संहितात्मक दो स्वरूपों में उपलब्ध है। दोनों स्वरूपों में ८१-८१ हजार श्लोक परम्परागत रूप से माने गये हैं। खण्डात्मक स्कन्द पुराण में क्रमशः माहेश्वर, वैष्णव, ब्राह्म, काशी, अवन्ती (ताप्ती और रेवाखण्ड) नागर तथा प्रभास -- ये सात खण्ड हैं। संहितात्मक स्कन्दपुराण में सनत्कुमारसंहिता, शंकरसंहिता, ब्राह्मसंहिता, सौरसंहिता, वैष्णवसंहिता और सूतसंहिता -- छः संहिताएँ हैं।

विस्तार

स्कन्द पुराण मूल रूप में एक शतकोटि पुराण है, जिसमें शिव की महिमा का वर्णन किया गया है। उसके सारभूत अर्थ का व्यासजी ने स्कन्दपुराण में वर्णन किया है। स्कन्द पुराण इक्यासी हजार श्लोकों से युक्त है एवं इसमें सात खण्ड हैं। पहले खण्ड का नाम माहेश्वर खण्ड है, इसमें बारह हजार से कुछ कम श्लोक हैं। दूसरा वैष्णवखण्ड है, तीसरा ब्रह्मखण्ड है। चौथा काशीखण्ड एवं पाँचवाँ अवन्तीखण्ड है; फिर क्रमश: नागर खण्ड एवं प्रभास खण्ड है।[2]

स्कन्द पुराण के कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। प्राचीन संस्करणों में नवल किशोर प्रेस, लखनऊ एवं वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई के संस्करण हैं। इन दोनों संस्करणों के साथ-साथ एक बांग्ला संस्करण के आधार पर भी स्कन्द पुराण के पाँच खण्डों का संपादित संस्करण 1960-62 ई० में मनसुखराय मोर, 5 क्लाइव रा ॅ, कलकत्ता से छह जिल्दों में प्रकाशित हुआ। इसी के साथ नागर तथा प्रभास खण्ड को भी मिलाकर सम्पूर्ण स्कन्द पुराण (मूलमात्र) अब चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी से प्रकाशित है।[3] इसी संस्करण से श्लोकों की गणना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि स्कन्द पुराण में कालान्तर में कम से कम तेरह हजार श्लोक प्रक्षिप्त रूप में शामिल हो गये हैं। श्लोकों की

कुल संख्या 81,100 की अपेक्षा 94,410 हो गयी हैं; जबकि कुल संख्या विभिन्न पुराणों में उल्लिखित संख्या (81,100) से कुछ हजार कम ही होनी चाहिए थी, क्योंकि पुराणगत प्राचीन गणना में श्लोकों के साथ उवाचों की संख्या भी मिली रहती थी। यह स्वतंत्र शोध का विषय है। बहरहाल यहाँ उक्त संस्करण से अध्याय सहित श्लोकों की सम्पूर्ण संख्या दी जा रही है।

18 पुराण का संक्षेप वर्णन

कौन से पुराण में क्या बताई गई है? किसकी व्याख्या है और किस में कितने श्लोक हैं? आईए जानते हैं संक्षिप्त रूप में!

पुराणों का महत्त्व

पुराण भारतीय समाज में ज्ञान के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। ये केवल धार्मिक उपदेशों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें विज्ञान, भूगोल, ज्योतिष, इतिहास, और कला जैसी विभिन्न विधाओं का भी समावेश है। वेदों की तुलना में पुराणों को अधिक लोकप्रिय माना जाता है, क्योंकि वे सरल भाषा और कथा शैली में लिखे गए हैं, जिससे सामान्य जनता के लिए उनका समझना और अपनाना आसान हो गया।

प्रमुख पुराण और उनके श्लोक

1. ब्रह्मपुराण – 10,000 श्लोक: ब्रह्मपुराण हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन पुराणों में से एक है, जो ब्रह्मा की महिमा का वर्णन करता है। इसमें सृष्टि, ब्रह्मांड, और देवताओं के जन्म की कथाएँ शामिल हैं।

2. पद्मपुराण – 55,000 श्लोक: यह पुराण पाँच भागों में विभाजित है और इसमें भगवान विष्णु की महिमा का विस्तृत वर्णन है। इसमें पवित्र तीर्थों, विशेषकर पुष्कर और भगवान राम के जीवन से संबंधित कथाएँ शामिल हैं।

3. विष्णुपुराण – 23,000 श्लोक: विष्णुपुराण भगवान विष्णु की महिमा का वर्णन करता है और इसमें उनके दस अवतारों का विस्तार से वर्णन है। यह पुराण न केवल धार्मिक महत्व का है, बल्कि इसे ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में भी देखा जाता है।

4. शिवपुराण – 24,000 श्लोक: शिवपुराण भगवान शिव की महिमा का वर्णन करता है और इसमें उनके विभिन्न रूपों और लीलाओं का उल्लेख है। इस पुराण में शिव पूजा के महत्व पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

5. श्रीमद्भावतपुराण – 18,000 श्लोक: यह पुराण भगवान विष्णु के आठवें अवतार, श्रीकृष्ण, के जीवन और लीलाओं का विस्तार से वर्णन करता है। यह भक्तिपूर्वक भक्ति के मार्ग का प्रमुख ग्रंथ माना जाता है।

6. नारदपुराण – 25,000 श्लोक: नारदपुराण में संगीत, ज्योतिष, और तीर्थ यात्रा का वर्णन है। इसे नारद मुनि से संबंधित माना जाता है और इसमें भक्ति और संगीत के महत्व पर जोर दिया गया है।

7. मार्कण्डेयपुराण – 9,000 श्लोक: यह पुराण देवी दुर्गा की महिमा का वर्णन करता है और इसमें प्रसिद्ध दुर्गा सप्तशती का उल्लेख है। इसे शाक्त परंपरा का प्रमुख ग्रंथ माना जाता है।

8. अग्निपुराण – 15,000 श्लोक: अग्निपुराण में हिंदू धर्म के विभिन्न पहलुओं जैसे कर्मकांड, चिकित्सा, ज्योतिष, और वास्तुशास्त्र का उल्लेख है। यह ग्रंथ अग्नि देवता को समर्पित है।

9. भविष्यपुराण – 14,500 श्लोक: भविष्यपुराण में भविष्यवाणी और ज्योतिष के विभिन्न पहलुओं का वर्णन है। इसमें वर्तमान और भविष्य में घटने वाली घटनाओं का भी उल्लेख है।

10. ब्रह्मवैवर्तपुराण – 18,000 श्लोक: इस पुराण में भगवान कृष्ण और राधा की महिमा का वर्णन है। यह वैष्णव परंपरा का प्रमुख ग्रंथ माना जाता है और इसमें भगवान विष्णु के चार अवतारों का विस्तार से वर्णन है।

11. लिंगपुराण – 11,000 श्लोक: लिंगपुराण में शिवलिंग की महिमा और उसकी पूजा का वर्णन है। यह ग्रंथ शैव परंपरा का महत्वपूर्ण अंग है।

12. वाराहपुराण – 24,000 श्लोक: वाराहपुराण में भगवान विष्णु के वाराह अवतार का वर्णन है और इसमें धर्म, नीति, और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का भी उल्लेख है।

13. स्कन्धपुराण – 81,100 श्लोक: यह पुराण सबसे बड़ा पुराण है और इसमें कार्तिकेय की महिमा, तीर्थों का वर्णन, और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तार से वर्णन है।

14. कूर्मपुराण – 17,000 श्लोक: इस पुराण में भगवान विष्णु के कूर्म अवतार का वर्णन है और इसमें विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, व्रतों, और त्यौहारों का भी उल्लेख है।

15. मत्स्यपुराण – 14,000 श्लोक: मत्स्यपुराण भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार का वर्णन करता है और इसमें सृष्टि के विनाश और पुनर्स्थापना की कथा शामिल है।

16. गरुड़पुराण – 19,000 श्लोक: यह पुराण गरुड़ देवता को समर्पित है और इसमें मृत्यु के बाद की यात्रा, कर्म, और मोक्ष का वर्णन किया गया है।

17. ब्रह्माण्डपुराण – 12,000 श्लोक: ब्रह्माण्डपुराण में ब्रह्मांड की संरचना, ग्रहों, नक्षत्रों, और ज्योतिष शास्त्र का विस्तार से वर्णन है।

18. वामनपुराण – 10,000 श्लोक: इस पुराण में भगवान विष्णु के वामन अवतार का वर्णन है और इसमें धर्म, नीति, और दान के महत्व का भी उल्लेख है।

पुराण केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि ये भारतीय संस्कृति और इतिहास का अभिन्न हिस्सा हैं। वे हमें न केवल धार्मिक शिक्षा देते हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य भी सिखाते हैं। पुराणों में दी गई कहानियाँ और शिक्षाएँ आज भी हमें प्रेरित करती हैं और हमारे जीवन को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

श्रीमद्भागवत द्वितीय स्कन्ध

श्रीमद्भागवत के द्वितीय स्कन्ध के आठवें अध्याय में राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से निम्नलिखित प्रश्न पूछे हैं:

जब ब्रह्माजी ने नारदजी को निर्गुण भगवान के गुणों का वर्णन करने का निर्देश दिया, तो नारदजी ने ये शिक्षा किसे और किस रूप में दी?

कृपया मुझे भगवान की अकल्पनीय शक्तियों से संबंधित कहानियाँ सुनाएँ जो लोगों को सर्वोच्च कल्याण पहुंचाती हैं।

मैं सांसारिक आसक्तियों से विरक्त मन से, भगवान श्री कृष्ण में, जो सबकी आत्मा हैं, अपनी चेतना को निमज्जित करके, किस प्रकार अपना शरीर त्याग सकता हूँ?

श्री कृष्ण की दिव्य लीलाओं का नियमित श्रवण और वर्णन किस प्रकार भक्तों के हृदय में भगवान के प्रकटीकरण का कारण बनता है?

श्री कृष्ण किस प्रकार कानों के माध्यम से भक्तों के हृदय में प्रवेश करते हैं तथा किस प्रकार उनके मन की अशुद्धियों को शुद्ध करते हैं?

एक बार जब उनका हृदय शुद्ध हो जाता है, तो ऐसा कैसे होता है कि ऐसे भक्त एक क्षण के लिए भी श्री कृष्ण के चरणकमलों को नहीं छोड़ते?

यद्यपि जीव का पंचतत्वों (पंचभूतों) से कोई अंतर्निहित संबंध नहीं है, फिर भी शरीर इन तत्वों से कैसे बना है?

भगवान की नाभि से उत्पन्न कमल, जहां से संसारों की रचना हुई, की प्रक्रिया का क्या महत्व है?

भगवान्, जिनकी कृपा से ब्रह्माजी जीवों की रचना करते हैं, वे माया का त्याग करके किस रूप में और कहाँ विश्राम करते हैं?

आपने कहा है कि विराट पुरुष के अंगों से लोकों और उनके शासकों की रचना हुई है। इसका क्या अर्थ है?

महाकल्प और अवन्तर कल्प की संख्या क्या है? समय कैसे मापा जाता है?

समय की सूक्ष्म और स्थूल गति को कैसे समझा जाता है?

जीवों की विभिन्न क्रियाओं के कारण कितनी और किस प्रकार की हलचलें होती हैं?

जीवात्माएँ विभिन्न योनियों, जैसे देव, मनुष्य आदि को कैसे प्राप्त करते हैं तथा विशिष्ट योनियों को प्राप्त करने के लिए वे कौन से कर्म करते हैं?

पृथ्वी, पाताल, आकाश, ग्रह, तारे, पर्वत, नदियाँ, महासागर, द्वीप और उनमें रहने वाले जीव कैसे अस्तित्व में आते हैं?

कृपया ब्रह्माण्ड के आंतरिक और बाह्य दोनों आयामों का वर्णन करें।

कृपया युगों, उनकी अवधि और उनके धर्मों के बीच अंतर बताएं।

मनुष्य के सामान्य और विशेष धर्म (कर्तव्य) क्या हैं?

तत्वों की संख्या, प्रकृति और विशेषताएँ क्या हैं?

भगवान की पूजा और भक्ति योग का अभ्यास करने की विधि क्या है?

महान योगी कौन सी दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करते हैं और वे किस परम अवस्था को प्राप्त करते हैं?

योगियों का सूक्ष्म शरीर किस प्रकार विलीन होता है?

वेद, उपवेद, धर्मशास्त्र, इतिहास और पुराणों की प्रकृति और महत्व क्या है?

जीवों की उत्पत्ति, पालन और प्रलय कैसे होता है?

आत्मा के बंधन और मोक्ष का स्वरूप क्या है तथा वह अपने वास्तविक स्वरूप में किस प्रकार स्थित रहती है?

भगवान अपनी माया के साथ किस प्रकार क्रीड़ा करते हैं और उसका त्याग करके साक्षी की भाँति उदासीन कैसे हो जाते हैं?

सूतजी शौनकजी को बताते हैं कि जब राजा परीक्षित ने मुनियों की सभा में शुकदेवजी से भगवान की दिव्य लीलाओं का वर्णन करने का अनुरोध किया, तो शुकदेवजी बहुत प्रसन्न हुए। फिर उन्होंने परीक्षित को पूज्य श्रीमद्भागवत महापुराण सुनाया, जिसे स्वयं भगवान ने ब्रह्म कल्प के प्रारंभ में ब्रह्माजी को सुनाया था। शुकदेवजी परीक्षित द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों का उत्तर देते हुए बताते हैं कि जिस प्रकार स्वप्न में मनुष्य का अपने द्वारा देखे गए विषयों से कोई वास्तविक संबंध नहीं होता, उसी प्रकार माया के बिना आत्मा का भी भौतिक पदार्थों से कोई वास्तविक संबंध नहीं होता। माया के कारण आत्मा विभिन्न रूपों में प्रकट होती है और "मैं हूं" का भाव विकसित करती है, लेकिन जब आत्मा अपनी स्वाभाविक स्थिति में लौटती है, तो वह गुणों से परे हो जाती है और पूरी तरह से विरक्त हो जाती है।

ब्रह्माजी की तपस्या

ब्रह्माजी ने एक हजार दिव्य वर्षों तक तपस्या की

ब्रह्माजी अपने जन्मस्थान कमल पर बैठकर सृष्टि के बारे में विचार करने लगे। हालाँकि, उनके पास ब्रह्मांड की रचना करने के लिए आवश्यक ज्ञान या दृष्टि नहीं थी। एक दिन, जब वे इस चिंता में लीन थे, तो उन्होंने प्रलय के सागर से वर्णमाला के 16वें और 21वें अक्षर 'त' और 'प' को सुना, जो मिलकर 'तप-तप' (अर्थात 'तप करना') वाक्यांश बनाते थे, जिसे दो बार दोहराया गया था। यह सुनकर, ब्रह्माजी ने चारों ओर देखा कि क्या कोई और मौजूद है, लेकिन उन्हें कोई नहीं दिखाई दिया। यह निश्चय करके कि भगवान ने उन्हें तपस्या करने का प्रत्यक्ष निर्देश दिया है, वे अपने

कमल पर वापस बैठ गए और ध्यान में लीन हो गए। उन्होंने अपने मन, प्राण और इंद्रियों को एकाग्र करते हुए एक हजार दिव्य वर्षों तक तपस्या की। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर, भगवान ने उन्हें अपना परम धाम दिखाया, जो किसी भी अन्य धाम की पहुँच से परे और सबसे ऊँचा है।

हरि का दिव्य निवास सभी लोकों में सर्वोच्च है। इस पारलौकिक लोक में काल, कर्म और माया का अस्तित्व नहीं है। माया अनुपस्थित है, तथा तीन गुण - सत्व, रज और तम - कहीं नहीं मिलते।

यहाँ हरि के शाश्वत पार्षद (पार्षद) निवास करते हैं।

इस पवित्र निवास में हरि का स्वरूप दिव्य तेज और श्याम वर्ण का है। उनकी आंखें कमल की पंखुड़ियों जैसी हैं, और वे पीले वस्त्र पहनते हैं जो उनकी सुंदरता और मधुरता को बढ़ाते हैं, जो उनके अस्तित्व के हर रोम में प्रकट होते हैं। उनके दिव्य शरीर का प्रत्येक भाग मूंगा और नीलम सहित बहुमूल्य रत्नों और आभूषणों से सुशोभित है, जो उनके कमल जैसे स्वरूप को और भी निखारते हैं। उनके सिर पर एक शानदार मुकुट है, और उनके कानों में सोने की बालियाँ सजी हैं। इस उच्च लोक में, लक्ष्मी उनके दिव्य चरणों की सेवा करती हैं,

जबकि ब्रह्मा इस दिव्य भव्यता को देखते हैं, और सहयोगी अपनी समर्पित सेवा करते हैं।

ब्रह्माजी ने उस दिव्य वैकुंठ लोक में एक अत्यंत उत्कृष्ट और अमूल्य आसन पर बैठे हुए परमेश्वर को देखा, जो शक्ति के पच्चीस स्वरूपों से घिरा हुआ था: पुरुष (ब्रह्मांडीय व्यक्ति), प्रकृति (स्वभाव), महत्-तत्व (महान सिद्धांत), अहंकार (अहंकार), मन (मन), पाँच इंद्रियाँ और पाँच तन्मात्राएँ (सूक्ष्म तत्व)। भगवान नित्य छह दिव्य, सिद्ध गुणों से संपन्न हैं: ऐश्वर्य (ऐश्वर्य), धर्म (धार्मिकता), कीर्ति (महिमा), श्री (समृद्धि), ज्ञान (ज्ञान), और वैराग्य (वैराग्य)। ये गुण अपने शाश्वत रूप में कहीं और नहीं रहते। परम भगवान अपने अनंत, शाश्वत, आनंदमय रूप में लीन रहते हैं।

भगवान के दिव्य धाम को देखकर ब्रह्मा का हृदय आनंद से भर गया, शरीर कांप उठा और आंखों में प्रेम के आंसू उमड़ आए। उन्होंने भगवान के चरण कमलों में श्रद्धा से सिर झुकाया, जो केवल आत्मज्ञानी ऋषियों को ही प्राप्त होते हैं। ब्रह्मा की भक्ति और सृष्टि करने की तत्परता से प्रसन्न होकर परमेश्वर ने मुस्कराते हुए उनसे हाथ मिलाया और कहा, "ब्रह्मा, तुम्हारे हृदय में पहले से ही सभी वेदों का ज्ञान विद्यमान है। तुमने सृष्टि की रचना करने के लिए दीर्घकाल तक तपस्या करके मुझे प्रसन्न किया है। जो लोग अपने हृदय में छल-कपट रखकर योग का अभ्यास करते हैं, वे मुझे कभी प्रसन्न नहीं कर सकते। तुम्हारी जो भी इच्छा हो, तुम उसे मांग सकते हो। तुमने अपनी घोर तपस्या के कारण मुझे प्रत्यक्ष देखे बिना ही मेरे धाम को देख लिया है। उस समय तुम्हें सृष्टि-प्रक्रिया के विषय में संदेह था, इसलिए मैंने तुम्हें तपस्या करने का निर्देश दिया था।

तपस्या मेरा हृदय है और मैं तपस्या की आत्मा हूं। तपस्या के द्वारा मैं ही सृष्टि की रचना, पालन और अंत में प्रलय करता हूं। तपस्या मेरी अद्वितीय और शक्तिशाली शक्ति है।"

जब भगवान ने ब्रह्मा से वरदान मांगने को कहा तो ब्रह्मा ने मांगा:

ब्रह्मा ने भगवान से अनुरोध किया कि वे उन्हें अपने निर्गुण (निराकार) और सगुण (विशेषताओं सहित) दोनों पहलुओं का ज्ञान प्रदान करें।

ब्रह्मा यह समझना चाहते थे कि भगवान अपनी माया शक्ति से किस प्रकार संसार का सृजन, पालन और संहार करते हैं।

उन्होंने प्रार्थना की कि सृजन का कार्य करते समय वे कर्तापन के अहंकार ("मैं यह कर रहा हूँ") से बंधे न रहें।

ब्रह्मा ने उनसे अनुरोध किया कि वे भगवान के निर्देशों का पालन करते हुए सतर्क रहें।

उन्होंने प्रार्थना की कि सृजन प्रक्रिया में लगे रहते हुए वे अहंकार में न उलझें।

भगवान ने उत्तर दिया, "मैं अपने स्वरूप का अत्यन्त गुह्य ज्ञान तुम्हें प्रकट करूंगा, जो प्रेममयी भक्ति से पूर्ण है। जहां तक मेरे विस्तार, गुण, रूप, गुण और लीलाओं का प्रश्न है, मेरी कृपा से तुम उनका सार ठीक उसी रूप में अनुभव करोगे, जैसा वे हैं।"

श्रीमद्भागवत महापुराण

यह कहकर भगवान ने ब्रह्माजी को चतुःश्लोकी भागवत का ज्ञान दिया।

अहं एव असं अग्रे न अन्यद यत् सदासत् परम

पश्चत् अहं यद् एतत् च यो अवशिष्येत सो अस्मि अहं।

ते अर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत् च आत्मानि

तद् विद्यत् आत्मानो मयम यथा आभासो यथा तमः।

यथा महन्ति भूतानि भूतेषु उच्छवचेषु अनु

प्रविष्टानि अप्रविष्टानि तथा तेषु न तेषु अहम्।

एतवद् एव जिज्ञासां तत्व जिज्ञासा आत्मानः

अन्वय व्यतिरेकाभ्यं यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा।

भगवान कहते हैं कि सृष्टि की रचना से पहले केवल वे ही थे। उनके अलावा कोई स्थूल या सूक्ष्म वस्तु नहीं थी, न ही कोई अज्ञान था। जहाँ यह सृष्टि नहीं है, वहाँ भी भगवान ही रहते हैं। इस सृष्टि में जो कुछ भी दिखाई देता है, वह भी भगवान ही है। और जब सृष्टि समाप्त हो जाएगी, तब भी जो कुछ शेष रहेगा, वह भगवान ही होगा। (भागवत 2.9.32)

भगवान कहते हैं कि जो वस्तुएँ वास्तव में नहीं होतीं, किन्तु प्रतीत होती हैं, वे उनकी माया हैं। जैसे आकाश में सूर्य का प्रतिबिम्ब जल आदि में दिखाई देता है, वैसे ही यह प्रतिबिम्ब सूर्य से बाहर होता है, तथा सूर्य के सहयोग से ही दिखाई

देता है। इसी प्रकार माया भी शक्तिशाली भगवान से बाहर रहती है, किन्तु उनके सहयोग से ही कार्य करती है। अंधकार सदैव प्रकाश से दूर रहता है, किन्तु प्रकाश के बिना अंधकार का बोध असंभव होगा। केवल नेत्र के प्रकाश से ही अंधकार का बोध हो सकता है। (भागवत 2.9.33)

जीवों के शरीर में पाँच महाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, आपा, पृथ्वी) विद्यमान रहते हैं, जो शरीर के निर्माण में सहायक होते हैं, किन्तु ये तत्व पहले से ही सर्वत्र विद्यमान रहते हैं। इसी प्रकार भगवान् भी जीवों के शरीर में आत्मा के रूप में विद्यमान रहते हैं, किन्तु आत्मा के दृष्टिकोण से भगवान् ही सब कुछ हैं, अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। (भागवत 2.9.34)

शास्त्रों में कहा गया है कि 'यह ब्रह्म नहीं है, यह ब्रह्म नहीं है' (नकार) और 'यह ब्रह्म है, यह ब्रह्म है' (पुष्टि), अर्थात भगवान सर्वत्र और सदैव विद्यमान हैं। वे ही परम सत्य हैं और आत्मा के सार को समझने के लिए केवल इस सत्य को समझना आवश्यक है। (भागवत 2.9.35)

इसके बाद भगवान ब्रह्मा को निर्देश देते हैं कि वे अविचल ध्यान में रहें तथा उनके द्वारा बताए गए सिद्धांतों पर पूर्ण निष्ठा रखें। ऐसा करने से ब्रह्मा प्रत्येक सृष्टि चक्र में विभिन्न रूपों में सृष्टि की रचना करते हुए भी कभी मोह में नहीं पड़ेंगे। शुकदेवजी कहते हैं कि ब्रह्मा को यह निर्देश देकर भगवान अंतर्ध्यान हो गए। तत्पश्चात ब्रह्मा ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया तथा फिर उसी रूप में सृष्टि की रचना की, जैसी उन्होंने पिछले सृष्टि चक्र में की थी।

शुकदेवजी राजा परीक्षित से कहते हैं कि एक बार ब्रह्माजी सृष्टि-रचना के अपने कर्तव्य को पूर्ण करने के लिए यम-नियम का पालन कर रहे थे। उस समय उनके पुत्रों में सबसे प्रिय और समर्पित ऋषि नारद ने बड़े संयम, विनय और सौम्यता के साथ भगवान की माया का मर्म समझने की इच्छा से ब्रह्माजी की सेवा की और इस प्रकार ब्रह्माजी को बहुत प्रसन्न किया। जब ऋषि नारद ने देखा कि उनके पिता ब्रह्माजी उनसे प्रसन्न हैं, तो उन्होंने वही प्रश्न पूछे, जो राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से पूछे थे। नारदजी के प्रश्नों से ब्रह्माजी और भी अधिक प्रसन्न हुए। फिर उन्होंने अपने पुत्र नारद को वही दस लक्षणों वाला भागवत पुराण सुनाया, जो स्वयं भगवान ने उन्हें प्रदान किया था।

शुकदेवजी कहते हैं कि जब मेरे परम तेजस्वी पिता (वेदव्यास) सरस्वती नदी के तट पर भगवान का ध्यान कर रहे थे, तब नारद मुनि ने उन्हें यही भागवत पुराण सुनाया था। शुकदेवजी आगे कहते हैं कि राजा परीक्षित के प्रश्नों, जैसे कि विराट पुरुष से ब्रह्मांड की उत्पत्ति कैसे हुई आदि के उत्तर भागवत पुराण में दिए गए हैं। ऐसा कहकर शुकदेवजी भागवत के दस लक्षणों का वर्णन करते हैं।

संसार में हमें कैसे रहना है?

जैसे कीचड़ में कमल रहती है! देखो कमल का जो पुष्प है वह रहता कीचड़ में है जहां पूरी मलीनता रहती है उस जगह पर कमल फूल खिलता है लेकिन वह कमल कैसे रहता है? उस कीचड़ को नहीं छुती उससे अलग ऊपर रहती है! ना कीचड़ कमल को टच करती है ना कमल कीचड़ को! बस ऐसे ही यह संसार एक कीचड़ है जहां कभी सुख मिलेंगे कभी दुख, कभी ठंडी होगी कभी गर्मी, कभी अपमान तो कभी सम्मान! यह आंधियां चलती रहेगी! पर इससे प्रभावित हमें नहीं होना है रहना ऐसा है कि हमें संसार की माया छु न सके! हम उससे प्रभावित न हो!

भगवान की कृपा- कैसे जाने की आपकी कृपा है हम पर!

अर्जुन भगवान से पूछते हैं-

हे मधुसूदन! हम कैसे जाने की हम पर आपकी कृपा है या नहीं! भगवान कहते हैं- अगर उनकी बुद्धि मेरी चीजों को मेरे ज्ञान को मेरे विषयों को समझ पा रही है तो मेरी उस पर कृपा है मेरी कृपा के बिना बुद्धि मेरी चीजों को नहीं समझ पाएगी! अगर उनका चित् और मन, बुद्धि बार-बार मेरी तरफ भाग रही है! हर पल हर घड़ी मेरे चिंतन में खोई हुई है हमेशा उनका ध्यान मुझ में ही लगा हुआ है! बस समझ लो मैं उन पर अपनी कृपा कर दी है मेरी दो प्रकार की बुद्धि है जो एक बुद्धि सबको दी है प्राकृतिक और एक विवेक बुद्धि जो जीव मेरे प्रिय हैं बस उन्हीं को अपनी कृपा से मैं देता हूं यह बुद्धि हर किसी को नहीं!

जो मेरे विषयों को नहीं समझ पा रहे तो वह मेरे मार्ग पर आएंगे कैसे? भगवान अर्जुन से कहते हैं- प्राणी का मन, बुद्धि, चित् क्यों मेरी तरफ नहीं आता! इसका सिर्फ एक ही कारण है मेरी उस पर कृपा नहीं है! मेरी कृपा के बगैर वाणी पर मेरा एक नाम नहीं आ सकता! वाणी पर नाम आना तो मेरी बहुत बड़ी कृपा है! मेरी कृपा के बिना प्राणी को मेरा कभी याद आएगी ही नहीं! मैं हूं या नहीं यह भी उसे मालूम नहीं होगा उनका पूरा जीवन ऐसे ही चला जाएगा मुझको कभी जान हीं नहीं पाएगा! फिर जन्म लेगी फिर मरेगी बस ऐसे ही चक्र में बहती रहेगी अगर मेरी उस पर कृपा नहीं हुई! तो कभी उन्हें मेरा स्मरण नहीं हो सकता! मेरा स्मरण तभी होता है मन में मेरा विचार तभी आता है जब मेरी उस पर बहुत बड़ी दिव्य कृपा होती है!

धोखे से भी वाणी पर कृष्ण शब्द निकल गया तो मेरी कृपा से! अधिक आ रहा तो अधिक कृपा है! वाणी पर मेरा नाम ही नहीं आ रहा मेरा याद ही नहीं आ रहा तो मेरी उस पर बिल्कुल कृपा नहीं है!

अपनी कृपा करके मैं उनका दिमाग घूमाता हूं! जब मेरी कृपा होती है तब उसका दिमाग घूमता है जो संसार का पागलपन है वह सब नष्ट हो जाता है फिर वह संसार का चिंतन ना करके हर पल बस मेरा ही करेगा! जब मेरी कृपा होती है तब उनकी बुद्धि मेरी तरफ आता है! जिनका मन मुझ में नहीं लगता जानते हो क्यों? क्योंकि मुझे ही वह जीव पसंद नहीं इसलिए अपने से दूर फेंक दिया है 84 में उनको सदा के लिए घूमाता रहूंगा उन्हें मोक्ष कभी नहीं मिलेंगे! जो पसंद है मुझे वही मेरे मार्ग पर आते हैं! और उन्हीं का कल्याण होता है!

भगवान कैसे मिलेंगे?

आज का विषय थोड़ा समझने का विषय है!

यदि जिस भक्त को भगवान की प्राप्ति चाहिए यह विषय उन्हीं के लिए है अंत तक एक एक शब्दों को गहराई से समझने होंगे!

महत्वपूर्ण विषय

****

आज एक उदाहरण ने साबित कर दिया माया का एक बूंद भी परमात्मा की प्राप्ति में सबसे बड़ा अवरोधक है!

माया रहित हो जाना हीं परमात्मा की प्राप्ति है! केवल मंथन करने से नहीं मिलेंगे भगवान! जैसे पानी,,, विद्युत का कुचालक है इसमें विद्युत,,, परमात्मा को बताया गया है और पानी,,माया का स्वरूप है, समझिए तथ्य को,, इसको (जल) अज्ञान का स्वरूप कहा गया है!

चाहे कोई कितनी भी जड़ी बूटी औषधि ग्रहण करें परहेज नहीं करेगा! अगर उनको शुगर है प्रतिदिन 1 गुलाब जामुन खाते जा रहा है तो क्या शुगर दवाई खाने से ठीक होगा नहीं?

जब दोनों होगा 1) शुगर को काटने के लिए प्रयास करना होगा अर्थात औषधि करनी होगी दूसरा अपने आप को उस चीजों से दूर रखना होगा जिससे शुगर बढ़ने में मदद करती है! जब दोनों होगा तभी यह रोग ठीक होंगे!

देखिए घी पानी के अंदर होता है या दही के अंदर होता है! शुद्ध दही के अंदर होता है! जब दही का मंथन किया जाता है तब उसमें से घी निकलता है! अगर उसमें थोड़ा सा भी पानी का बूंद डालें तो घी नहीं निकलने वाला चाहे लाख कोशिश करो देख लीजिएगा प्रेक्टिकल करके,, इसका प्रयोग करके देखा है हमने! कभी नहीं निकलेगा पानी अगर उसमें चला गया!

पहला उसे पानी से दूर रखो दूसरा उसका मंथन करो तभी घी निकलेंगे! सारा संसार पानी से मक्खन निकालने की कोशिश में लगे हैं भौतिक संसार में सुख ढूंढ़ रहे हैं और पानी ही भौतिक संसार है! दही जो है वह ज्ञान भक्ति रूपी पदार्थ है! जब इसका मंथन करेंगे तभी परमपिता परमात्मा प्रकट होंगे अर्थात उसमें से मक्खन तभी निकलेंगे! जब ज्ञान भक्ति और प्रेम के द्वारा मंथन किया जाए माया रहित होकर जल रहित होकर तब परमात्मा प्रकट होते हैं पानी को ही माया का स्वरूप इसमें बताया गया है!

शिक्षा:- भक्ति करते जा रहे हैं और वासना, क्रोध, लालच, अहंकार, ईर्ष्या, छल, कपट, राग द्वेष से लिपटे हुए हैं और मंथन कर रहे हैं भक्ति कर रहे हैं तो कहां से उसे निर्विकार निर्गुण परमात्मा को प्राप्त होंगे कभी नहीं होगा! क्या परमात्मा प्रकट होंगे नहीं! उसके लिए शुद्ध भक्ति चाहिए निर्विकार भक्ति चाहिए! चित की शुद्धि चाहिए! तभी भगवान मिलेंगे! अभी भगवान की प्राप्ति में विलंब है क्योंकि उसमें जल मिश्रित हो गया है! जैसे दही में जल चले जाने पर मक्खन कभी नहीं निकलते! शुद्ध दही में ही मक्खन निकलता है!

जल रहित दही में ही मक्खन निकलते हैं ऐसे ही माया रहित भक्ति ज्ञान का जब मंथन किया जाए तभी परमात्मा प्रकट होते हैं अर्थात वासना रहित विकार रहित जब भक्त,,,, जब उनका मंथन करें तो परमात्मा तत्काल प्रकट हो जाते हैं जैसे प्रहलाद, ध्रुव, मीराबाई, रसखान उनके सामने भगवान प्रकट हुए थे! क्योंकि उनकी उनकी जो भक्त थी वह माया रहित भक्ति थी! उनकी भक्ति में जल मिश्रित नहीं था!

विकार रहित भक्ति थी! ऐसा मंथन करने पर ही परमात्मा प्रकट होते हैं! प्रह्लाद ने कह दिया इस खंभे पर भगवान है अटल विश्वास के साथ तो भगवान को दीवाल तोड़कर आना पड़ा! जब अज्ञान,,, माया,, भ्रांति,,, भ्रम अश्रद्धा,, पूरी चली जाती है तभी परमात्मा प्रकट होते हैं! जैसे शुद्ध दही में मक्खन निकलते हैं ऐसे ही शुद्ध भक्ति,,, शुद्ध प्रेम से ही परमात्मा प्रकट होते हैं!

@ जयप्रकाश वैष्णव

आदि जगतगुरु शंकराचार्य

श्री राधे हरे कृष्ण

ज्ञान, भक्ति और प्रेम

ज्ञान से ऊंचा भक्ति और भक्ति से ऊंचा प्रेम का स्थान है!

1. ज्ञानी पुरुष का लक्षण-

भगवान को कभी भूख नहीं लगती वह तो भूख प्यास,, सुख-दुख,, माया से सर्वथा परे है! कैसे उनको भूख लगेगी!

2. भक्ति का लक्षण-

मेरे ठाकुर जी को स्नान कर तिलक लगाकर उनको सिंहासन पर बिठाकर मेरे प्रभु को पहले उनको कुछ खिलाऊंगा भोग लगाऊंगा! उसके बाद ही हम अपना भोजन करेंगे!

3. प्रेम का लक्षण-

जब तक मेरे प्रभु भोजन नहीं करेंगे तब तक हम एक जल का बूंद भी ग्रहण नहीं करेंगे! उनसे मिलने के लिए तड़पना, व्याकुल होना, अश्रु धार निरंतर बहते रहना! अपने आंसुओं से उनको भोग लगाना!

निर्मल भाव

निर्मल भाव:- भगवान की पूजा पाठ भजन भक्ति संकीर्तन नाम ध्यान सब करते हो लेकिन ईर्ष्या कपट क्रोध दुर्वासना इन सबको क्यों हटाना नहीं चाहते! पूजा पाठ भजन भक्ति से क्या भगवान प्रसन्न हो जाएंगे नहीं कभी नहीं! परमात्मा घनघोर तपस्या से भी नहीं मिलेंगे! जब तक कपट ईर्ष्या लालच अहंकार मिटेगी नहीं! तब तक भगवान प्रसन्न होंगे नहीं! एक भाई अपने दूसरे भाई से ईर्ष्या करता है तो उनकी माता-पिता को कितना खराब लगता है संसार के समस्त प्राणी एक परमात्मा के संतान है जब एक प्राणी दूसरा प्राणी से ईर्ष्या करता है तो क्या परमात्मा भक्ति भजन करने से खुश होंगे! भगवान प्रसन्न कभी नहीं होंगे! निष्कपट चित् की शुद्धि जब तक नहीं होगी!

प्रेम किससे करें?

© माता लक्ष्मी से प्रेम करो लक्ष्मी से नहीं,,,

© नारायण से प्रेम करो नीर से नहीं,,

© मायाधिपति से प्रेम करो माया से नहीं,,,,

© मृत्यु से प्रेम करो जीवन से नहीं,,,,

© आत्मा से प्रेम करो शरीर से नहीं,,,,

© प्राण पति से प्रेम करो प्राणों से नहीं,,,

©जगत बनाने वाले से प्रेम करो जगत से नहीं,,,,,

© धाम में विराजमान भगवान से प्रेम करो तीर्थ धाम से नहीं,,,,

© मां दुर्गा से प्रेम करो उनकी प्रकृति से नहीं,,,,

© अविनाशी से प्रेम करो नश्वर से नहीं,,,,

© सत्य से प्रेम करो मिथ्या से नहीं,,,,

© रचनाकार से प्रेम करो रचना से नहीं,,,,

© खुदा से प्रेम करो खुद से नहीं!

भगवान की प्राप्ति

भगवान की प्राप्ति इसी स्टेज से होती है- दूध से दही, दही से मक्खन, मक्खन से तेल और तेल से घी निकालने के लिए जितनी मशक्कत होती है बस ऐसे ही परमात्मा है!,,ज्ञान से भक्ति, भक्ति से प्रेम, प्रेम से व्याकुलता और व्याकुलता से ही परमात्मा प्रकट होते हैं! जैसे दूध का मंथन करने पर अंत में घी निकलते हैं ऐसे ही ज्ञान का मंथन करने पर अंत में परमात्मा निकलते हैं! घी दूध में मौजूद है ऐसे ही परमात्मा, ज्ञान में मौजूद है! जहां दूध है वहां घी है! ऐसे ही जहां ज्ञान है वहीं परमात्मा है! मंथन करने पर परिश्रम करने पर यह सामने आता है! जब तक ज्ञान और भक्ति का मंथन ना किया जाए तब तक प्रेम कहां से उत्पन्न होगा? और जहां प्रेम तड़प नहीं! वहां परमात्मा प्रकट नहीं हो सकते!

मन की शांति

शांति कोई देंगे नहीं, स्वयं से होना पड़ेगा,,, मन को शांति कभी मिलेंगे नहीं,,करना पड़ेगा!

लोग मंदिर में जाकर भगवान से प्रार्थना करते हैं हे भगवान जीवन में सुख शांति प्रदान करो हर जगह यही होता है! प्रार्थना कर रहे सुख शांति के लिए और वासना तृष्णा इच्छा भरी हुई है जब इन सब का उनके अंदर स्थान है तो क्या

कभी उसे शांति मिल सकती है! शांति,,,, प्राप्त करने का विषय नहीं है और ना ही कोई इसको हमें देगा! शांति,,, कोई वस्तु नहीं जो कोई देगा तो हम लेंगे! अंतर ध्यान करके शांति हम स्वयं को ही लाना पड़ेगा!

शांति कभी मिलेगी नहीं शांत स्वयं को होना पड़ेगा! वासना, इच्छा, तृष्णा, जब तक रहेगी तब तक कैसे शांति मिल सकता है? विषयों का त्याग करने से ही हमें शांति मिलेगी! हम जो शांति चाहते हैं उसका संबंध हमारी इच्छा से है जब तक इच्छा रहेगी तब तक शांति कभी नहीं मिल सकता हमें! इच्छा से मुक्त होना ही शांति प्राप्त करना है!

शिवजी के द्वादश ज्योतिर्लिंग स्थान

1.सोमनाथ ज्योतिर्लिंग,,,, गुजरात सौराष्ट्र समुद्र किनारे!,,,,

2. मल्लिकार्जुन- आंध्र प्रदेश कृष्णा नदी श्रीशैल पर्वत

3. महाकालेश्वर- उज्जैन, मध्य प्रदेश

4. ओंकारेश्वर महादेव- इंदौर से 80 किलोमीटर नर्मदा नदी, मध्य प्रदेश

5. केदारनाथ- रुद्रप्रयाग (हिमालय पर्वत),, उत्तराखंड

6. भीमाशंकर- सह्याद्री पर्वत,,पुणे, महाराष्ट्र

7. विश्वनाथ- वाराणसी (काशी),, उत्तर प्रदेश

8. त्रयंबकेश्वर महादेव- ब्रह्मगिरी पर्वत गोदावरी नदी के तट पर,, पंचवटी नासिक,, महाराष्ट्र!

9. वैद्यनाथ- देवघर,,, झारखंड;

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग- द्वारिका,, गुजरात

11. रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग- रामनाथपुरम,,, तमिलनाडु

12. घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग- औरंगाबाद,,, महाराष्ट्र

ज्ञान प्राप्त होना हीं भगवान की कृपा है!

यह आवश्यक नहीं है कि ज्ञान,, गुरु के मिलने पर ही प्राप्त हो! ज्ञान गुरु से नहीं भगवान की कृपा से मिलता है जिस पर भगवान की कृपा हो जाती है बस उसको ज्ञान हो जाता है! महाभारत में एक एकलव्य थे! जिन्हें धनुर्विद्या सीखने का अत्यंत प्रबल इच्छा थी परंतु उनके कोई गुरु नहीं थे दूर में ही रहकर द्रोणाचार्य की प्रतिमा को हृदय से मानकर

उसने पूरा अध्ययन कर लिया! द्रोणाचार्य जानते थे वह अर्जुन से आगे चल जाएगा इसलिए दाहिने अंगूठे की दक्षिणा मांगी! और उसने दिया भी था द्रोणाचार्य को मन से गुरु मानकर सच्ची श्रद्धा से उनको गुरु मानता था! ऐसा दान आज तक इतिहास में किसी शिष्य ने अपने गुरु को नहीं दिया!,,, ज्ञान के लिए गुरु नहीं सिर्फ भगवान की कृपा चाहिए! जिस पर हो गए बस उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति हो गई!

एक जन्म में भगवान नहीं मिलते

एक जन्म में भगवान नहीं मिलते बस उसका प्रमोशन करते हैं और उसे धीरे-धीरे आगे ले जाते हैं जब तक उनकी अवस्था चरम सीमा पर नहीं पहुंच जाती तब तक भगवान जन्म देते रहते हैं अर्जुन को यह बात भगवान ने गीता में बताया है! पहली क्लास की भक्ति मंदिर जाना,,,,,, दूसरी क्लास की भक्ति पूजा पाठ करना जब और आगे जीव जाएगी! तीसरी क्लास की भक्ति प्रवचन भागवत कथा श्रवण करना तत्वों का ज्ञान प्राप्त होना,,, चौथी क्लास की भक्ति अपने चित के विकारों का त्याग करना जब जीव इसको पार कर लेगी! पांचवी क्लास की भक्ति उसे भगवान के मिलन की तड़प होती है छठवीं क्लास की भक्ति है वैराग्य अब संसार उसे अच्छा नहीं लगेगा बस भगवान ही अच्छा लगेंगे!

अंतिम अवस्था है समाधि! इसके बाद ही जीव को भगवत प्राप्ति होती है! समाधि को पार किए बिना मोक्ष किसी को नहीं मिलते! कई जन्म लेना पड़ सकता है भगवान की प्राप्ति में विलंब हो सकता है जब तक उसे वैराग्य ना हो! मोक्ष प्राप्त करने में तनिक भी तेरी नहीं,,,, देरी है सिर्फ मन बुद्धि को माया से हटाने में!

भगवान मिलेंगे केवल चिंतन से

श्रीमद् भागवत महापुराण में एक कथा निकली है!,,,, एक सुंदर प्रसंग,, नरक किसे मिलेगा?-

एक ब्राह्मण पंडित थे जो प्रतिदिन भगवान की पूजा अर्जन किया करते थे और दूसरी तरफ एक वेश्या थे वह प्रतिदिन बुरे काम करते थे! एक दिन दोनों की मृत्यु हो गई! ब्राह्मण पंडित नरक को प्राप्त हुए और वेश्या स्वर्ग को! उन्होंने भगवान श्री कृष्ण से प्रश्न पूछा! प्रभु ऐसा?

क्यों हमने तुम्हारा पूजन अर्चन किया क्या हमने बुरा किया था वेश्या ने भी भगवान से पूछा हमने बुरे काम किए हैं और स्वर्ग क्यों?,,,, यह वास्तविक की घटना है भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें बताया उनके साथ ऐसा क्यों हुआ है?

ब्राह्मण से भगवान कहे- तुमने पूजन अर्चन किया जरूर था पर तुम्हारा ध्यान निरंतर पैसे की तरफ लगा था केवल फिजिकल फैसिलिटी बाहरी पूजा पाठ कर रहे थे अंदर में पैसे का खूब लालच भरा था! इसलिए तुम्हें नरक प्राप्त हुए,, और वेश्या को स्वर्ग क्यों भगवान ने उनसे कहा- तुमने बुरे काम किया जरूर है लेकिन तुम्हारा ध्यान निरंतर मेरी ओर लगा था! इसलिए स्वर्ग को प्राप्त हुए!

मेरा कानून है जिसका ध्यान जहां लगा रहता है आगे उसे वैसे ही उनकी गति होती है! मुझसे विमुख होकर महान सत्कर्म तपस्या धर्म क्यों ना किया जाए वह पाप ही है! यदि ध्यान मेरी ओर केंद्रित है और उससे बड़े से बड़े पाप हो रहे हैं! तो वह भी धर्म है! उसे अपने पाप का फल भोगना नहीं पड़ेगा अगर निरंतर ध्यान मुझ में लगा है!

हरतालिका तीज व्रत कथा

हरतालिका तीज व्रत कथा, यहां पढ़े संपूर्ण व्रत कहानी

(हरतालिका तीज व्रत कथा इन हिंदी, हरतालिका तीज की कहानी): हरतालिका तीज से भगवान शिव और माता पार्वती की विधिवत पूजा करने के साथ अंत में ये व्रत कथा अवश्य पढ़ें। इसके बाद ही आपकी पूजा पूर्ण मानी जाएगी। आइए जानते हैं हरतालिका तीज की संपूर्ण व्रत कथा

हरतालिका तीज व्रत कथा

पति की लंबी उम्र, अच्छे स्वास्थ्य और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए सुहागिन महिलाएं हरतालिका तीज का व्रत रखती हैं। ये व्रत करवा चौथ की तरह की निर्जला रखा जाता है। इस दिन दिनभर निर्जला व्रत रखने के साथ शिव-पार्वती जी की विधिवत पूजा करने का विधान है। आज हरतालिका तीज पर रवि योग, बुधादित्य योग सहित कई शुभ योगों का निर्माम हो रहा है। आज सुबह शिव-पार्वती की पूजा करने के साथ प्रदोष काल के समय माता पार्वती-शिव जी की की विधिवत पूजा करने के साथ कथा पढ़ने का विशेष महत्व है।

हिंदू पंचांग के अनुसार, भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को हरतालिका तीज का व्रत रखा जाता है। इस दिन केले के पत्ते, बंदनवार से एक मंडप तैयार किया जाता है। इसमें मिट्टी से भगवान शिव-पार्वती की मूर्ति बनाकर स्थापित किया जाता है। इसके बाद फूल, माला, चंदन, धूप-दीपक आदि चढ़ाया जाता है। इसके साथ ही मंत्रों का जाप करने के बाद अंत में हरतालिका तीज का व्रत जरूर करें। अगर आप हरतालिका तीज के दिन व्रत रखने के साथ इस व्रत कथा का पाठ करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। आइए जानते हैं हलतालिका तीज की संपूर्ण व्रत कथा···

हरतालिका तीज व्रत कथा

पौराणिक मान्यता के अनुसार, कैलाश पर्वत में भगवान शिव माता पार्वती के साथ नंदी और अपने गणों के साथ बैठे हुए थे। इस अवसर में मां पार्वती ने शिव जी से पूछा कि हे महेश्वर मैने वह कौन सा पुण्य किया था जिसके कारण आप मुझे पति के रूप में मिले। आप तो अंतर्यामी है, तो आप मुझे अवश्य इस बात को बताएं। इस बात को सुनकर शंकर जी कहते हैं कि हे देवी आपने तो अति उत्तम पुण्य का संग्रह किया था, जिससे आपको मैं प्राप्त हुआ था। आपने भादो मास के शुक्ल पक्ष की तीज के नाम में प्रसिद्ध है।

शिव जी ने कहा-हे गौरी! पर्वतराज हिमालय पर स्थित गंगा के तट पर तुमने अपनी बाल्यावस्था में बारह वर्षों तक अधोमुखी होकर घोर तप किया था। इतनी अवधि त आसमान के नीचे बिना अन्न-जल ग्रहण किए समय व्यतीत किया। तुम्हारे पिता तुम्हारी कष्ट साध्य तपस्या को देखकर बड़े दुखी होते थे। तब एक दिन तुम्हारी तपस्या को देखकर नारदजी तुम्हारे घर पधारे। तुम्हारे पिता ने हृदय से अतिथि सत्कार करके उनके आने का कारण पूछा। नारदजी ने कहा- गिरिराज! मैं भगवान विष्णु के भेजने पर यहां उपस्थित हुआ हूं। आपकी कन्या ने बड़ा कठोर तप किया है। इससे प्रसन्न होकर वे आपकी सुपुत्री से विवाह करना चाहते हैं। इस संदर्भ में आपकी राय जानना चाहता हूं।

नारदजी की बात सुनकर गिरिराज गदगद हो उठे। उनके तो जैसे सारे क्लेश ही दूर हो गए। प्रसन्न होकर वे बोले- श्रीमान्! यदि स्वयं विष्णु मेरी कन्या का वरण करना चाहते हैं तो भला मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। वे तो साक्षात ब्रह्म हैं। हे महर्षि! यह तो हर पिता की इच्छा होती है कि उसकी पुत्री सुख-सम्पदा से युक्त पति के घर की लक्ष्मी बने। पिता की सार्थकता इसी में है कि पति के घर जाकर उसकी पुत्री पिता के घर से अधिक सुखी रहे।

तुम्हारे पिता की स्वीकृति पाकर नारदजी विष्णु के पास गए और उनसे तुम्हारे ब्याह के निश्चित होने का समाचार सुनाया। मगर इस विवाह संबंध की बात जब तुम्हारे कान में पड़ी तो तुम्हारे दुख का ठिकाना न रहा। तुम्हारी एक सखी ने तुम्हारी इस मानसिक दशा को समझ लिया और उसने तुमसे उस विक्षिप्तता का कारण जानना चाहा। तब तुमने बताया – मैंने सच्चे हृदय से भगवान शिव शंकर का वरण किया है, किंतु मेरे पिता ने मेरा विवाह विष्णु जी से निश्चित कर दिया। मैं विचित्र धर्म-संकट में हूं। अब क्या करूं? प्राण छोड़ देने के अतिरिक्त अब कोई भी उपाय शेष नहीं बचा है। तुम्हारी सखी बड़ी ही समझदार और सूझबूझ वाली थी।

उसने कहा- सखी! प्राण त्यागने का इसमें कारण ही क्या है? संकट के मौके पर धैर्य से काम लेना चाहिए। नारी के जीवन की सार्थकता इसी में है कि पति-रूप में हृदय से जिसे एक बार स्वीकार कर लिया, जीवनपर्यंत उसी से निर्वाह करें। सच्ची आस्था और एकनिष्ठा के समक्ष तो ईश्वर को भी समर्पण करना पड़ता है। मैं तुम्हें घनघोर जंगल में ले चलती हूं, जो साधना स्थली भी हो और जहां तुम्हारे पिता तुम्हें खोज भी न पाएं। वहां तुम साधना में लीन हो जाना। मुझे विश्वास है कि ईश्वर अवश्य ही तुम्हारी सहायता करेंगे।

तुमने ऐसा ही किया। तुम्हारे पिता तुम्हें घर पर न पाकर बड़े दुखी तथा चिंतित हुए। वे सोचने लगे कि तुम जाने कहां चली गई। मैं विष्णुजी से उसका विवाह करने का प्रण कर चुका हूं। यदि भगवान विष्णु बारात लेकर आ गए और कन्या घर पर न हुई तो बड़ा अपमान होगा। मैं तो कहीं मुंह दिखाने के योग्य भी नहीं रहूंगा। यही सब सोचकर गिरिराज ने जोर-शोर से तुम्हारी खोज शुरू करवा दी।

इधर तुम्हारी खोज होती रही और उधर तुम अपनी सखी के साथ नदी के तट पर एक गुफा में मेरी आराधना में लीन थीं। भाद्रपद शुक्ल तृतीया को हस्त नक्षत्र था। उस दिन तुमने रेत के शिवलिंग का निर्माण करके व्रत किया। रात भर मेरी स्तुति के गीत गाकर जागीं। तुम्हारी इस कष्ट साध्य तपस्या के प्रभाव से मेरा आसन डोलने लगा। मेरी समाधि टूट गई। मैं तुरंत तुम्हारे समक्ष जा पहुंचा और तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न होकर तुमसे वर मांगने के लिए कहा।

तब अपनी तपस्या के फलस्वरूप मुझे अपने समक्ष पाकर तुमने कहा – मैं हृदय से आपको पति के रूप में वरण कर चुकी हूं। यदि आप सचमुच मेरी तपस्या से प्रसन्न होकर आप यहां पधारे हैं तो मुझे अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार कर लीजिए। तब मैं 'तथास्तु' कह कर कैलाश पर्वत पर लौट आया। प्रातः होते ही तुमने पूजा की समस्त सामग्री को नदी में प्रवाहित करके अपनी सहेली सहित व्रत का पारणा किया। उसी समय अपने मित्र-बंधु व दरबारियों सहित गिरिराज तुम्हें खोजते-खोजते वहां आ पहुंचे और तुम्हारी इस कष्ट साध्य तपस्या का कारण तथा उद्देश्य पूछा। उस समय तुम्हारी दशा को देखकर गिरिराज अत्यधिक दुखी हुए और पीड़ा के कारण उनकी आंखों में आंसू उमड़ आए थे।

तुमने उनके आंसू पोंछते हुए विनम्र स्वर में कहा- पिताजी! मैंने अपने जीवन का अधिकांश समय कठोर तपस्या में बिताया है। मेरी इस तपस्या का उद्देश्य केवल यही था कि मैं महादेव को पति के रूप में पाना चाहती थी। आज मैं अपनी तपस्या की कसौटी पर खरी उतर चुकी हूं। आप क्योंकि विष्णुजी से मेरा विवाह करने का निर्णय ले चुके थे, इसलिए मैं अपने आराध्य की खोज में घर छोड़कर चली आई। अब मैं आपके साथ इसी शर्त पर घर जाऊंगी कि आप मेरा विवाह विष्णुजी से न करके महादेव जी से करेंगे। गिरिराज मान गए और तुम्हें घर ले गए। कुछ समय के पश्चात शास्त्रोक्त विधि-विधान पूर्वक उन्होंने हम दोनों को विवाह सूत्र में बांध दिया। हे पार्वती! भाद्रपद की शुक्ल तृतीया को तुमने मेरी आराधना करके जो व्रत किया था, उसी के फलस्वरूप मेरा तुमसे विवाह हो सका। इसका महत्व यह है कि मैं इस व्रत को करने वाली कुंवारियों को मनोवांछित फल देता हूं। इसलिए सौभाग्य की इच्छा करने वाली प्रत्येक युवती को यह व्रत पूरी एकनिष्ठा तथा आस्था से करना चाहिए।

कृष्ण-भक्ति

कृष्ण-भक्ति-रस-भाविता मतिः

कृत्याम यदि कुतो 'पि लभ्यते

तत्र लौल्यम् अपि मूलम् एकलम्

जन्म-कोटि-सुकृतैर न लभ्यते

(चैतन्य चरितामृत मध्य लीला 8.70)

कृष्ण भावनामृत में शुद्ध भक्ति सेवा सैकड़ों और हज़ारों जन्मों में भी पुण्य कर्म करके नहीं पाई जा सकती। इसे केवल एक कीमत चुकाकर प्राप्त किया जा सकता है - यानी इसे पाने के लिए तीव्र लालच। अगर यह कहीं उपलब्ध है, तो इसे बिना देरी किए खरीद लेना चाहिए।"

भक्ति क्लेश भस्म करती है

यद्यपि कोई दुखों को आमंत्रण नहीं देता, तब भी दुख बिना बुलाए आते हैं। प्रत्येक जीव ईश्वर-प्राप्ति से पहले माया के विकारों यथा पंचक्लेश, त्रिताप आदि से त्रस्त रहता है। ये दुख अनेक कारणों से आते हैं। संस्कृत में इन दुखों को क्लेश भी कहते हैं। भक्ति इन क्लेशों को भस्म कर देती है।

भक्ति का प्रारंभ साधना भक्ति से होता है। जिस क्षण से कोई निष्ठा पूर्वक साधना भक्ति करना आरंभ करता है, उसी क्षण से भक्ति क्लेशों का नाश करना शुरू कर देती है और यह प्रक्रिया ईश्वर-प्राप्ति पर समाप्त होती है। इसीलिए भक्ति को 'क्लेशघ्नी' कहा जाता है जिसका अर्थ है "वह जो क्लेश को जला दे"।

भक्ति रसामृत सिंधु में रूप गोस्वामी ने जीव को इन क्लेशों के 3 कारण बताये हैं -

क्लेशस्तु पापं तद्बीजमविद्या चेति ते त्रिधा

पाप

तद्बीज - पाप का बीज

अविद्या

आइए हम उन पर क्रमिक रूप से थोड़े विस्तार से चर्चा करें।

A. पाप

वेद प्रणित वर्णाश्रम धर्म का उल्लंघन करना पाप कर्म कहलाता है। इसे विकर्म भी कहा जाता है यथा हिंसा, मद्यपान, पशु-हत्या आदि। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वर्णाश्रम धर्म का पालन और विकर्म दोनों ही अंततः पाप की श्रेणी में आते हैं क्योंकि दोनों को करने से जीव कर्म बंधन में और जकड़ता जाता है। अतः यह दोनों प्रकार के कर्म जीव को चौरासी लाख योनियों में भटकाते हैं।

कर्मकांड और विकर्म दोनों ही दुख देते हैं

कर्मकांड और विकर्म दोनों ही दुख देते हैं

इनके विपरीत, कर्म-योग और कर्म-सन्यास भक्ति दोनों में भक्ति का प्राधान्य है अतः ये दोनों ही कर्म बंधन को काट देते हैं।

जीव को पाप कर्म का फल भोगना पड़ता है। इन पापों को 2 श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

1) प्रारब्ध जन्य - भाग्य द्वारा निर्मित परिस्थितियों के कारण पाप करना, या

2) अप्रारब्ध जन्य - स्वेच्छा से किए गए पाप। आइए इनमें से इन दोनों कारण के बारे में थोड़ा और विस्तार से जानें।

(i) प्रारब्ध जन्य पाप

कुछ कष्ट ऐसे होते हैं, जिन्हें वर्तमान जीवन में भोगना अवश्यंभावी है।

हमारे प्रत्येक पूर्व मानव जन्म में हमने क्रियमाण कर्म किए थे जिनके फल संचित कर्म के रूप में जमा रहते हैं। उन संचित कर्मों में से कुछ फल भगवान वर्तमान जन्म में भोगने के लिए निर्धारित करते हैं। इसे प्रारब्ध कर्म कहा जाता है। पिछले पाप कर्मों के परिणामस्वरूप, जीव का ऐसे परिवार में जन्म हुआ जहाँ पाप कर्म का बाहुल्य है अतः वह बचपन से ही वो उन पाप कर्मों को देखता है तथा करता है, जिससे भविष्य में अधिक पीड़ा भोगनी पड़ती है [1]। इस प्रकार यह दुष्चक्र बन जाता है।

भक्ति प्रारब्ध जनित क्लेशों का नाश करती है। इस सम्बन्ध में देवहूति ने भगवान कपिल से कहा -

यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद् यद्प्रह्वणाद्यत्स्मरणादपि क्वचिद्।

श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात्॥

भा 3.33.6

भगवान कपिल देवहूति

भगवान कपिल अपनी माता देवहूति को ज्ञान देते हुए

"हे भगवान्! पूर्व जन्म के पापों के कारण यदि जीव का जन्म चांडाल के घर हो, और वह जीव आपके पतित पावन नामों का जप करे, प्रेमपूर्वक आपका स्मरण करे और आपके चरण कमलों में समर्पित हो, तो वह सोम-यज्ञ करने में निपुण उच्च कुलीन ब्राह्मण के तुल्य हो जाता है। फिर जिसको आपके दिव्य दर्शन प्राप्त हों, उसकी वंदनीय स्थिति का वर्णन कौन से शब्द कर सकते हैं!"

सदना, भगवान, मांस, भोग

सदना ने भगवान को मांस का भोग लगाया

इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए आइए भक्त सदना के जीवन पर विचार करें।

सदना का जन्म कसाई परिवार में हुआ था।अतः जीव हत्या करने में वह तनिक भी नहीं हिचकिचाता था। मांस ही उसका मुख्य आहार था। एक दिन सौभाग्यवश किसी संत की यह दिव्य वाणी उसके कान में पड़ी, कि "अनंत आनंद प्राप्त करने के लिए, भोजन करने से पूर्व सर्वप्रथम श्री कृष्ण को भोग लगाओ तत्पश्चात वह प्रसाद ग्रहण करो।" यह बात उसके दिल को छू गई और उसी दिन से उसने भोग लगाना प्रारंभ कर दिया। चूंकि वह मांस के अलावा और कोई भोजन जानता ही नहीं था, इसलिए वह प्रतिदिन श्री कृष्ण को मांस का ही भोग लगाता था। लेकिन भगवान् भोज्य पदार्थ का भोग नहीं लगाते। उनका भोजन प्रेम और केवल प्रेम ही है [2]। वह भोग सामग्री में जो प्रेम भरा है उसको ही ग्रहण करते हैं। तो श्री कृष्ण, सदना की निष्कपट निष्ठा व प्रेम से द्रवित हो गए।

इससे सिद्ध होता है कि अपने प्रारब्ध के कारण वह ऐसे वातावरण में पैदा हुआ, जहाँ असहाय पशुओं के प्रत···

भगवान की कृपा

बुद्धि से अज्ञान का चले जाना ,,, आत्मज्ञान प्राप्त होना तत्वज्ञान प्राप्त होना सत्य का बोध हो जाना ही भगवान की कृपा है सदा याद रहे संसार इसी भ्रम में पड़ा है! सुख समृद्धि ऐश्वर्य मिल रहे हम पर भगवान की कृपा हो रही अरे नहीं समझ रहे सुख समृद्धि देकर भगवान उनका सर्वनाश कर रहे! बताओ सुख समृद्धि मिलने पर वाणी पर नाम कितना आता है! भगवान जब कृपा करते हैं जीवात्मा पर तब उनका मन बुद्धि संसार से घूम जाता है और सीधे भगवान में अटैच हो जाता है यही भगवान की कृपा होती है! भगवान की कृपा को संसार के अधिकांश प्राणी नहीं

जानते! भगवान की कृपा जब होती है तो उनके चित् में परिवर्तन होने लगता है! जो अनंत जन्मों से मलीनता भरी पड़ी है!

राधा नाम की महिमा

कृष्ण जन्म खंड ब्रह्मवैवर्त महापुराण के अनुसार,,,,

जो 1000 बार विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करते हैं उसका जो फल है वह सिर्फ एक बार राम बोलने से मिलता है! जब 100 बार राम होगा तो उसका जो फल है वह एक बार कृष्ण बोलने से मिलता है! जब 100 बार कृष्ण नाम हम लेंगे तो उसका जो फल है वह एक बार राधा कहने से मिलता है!

यह है राधा नाम की महिमा

मम नाम शतेनैव,, राधा नाम सकृत सम्म

य: स्मरते सर्वदा,, राधा न जाने तस्य किं फलम॥

हमें ईश्वर से प्रेम है या स्वार्थ

****

जिनका किस्मत अच्छा है चारों तरफ से खुशहाली जिंदगी है वह अपना भगवान के लिए सब कुछ लुटा दे यह कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि जीवन में रंग उमंग दिया जो उसने है क्योंकि उसने मुझे दिया है करके वह भगवान में लूटा सकता है!

इसमें उनका स्वार्थ छिपा है विपरीत परिस्थिति में वह सब सामने आ जाएंगे सच्ची भक्ति सच्चा प्रेम ईश्वर से है या नहीं! यह तो उनके बुरे वक्त में पता चलता है जीवन में खुशियां है तो वह करेगा ही क्योंकि स्वार्थ सिद्ध उनका हो रहा है भगवान ने दिया है इसलिए उनके लिए कर रहा है यह प्रेम नहीं सिर्फ स्वार्थ है! भगवान से प्रेम है या नहीं यह विपरीत परिस्थिति में मालूम चलता है!

अगर उनकी किस्मत खराब है चारों तरफ से अंधकार है अगर खाने के लिए अन्न के एक दाने ना हो सुदामा की स्थिति ऐसा था पर क्या किया था उसने एक दाने को कृष्ण को भोग लगाते थे गरीबी उनकी चरम सीमा पर थी और भक्ति प्रेम की भी चरम सीमा! इतनी कठिन परिस्थिति में कृष्ण को सुदामा ने अपने आप को सर्वस्व सब कुछ लुटा दिया था! यही प्रेम है! जिसमें स्वार्थ का लवलेश भी नहीं! जहां स्वार्थ है वहां प्रेम नहीं! प्रेम में स्वार्थ का बूंद मात्र भी नहीं होते!

जब इस स्थिति में अपने आप को लूटाएगा! जब जीवन हाल- बेहाल है तो कौन है?

जो परमात्मा से प्रेम कर सकता है बड़े-बड़े ज्ञानी तपस्वी का विश्वास टूट जाते हैं! जब वह परीक्षा लेना शुरू करेगा! भगवान जिसको चुनते हैं बस उन्हीं की परीक्षा लेते हैं जैसे राजा मोरध्वज और कई महान भक्त हैं जिसकी कठिन

परीक्षा भगवान लिए थे! बिना कसौटी में कसे बगैर भगवान जीव को नहीं अपनाते! जब उनको लगता है हां इनका विश्वास अटल है दृढ़ है पक्का है तब उनको अपने पास रखते हैं!

विश्वास की कमी हुई तो संसार में फिर से उसे भेज देते हैं! जाओ अपने विश्वास को अटल करके आना मेरे पास! अभी तुम्हें विश्वास की कमी है! क्योंकि कठिन परिस्थिति में अभी तुम्हें विजय प्राप्त करना बाकी है! इससे तुम्हें चुपचाप रहकर अनासक्त भाव से जीतना होगा! सुदामा ने जैसे चुप रहकर सब कुछ सहा था! तब तुम मुझे प्राप्त करने का अधिकारी बनोगे! जब मन बुद्धि रामकृष्ण परमहंस,, सुदामा,, भीष्म पितामह,, कबीर दास,, हरिदास बड़े-बड़े विपत्तियों से इन सब ने जीता है जब ऐसी उनकी स्थिति होगी!

इसी में पता चलता है जीव भगवान की भक्ति स्वार्थ से करता है या निस्वार्थ! अधिकांश लोग स्वार्थ भक्ति करते हैं,, अनुकूलता रहेगी तो करेंगे प्रतिकूलता आया तो कोई भगवान नहीं! तुरंत उनका नाम लेना छोड़ देंगे यही संसार की सच्चाई है! जिसको भगवान चयन कर लेते हैं अपने पास रखने के लिए सबसे पहले उनकी परीक्षा लेना शुरू करता है उनके विश्वास और धैर्य की बार-बार जांच करते हैं दृढ़ विश्वास जब तक उसे नहीं हो जाती भगवान तब तक उनको अपने परमधाम में नहीं रखते! भगवान को अपने भक्त से अटल विश्वास चाहिए उनसे सच्चा प्रेम चाहिए! झूठा प्रेम तो विपत्ति में ही बह जाता है!

यह भाव आना शुरू हो जाता है जैसे सुदामा की पत्नी सुशीला को हुआ था उसने हमें खाने के लिए दाने नहीं दे रहा तो क्या हम उनको भोग लगाएंगे! स्थिति अच्छा है तो हम उनके लिए मंदिर भी बना सकते हैं उनको बिठाने के लिए! जब रोड पर अगर किस्मत ला दिया तब वह अपने प्रभु को मंदिर बनाकर बिठाने की भावना रहेगी या नहीं! नहीं रहेगी! उनका स्वार्थ सामने खड़ा हो जाएगा! मुझे उसने रोड पर ला दिया तो मैं क्यों उनके लिए मरता रहूं!

भगवान से प्रेम है या नहीं यह उनकी बुरी स्थिति में पता चलता है!

हमारे पहनने के लिए कपड़े नहीं और अपने प्रभु श्री कृष्ण को अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनाने की भावना,, खाने के लिए दाने नहीं और उनको भोग लगाने की भावना,,, रहने के लिए झोपड़ी नहीं और उनको महलों में रखने की भावना आ गई बस समझ लीजिए परमात्मा से प्रेम हो गया! अभी उस अवस्था तक पहुंचने के लिए हमें कई जन्म लेने पड़ेंगे! जब चरम सीमा पर पहुंच जाएंगे! प्रेम और विश्वास के चरम सीमा पर पहुंचना ही भगवत प्राप्ति है!

इसलिए इसकी जांच करते हैं हम कच्चा हैं या पक्का! स्वार्थ भक्ति कर रहे या निस्वार्थ यह विकट परिस्थिति में पता चलता है!

प्रेम तो वह है जब प्राण निकलने को है उस वक्त अपने प्रेमी को यह नहीं कहा जाता कि मेरे प्राण को बचाओ! कठिन परिस्थिति में पता चलता है जीव को परमात्मा से प्रेम है या स्वार्थ! अच्छी स्थिति में भगवान की भक्ति तो आसानी से कर लेते हैं! जब समय करवट लेगा बड़ी-बड़ी मुसीबतें सामने आएगी!

नाम उनकी भक्ति उनका विश्वास कुछ लोग ही बना कर रख पाते हैं बाकी तो परिस्थितियों में ही फिसल जाते हैं! उनका विश्वास टूट जाता है सब बिखर जाता है जब कसौटी की आग में भगवान तपाना शुरू करेंगे! जो बना कर रख लेता है बस वही भगवान तक पहुंचते हैं! इसलिए हमें हर स्थिति में उनका विश्वास टूटने ना पाए यह ध्यान रखना है

और उनका प्रेम कभी बिखरने ना पाए! उससे ज्यादा इसका हमें ध्यान रखना है! कठिन परिस्थिति ही प्रेम और विश्वास की परीक्षा होती है भगवान से हमें है या नहीं! **हरे कृष्ण जय श्री राधे**

क्षण भर भी भगवान का नाम न छूटे

एक सेकंड भी भगवान का नाम न छूटे,,,, बस यही ध्यान रखो!

यह कर लिया बस काम हो गया!

भगवान का नाम एक सेकंड भी छूटने न पाए,,,,,, इतना जपो की रोम रोम में भगवान की शक्तियां शरीर और आत्मा में समा जाए! एक सेकंड भी भगवान का नाम अगर छोड़ेंगे तो माया पकड़ लेगी चारों तरफ से जो हम पर हमला करने में लगी है! जाल बिछाकर बाजार में बैठी है! यह माया भगवान की तरफ कभी जाने नहीं देगी! माया क्या है?

जो भगवान की तरफ जाने नहीं देती उसे भगवान की तरफ जाने से रोकती है वह सब कुछ माया है जो परमात्मा से जीव को दूर करें!

भगवान के नाम के आगे माया को भी हारना पड़ा है! माया तो श्री कृष्ण की दासी है! जहां कृष्ण नाम है वहां माया नहीं!

जिनकी वाणी पर निरंतर भगवत नाम चल रहा है! कृष्ण नाम या राधा नाम जिनकी वाणी पर नित्य निरंतर चल रहा है माया उसे छू नहीं सकती! उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता! भगवान से बड़ा तो भगवान का नाम है! नाम में ही भगवान समाया है!

सुबह उठने से लेकर रात तक सोने के समय तक मन और वाणी से भगवान का नाम बस चलता रहे! हो गया सब काम,, ना कुछ सोचने की जरूरत,, ना कुछ करने की जो चिंतन कृष्ण का करते हैं!

कृष्ण स्वयं उनकी चिंता करते हैं! नाम वाणी से चलता रहे! यह कर लिया बस सब हो गया!

भगवान से प्रेम है इसका लक्षण

लोग भगवान की पूजा पाठ सब कर सकते हैं भजन, भक्ति, संकीर्तन, मंत्र जाप सब कुछ कर सकते हैं लेकिन प्रेम नहीं कर सकते! प्रेम तो उसी से करता है जिसमें वह अपने सबसे कीमती तीन चीजों को लगाता है तीन चीजों का उपयोग जिसमें करता है उनको उसी से प्रेम रहता है अगर इन तीन चीजों को भगवान में लगा दिया तो समझ लीजिए भगवान से प्रेम हो गया है अगर यह तीन चीज हम भगवान में नहीं लगा पाए तो हमें उनसे प्रेम नहीं! तीन चीज बहुत ही कीमती है जो प्राणी इसका खपत किसी में नहीं कर सकती! जिससे प्रेम रहता है उनको उसी में खर्च करती है! क्या है तीन चीज-

1. समय 2. मन 3. पैसा! जिसने भगवान के लिए इन तीन चीजों को लुटा दिया उसे भगवान से प्रेम हो गया,,!

क्या इसी जन्म में भगवत प्राप्ति होगी?

क्या इसी जन्म में भगवत प्राप्ति होगी या और जन्म लेना पड़ेगा,,,, जानना है तो इसे अंत तक पढ़ना होगा!

भगवान की जब 10 कृपा पूर्ण होती है तब जीव को भगवत प्राप्ति होती है!,, जैसे-जैसे भगवान की कृपा होती जाती है जीव उनकी तरफ आगे बढ़ता चला जाता है! और भगवान की 1% भी कृपा अगर नहीं हुई तो उनका जीवन ऐसे ही खाना पीना सोने में ही गुजर जाएगा अनंत जन्मों की तरह इस जन्म भी ऐसे ही चला जाएगा! जान ही नहीं पाएगा कि मेरा जन्म क्यों हुआ था? किसको पाने के लिए हुआ था? यह समझ ही नहीं आएगा उसे माया चपेट कर रख देगी!

फिर से उसका जन्म होगा फिर मृत्यु इस चक्र में सदा वह अनंत काल तक भटकती रहेगी! अगर भगवान की उस पर कृपा नहीं हुई! भगवान कृपा करके उस जीव का कल्याण चाहते हैं कि उसका कभी जन्म ना हो! यही कृपा है!

1. सबसे पहली कृपा- मंदिर जाना! भगवान की सबसे पहली सीढ़ी!

2. दूसरी कृपा- पूजा पाठ करना!

3. तीसरी कृपा- भागवत कथा, प्रवचन श्रवण करना भगवान में रुचि और बढ़ जाना उन्हें जानने की इच्छा उत्पन्न होना,,,,!

4. चौथी कृपा- प्रवचन सुनकर खुद को बदलने की कोशिश करना! अर्थात निर्विकार होने का प्रयत्न करना!

5. पांचवी कृपा- अब वह इससे आगे जाएगी- भगवान से प्रेम होना,,,, नाम जाप करना! भजन सुनना,,हरि नाम संकीर्तन करना! भगवान का बार-बार चिंतन होना,, वाणी पर हर पल उनका नाम आना!

6. छठवीं कृपा- भगवान से मिलने के लिए तड़पना,,, उनके याद में रोना,, आंखों से हर पल अश्रु धार बहना,,,, संसार नहीं सुहाना,, भगवान के बिना कुछ भी अच्छा न लगना!

7. सातवीं कृपा- काम, क्रोध, वासना, लालच, मोह, अहंकार मन के विकार नष्ट हो जाना! पूर्ण निर्विकार हो जाना!

8. संसार से पूर्ण वैराग्य हो जाना! मर्कट वैराग्य नहीं,, पूर्ण वैराग्य होना! दोबारा पलट कर संसार के माया को कभी मुड़कर को ना देखना! मायाजाल से मन बुद्धि चित् का पूरा बाहर निकल जाना,, पूर्ण विरक्त हो जाना! एकमात्र भगवान से मिलने की चाहत दूसरा कोई इच्छा नहीं!

9. नवी कृपा- पूर्ण निष्काम हो जाना,,,, कड़ी तपस्या करके भी बदले में भगवान से कुछ ना मांगना, लाखों कष्ट अनासक्त भाव से भोगने की आदत बन जाना! जीवन के रहते ही ब्रह्म में लीन हो जाना,, पूरी इंद्रियों से जीत जाना,,, और परमात्मा में पूर्ण समर्पित हो जाना मन बुद्धि का शून्यवस्था में पहुंच जाना!

10. दसवीं अंतिम कृपा- समाधि की स्थिति में पहुंच जाना! अपने पांच प्राणों से जीत जाना! अपनी सांसों को रोकने की आदत बना लेना! और ,,, अष्टांग योग से जीत जाना पूर्ण स्थित प्रज्ञ की स्थिति में पहुंच जाना सबसे अंतिम चरण है!

इसके बाद ही जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती है जब तक दसवां स्टेज पार ना हो! यहां तक पहुंचने के लिए जीव को कई जन्म लेने होते हैं! भगवान धीरे-धीरे उसे आगे श्रेणी में ले जाते हैं और उसे फिर दोबारा जन्म देते हैं! उसे मोक्ष नहीं

देते,,, भगवत प्राप्ति इतना आसान नहीं है जब भगवान से मिलने की तीव्र उत्कंठा जागृत होती है उनके मिलन की इच्छा के सिवा कुछ भी चाहत ना रहना तब भगवत प्राप्ति होती है भगवान सिर्फ उनका प्रमोशन करते हैं जितनी भक्ति ज्ञान उनका बढ़ता है उसी के आधार पर उनका अगला जन्म होता है!

एक स्टेज भी अपने से नहीं हो सकता भगवान जैसे-जैसे जीव पर कृपा करते हैं उसी के अनुसार जीव आगे बढ़ती है कृपा नहीं हुई तो वह वहीं पर सदा अटकी रहती है! इसलिए सदा कोशिश यही रहे कि इसी जन्म में हम दसवां स्टेज पार कर ले! अगर कुछ कमी हुई तो फिर से जन्म मिलेंगे लेकिन अधिक जन्म नहीं कुछ जन्मों में भगवान की प्राप्ति अवश्य हो जाएगी! अधिक जन्म लेना नहीं पड़ेगा! यदि एक ही लक्ष्य बनाकर चलें तो ही यह संभव है,,,, दसवां स्टेज इसी जन्म में हमारा पूरा हो जाए!

श्रीजी की सेवा अनंत ब्रह्मांड में सबसे बड़ी सेवा

अगर इसी जन्म में श्री कृष्ण की प्राप्ति चाहिए

अगर इसी जन्म में श्री कृष्ण की प्राप्ति चाहिए! तो यह आज से करने होंगे!

अपनी इच्छा अनुसार यदि प्रत्येक दिन श्री राधा नाम 50,000 जाप हो गया! तो 1 महीने में श्री जी की सेवा 15 लाख राधा नाम होगा! इसी तरह सेवा प्रत्येक दिन प्रत्येक क्षण बनी रहे तो एक वर्ष में श्री जी की सेवा एक करोड़ 80 लाख राधा नाम होगा!

इसी तरह सेवा बनी रहे तो 5 वर्ष में श्री जी की सेवा 9 करोड़ राधा नाम इकट्ठा होगा! और इसी तरह सेवा लगातार बनी रहे तो 20 वर्ष में श्रीजी की सेवा 36 करोड़ राधा नाम होगा! इसी तरह सेवा लगातार 80 वर्ष तक बनी रहे तो श्रीजी की सेवा एक अरब 44 करोड़ राधा नाम होगा! और अंतिम लक्ष्य प्राण निकलते समय राधा नाम कहकर ही इस शरीर को छोड़े! स्वयं राधा रानी और बिहारी जी हमें लेने आएंगे! उनके गोद में बैठकर ही जाना है!

अगर यह लक्ष्य पूर्ण कर लिया! फिर कभी संसार में इस आवागमन चक्र में आना नहीं होगा! श्री राधा रानी के परम गोलोक धाम में हमें वास मिलेगा! आज से अभी इसी क्षण से प्रतिज्ञा लेना है प्रत्येक दिन कम से कम 50,000 राधा नाम का जाप हम करें!

जाए संसार से तो कम से कम एक अरब राधा नाम पूर्ण करके हे श्री राधा रानी! इतनी कृपा कीजिए कि इसी जन्म में यह पूर्ण हो! जिसने संकल्प लिया है! उन्हें शीघ्र ही अपने चरणों में वास दीजिए! नाम एक अरब से भले ही ऊपर हो जाए पर कम ना हो! कोशिश तो एक खरब करने की होनी चाहिए! पर इस जन्म में नहीं हो पाएगा भले ही और जन्म लेने पड़ जाए! पर अंबे रानी मां राधे जू यह पूर्ण हो!

जय श्री राधे

राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र- हिंदी

जो प्रत्येक दिन श्री राधा कृपा कटाक्ष स्त्रोत का पाठ करते हैं ध्यान करते हैं उन्हें इसी जन्म में श्री राधा रानी के गोलोक परमधाम में वास मिलता है! श्री जी की कृपा उन पर अनंत जन्म तक बनी रहती है और श्री कृष्ण तो स्वयं उस भक्त के वश में हो जाते है!

जो सर्वस्वामिनी निकुंजेश्वरी वृंदावन विहारिणी को प्रसन्न कर लिया! सभी भक्तों से निवेदन है प्रत्येक दिन नित्य राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र का ध्यान कीजिए! उस पर श्री कृष्ण की कृपा इतनी बरसती है इसकी महिमा 18 महापुराण में इतनी है की शब्दों द्वारा बताया नहीं जा सकता!

श्री लाडली जू की कृपा इतनी बरस पड़ती है! जो करोड़ों जन्मों की घनघोर तपस्या से श्री कृष्ण की प्राप्ति होती है वह सिर्फ एक जन्म में प्राप्त हो जाता है! जो इस स्तोत्र का 1 दिन में अधिक से अधिक पाठ करते हैं!

श्री राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र नीचे दिया गया है!

राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र भगवान शिव द्वारा रचित और देवी पार्वती से बोली जाने वाली राधा कृपा कथा की एक बहुत शक्तिशाली प्रार्थना है। राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र श्री वृंदावन में सबसे प्रसिद्ध स्तोत्र है। राधा चालीसा में कहा गया है कि जब तक राधा का नाम न लिया जाए, तब तक श्रीकृष्ण का प्रेम नहीं मिलता। जगत जननी राधा को भगवान श्रीकृष्ण की अर्धांगिनी शक्ति माना गया है। इसका मतलब है राधा के कारण श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं। पद्म पुराण में कहा गया है कि राधा,, श्रीकृष्ण की आत्मा हैं।

राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र राधा रानी की दयालु पार्श्व दृष्टि के लिए एक विनम्र प्रार्थना है | जो लोग इस प्रार्थना को नियमित रूप से करते हैं, उन्हें श्री श्री राधा-कृष्ण के चरण कमलों की प्राप्ति निश्चित है। श्लोकों में राधा जी की स्तुति में, उनके श्रृंगार,रूप और करूणा का वर्णन है। इसमें उनसे प्रश्न कर्ता बार-बार पूछता है कि राधा रानी जी अपने भक्त पर कब कृपा करेंगी?

भगवान की कृपा

भगवान की कृपा

अर्जुन भगवान से पूछते हैं की हे माधव! जिसका मन आप में बिल्कुल भी नहीं लगता उसका मूल कारण क्या है! संसार में कई ऐसे लोग होते हैं जिसका बिल्कुल भी मन बुद्धि आपकी तरफ नहीं जाता!,,, हे गोविंद कृपा करके बताइए! भगवान कहते हैं,,, अर्जुन देखो- अध्याय 10/11

जीव अनंत काल तक 84 लाख योनियों में घूमती रहती है पहली कृपा जब मेरी उस पर होती है तब उसे मनुष्य शरीर प्राप्त होता है! इस शरीर में आने के बाद जिस जीव को मैं कृपा की दृष्टि से देख लिया! गर्भ के समय ही जिनकी बुद्धि पर मैंने हाथ रख दिया गर्भ से जाने के बाद वह मुझे कभी भूल नहीं पाएगी हर पल उनकी स्मृति बनी रहेगी!

बस वही मेरी तरफ आते हैं हर कोई मेरे मार्ग पर नहीं आ सकता अर्जुन! अपनी शक्ति से,, चाहे वह लाख कोशिश करके मेरे मार्ग पर नहीं आ सकता! क्योंकि मुझे ही नहीं लाना उन्हें अपने मार्ग में तो कहां से उसका मन बुद्धि लगेगा!

मन, बुद्धि का लगने के लिए मेरी कृपा चाहिए! इंद्रिय, मन, बुद्धि सब प्राकृतिक है माया की बनी है जब तक मैं इस पर कृपा ना करूं तब तक वह माइक गुण कभी नष्ट नहीं होंगे! पूरा जीवन माया में नाचते हुए उनका जीवन ऐसे ही नष्ट हो जाएगा फिर जन्म लेगा फिर मरेगा! उसे मेरा खबर भी नहीं होगा कि मैं हूं! जिस पर मैं कृपा नहीं किया उसका यही हाल होता है! जो सांसारिक प्राणी तुम देख रहे हो! जितना मेरी कृपा होती है उसे उतना ही मेरा याद आता है! सबसे अधिक अगर कृपा मेरी जिस दिन हो गई उसे संसार से पूर्ण वैराग्य कर दूंगा! सारी आसक्ति नष्ट हो जाएगी अपने शरीर और प्राणों से भी मोह नहीं रहेगा! जब जीव प्रेम और भक्ति के अंतिम शिखर में पहुंच जाएगी! तब मेरी यह उस पर कृपा होगी! उसके बाद ही मेरी प्राप्ति होती है! जब तक संसार से पूर्ण वैराग्य ना हो!

जिसका मन बुद्धि चित दिन-रात मुझ में लगा है क्योंकि वह जीव मुझे अत्यंत प्रिय है मैं उसको अपने मार्ग पर खींच कर लाता हूं क्योंकि उसका मुझे कल्याण करना है! इसलिए मैंने कृपा की! जिनका मन मुझ में नहीं लगता जानते हो क्यों?

क्योंकि मैंने उन्हें अपने से दूर फेंक दिया है संसार के सुख सुविधा रंगरेलियां देकर मैं उन्हें उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर दिया हूं ताकि मेरा विषय उसे कभी समझ ना सके!

मुझे ही वह जीव पसंद नहीं! मुझे ही अपने मार्ग पर नहीं लाना है उसे तो कैसे उसका मन बुद्धि मेरी तरफ आएगा कभी नहीं आ सकता!

जिसका भी मन बुद्धि मुझ में लगा है उसे जान लेना चाहिए कि मैं ही उसे अपने मार्ग पर ला रहा हूं मेरी कृपा से मेरी शक्ति से ही वह मेरे मार्ग पर चल रहा है! जिस पर मेरी बिल्कुल भी कृपा नहीं है! मेरे मार्ग पर आना तो दूर की बात पल भर के लिए भी उसे मेरा याद नहीं आएगा! संसार में माया में इतना वह मस्त रहेगी! आसक्त रहेगी! तनिक भी स्मृति उसे नहीं रहेगी! संसार में जाते ही वह पूरी तरह भूल जाएगी मुझे! अगर मैंने उसे पर कृपा नहीं की!

कृपा का अर्थ है जीव को मैं अपनी याद दिलाता हूं जो अनंत जन्मों से मुझे वह भूली हुई है! यही है मेरी कृपा,,, जीव का कल्याण करना,,, जन्म मृत्यु के चक्र से उसे बाहर करना यही मेरी कृपा है!

भक्ति वहां है जहां स्वार्थ नहीं

भगवान की भक्ति कर रहे और उसके बदले में उनसे कुछ चाह कर रहे,, मांग रहे तो वह व्यापार भक्ति है! और भगवान की भक्ति नहीं कर रहे सिर्फ उनसे लेने ही लेने की चाहत है तो वह केवल स्वार्थ है! और उनकी भक्ति कर रहे अधिक से अधिक उनका नाम जाप कर रहे हर पल उनका ध्यान कर रहे चिंतन कर रहे अधिक समय उनको दे रहे बदले में कोई चाहत नहीं,,, चाहे प्राण चला जाए यही प्रेम है!

रोगों से बचना है तो क्या करें?

यजुर्वेद के अनुसार,,,,,,,

अगर आप चाहते हैं की शरीर में कभी कोई भी प्रकार के रोग ना हो इस संसार में बड़े-बड़े रोग शरीर में प्रवेश हो रहे हैं ऐसा ऐसा कष्ट सहना पड़ेगा की मृत्यु का इंतजार करोगे तो मृत्यु नहीं मिलेगा! ऐसा रोग जिसका कोई इलाज नहीं!

पूरे विश्व में कई लाखों प्राणी रोगों से जूझ रहे हैं! पहले तो जानिए कि रोग क्या है? जैसे नंदी,, भूत प्रेत, भगवान महादेव के पार्षद गण है ऐसे ही रोग भी भगवान शिव जी के पार्षद गण हैं!

भगवान महादेव की मर्जी के बिना उनके परमिशन के बिना उनके हस्ताक्षर के बिना शरीर में रोग प्रवेश नहीं होते! शरीर के मालिक भगवान शिव जी को कहे गए हैं! शरीर उनकी ही शक्ति है! जब शिवजी अपने रोग को आज्ञा देते हैं जा इसके शरीर में प्रवेश हो जा तब शरीर में रोग आते हैं!

जब उनकी आज्ञा होती है तब शरीर में रोग आते हैं! भगवान शिव जी को शरीर, कालचक्र अर्थात समय, रोग और प्राणों के ईश्वर कहे गए हैं!

शरीर को बनाने और मिटाने का कार्य शिव जी का रहता है और जो अंतःकरण में माया है मन बुद्धि चित जो भगवान विष्णु की शक्ति है जो इन दोनों के बीच में है रजोगुणी वह ब्रह्मा जी की शक्ति है!

शरीर की रचना वही त्रिपुरारी करते हैं और भस्म वही करते हैं! यजुर्वेद में बताया है कि अगर चाहते हैं अंतिम समय तक शरीर में कभी रोग ना हो तो उसके लिए भगवान ने एक सबसे बड़ा मंत्र बताया है महामृत्युंजय मंत्र जितनी जल्दी हो सके इसकी शरण ले लीजिए अन्यथा कोई भी रोग आगे चपेट देंगे! और आज से अभी से इसका मंत्र जाप शुरू कर दीजिए! अगर चाहते हैं कि शरीर में कभी रोग ना हो! अभी शरीर स्वस्थ है पर ऐसा नहीं की सदा स्वस्थ रहेगा आगे कुछ भी शरीर में हो सकता है! ऐसे ऐसे रोग आ जाएंगे की सहना मुश्किल होगा!

यजुर्वेद कहते हैं जो इस महा मृत्युंजय मंत्र का प्रतिदिन जाप करता है रोग भी उसके शरीर से डरते हैं! भगवान भोलेनाथ मृत्यु का स्वामी है मृत्यु का अधिष्ठाता है! संसार के प्रत्येक जीव का प्राण शरीर में वही डालते हैं और शरीर से बाहर वही करते हैं!

शिवजी प्राणों का ईश्वर है और भगवान विष्णु माया के ईश्वर है! प्राणों को पांच प्रकार के जो प्राण होते हैं उनको सेटअप करना शरीर में उनके ही हाथ में रहता है! शरीर में पांच प्राण शिवजी सेट करते हैं और वही शरीर का अंत करते हैं! इसलिए शिवजी को श्मशान वासी कहते हैं! शरीर के राख को स्वयं धारण करते हैं! इसलिए शिवजी में भभूती चढ़ता है! क्योंकि वह शरीर और मृत्यु के अधिष्ठाता हैं!

शरीर में जो सांस धड़कन चल रही है शिवजी की शक्ति से,,, पांच प्राण के रूप में शरीर में शिव जी का वास है! तब सांस और धड़कन संचालित है! भगवान विष्णु भी हमारे अंदर है इसका सबूत है कि हमारे अंदर माया है मन, बुद्धि, चित्त यही उनकी शक्ति है! ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और मां दुर्गा (प्रकृति) इन चारों का हमारे शरीर में वास है! भगवान शिव जी यजुर्वेद में कहे हैं जो महामृत्युंजय मंत्र का जाप करता है नित्य प्रतिदिन नियम से कितने भी कठिन परिस्थिति में जो इसका त्याग नहीं करते! जो महामृत्युंजय मंत्र को अपने रोम रोम में बसा लिया है! भगवान उनके शरीर को दिव्य

विभूति से भर देते हैं! कभी कोई भी प्रकार के शरीर में कष्ट नहीं आ सकते जो महामृत्युंजय मंत्र का प्रतिदिन जाप करते हैं! और एक जन्म तक नहीं अनंत जन्म तक उन्हें कभी रोग छू नहीं सकते!

जन्म मृत्यु के बंधन से उन्हें शीघ्र ही मुक्ति मिल जाती है! जो महामृत्युंजय मंत्र की शरण ले लिया है और प्रतिदिन नित्य नियम से जो इसका जाप करते हैं! आज से अभी से शुरू कर दीजिए अगर महा भयंकर रोगों से बचना है!

आगे की पूंजी राधा नाम

जैसे संसार में कई लोग होते हैं अपने बैंक खाता में पैसा जमा कर देते हैं और उसे बाद में बैठे-बैठे उपयोग करते हैं! बस इसी प्रकार कई ऐसे लोग हैं जो पूर्व जन्म के पुण्य कर्म किए हैं प्रारब्ध में जो सुख लिखा है बस उसी का भोग करने में लगे हैं वर्तमान में जो उसे आगे की कमाई करना है उसे भूल गया है! पूर्व का प्रारब्ध जब खत्म हो जाएगा तो इस जन्म का कमाई तो ही शुरू होगा! और कुछ नहीं करेगा तो आगे क्या मिलेगा उसे! 84 राउंड में ही जाना पड़ेगा कुत्ते बिल्ली की योनि ही मिलेगी! जिसने आगे के लिए कुछ कमाई नहीं की! जो पूर्व का भोग करने में लगे हुए हैं! राधा नाम की कमाई हमारे आगे की पूंजी है! यही परम धन हमें अनंत काल के लिए मालामाल करेंगे! जिसके पास यह परम धन नहीं! आगे के लिए सब उसका शून्य है!

भगवान की प्राप्ति कैसे होती है?

भगवान की प्राप्ति के लिए निकलते हजारों हैं पर पहुंचते हैं कोई एक है देखिए कैसे?

परमात्मा की प्राप्ति तभी होती है जब संसार के किसी भी चीजों में मन विचलित नहीं होता! जब माया उसको परेशान कर करके हार जाती है जीव अपने लक्ष्य में जब अडिग रहती है! तब जीव और ब्रह्म का मिलन होता है!

सच्ची भक्ति कैसी होती है? इस प्रसंग में आप समझेंगे! भगवान मिलते हैं सच्चे प्रेम और अटल निश्चय भक्ति से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है! भगवान कैसे मिलेंगे?

एक कोई महान भक्त था उसने परमात्मा को प्राप्त करने के लिए घर छोड़कर निकल गए! पैदल 100 किलोमीटर की सफर में निकल गए! उनके गुरु ने उनको बताया था कि आपको यहां पहुंचना होगा! यहां आपके परमात्मा खड़े हैं! एक स्थान बता रहे हैं आपको वहां तक किसी भी तरह पहुंचना है!

लेकिन श्री कृष्ण वहां सामने आपको तभी मिलेंगे जब आपको रास्ते में किसी भी चीजों में विचलित नहीं होना है! विचलित हो गए तो आपको उनके दर्शन नहीं होंगे आपको उनके दर्शन करने की प्रबल इच्छा है! तो स्थिर होकर लगातार आपको चलते जाना है! मन बुद्धि को डगमगाने ना देना!

पर एक चीज ध्यान रखना रास्ते में आपको विचलित बिल्कुल भी नहीं होना है बड़ी-बड़ी मुसीबतें आएंगे! आप अपने लक्ष्य पर ध्यान रखना और चले जाओ वहां श्री कृष्ण आपको मिलेंगे अपने गुरु की आज्ञा मानकर निकल गए श्री कृष्ण को प्राप्त करने के लिए!

परमात्मा उस 100 किलोमीटर के आगे खड़े हैं! 1 महीने में उसे वहां तक पैदल यात्रा करके पहुंचना है! आगे बढ़ते गए उसका ध्यान आजू-बाजू किसी तरफ नहीं था सिर्फ नीचे की ओर देखता हुआ बढ़ रहा था!

रास्ते में बड़े-बड़े सैनिक डाकू किनारे में छिपे हुए थे बंदूक चला रहे थे! तलवार चल रहा था फिर भी वह अपने में मगन थे! शरीर में चोट भी लग गए फिर भी विचलित नहीं हुआ चलते गए मुझे वहां पहुंचना है! आगे पहुंचे तो एक मेला लगा था!

वहां उसके सामने ही 10 करोड रुपए पड़े थे किसी ने कहा ले जाओ आपके लिए ही है! उसने ध्यान नहीं दिया फिर भी आगे निकल गए!

बीच में किसी डाकू ने उसके कपड़े निकाल दिए! उनका बुरा हाल कर दिए फिर भी आगे चलते गए मुझे वहां पहुंचना है! आगे उन्हें बड़े-बड़े सुंदर अप्सराएं मिले जो उस व्यक्ति को भटकाने की कोशिश करने लगे!

अप्सरा उस व्यक्ति के सामने नृत्य करने लगे ताकि वह उसमें आकर्षित हो! आओ हमारी तरफ हमसे विवाह करो कहने लगे! इतनी सुंदरता उसमें थी कि कोई भी उसमें फिसल जाएगा! यह उनके कामवासना की परीक्षा थी जिससे वह जीत गए! माया हार गई! किसी तरफ ध्यान न देकर आगे बढ़ गए उनका ध्यान सिर्फ आगे जिससे मिलना है उसमें केंद्रित था! किसी ने रास्ते में क्रोध दिलाने के लिए उसके मुख में पान खाकर थूक दिया! उनका ध्यान आगे परमात्मा में केंद्रित था तो कहां से उसे क्रोध आएगा नहीं आया आगे बढ़ गए!

अब तो विचलित होंगे फिर भी नहीं हुआ आगे बढ़ते गए! वैसे ही गंदे मुख को लेकर चलते गए! रास्ते में उसे किसी ने बताया तुम्हारे माता-पिता भाई बहन बेटा बेटी जो घर में थे उन सब की एक साथ मृत्यु हो गई!

पता करने के लिए की उनसे कितना आसक्ति थी! उस भक्त को कोई फर्क नहीं पड़ा आगे बढ़ गए उनका ध्यान सिर्फ जिससे मिलना था उसमें केंद्रित था! अब रास्ते में शेर मिल गए जो उनकी तरफ बढ़ने लगे! भगवान परीक्षा लेना शुरू कर दिए अब तो विचलित इसको होना पड़ेगा!

डरेगा या नहीं! फिर भी निर्भय होकर आगे बढ़ते गए चाहे जानवर मुझे अपना भोजन बना ले! शेर उन्हीं के पास आकर दहाड़ मारने लगे! फिर भी नहीं डरे आगे बढ़ गए! उनके पैर को खींच लिया! और शेर ने दांतों में दबा लिया! वह व्यक्ति उनसे युद्ध करके अपने आप को किसी तरह उनसे बचाया! पर पैर को नहीं बचा पाए उनके दोनों पैर निकल गए अलग हो गए शेर ने उनके पैर को खा डाला! 5 दिन का सफर शेष है उनका बहुत ही बुरी हाल हो गया है!

ऐसा कि अब चल नहीं पा रहे! फिर भी हिम्मत बढ़ाकर रुके नहीं! रोते हुए घसीटते घसीटते अपने लक्ष्य की तरह बढ़ रहा था! रास्ते में उनके सामने अचानक सर्प आ गए! हाथ को डंक मार कर चले गए! फिर भी विचलित नहीं हुए! उनका दर्द से बुरा हाल था! हीरा मोती सोना चांदी रास्ते पर पड़े थे! और करोड़ों पैसे भी पड़े थे! किसी ने कहा रास्ते में इसको उठा लो ले जाओ! अपने पास यह सब आपके लिए ही है हम रहते तो क्या करते उठा कर ले आते!

उसको प्रणाम करके निकल गए! उनका ध्यान सिर्फ अपने लक्ष्य में था! सिर्फ एक दिन अब शेष बचा है! किसी तरफ ध्यान न देकर आगे बढ़ते गए! 10 मी. भगवान सामने खड़े हैं आखिर उस तक पहुंच गए यही होती है सच्ची भक्ति!

उस भक्त ने अपने भगवान को जैसे देखे तो उनसे गले लगा कर चिल्लाकर रोने लगे प्रभु! मेरे गोविंद! मेरे प्राणों के स्वामी! आपके लिए ही मैंने इतनी ठोकरे, कष्ट, खाकर आया हूं! देखिए ना आप मेरा हाल सिर्फ आपके लिए मेरा ध्यान बस आप में केंद्रित था!

भगवान भी उनसे गले लगकर रोने लगे! मेरे लिए तुमने इतने कष्ट सहे हैं हमारे पास कोई चीज नहीं जो हम तुमको दे सके हम तुम्हारे बंधन में अनंत काल के लिए बंध गए!

अब तुम मेरे परमधाम के अधिकारी बन गए! अब तुम मेरे साथ रहोगे तुम्हारा भव बंधन पार हो गए! चलिए तुम हमारे साथ रहना! यही है प्रेम विश्वास और भक्ति! जब ऐसी भक्ति जागृत होगी! तब परमात्मा की प्राप्ति होती है!

शिक्षा:- जीवन एक तूफान है कभी सुख आएंगे,, कभी दुख,, इसमें कभी विचलित नहीं होना है जैसे वह भक्त आगे बढ़ते गए ऐसे ही हमें भी अपने एकमात्र परम लक्ष्य पर केंद्रित होकर आगे बढ़ना है!

माया कितने भी हमें विचलित करने की कोशिश करें पर विचलित नहीं होना है! तब परमात्मा तक पहुंचा जा सकता है! जो यहां फिसल गए वह परमात्मा तक नहीं पहुंच सकते! उन्होंने ही यह संसार का मायाजाल बिछाया है कि कोई मुझ तक पहुंच ना सके! इसीलिए संसार उनकी माया में सब भटक गए हैं!

ना दुख दुविधा में ना सुख सुविधा में! सुख और दुख दोनों विचलित करने वाली बहुत बड़ी माया है! इस पर ध्यान न देकर आगे बढ़ना है! चाहे हमें गोली क्यों न लग जाए! परमात्मा को प्राप्त करने के लिए जो चाहे कष्ट हमें मिले उसे सहने को तैयार हो जाएं तभी परमात्मा की प्राप्ति संभव है जितने भक्तों ने भगवान को प्राप्त किया है सबने बड़े-बड़े कष्ट सहकर दुखों को गले लगाया है तब उनकी प्राप्ति हुई! जितना कष्ट हमें मिले उन सबको चुपचाप स्वीकार करके आगे बढ़ना है! मन, बुद्धि को स्थिर करके आगे बढ़ना है! बस अपनी मंजिल को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ते रहना है अगल-बगल देखना नहीं है बस अपने लक्ष्य मुझे परमात्मा तक पहुंचना है! तभी परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है!

संसार के किसी भी वातावरण में सुख-दुख किसी भी विषयों में फिसलना नहीं है अपने लक्ष्य पर केंद्रित होकर आगे बढ़ना है! तभी लक्ष्य की प्राप्ति संभव है!

जिसका ध्यान यही संसार में अटक गया उसका कभी कुछ नहीं हो सकता! परमात्मा कभी नहीं मिलेंगे! ध्यान केंद्रित सिर्फ परमात्मा में हो! उस भक्त की तरह हमें आज से बनने की कोशिश करनी है! यदि इसी जन्म में भगवत प्राप्ति चाहिए भगवान को प्राप्त करना है! तो उस भक्त की तरह अटल निश्चयी,,, हमें बनना होगा!

लेखक

@जयप्रकाश वैष्णव

दशहरा पर्व का वास्तविक अर्थ?

हमारे अंदर 10 प्रकार के शत्रु राक्षस रावण बैठे हुए हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार,,, संसार में तो यही प्रचलन है रावण के पुतले बनाकर जलाने का! इस पर्व का मतलब पुतले का दहन करना नहीं है! हमारे अंदर राम भी है और

रावण भी है राम अर्थात जो सत्कर्म की तरफ ले जाए और रावण अर्थात जो बुरे कर्म की तरफ ले जाए! अपनी साधना भक्ति के द्वारा हमारे अंदर बैठे जो रावण है अहंकार है उसका अंत करना है! उसे मिटाना है नष्ट करना है! विजयदशमी इसी चीज की हमें शिक्षा देती है! , इसी दिन सत्य की जीत हुई थी और असत्य का नाश हुआ है! रावण, हिरण्यकश्यप कितने ऐसे महान दैत्य स्वयं को भगवान समझते थे! पर भगवान क्या बन पाए नहीं! भगवान बनने के लिए उनके अंदर सत्यता चाहिए! जो परम सत्य है और सत्य रहेंगे! वही भगवान है!

भक्ति का वास्तविक अर्थ

परहेज बिल्कुल भी नहीं

पूजा पाठ करना, भजन संकीर्तन करना,,, नाम जाप करना,, ध्यान करना, प्रवचन सुनना केवल यही भक्ति नहीं है,, दवाई लेते जा रहे और परहेज बिल्कुल भी नहीं, मीठा खाते जा रहे तो शुगर क्या ठीक हो पाएगा! बिल्कुल नहीं! दवाई के साथ परहेज जरूरी है भक्ति का वास्तविक अर्थ है अपने चित को शुद्ध करना और मन को विषयों से पापों से बचा कर रखना! यही भक्ति है इसी भक्ति से परमात्मा की प्राप्ति होगी! पूजा पाठ कर रहे और चित् मे कोई परिवर्तन नहीं,,, गंदगी भरी हुई है! सोचो भगवान कैसे स्वीकार हमें करेंगे! भगवान उनको स्वीकार करते हैं जिनका चित् शुद्ध है जो पूर्ण निष्पाप हो चुका है! निर्मल मन का है!

एकादशी जैसा कोई व्रत नहीं

जितना नाम जप जरूरी है उतना ही जरूरी व्रत रहना भी है! क्योंकि कुछ लोग हैं जो भगवान का नाम लेते रहते हैं पर व्रत नहीं रहते इसका कारण यही है उसके अंदर खाने की लालसा रहती है वह निश्चय कर लेते हैं भगवान तो अंदर का विषय है अंदर से उनकी भक्ति करो और खाना पीना मत छोड़ो भगवान की भक्ति के साथ त्याग आवश्यक है!

परमात्मा को प्राप्त करना है तो जितना अधिक हो सके विषयों का त्याग करने की आदत बनानी होगी पूर्ति करने से भगवान नहीं मिलेंगे विषयों का त्याग जरूरी है! भोगो से बाहर निकलना होगा!

भगवान श्री कृष्ण ने सबसे बड़ा व्रत अगर कुछ बताया है जिसका पार कोई भी व्रत नहीं पा सकता! सभी व्रत इससे नीचे है इसकी महिमा इतनी है जो इसे रहते हैं उसे आगे क्या फल मिलेगा? महाभारत में इसका वर्णन है जो भगवान ने पांडवों को बताया था! जो भूतकाल में पाप हुआ है वह कटेंगे कैसे? भगवान ने बताया है एकादशी का व्रत रहने से पापों का नाश होता है!

लेकिन यह व्रत निष्काम रूप से होनी चाहिए! श्री कृष्ण की प्राप्ति के उद्देश्य से!

जो सबसे बड़ा व्रत की श्रेणी में आता है वह है एकादशी व्रत! भगवान श्री कृष्ण का सबसे बड़ा व्रत जो आज पापांकुशा एकादशी है इस व्रत को रहने से जीव के पाप नष्ट होते हैं!

कुछ लोग हैं जो केवल व्रत करते हैं भगवान का नाम वाणी पर नहीं आता! और कुछ लोग हैं जो भगवान का नाम लेते हैं व्रत नहीं रहते! भगवान को प्राप्त करना है तो दोनों आवश्यक है! भोजन का त्याग के साथ ही भक्ति हो! इसलिए

शीघ्र ही एकादशी व्रत प्रारंभ कर दीजिए! बहुत कम ही लोग होंगे इस ग्रुप में जो एकादशी व्रत रहते हैं! जिसने नहीं किया है! शीघ्र ही प्रारंभ कर दीजिए! महीने में दो बार और वर्ष में 24 एकादशी होते हैं!

इसके जैसा कोई व्रत नहीं और पूरे दिन राधा राधा का निरंतर जाप हो! केवल व्रत रहने से कुछ नहीं होगा उपवास तो रह लेते हैं किसी भी तरह,,, लेकिन मन खाने में लगा रहता है! इसका परिणाम क्या होगा?उसे पुण्य का फल प्राप्त होगा जो उसने किया रिटर्न उसे अगले जन्म में फिर प्राप्त होगा! पाप और पुण्य दोनों बंधन है!

जन्म मरण के बंधन से मुक्ति नहीं मिलेगी! व्रत करें तब भी और ना करें तब भी!

मुक्त होना है तो त्याग और नाम जाप जीवन में दोनों का होना आवश्यक है! त्याग बिना मोक्ष संभव नहीं! और भक्ति बिना मुक्ति संभव नहीं!

व्रत रहकर श्री राधा रानी का नाम लेते रहिए! आवागमन से मुक्त होने का यही एकमात्र उपाय है!

1. नाम जाप!

2. विषयों का त्याग!

पापांकुशा एकादशी की व्रत कथा,,,,,,

इस व्रत को रहने वाले जीवो को नहीं भोगनी पड़ती यम की यातनाएं

पापांकुशा एकादशी का व्रत आज है और आज लोग विधि विधान से भगवान विष्णु की पूजा करेंगे और व्रत रखेंगे। पापांकुशा एकादशी का व्रत करने वाले के लिए पूजा के दौरान व्रत कथा का पाठ करना अनिवार्य होता है। मान्यता है कि इस पापांकुशा एकादशी का व्रत करने वाले यदि इस कथा का पाठ करें तो उन्हें मरने के बाद यम की यातनाएं नहीं झेलनी पड़ती हैं। तो आइए जानते हैं पापांकुशा एकादशी की व्रत कथा।

युधिष्ठिर ने पूछा, मधुसूदन! अब कृपा करके ये बताइए आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में किस नाम की एकादशी होती है। भगवान् श्रीकृष्ण बोले- राजन् । आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है. वह 'पापांकुशा' के नामसे विख्यात है। वह सब पापों को हरने वाली तथा उत्तम है। उस दिन सम्पूर्ण मनोरथ की प्राप्ति के लिए मनुष्यों को स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करने वाले पद्मनाभसंज्ञक मुझ वासुदेव का पूजन करना चाहिए।

जितेन्द्रिय मुनि चिरकालतक कठोर तपस्या करके जिस फल को प्राप्त करता है, वह उस दिन भगवान् गरुड़ध्वज को प्रणाम करने से ही मिल जाता है। पृथ्वी पर जितने तीर्थ और पवित्र देवालय है, उन सबके सेवन का फल भगवान् विष्णु के नाम कीर्तन मात्र से मनुष्य प्राप्त कर लेता है। जो शार्ङ्गधनुष धारण करने वाले सर्वव्यापक भगवान् जनार्दन की शरण में जाते हैं, उन्हें कभी यमलोक की यातना नहीं भोगनी पड़ती। यदि अन्य कार्य के प्रसंग से भी मनुष्य एकमात्र एकादशी को उपवास कर ले तो उसे कभी यम यातना नहीं होती।

निस्वार्थ भक्ति कैसे हो?

स्वार्थ जब तक रहेंगे मन में तब तक भक्ति नहीं हो सकता! होगा लेकिन कुछ दिन कुछ समय के लिए जब तक जीवन में अनुकूल है! हमेशा के लिए नहीं! स्वार्थ इतना बलवान है भगवान की भक्ति को एक क्षण में ध्वस्त कर सकती है! जब भक्ति निस्वार्थ होती है तभी सदा सदा के लिए भक्ति टिक पाती है! कुछ लोग कहते हैं भक्त को इतना दुख क्यों मिलता है? यह दुख नहीं भगवान के स्वार्थ की परीक्षा है! इसी में पता चलता है किसकी भक्त स्वार्थ है और किसकी निस्वार्थ,,, दुख कष्ट आने पर स्वार्थ भक्ति छूट जाती है और निस्वार्थ आगे चल जाता है! स्वार्थ भक्ति में परमात्मा पर एक संदेह रहता है और निस्वार्थ भक्ति में पूर्ण विश्वास! इसीलिए भक्ति निस्वार्थ हो!

निस्वार्थ ही सच्ची भक्ति है!

जब भगवान की आराधना सच्ची हो निस्वार्थ हो तो चाहे कितने तूफान आए कितने दुख आए कितने रोग कितने भी कष्ट आ जाए कोई विचलित नहीं कर सकते जब भगवान पर पूर्ण विश्वास हो जाए! कि वह मेरे साथ है! जब अपने अंदर हर पल परमात्मा महसूस होने लगे! थोड़ी भी संदेह रहेंगे भगवान में तो भक्ति आराधना कभी भी छूट सकती है! अगर कोई इच्छा लेकर भगवान की भक्ति कर रहा हो! इच्छा की पूर्ति नहीं हुई तो उसे लगेगा कोई भगवान नहीं! भगवान से फिर दुर हो जाएगा! इच्छा रहित भक्ति ही तो परमात्मा से मिलाती है! दुख और कष्ट भगवान की परीक्षा होती है! कौन-कौन मेरी भक्ति कामना लेकर कर रहा है? और कौन निस्वार्थ!

दुख मे की तो जांच होती है!

नवधा भक्ति- श्रीमद्भागवत महापुराण

श्रीमद्भागवत महापुराण में नवधा भक्ति

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।

अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।

(श्रीमद्भा० 7 । 5। 23)

श्रीमद्भागवत महापुराण में बताया गया है कि किस प्रकार नौ प्रकार से ईश्वर की आराधना कर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति इन नौ में से किसी भी एक प्रकार की भक्ति को अपने जीवन में हमेशा के लिए अपना लेता है तो मात्र इससे ही वो प्रभु के बैकुण्ठ धाम की प्राप्ति कर सकता है।

यह नौ उपाय अत्यंत सरल और कारगर है। शास्त्रों में ऐसा बताया जाता है कि मनुष्य जन्म का एकमात्र लक्ष्य प्रभु की प्राप्ति करना है। ऐसे में नवधा भक्ति के बहुत सरल भावों को अपनाकर आप भी भगवत्तप्राप्ति कर सकते है। आइए जानते है नवधा भक्ति के नौ भाव-

1. श्रवण- भगवान के चरित्र, लीला, महिमा, गुण, नाम तथा उनके प्रेम एवं प्रभावों की बातों का श्रद्धापूर्वक सदा सुनना और उसी के अनुसार आचरण करने की चेष्टा करना, श्रवण भक्ति है।

2. कीर्तन- भगवान की लीला, कीर्ति, शक्ति, महिमा, चरित्र, गुण, नाम आदि का प्रेमपूर्वक करना कीर्तन भक्ति है।

3. स्मरण- सदा अन्नय भाव से भगवान के गुण प्रभाव सहित उनके स्वरूप का चिन्तन करना और बारम्बार उनपर मुग्ध होना स्मरण भक्ति है।

4. चरण सेवन- भगवान के जिस रूप की उपासना करते हो, उसी का चरण सेवन करना या सब में ईश्वर को देखकर उन्हें प्रणाम करना। इस भक्ति में भगवान के चरणों की आराधना का महत्व है।

5. पूजन- अपनी रुचि के अनुसार भगवान की किसी मूर्ति या मानसिक स्वरूप का नित्य भक्तिपूर्वक पूजन करना। नित्य दीप प्रज्जवलित कर भगवान की आरती व पूजा करना इस भक्ति के अंतर्गत आता है।

6. वन्दन- ईश्वर या समस्त जग को ईश्वर का स्वरूप समझकर वन्दन करना वन्दन भक्ति है।

7. दास्य- ईश्वर को अपना मालिक मन से स्वीकार कर स्वयं को उनका दास मान लेना दास्य भक्ति है।

8. सख्य- भगवान को अपना परम हितकारी मानकर उन्हें अपना दोस्त मान लेना सख्य भाव की भक्ति है।

9. आत्मनिवेदन या समर्पण- अंहकार रहित होकर अपना सर्वस्व ईश्वर को अर्पण कर देना। स्वयं को ईश्वर को मन से सौप देना आत्मनिवेदन या समर्पण भक्ति कहलाता है।

नवधा भक्ति- श्रीरामचरितमानस

श्रीरामचरितमानस में नवधा भक्ति

प्रभु श्रीराम एवं भक्त शबरी के संवाद के माध्यम से भक्तियोग का जो उल्लेख श्रीरामचरितमानस में किया गया है, वह अपने आप में बेमिसाल है। नवधा भक्ति की व्याख्या के यह तथ्य प्रतिपादित किया है कि मन में यदि प्रभु को पाने की आकुलता हो तो लिंगभेद, जातिभेद, ऊंच-नीच का भेद कुछ भी आड़े नहीं आता। शबरी कोप्रभु राम ने शबरी को नवधा भक्ति के अनमोल वचन दिए।

शबरी प्रसंग से यह पता चलता है की प्रभु सदैव भाव के भूखे हैं और अन्तर की प्रीति पर रीझते हैं।आइए जानते है नवधा भक्ति के नौ भाव-

संत सत्संग- श्रेष्ठजनों के जिस सत्संग से जड़ता, मूढ़ मान्यताएं टूटती हैं वह सत्संग सर्वोच्च कोटि का होता है।

1. रति संत सत्संग- श्रेष्ठजनों के जिस सत्संग से जड़ता, मूढ़ मान्यताएं टूटती हैं वह सत्संग सर्वोच्च कोटि का होता है।

2. रति- भक्ति साधना का सबसे सुलभ मार्ग है, भगवान के लीला-प्रसंगों का चिंतन व गुणगान करना। मन को भगवान के स्वरूप में लीन करने की इसमें जबर्दस्त शक्ति है।

3. गुरु की सेवा- भारतीय अध्यात्म में गुरु को ईश्वर का दर्जा दिया गया है। गुरु के प्रति सर्वस्व समर्पण जब तक नहीं होगा, भक्ति नहीं सधेगी। श्री अरविंद कहते थे-गुरु की चेतना का शिष्य में अवतरण तभी हो पाता है जब शिष्य की चेतना भी शिखर पर हो।

4. भगवद् संकीर्तन करना- श्रीमद्भागवत में बाल यति शुकदेव जी कहते हैं कलियुग में भगवान के संकीर्तन से व्यक्ति परम गति को प्राप्त हो सकता है।

5. भगवान का मंत्रजप- मंत्र का माहात्म्य समझकर भावपूर्वक परमात्म सत्ता में गहन विश्वास रख जब जप किया जाता है तो वह सिद्धि का मूल बन जाता है। ईश्वर को संबोधित निवेदन ही मंत्र है। विश्वासपूर्वक किया गया जप निश्चित फल देता है।

6. इंद्रिय निग्रह- इस भक्ति में भगवान श्रीराम ने शील की चर्चा की है। अश्लील का उलटा है शील। शील अर्थात शालीनता। जब पति-पत्नी सद्गृहस्थ के रूप में परस्पर सहमति से संयम-पूर्वक जीवनयापन करते हैं तो इसे शीलव्रत कहते हैं।

7. प्रत्येक जीव को परमात्म भाव से देखना- जैसे सोना एक धातु है। उससे बने विभिन्न आभूषणों में अंगूठी-कंगन-बाजूबंद को हम अलग-अलग रूप में देखते हैं किंतु सुनार को आभूषणों में सोना ही दिखाई देता है। उसी तरह सच्चा भक्त सभी को प्रभु में और प्रभु को सभी में देखता है।

8. यथा लाभ संतोष- यानी जो कुछ मिल जाए उसी में संतोष, स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना। इसीलिए कबीरदास जी कहते हैं, 'साईं इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा न रहूं साधु न भूखा जाय।'

9. सरलता- सबके साथ कपटरहित बर्ताव करना व हृदय में परमात्मा का भरोसा रख किसी भी स्थिति में हर्ष व दैन्य का भाव न होना। भगवान इस अंतिम भक्ति प्रकरण में सर्वाधिक जोर सरल व निष्कपट होने पर देते हैं। ऐसा वही हो पाता है जिसकी भावनाएं ईश्वरोन्मुख हों, कामनाएं न के बराबर हों।

संसार नकली है इस भाव से रहे

जैसे टेलीविजन में लोग फिल्म देखते हैं लगता है उनको हकीकत लेकिन किस भाव से देखते हैं कि यह झूठ है सिर्फ फिल्म है हकीकत नहीं है कोई फिल्म में मर जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ता!

ऐसे ही बिल्कुल इसी भाव से हमको इस जगत को देखना है कि यहां कुछ भी हकीकत नहीं है भगवान की चेतन प्रकृति अत्यंत बलवान है! इसलिए हकीकत लग रहा है परंतु संसार मिथ्या है झूठी है जो इन आंखों से संसार दिख रहा है! चारों तरफ माया ही माया वह सत्य नहीं है सत्य कोई और है पर्दे के पीछे जो संसार में नहीं दिख रहा वही सत्य है! क्या प्रमाण है कि संसार मिथ्या है झूठ है इसका प्रमाण यह है की मृत्यु के बाद कुछ भी याद नहीं रहेगा,,, मृत्यु के बाद भगवान जो दिखाएगा फिर वही सत्य लगेगा! दुनिया का पर्दा सदा बदलता रहता है बुद्धि को भगवान फॉर्मेट कर देंगे फिर कैसे याद रखोगे अभी जो कुछ भी ...

क्या होती है भगवान की कृपा?

इस संसार में आकर कोई एक क्षण भी भगवान को याद नहीं कर सकता इतना बुरी तरह माया उसे पकड़ लेती है! अनंत बार हम जन्म ले चुके हैं और मर चुके हैं पर हर बार वही खाना, कमाना और सोना मर जाना फिर जन्म लेना फिर वही करते-करते कई अनंत युग बीत गए! आज तक आवागमन चक्र से मुक्त नहीं हुए!

जीव,,,, चक्र में अनंत काल तक घूमती रहती है जब कभी भगवान की बहुत बड़ी कृपा होती है तब उसे मनुष्य योनि में जन्म मिलता है! जब तक भगवान की कृपा नहीं होती तब तक 84 में घूमती रहती है! यह हुई पहली कृपा और अब देखिए उनकी दूसरी कृपा क्या है?

मनुष्य शरीर में लाने के बाद भगवान जिसका कल्याण चाहते हैं उस पर और दूसरी कृपा करते हैं! संसार में जाते ही उनका मन बुद्धि संसार के मायाजाल में जो फंस जाता है! भगवान उनकी मन बुद्धि को खींचकर अपनी दिशा में लाकर खड़ा करते हैं! दिमाग और मन को अपनी तरफ घुमा देते हैं!

भगवान ने गीता में यह भी कहा है अगर बैठकर मेरे बारे में सोच रहे हो तो तो मेरी कृपा से ही सोच रहे,,, वाणी पर मेरा नाम आ रहा है तो मेरी कृपा से आ रहा है! भगवान ने स्पष्ट कह दिया है मेरी कृपा के बिना एक क्षण भी कोई मुझको याद नहीं कर सकता! धोखे से भी अगर वाणी पर कृष्ण नाम निकल गया तो भगवान कहते हैं मैंने उसे पर थोड़ी सी कृपा की है तो नाम निकला! अधिक कृपा होगी तो और भी अधिक नाम लेने लगेगा!

मेरी माया इतनी प्रबल है कि उसे संसार में जाते ही चपेट कर रख देती है रिश्ते नाते संसार की माया उसे पकड़ लेती है और मुझको भुला देती है! मैं जिसका कल्याण चाहता हूं उसी प्राणी पर कृपा करके उन्हें अपने मार्ग में लाकर खड़ा करता हूं! फिर वह कभी नहीं भटक सकता! मेरी भक्ति करते हुए अंत में वह मुझको प्राप्त करते हैं!

जब उनकी दूसरी कृपा होती है तो प्राणी को एकमात्र भगवान का नशा चढ़ जाता है! फिर उसका मन बुद्धि किसी को मुड़कर नहीं देखेगा! जब भगवान की दूसरी कृपा होती है तो उन्हें सत्य का बोध हो जाता है! अब उसका मन बुद्धि बस सत्य का ही चिंतन मनन करता है! अध्यात्म, प्रवचन, ज्ञान, गुरु की बात इन सब में रुचि बढ़ जाती है!

एक बार कहीं भगवान के विषय में किसी गुरु के मुख से सुना तो विश्वास करके वह भगवान के मार्ग को पकड़ लेता है यही होती है भगवान की कृपा,,, उस पर विश्वास बढ़ जाना! कितने लोग ऐसे हैं संसार में जिन्हें गुरु संत भगवान की बातें बता रहे हैं लेकिन उनको समझ नहीं आ रहे! झूठ है समझ कर ध्यान नहीं देती क्योंकि विश्वास ही नहीं होता! इसका कारण भी भगवान ने बताया है क्योंकि उस पर मेरी कृपा नहीं है!

जिस पर मेरी कृपा हो जाती है बस वही मेरे मार्ग को आते हैं! अन्य कोई भी मेरी परमिशन के बगैर मेरे रास्ते पर कोई नहीं आ सकता! और कभी नहीं आ सकता जब मेरी कृपा होती है तब उनके मन बुद्धि को मैं सुहाता हूं!,, जब मेरी कृपा होती है उसके बाद उसका मन बुद्धि माया का चिंता ना करके मेरा चिंतन करता है! अध्यात्म में रुचि बढ़ जाना ही भगवान की कृपा है! भगवान अपनी कृपा शक्ति से जब उनके इंद्रिय, मन, बुद्धि को दिव्य बनाते हैं तभी उनका चिंतन प्राणी कर पाता है!

जब तक कृपा भगवान की कृपा नहीं होती तब तक जीव अनंत काल तक 84 लाख योनियों में भटकती रहती है! फिर जन्म फिर मृत्यु जब कभी भगवान, जीव को कृपा की दृष्टि से देखते हैं बस उन्हीं को सत्य का ज्ञान होता है बाकी 84 राउंड में भटकते रहते हैं!

धारा और राधा का रहस्य

जो ऊपर से नीचे बहती है! बारिश जब होती है तो जो जल प्रवाहित होती है वह ऊपर से नीचे आता है उसे धारा कहते हैं लेकिन जो प्रेम और भक्ति का प्रवाह नीचे से ऊपर ले जाए वही शक्ति का नाम राधा है धारा और राधा में में बस एक ही फर्क है धारा जो ऊपर से नीचे आए और राधा जो जीव को खींचकर नीचे से ऊपर ले जाए वही तत्व का नाम श्री राधा है! राधा रानी वह महादेवी है! जो जीव को भक्ति प्रदान करती है प्रेम प्रदान करती है और परमात्मा मिलन का द्वार खोलती है! उन्हीं की कृपा से ही परमात्मा का मिलन होता है! जो कृपा की करुणा की मूर्ति है प्रेम की अथाह समुद्र है! उस महादेवी का नाम श्री राधा है! गोलोक परमधाम में एक जलधारा बहती है जो नीचे से ऊपर विपरीत बहती है उस जलधारा के बहने का रहस्य यही बताया गया है!

पूजन अर्चन करने का अर्थ

सबसे बड़ी साधना:- अपने मन की दशा को समझना, जानना और उसे बदलना अपने आधीन करना!

यदि चितवृत्ति नहीं बदली तो सब व्यर्थ है!

पूजन का अर्थ:-भाव विभोर होकर अपने भगवान में डूब जाना,,, पूजन करते समय मन में अटल विश्वास और सच्ची श्रद्धा हो! अपने आप को पूर्ण समर्पण करते हुए भगवान की पूजन होनी चाहिए! कि हे नाथ! मैं कुछ भी नहीं हूं जो कुछ है आप हैं और मैं जो कुछ भी हूं आपसे हूं आपके सिवा हमारा कोई नहीं! इस पाप आत्मा पर अपनी कृपा करके हमारा संसार सागर से उद्धार करें! माया भंवर से मुक्त कीजिए! तुम मेरे मैं तुम्हारा! अपने प्रभु को हृदय को पिघलाकर प्रेम के आंसुओं का उपहार प्रदान करना! दृढ़ विश्वास रखकर संसार के कोई भी मुसीबत हमें हिला ना सके! ऐसा विश्वास बनाकर कि वह मेरे मुरलीधर मधुसूदन! मेरे साथ है! अनंत ब्रह्मांड का मालिक मेरे साथ है तो कभी मुझे कुछ नहीं हो सकता! ऐसी भाव से उनका ध्यान हो! उनकी बनाई हुई पुष्प, जल, उनके बनाया हुआ चीजों को अर्पित ना करके,, अपने द्वारा बनाया हुआ हृदय को प्रेम से भरी आंसु निकाल कर उनको चढ़ाना और अपने आप को दान में उनको चढ़ा देना! आंसुओं से सारे अहंकार धुल जाते हैं! भगवान को क्या चाहिए? बस भक्तों का सच्चा भाव अहंकार रहित जो हो जाए उनको वह अपनाते हैं! जिनके कर्तापन मिट जाते हैं! जो पूर्ण समर्पण हो जाता है!

अपने को पूर्ण समर्पण कर देना! ऐसी भक्ति और प्रेम जिस दिन जागृत हो गई भगवान की प्राप्ति में फिर तनिक भी देरी नहीं है! देरी है हमारे समर्पण होने में और अभी कमी है हमारी भक्ति में!

संसार में पूजन भगवान के बस इंद्रियों से किया जाता है! इधर पूजा कर रहे,,,, और देखो मन में चिंतन इसी संसार का चलता रहता है!

किसी भी को हम देख ले! भगवान जब तक चित् में बैठेंगे नहीं तब तक उनकी पूजा का कोई महत्व नहीं है! भगवान को चित् में बिठाना ही उनका पूजन है! अंतर्मन से इच्छा रहित होकर निष्काम भाव से उनका एकांत होकर ध्यान करना ही पूजन है!

सब साधना किया पर यह नहीं किया तो सब व्यर्थ है! यदि चितवृत्ति नहीं बदली,, लाख साधना करें कोई महत्व नहीं!!!!

****

अगर चंचल मन को अपने वश में नहीं किया!

जब तक इस चंचल मन को प्राणी संभाल कर नहीं रखेगा तब तक उनकी अनंत जन्मों की बिगड़ी नहीं बन सकती,,,, कभी नहीं बन सकती! चाहे वह कितने भी भगवान का पूजन करें ध्यान करें वास्तविक चीज है अपने मन की जांच करना! हर पल 24 घंटे इस मन बुद्धि चित पर निगरानी होनी चाहिए!

यह चंचल मन कहां-कहां विचरण कर रहा है उसे रोक कर रखना है अपने वशीकरण में जो इससे जीत गया उसने भगवान को जीत लिया! भगवान ने तो स्वयं कहा है मुझे वश में करना है तो पहले अपने मन को वश में करो! यह मन कहां-कहां जा रहा है? इसकी जांच करना ही तो आत्म साक्षात्कार है!

आत्मा,, मन का दृष्टा है,, मन को अधिक से अधिक एकांत जगह में रखें! भगवान की इस मन पर हर पल नजर रहती है जिस दिन प्राणी अपने मन पर नजर रख लिया! तो उनकी बात बन गई! इसको एकांत जगह दो भगवान में लगा कर रखें एक सेकंड के लिए भी मन भगवान से दूर ना हो यही कोशिश हर समय हमें करनी है! तभी भगवत प्राप्ति संभव है अन्यथा कई जन्म लग जाते हैं! चित को शुद्ध करने में! जितनी जल्दी चित् शुद्ध होगी,, उतनी शीघ्र भगवत प्राप्ति होगी!

जन्म मरण के चक्र में जीव क्यों फंसी है?

इसीलिए क्योंकि कभी उसने अपने मन को पलट कर नहीं देखा! कितने अनंत जन्म बीत गए कभी उस पर नजर नहीं डाला! बस सदा शैतानी ही करता रहा! करते-करते मर गया फिर जन्म लिया बस यही सदा से चलता रहा उनकी दशा कितनी बिगड़ी हुई है एक बार पलट कर देखिए मन बुद्धि की दशा कैसी है?

प्राणी कभी भी अपने मन को नहीं देख पाया!

बुद्धि की अज्ञानता ने हमें जन्म मृत्यु के चक्र में फंसा कर रखी हुई है! और स्वयं से बेखबर की हुई है जिस दिन ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति हो गई फिर जन्म मृत्यु के चक्र को कटने में देरी नहीं है! तत्काल मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी! उसे

पहले इसकी जांच करो पूरे 24 घंटे कहां-कहां मन बुद्धि विचरण कर रहा है? भगवत प्राप्ति में मन, बुद्धि, चित की ही जांच होती है इसलिए सदा याद रखें-

संसार की माया से, लोगों से इस मन को दूर रखें इनको आदत है उसमें रमने की एक जन्म की नहीं कई अनंत जन्मों की! बात करने की,,,, संसार के विषयों में फंसने की अनंत जन्मों की उनकी आदत है!

इस आदत को नष्ट करके उसे अपने अधीन करनी होगी यदि शीघ्र भगवत प्राप्ति चाहिए इसी जन्म में, तो पहले अपने मन की दशा सुधारनी होगी! सबसे पहले मन को ही जीतना होगा! पहले इसको अपने वश में करना होगा!

सब कुछ किया तमाम साधना की,, पूजा पाठ ध्यान भजन संकीर्तन नाम जाप सब किया पर यह नहीं किया तो सब व्यर्थ है! सबसे वास्तविक चीज है अपने मन की दशा को समझना, जानना और उसे बदलना अपने आधीन करना!

****

ज्ञान खंड

सुख मिलता क्यों नहीं?

रोज हम विषय ग्रहण कर रहे हैं प्रत्येक दिन इंद्रिय भोग आंख रसना से सब कुछ ग्रहण कर रहे हैं ,,,, अपने को सुखी करने के लिए जीव अनंत जन्मों से क्या-क्या प्रयत्न नहीं कर रही है! सुबह से रात तक अपनी इच्छा को पूरी करने में हम लगे हुए हैं और पूरी भी हो रही है पर स्वयं से विचार कीजिए अपने आप से पूछिए क्या हम सुखी हो रहे हैं! फिर भी मन में अशांति, अतृप्ति, सुख की प्यास क्यों बनी हुई है? जब पूर्ति कर रहे हैं! तो सुख मिल जाना चाहिए! इसका कारण स्वयं से पूछिए क्योंकि यह स्वयं का विषय है स्वयं का अनुभव है! ना किसी को बताने का क्योंकि इसे किसी को समझाया नहीं जा सकता! सांसारिक सुख भोग करने की भूख जीव को इतनी तेजी से लगी हुई है! चाहती सुख है पर मिलता क्यों नहीं? एकांत में बैठकर शांति से विचार करें! हमें सुख मिलता क्यों नहीं??? मिलेगा तो कहां? और नहीं मिल रहा तो क्यों?

हरे कृष्ण

कष्ट किसको होता है?

शरीर में जो तकलीफ होते हैं कष्ट मिलते हैं चाहे बीमारी हो चाहे पीड़ा चाहे मानसिक चाहे शारीरिक वह कष्ट शरीर को नहीं शरीरी को होते हैं! शरीर जड़ है शरीर को कोई कष्ट नहीं होता जैसे लकड़ी, पत्थर को दर्द नहीं होता! ऐसा ही यह

शरीर है! कष्ट किसको होता है? जिसने शरीर धारण किया है! जीव को कष्ट होते हैं जो इस स्थूल शरीर के अंदर विद्यमान है! अंत समय जब अग्नि संस्कार होता है प्राणी छोटे से चिंगारी को नहीं सह सकता तो क्या जलती हुई आग को सहन कर पाएगा! उसे क्यों कुछ फर्क नहीं पड़ता? क्योंकि जिसको फर्क पड़ता है सुख-दुख होता है पीड़ा होता है कष्ट होता है वह इस शरीर से अलग है वह चला गया अब जहां गया होगा उसे वहां कष्ट होगा यहां नहीं! वह कौन है? वही जीव तत्व है!

शरीर एक दिन राख बन जाएगा!

सुंदर रूप में आकर्षित होते हो एक दिन राख बन जाएगा! राख से आकर्षण होना कितनी बड़ी मूर्खता है! दौलत से आकर्षित होते हो! बैंक में ही पड़ा रह जाएगा! कितने भी अरबो की संपत्ति हो! एक दिन सब कुछ तबाह होगा आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों एक दिन अवश्य होगा! अब बचा बुद्धि का अहंकार मृत्यु के तुरंत बाद भगवान सब भुला देंगे कुछ याद रहेगा नहीं! नामोनिशान सबका एक दिन मिट जाएगा! शेष बचेगा तो सिर्फ अहंकार और मोह जिसके लिए आया वह नहीं किया तो जीवन निरर्थक है! क्योंकि फिर से और आना पड़ेगा जब तक उन्हें स्वयं का बोध नहीं हो जाती! मैं कौन हूं? कहां से आई? कहां जा रही? जब तक इसका ज्ञान ना हो जाए! माया में भटकती रहेगी! आवागमन के भव सागर में बहती रहेगी!

एक एक सांस गिनती मे मिला है!

जन्म के पहले प्राणी की एक-एक चीज उसे गिनती करके दिया गया है तुम्हारा सुहाग कितना दिन का रहेगा! पति-पत्नी का संबंध कितने दिन का है तेरे माता-पिता कितने दिन तक तेरे संग रहेंगे! बेटा बेटी का सुख तुझे कितने दिन कितने घड़ी कितने क्षण तक मिलेगा? दुख है तो कितना दिन तक रहेगा! तेरी सांसे कितने दिन कितने सेकंड तक चलेगी धड़कन का एक-एक धक-धक होना कितने बार धड़केगा? चाहे मान या ना मान नहीं मानेगा तो इसका दंड तुम स्वयं को ही भोगना पड़ेगा! वहां से सब गिनती में मिला है! गरीबी कितने दिन तक रहेगी! अमीरी है तो कितने दिन तक रहेगी! जितने दिन जितने घड़ी तक वह विधाता लिखकर भेजा है उतना ही तुझे मिलेगा उससे एक तिनका अधिक हुआ तुझे वह वापस खींच कर ले जाएगा एक सेकंड संसार में रहने नहीं देगा! सांसे चल रही है क्योंकि अभी उनका हिसाब चल रहा है! हिसाब खत्म जीवन खत्म!

जिंदगी का ज्ञान नींद उड़ा देती है!

श्रीमद् भागवत गीता का ज्ञान अगर किसी को दिया जाए या वेदों का ज्ञान दिया जाए तो उसे नींद आ जाती है! पर जब अपनी जिंदगी करवट लेती है! जिंदगी से जब तमाचा पड़े तो लग रही नींद भी उड़ जाती है! एक वह ज्ञान जिसमें नींद आ गई और एक जिंदगी का ज्ञान जिसमें नींद उड़ गई! एक में होश खो गया एक में होश आ गया! जिंदगी का ज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान है जो कोई शास्त्र ग्रंथ से नहीं मिल सकता! जो अनुभव अपने जीवन से प्राणी को मिलता है! जो अपने जीवन में प्राणी देखता है बस उसी को मानता है! अन्य को नहीं! अंतर है सिर्फ सुख देखेगा तो उनकी अज्ञानता की वृद्धि होगी और दुख देखेगा तो ज्ञान की! जितना अधिक दुख उतना अधिक ज्ञान जितना सुख उतनी अज्ञानता! सुख समृद्धि,, ज्ञान का हरण कर लेती है और दुख अज्ञान का!

ज्ञान और भक्ति रूपी यंत्र

भगवान को देखने के लिए ज्ञान और भक्ति रूपी यंत्र चाहिए! अन्यथा भगवान उसे कभी दिखाई देंगे नहीं! जैसे बैक्टीरिया को देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी चाहिए साधारण आंखों से जीवाणु कीटाणु को नहीं देखा जा सकता! ऐसे ही परमात्मा को देखने के लिए दिव्य दृष्टि चाहिए!

दिव्य शक्ति चाहिए जो केवल उनकी कृपा से मिलता है जब वह स्वयं जीव पर कृपा करते हैं तब उन्हें दिव्य शक्ति देते हैं उनकी इंद्रिय मन बुद्धि में उनको दिव्य बनाते हैं! बिना सूक्ष्मदर्शी यंत्र के बैक्टीरिया दिखाई नहीं दे सकते! ऐसे ही बिना ज्ञान भक्ति और विश्वास के परमात्मा दिखाई नहीं दे सकते! प्रेम, भक्ति और ज्ञान ही ईश्वर के दर्शन कर पाया है!

जिनके अंदर विश्वास नहीं उनके लिए भगवान कहीं नहीं! भगवान को देखने के लिए विश्वास रूपी सूक्ष्मदर्शी चाहिए! ज्ञान भी आ जाएगा फिर भी उसके लिए विश्वास चाहिए! बिना विश्वास का ज्ञान भी नहीं टिक पाएगा और न हीं भक्ति! इसलिए विश्वास बिना ब्रह्म दर्शन संभव नहीं! जहां संदेह है वहां भगवान नहीं भगवान वही है जहां संदेह नहीं! भगवान को देखना है तो पहले अपने अंदर ज्ञान और भक्ति का प्रकाश जगाना होगा!

संसार में सुख नहीं है!

संसार के प्रत्येक जीव अनंत जन्मों से प्रत्येक क्षण आनंद, सुख, शांति की तलाश में लगी हुई है न जानने के कारण दुखों में लिपटी हुई है अनंत जन्म व्यतीत हो गए पर उसे सुख का लवलेश मात्र भी प्राप्त नहीं हुआ! भटक रही है सुख के लिए! कई अनंत जन्म हो गए सुख ढूंढते ढूंढते पर उसे मिला नहीं! लगी है प्रयास में कभी ना कभी मिलेगा और इसी संसार में मिलेगा! यह जीव को गहरा भ्रम है कि संसार में सुख है! पर सुख चाहती क्यों है? यह जीव का नेचुरल गुण है क्यों? क्योंकि संसार के प्रत्येक जीव, उस निराकार आनंदकंद सच्चिदानंद परमात्मा का शाश्वत अंश है ब्रह्म, आनंद से परिपूर्ण है जीव जहां से उत्पन्न हुई है उसी को चाहती है क्योंकि आनंद ही परमात्मा है! जीव और ब्रह्म का मिलन हीं आनंद प्राप्ति है!

ईश्वर अंश जीव अविनाशी

चेतन अमल सहज सुख राशि

प्राणी का जन्म क्यों होता है?

जब उसने पूर्व जन्म में शरीर छोड़ा था उस समय जो उनकी इच्छा अधूरी रह जाती है शरीर छूट जाती है और कुछ इच्छा बाकी रह जाता है,,, उसी अधूरी इच्छा के लिए जीव का फिर से जन्म होता है! और तब तक होता है जब तक इच्छा बाकी रहता है! जब इच्छा पूरी समाप्त हो जाती है, तब जीव को जन्म मरण से मुक्ति मिलती है! जब तक इच्छा रहेंगे तब तक जन्म लेना पड़ेगा! जीव के मां के गर्भ में बार-बार आने का एक ही कारण है उनकी इच्छाएं! हमारा

जन्म होगा या नहीं,, जांच कीजिए हमारी इच्छा कितना समाप्त हो रहा है, कहीं मृत्यु के समय इच्छा बाकी तो नहीं रह जाएगा! रह गया तो जन्म निश्चित है!

सांप बिच्छू की रचना कैसे हुई?

महापुराण के अनुसार,,, एक छोटा सा रहस्य

समुद्र मंथन के पहले सांप बिच्छू नहीं थे केवल वासुकी नाग थे जो भगवान के धाम में रहते हैं! छोटे-छोटे सर्प नहीं थे जैसे अभी पृथ्वी पर होते हैं! जब महादेव कालकूट नामक विष को ग्रहण कर रहे थे! उसी समय उनका कुछ बूंद पृथ्वी पर गिर पड़े! उस कुछ बूंदो से कई अनेक जीव उत्पन्न हो गए! ऐसा जीव उत्पन्न हुए जो जहरीले तेज जहर से बना है! जिसके काटने से उनके विष को रोकना मुश्किल रहता है! सांप, बिच्छू, छिपकली कई इत्यादि जीव उत्पन्न हुए! जिसका शरीर विष से बना है! कुछ महापुराण ऐसा बताया है हमें!

ज्ञान के दो प्रकार

ज्ञान भी दो प्रकार के होते हैं एक अनुभविक ज्ञान और दूसरा शास्त्रों का ज्ञान! परंतु शास्त्र ग्रंथ कहते हैं भगवान प्रत्येक जीव के हृदय में उनका वास है वह देख रहा है उनके नियति के आगे किसी की नहीं चलती यह शास्त्र ग्रंथ कहते हैं! उपनिषद वेद शास्त्रों का ज्ञान हर कोई ले सकता है पर अनुभव ज्ञान केवल उनकी कृपा से मिलता है! किसी किसी को पता चल पाता है कि वह सच में हमें अंदर से देख रहा है दुख कष्ट जब तक ना मिले तब तक उन्हें भगवान का वास्तविक अनुभव नहीं हो सकता और कोई ग्रंथ वेद पुराण हमें नहीं दे सकता जो दुख और कष्ट हमें अनुभव देता है! बंद बुद्धि को खोलकर रख देता है! शास्त्र ग्रंथ की बातों को कहानी जैसे सुन लेते हैं हां सही बात है जब जीवन से उन्हें ज्ञान मिले रातों-रात उनका होश उड़ा देता है! यही है सबसे बड़ा ज्ञान!

जीव के बंधन और मोक्ष का कारण उसका मन है

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः । बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम्॥२॥

(ब्रह्मबिंदु उपनिषद)

जीव के बंधन और मोक्ष का कारण उसका मन है हमें मोक्ष मिलेगा या नहीं इससे पहले यह जांच करना है हमारा मन संसार से विरक्त हुआ है या नहीं! मोक्ष के लिए एकमात्र गुण मन से माया का निकल जाना ही मोक्ष है! बंधन और मोक्ष का कारण इस मन को बताया गया है! यदि मन संसार के माया जाल में फस गया तो वही जन्म मृत्यु का बंधन है उसमें उसे फिर से कैद किया जाएगा! निकल गया तो वही जन्म मृत्यु से मुक्ति है! वही मोक्ष है क्यूंकि मृत्यु के तुरंत बाद जीव को फिर से जन्म लेना पड़ेगा! अगर उनका मन माया से निकल नहीं पाया! कब तक जन्म लेना पड़ेगा जब तक उनका मन, संसार से हटेगा नहीं! उसे बारंबार जन्म लेना पड़ेगा! यह कर्मों का अटल नियम है! जब तक उनका हिसाब चुकता ना हो जाए!

शरीर की वास्तविक परिभाषा क्या है?

BODY का फुल फॉर्म शरीर का अर्थ क्या है?

1. B- BIRTH- जन्म

2. O- OLD- बुढ़ापा

3. D- DISEASE- बीमारी

D- DEATH- मृत्यु

4. Y- YOUNG- युवावस्था

जो पांच चीजों से मिश्रित है वही शरीर है!

जन्म, मृत्यु, युवा, बुढ़ापा और बीमारी

जन्म लेगा, युवावस्था में पहुंचेगा! उसके बाद वृद्धावस्था और जब तक शरीर रहेंगे तब तक रोग, बीमारी घेरे रहेंगे और अंत में मृत्यु,, शरीर की यही गति है! BODY इसमें छिपा है शरीर के रहस्य!

जीव का सबसे बड़ा बंधन

जीव का सबसे बड़ा बंधन:- भगवान ने प्रत्येक जीव को दो बंधन में बांधा है एक काया अर्थात शरीर और एक माया अर्थात संसार! जीव का सबसे बड़ा बंधन उसका शरीर है! संसार का त्याग करके एक बार निकला जा सकता है जैसे योगी तपस्वी साधु संत जो निकल चुके हैं लेकिन शरीर के क्रियाकलाप खाना मल मूत्र इससे बचकर कहां जाओगे? परमात्मा ने शरीर में ऐसा बांधा है कि यहां से चाह कर भी भाग नहीं सकते! बड़े-बड़े ऋषि मुनि तपस्वी को भी इस शरीर की माया से हारना पड़ा है! जंगल में झोपड़ी बनाकर भी रहेंगे लेकिन शरीर के भरण पोषण तो करना ही पड़ेगा! इसलिए जीव का सबसे बड़ा बंधन इसी शरीर को कहा गया है!

शरीर का बंधन

शरीर का बंधन शरीर के बंधन से मुक्त होना है तो शरीर की आसक्ति (मोह) मिटाना होगा! जब तक शरीर से लगाव रहेगा! बारंबार शरीर धारण करना पड़ेगा! मृत्यु खेल का अंत नहीं! केवल शरीर का अंत है!

अधिकतर लोग समझते हैं जो मर जाते हैं उसका खेल खत्म हो जाता है! हमारा खेल शरीर के साथ नहीं जीव के साथ चल रहा है! शरीर मर जाती है जीवात्मा कभी नहीं मरती उसे तो बार-बार शरीर धारण करनी पड़ती है!

एक शरीर से निकली तुरंत दूसरी प्राप्त होती है दूसरी के बाद तीसरी ऐसे ही शरीर का चक्कर जीव अनंत काल तक लगाती रहती है परंतु कब तक जब तक उसे मोक्ष नहीं मिल जाती! और मोक्ष कब मिलेगी? जब आसक्ति (मोह) मिटेगी!

अहंकार- रूप, धन, और बुद्धि

1) सुंदरता ने यह समझ लिया कि मेरे से अधिक खूबसूरत इस जगत में दूसरा कोई नहीं!- रूप का अहंकार!

2) दौलत ने यह समझ लिया है कि मेरे से अधिक पैसे वाले दूसरा और कोई नहीं!- धन का अहंकार!

3) बुद्धि को नहीं मालूम कि उससे कई अधिक बुद्धिमान, विद्वान, ज्ञानी इस जगत में भरे पड़े हैं!- बुद्धि का अहंकार!

सुंदर रूप को नहीं मालूम अप्सरा से भी अप्सरा इस संसार में और भी कितनो है!

4) शक्ति ने यह समझ लिया है कि मैं सदा ऐसे ही रहूंगा! शरीर में ताकत ऐसी ही रहेगी!

सुंदरता, संपत्ति, बुद्धि और बल चारों नादान है!

इनको नहीं मालूम यह सब नश्वर है!

हे नाथ! मैं से सदा बचा कर रखें!

मन भगवान में नहीं लगता इसका मूल कारण

1. उनके चित् की प्रवृत्ति बिगड़ी हुई है!

2. बुद्धि की अज्ञानता!

3. अनंत जन्मों के पाप कर्म!

4. भगवान की कृपा उस जीव पर नहीं है! जब होती है तब लगता है!

5. माया इसका मूल कारण!

6. संसार का मायाजाल क्योंकि इस दलदल में फंसा हुआ है! कभी लगेगा नहीं!

यह शैतान मन कभी भगवान में लगेगा नहीं जबरदस्ती लगाना पड़ेगा! अभ्यास करते-करते जब लग जाए तो लगाना नहीं पड़ेगा बार-बार भगवान का चिंतन होगा क्योंकि चित् में संस्कार आपके आ गए! मन भगवान में नहीं लगता यह सत्य है! कभी ऐसा हुआ है मन संसार में नहीं लगता विचार करो कारण क्या है भगवान में नहीं लगता और संसार में लगता है! इसका मूल कारण:- उनके चित् की प्रवृत्ति

अनंत जन्मों से इस चित् में माया के संस्कार भरे हुए हैं मैं पुरुष मैं स्त्री इसके जाल में फंसे रहना,,,परिवार धन संपत्ति संसार की सुख सुविधा इसमें रमने की मन को गहरी आदत है संसार हर प्राणी को अच्छा क्यों लगता है?

उनके चित् में संसार भरा हुआ है भगवान का कोई संस्कार नहीं ना कोई ज्ञान नहीं तो कैसे लगेगा? अनंत जन्मों से संसार की माया भरी हुई है रिश्ते नाते इनके साथ समय बिताने की उनके साथ रहने की इस मन को आदत है एक जन्म में मन भगवान में लग जाए संभव नहीं! जैसे बिल्ली चूहा को अपने दांत से पकड़ लेती है चाह कर भी वहां से निकल नहीं सकती बस ऐसे ही प्रत्येक जीव को माया रुपी बिल्ली पकड़ ली है!

अपने दांत में दबाई हुई है! माया,, मन को भगवान में कभी लगने देगी नहीं अपने कब्जे में कर डाली है! यही माया का कार्य है जीव को भगवान से दूर करना! वह हर चीज माया है जो जीव को भगवान से दूर करें! मन, बुद्धि, चित् माया से ही बनी है! एक पल भी यह तीनों माया से रहित नहीं हो सकते!

जीव के साथ क्या जाएगी?

इस नश्वर जगत में यहां से जीव के साथ जो जाएगी साथ सच्ची संपत्ति वास्तविक धन जो है इस झूठे जगत में सब कुछ प्रतिपल खाक हो रहा है ना यहां शरीर बचेगा कंचन काया रंग रूप युवा बचपन कुछ नहीं टिकेगा! ना धन संपत्ति ना महल मकान ना रिश्ते नाते ना सूरज चांद तारे पृथ्वी यहां कुछ नहीं टिक पाएगा सदा याद रहे! यह नश्वर जगत है यहां बस एक ही चीज जीव के साथ जाएगी वह है केवल भगवान का नाम- कृष्ण नाम, राधा नाम, राम नाम यही साथ जाएगी! और अनंत काल तक जीव के साथ यही संपत्ति साथ रहेगी दूसरा और कुछ नहीं! जिसने परम धन इकट्ठा कर लिया उसे कभी जन्म लेना नहीं पड़ता! वह जीव आवागमन से सदा के लिए मुक्त हो जाता है! सिर्फ नाम रूपी धन को हासिल करने के लिए जीव को संसार में जन्म मिला है! दूसरा किसी कारण के लिए नहीं!

भगवान मंदिर मस्जिद में नहीं

संसार में अधिकांश प्राणी अपनी बुद्धि में यह निश्चय कर लिया है कि मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे तीर्थ धाम इसी में भगवान का वास समझता है वहां जाएंगे तो ऐसा रहेंगे कि हमें भगवान देख रहे हैं और जब वहां से वापस आए तो यह समझते हैं अब मुझे कोई नहीं देख रहा चाहे अब जो करो मैं अकेले हूं बीडी सिगरेट मांस भक्षण गली गलौज जो करना है अब कर सकते हैं मंदिर से अब बाहर आ गए,, इससे कभी कुछ नहीं होगा चाहे जहां चले जाओ जब तक उस परमात्मा को 24 घंटे हर पल हर घड़ी महसूस नहीं करेंगे जैसे मंदिर मस्जिद में करते हो! उनकी कैमरा 2 घंटे 4 घंटे 8 घंटे ही नहीं पूरी 24 घंटे अंतःकरण में लगी हुई है! उसी दिव्य कैमरे का नाम परमात्मा है!

मृत्यु अटल है!

जन्म के पहले! प्राणी की तीन चीजे निश्चित हो चुकी है! जिस दिन जीव गर्भ में आ जाती है उसी दिन भगवान उनके वापस आने की तिथि तय कर देते हैं! वह कौन सी तीन चीज है जो गर्भ में निर्धारित हो चुका है! पहला उनकी मृत्यु कौन से समय पर होगी वह टाइम सेकंड फिक्स कर दिया गया है! दूसरा मृत्यु किस जगह पर होगी स्थान भी फिक्स कर दिया गया है! तीसरा मृत्यु कौन से कारण से होगी! प्राण जो शरीर से निकलेंगे! कुछ ना कुछ कारण बनकर निकलेंगे! वह कारण पहले से लिख दिया गया है! जिस समय, तिथि, नक्षत्र पर परमात्मा ने निर्धारित किया है! शरीर

से प्राण उसी समय पर ही निकलेगी! स्वयं भगवान भी इसमें हस्तक्षेप नहीं करते! जिस समय पर लिखा हुआ है उस समय पर होकर रहेगा! मित्रों सदा याद रहे मृत्यु अटल है! एक दिन अवश्य होगी!

तीन प्रकार के अद्भुत अलौकिक शाश्वत दिव्यज्ञान

1. ब्रह्म ज्ञान- जो चार वेद 108 उपनिषद में वर्णन है!

2. आत्मज्ञान- जो सांख्य योग गीता, दूसरे अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने बताए हैं जीव का ज्ञान स्वयं का बोध होना मैं कौन हूं स्वयं का आत्म साक्षात्कार होना आत्मज्ञान है!

3. तत्वज्ञान- 24 महतत्व का ज्ञान- पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रियां, पांच प्राण इंद्रियां मन बुद्धि चित अहंकार हुए 18 तत्व,, सूक्ष्म शरीर+स्थूल शरीर अपने सभी तत्वों का ज्ञान होना ही तत्वज्ञान है! हम कितने तत्वों से बने हैं! अपनी रचना को जानना यही तत्व ज्ञान है!

संसार की सच्चाई एक सुंदर प्रसंग

संसार की सच्चाई एक सुंदर प्रसंग:- एक पिता अपने परिवार को छोड़कर चला गया उनकी पुत्री फूट-फूट कर रो रही है मेरे पिताजी चले गए मेरे पिता आप कहां चले गए? मेरे ध्यान रखने वाले अब कोई नहीं आ जाओ ना क्यों चले गए मैं आपके बिना कैसे रहूं? एक महात्मा वहां बैठे थे!

उसने बैठे-बैठे उनको रोते हुए देख रहे थे तो आकर उनसे बाबा जी ने कहा-

बेटी तुम क्यों रो रही हो उसने कहा मेरे पिताजी चले गए बाबाजी अब मैं कैसे रहूं उनके बिना? बाबा ने उनको समझते हुए पार्थिव शरीर को दिखाकर कहा- बेटी तुम्हारे पिताजी तो तुम्हारे सामने पड़ा है फिर किसके लिए रो रही हो!

पिताजी तो तुम्हारे समक्ष मौजूद है! नहीं वह इसमें नहीं है चले गए मुझे छोड़कर! बाबा ने उनसे कहा बेटी देखो- जो चले गए ना तुम्हें छोड़कर वह तुम्हारे पिता नहीं थे उनके साथ तुम्हारा कोई संबंध नहीं! जो शरीर यहां पड़ा है वह तुम्हारे पिता थे और इस भौतिक शरीर जो पंच महाभूत से बनी है उसका नष्ट होना तो निश्चित है मृत्यु होने के लिए ही तो जन्म हुआ है!

संसार के समस्त प्राणियों को अपने अपने ठीक समय पर सबको शरीर छोड़कर जाना होगा अंतर है कोई पहले जाएगा कोई बाद में पर जाना सबको है जाने में विलंब हो सकता है देरी हो सकता है पर जाना तो एक दिन पड़ेगा ही! यह तो प्रकृति का शाश्वत विधान है अटल है!

जो शरीर छोड़कर चले गए वह जानते हो कौन है? वही ब्रह्म थे परमात्मा! भगवान जिसको तुमने नहीं पहचान पाए शरीर के अंदर जो था उसको तुमने नहीं पहचान पाया! शरीर में चुपचाप आते हैं और शरीर से चुपचाप चले जाते हैं बस इसीलिए की प्राणी उनको पहचान सके कि वह जो शरीर में आते हैं और चले जाते हैं वह कौन है?

जो चली गई शरीर छोड़कर उस जीव के साथ किसी का संबंध नहीं है! अनंत मां-बाप रिश्ते नाते उनके हुए आज वही घर में जितनी चीटियां बनकर भटक रही है सब वही लोग हैं क्या तुम्हें उनसे प्रेम है बताओ! तुम्हें वह सब याद है!

दिवाल पर छिपकली जो देखते हो वह तुम्हारे परदादा के परदादा तुम्हारे घर में विचरण करते हैं! उनके लिए सब तुमने रोया था! जो चले गए वह भी आगे ऐसे ही किसी भी रूप में तुम्हारे घर छिपकली कुत्ते बिल्ली बनकर आ भी जाएंगे तो तुम उनको जानोगे नहीं!

इसलिए बेटी किसी के लिए शोक मत करो! जो शरीर छोड़कर चले जाते हैं उनके साथ किसी का संबंध नहीं है जिनके साथ संबंध है शरीर का उसका तो छूटना निश्चित है! यह जो रिश्ते हैं माता-पिता, पुत्र पुत्री, भाई बहन सगे संबंधी चुटकियों के रिश्ते हैं सदा के लिए नहीं है! क्षणभंगुर रिश्ते हैं एक क्षण में कब नष्ट हो जाएंगे?

इसलिए किसी से आसक्त न रखो! कभी भी किसी भी पल टूटना इसका तो निश्चित ही है! जो शाश्वत है सत्य है अविनाशी है बस उन्हीं के साथ अपना संबंध रखो!

एक परमात्मा का रिश्ता है शाश्वत जो कभी समाप्त नहीं होती! जो उनके साथ रिश्ता जोड़ लेता है वे भव बंधन से सदा के लिए छूट जाते हैं और उन्हें परमात्मा के धाम में स्थान मिल जाता है!

जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाते हैं! इसलिए उनको ही पहचानो उनको ही पहचानने के लिए प्राणी को इस धरती पर भगवान जन्म देते हैं जो पहचान लेते हैं उनका जन्म सफल हो जाता है जो नहीं पहचान पाए ऐसी जीवात्मा जन्म मृत्यु के चक्र में अनंत काल तक भटकते रहते हैं! बार-बार जन्म लेते हैं और मरते हैं उनकी मुक्ति कभी नहीं होती जो संसार में मनुष्य योनि में आकर जो उन्हें नहीं पहचान सके!

जिन्हें ईश्वर की पहचान नहीं!

इसलिए केवल उनका ही ध्यान करो! जिनका संबंध है इस जीवात्मा के साथ अनंत युगों युगों से! कई मन्वंतर कई युग बीत गए परमात्मा का साथ हमारा संबंध अनंत काल का है! जो कभी नष्ट नहीं होगी!

शिक्षा:- जीवात्मा और परमात्मा के अलावा दूसरा कोई भी रिश्ता सदा के लिए नहीं है!

श्री राधे हरे कृष्ण

@ जयप्रकाश वैष्णव

हमारा शाश्वत धर्म ग्रंथ-

मानव योनि में जन्म लेकर जिसने इतने धर्म ग्रंथ पढ़कर अध्ययन करके निराकार ब्रह्म के रहस्य को जानकर चला गया! उनका जन्म सफल हो गया! जिन्होंने इतने को पूरे अंत तक ध्यान पूर्वक पढ़ लिया! चार वेद, 108 उपनिषद, 18 पुराण, छह शास्त्र (योग दर्शन+सांख्य दर्शन) सबसे प्राण प्रिय ग्रंथ- श्रीमद् भागवत गीता, रामायण तुलसीदास जी

द्वारा रचित आठो कांड,, ब्रह्म संहिता, गर्ग संहिता, चैतन्य चरित्र अमृत, राधा सुधा निधि,,, शिव पुराण,,, श्रीमद् भागवत महापुराण,,, श्रीमद् देवी भागवत,, महाभारत, वाल्मीकि रामायण और भी हैं उनमें से यह प्रमुख है!

संसार की सच्चाई

पति जब पत्नी से प्रेम करें तब ही पत्नी अपने पति से प्रेम करती है,, जब पत्नी पति से प्रेम करें तब पति उनसे प्रेम करता है जब माता-पिता बच्चों से प्रेम करें तब संतान अपने माता-पिता से प्रेम करता है! जब कोई हमसे प्रेम करते हैं तभी हमें उनसे प्रेम होता है! इस संसार में ऐसा एक प्राणी बताइए जिनका प्रेम ना मिले और वह उनसे प्रेम करें निस्वार्थ प्रेम इस जगत में कहीं नहीं चारों तरफ स्वार्थ युक्त जंजाल है! सारा संसार स्वार्थ पर ही टिकी हुई है! रिश्ते नाते पति-पत्नी पुत्र पुत्री माता-पिता सबका प्रेम स्वार्थ युक्त है! स्वार्थ कम प्यार कम स्वार्थ अधिक प्यार अधिक स्वार्थ खत्म प्यार खत्म!

योनि के प्रति आकर्षण भाव गर्भयोनि में वापस आना है!

जब तक योनि नाम की जो चीज है,, चित् में जब तक रहेगा! उसके प्रति आकर्षण भाव हमारे मन में रहेगा तब तक बार-बार गर्भयोनि में आना पड़ेगा निश्चित ही आना पड़ेगा क्योंकि मन के हिसाब से जीव की गति होती है! बार-बार जन्म लेना पड़ेगा! इसमें आकर्षक होने का मतलब है इसमें बार-बार आना भगवान इसलिए जीव को बार-बार गर्भ में डालते हैं क्योंकि उसके प्रति आकर्षण भाव नष्ट नहीं हुआ है! अगर जन्म मरण से मुक्त होना है कभी जन्म नहीं लेना है इसके प्रति आकर्षण भाव को तत्काल हमें त्यागना होगा! कब तक जन्म लेना पड़ेगा जब तक उनके प्रति आकर्षण रहेगा! कभी किसी पर आकर्षित न होकर जो अपना आकर्षण का केंद्र भगवान को बना ले! वह जन्म मरण से मुक्त हो जाता है!

जन्म मृत्यु का चक्र

जन्म मृत्यु के चक्र में जीव अनंत काल से घूम रही है फिर जन्म, फिर मृत्यु, फिर जन्म, फिर मृत्यु फिर जन्म फिर मृत्यु, फिर जन्म फिर मृत्यु, ऐसे हमने कितने अनंत बार जन्म ले चुके हैं और कितने बार मर चुके हैं इसकी गिनती नहीं किया जा सकता अनंत जन्म हमारे हो चुके बार-बार जीव जन्म लेती और मरती है! हर जन्म ऐसे ही सोने खाने में ही गुजर जाता है,,, उस परमात्मा की ऐसी प्रबल माया है कि प्राणी मरते समय तक भी नहीं जान पाता कि मैं क्यों आया था? मेरा जन्म क्यों हुआ था? सत्य को नहीं जान पाता!

हर जन्म हमारा ऐसे ही बर्बाद हुआ है! लेकिन जिस जन्म में उन्हें सत्य की पहचान हो जाती है वही जन्म उनका सफल होता है! जब तक सत्य की पहचान ना हो तब तक जन्म लेना पड़ता है! जन्म मृत्यु का अंत उसी दिन होता है जब जीव स्वयं को जान लेती है मैं कौन कहां से आया मेरा लक्ष्य क्या है? जन्म मृत्यु के अविनाशी चक्र में जीव अनादि काल से घूम रही है परंतु जीव जिस जन्म में अपने चक्र को जान लेता है,, सत्य का मार्ग पकड़ लेता है वहीं उनकी मुक्ति का मार्ग है! सत्य को नहीं जाना! हर जन्म की तरह माया में भटकते रहना ही जन्म मृत्यु का बंधन है!

जीव जब तक सत्य को नहीं जान लेती! तब तक जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्ति नहीं मिल सकती! वेद कहते हैं- जो ब्रह्म को जान लेता है वह ब्रह्म रूप हो जाता है! सदा के लिए ब्रह्म में लीन हो जाता है! जन्म मृत्यु उनका हमेशा के लिए कट जाता है! जो स्वयं को नहीं जान पाया! मैं कौन हूं? क्यों आया? कहां जाना है? जिसने इसको नहीं जाना वेद कहते हैं फिर से उसको जन्म मृत्यु के चक्र में डाल दिया जाता है!

प्राणी की इच्छा अनंत है

प्राणी की इच्छा इतना विकराल है कि उसके जीवन का समय अपनी इच्छा को पूरा करने में कम पड़ जाता है! इच्छा अनंत है जिसका अंत नहीं जैसे ही एक इच्छा पूरी हुई तुरंत दूसरी इच्छा खड़ी हो जाती है इच्छा की गति तो मृत्यु से भी आगे जाएगी! कई बार और जन्म लेना पड़ेगा जब तक उनकी इच्छा पूरी नहीं होगी! और इच्छा कभी पूरी नहीं होती इच्छाओं का त्याग ही इच्छा का अंत है! बार-बार जन्म लेना पड़ेगा! संसार जो सुख के पीछे भाग रही है उसका संबंध इच्छा से नहीं किसी और से है जो उसे जानना पड़ेगा! इच्छा के बल पर सुख प्राप्त करने की प्राणी कितने भी कोशिश कर ले फिर भी नहीं पा सकता! जब तक इच्छा नष्ट नहीं हो जाती इच्छा ही जीव को पुनः गर्भ में वापस लाती है! मृत्यु के समय थोड़ी भी इच्छा अगर बाकी रह गया तो उसका संसार में आना निश्चित है! इच्छाओं का त्याग ही मोक्ष है!

जीवन नष्ट हो जाएगी पर इच्छा नहीं

प्राणी की इच्छा इतना विकराल है कि अगर 100 करोड़ जन्म लेना पड़े या 50 हजार वर्ष की आयु भगवान दे दे! तब भी इच्छा पूरी नहीं हो सकती! इच्छा पूर्ति करने से कभी नहीं मिटेगी,, इच्छा त्यागने से मिटेगी! इच्छा पूरा करने के चक्कर में पूर्ति किए जा रहे! पूरी करते-करते कई वर्ष बीत गए अब तो कोई इच्छा नहीं होनी चाहिए! फिर भी इच्छा बाकी है! पहले समझिए यह इच्छा है क्या? केवल तुम्हें भटकाया जा रहा है फसाया जा रहा है माया के द्वारा तुम्हें ठगा जा रहा है! तुम ठगे जा रहे हो! इच्छा केवल सुखों का भ्रम है! सुख नहीं! प्रत्येक जीव जो सुख चाहते हैं उसका संबंध इस इच्छा से नहीं है! ना ही भौतिक जगत से हैं! सबसे बड़ा शहंशाह वह है जिनकी कोई इच्छा नहीं! चाह गई चिंता मिटी!

भगवान ने बताया सबसे श्रेष्ठ कौन? गीता

अर्जुन पूछते हैं भगवान से माधव सबसे श्रेष्ठ कौन है? भगवान श्री कृष्ण कहते हैं सबसे श्रेष्ठ वही है जिसने मन को जान लिया मन की गति को पहचान लिया! मन तो जग को देखता है पर जिसने इस मन को ही देख लिया! उससे श्रेष्ठ मेरे लिए और कोई नहीं! मन तो सारा जगत को देखता है दुनिया का चक्कर लगाता है पर जिसने इस मन के चक्कर को जान लिया मन का तूफान कैसे हड़कंप मचाता है? पर इस मन को कोई वीरले प्राणी ही देख पाता है हर कोई नहीं! समस्त प्राणियों का तो मन ही भटका हुआ है तो क्या मन को देख पाएगा? 24 घंटे ध्यान तो संसार में लगा है लेकिन जिसका ध्यान इस मन पर लगा है मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ वही है! आत्मा, मन का साक्षी है जो इस आत्म तत्व में पहुंच गए वही मुझ तक पहुंच सकता है! मुझ तक पहुंचने के लिए पहले अपनी आत्मा में प्रवेश करना होगा!

आगे की गति

जीव के आगे की गति किस आधार पर होती है?

उसका मन, बुद्धि, चित् दिन-रात किसके संगत में है किसके संगत में फंसा है? उनकी जो गति होगी वही गति उनकी भी होगी जिन्होंने उनसे संगत किया है! संगति का अर्थ है वही उसकी गति है! उदाहरण से समझे जैसे किसी का मन दिन रात प्रदीप मिश्रा जी में लगा है उन्हें मृत्यु के बाद जो गति उनकी होगी उसे जहां जाना पड़ेगा वही उसको भी जाना पड़ेगा जिसका मन उसमें लगा है! हम भक्ति कर रहे हैं पर हमारा मन दिन रात किसी अपने दोस्त में लगा है तो दोस्त की जो गति होगी वही गति हमारी भी होगी! दोस्त सूअर योनि में चला गया तो हमें भी उसी के बच्चे बनना पड़ेगा! परमात्मा का यह अकाट्य सत्य नियम है! गीता में उन्होंने स्वयं बताया है इस गुप्त रहस्य को! गीता 8/5

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् |

य: प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशय:||

जैसी संगति वैसी उनकी गति

जीव को हर पल यह ध्यान रखना चाहिए कि उनकी दोस्ती किसके साथ है? जिसके साथ है वह अच्छा है या बुरा है कहीं उसके कारण हमें नरक जाना ना पड़ जाए यह ध्यान रखें! उसकी संगति हर पल किसके साथ है? जिसके साथ उसका संगत है उसे जो फल मिलेगा वही फल उनको भी मिलेगा!

जिसके साथ दोस्ती है अगर उसे छिपकली योनि में जन्म मिल गई तो जिसने उनके साथ संगति किया था उसे भी भगवान उसी के पास लटका देते हैं जिसके साथ उनका मन लगा है! हमारी दोस्ती किसी संत में लगा है जो गति उस संत की होगी वही गति हमारी होगी! जिसमें मन लगा है वह नरक चला गया तो हमें भी नरक जाना पड़ेगा!

जहां वह जाएगा वहां भी उसको जाना पड़ेगा! मन जिसके साथ मित्रता कर रखा है अगर उसे नाली का कीड़ा बना दिया गया तो उसे भी वही जाना पड़ेगा! आगे की गति मन के अनुसार होती है!

अपनी संगति पर विशेष ध्यान रखें संगति का अर्थ है वही उसकी गति है!

जैसी संगति वैसी उनकी गति!

जन्म मृत्यु का अविनाशी चक्र

सप्ताह में 7 दिन होते हैं अंतिम दिन है शनिवार क्या इसके बाद दिन समाप्त हो जाता है पूरे 7 दिन समाप्त होने के बाद फिर से वही चक्र वापस घूम घूम कर चलता रहता है जैसे दिसंबर के बाद फिर से जनवरी आता है चक्र रिटर्न हो जाता है!

रात के बाद दिन और दिन के बाद रात रोज आते रहते हैं कालचक्र है अपनी निरंतर गति से चल रही है और एक दूसरा चक्र है जीव जो अपने चक्र में घूम रही है उसका चक्र क्या है? जन्म के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद फिर से जन्म फिर मृत्यु फिर जन्म अनंत बार हम जन्म ले चुके हैं और अनंत बार मर चुके हैं एक जीवात्मा ने अब तक अनंत शरीर

धारण कर चुकी है कुत्ता, बिल्ली, छिपकली, पशु पक्षी सब बन चुकी है! जिसकी गिनती नहीं किया जा सकता इतने हमारे जन्म हो चुके हैं! कालचक्र और जीव चक्र को रोकना भगवान के हाथ में भी नहीं है यह निरंतर कर्म अनुसार गतिशील है जीव को स्वयं अपने चक्र को रोकना पड़ेगा! इस जन्म मृत्यु केरल के चक्र को यदि हमने नहीं रोका तो उसे ना चाह कर भी जबरदस्ती फिर से जन्म लेना पड़ेगा वापस किसी भी गर्भ में आना पड़ेगा अगर मोक्ष प्राप्त नहीं की!

इससे मुक्त हम स्वयं को होना है! भगवान अपनी कृपा से केवल मनुष्य योनि में मोक्ष प्राप्त करने का अवसर देते हैं जो केवल मनुष्य योनि में संभव है! जीव यदि नहीं हुई तो उसके कर्म अनुसार उसे फिर से जन्म लेना पड़ता है! जन्म मृत्यु के चक्र को रोकना असंभव है जैसे दिन और रात के चक्र को रोका नहीं जा सकता!

अनंत काल तक निरंतर चलते रहेंगे महाप्रलय में इसका अंत होता है फिर से वापस उसके बाद सृष्टि रचना होती है फिर से वही चक्र चलता है! जीव चक्र और कालचक्र यह दोनों शाश्वत है अविनाशी है इन दोनों का ना प्रारंभ है ना अंत है! चलते ही रहेंगे जब तक जीव को मोक्ष ना मिल जाए!

यहां कोई किसी का संगी साथी नहीं

आया जैसे अकेले,,, जाएगा वैसे अकेले!!!

® जब मां के गर्भ में आए थे तो कैसे थे वहां? अकेले! यहां के कोई रिश्ते था पेट में! नहीं!

® जब मल मूत्र विसर्जित करने जाते हो तो वहां रहते हो कैसे? अकेले,, क्या वहां कोई साथ जाता है! नहीं!

® जब रात को गहरी नींद में सो जाते हो तो वहां कैसे रहते हो? अकेले,,, उस टाइम कोई रहता है साथ! नहीं!

® जब कोई रोग आता है कष्ट तब भोगना पड़ता है स्वयं को! अकेले,, अपनी बीमारी कष्ट क्या कोई किसी को दे सकता है! नहीं!

® क्योंकि जब कर्म किया था तो पूछ कर किया कैसे किया? अकेले! कर्म करते समय क्या किसी को पूछा था? नहीं!

® एक दिन प्राण निकल जाएगा पंछी उड़ कर जाएगी तो कैसे? अकेले! सोचो कोई जाएगा साथ नहीं!

® नरक यातना भोगनी पड़ेगी कैसे? अकेले! नरक में तुम्हारा कोई साथ रहेगा! नहीं!

® कुत्ते बिल्ली पशु पक्षी अगर इस योनि में जन्म मिल गया तो रहोगे कैसे? अकेले! छिपकली मच्छर जब बनोगे तो कोई रिश्ते साथ रहेगा नहीं!

® जन्म मे अकेले अंत में अकेले

बीच में माया,, इसीलिए नहीं समझ पाया!

यहां कोई किसी का संगी साथी नहीं क्यों अपना मान बैठा है जो त्रिकाल सत्य है अपना है उनको भूल गया है झूठी चीजों में रम गया है याद रखो,,, भले तुम मानते रहो मेरा मेरा कहते रहो पर वह तेरा है नहीं! कोई यह कहावत नहीं! अटल सत्य है!

जैसे अकेले आया खाली हाथ,, वैसे ही अकेले तुझे जाना है बिल्कुल खाली हाथ!

सब अकेले हैं और अकेले ही रहेंगे! जीव के साथ केवल परमात्मा का संबंध है दूसरा किसी का नहीं! जो गर्भ से साथ आया है वही साथ जाएगा! और वही अभी साथ है! जो कुछ अभी कर रहे हो आगे भूल जाओगे फिर तुमने क्या-क्या किया उसे कौन जानेगा वही जो अभी तेरे साथ है! वही साथ है साथ रहेगा! बाकी जो कुछ भी है सब झूठी माया है! परमात्मा ही सत्य है!

जो कुछ भी दिख रहा इस जगत में सब मिथ्या है! जो नहीं दिख रहा वही सत्य है!

यह समझना बहुत बड़ी भूल है

यह समझना बहुत बड़ी भूल है मुझे कोई नहीं देख रहा, चारों तरफ से उनकी नजर है मृत्यु कैसे अनंत प्राणियों में उस प्राणी को ढूंढ लेता है! क्योंकि एक-एक प्राणी पर उनकी नजर है! पंच महाभूत प्रकृति द्वारा निर्मित इंद्रिय मन बुद्धि उनको ग्रहण नहीं कर सकते!

गीता वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन |

भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन || 7/26||

हे अर्जुन! मैं संपूर्ण प्राणियों को देख रहा हूं अनंत काल से सबको जानता हूं परंतु कोई भी मुझे तत्व से नहीं जान सकता! (कठोपनिषद्-1.2.9) "भगवान हमारे बौद्धिक तर्क की परिधि से परे हैं।", श्री राधा

क्यों ॐ कहलाता है प्रणव मंत्र?

सनातन हिन्दू धर्म में देव उपासना, शास्त्र वचन, मांगलिक कार्य, ग्रंथ पाठ या भजन-कीर्तन के दौरान ॐ का उच्चारण करना जरूरी होता है। इसका उच्चारण कई बार किया जाता है। ॐ की ध्वनि तीन अक्षरों से मिलकर बनी है- अ, उ और म। ये मूल ध्वनियां हैं, जो हमारे चारों तरफ हर समय उच्चारित होती रहती हैं। ओम को अनहद नाद भी कहते हैं और इसे प्रणव भी कहा जाता है।

दरअसल, प्रणम नाम से जुड़े गहरे अर्थ हैं, जो अलग-अलग पुराणों में अलग तरह से बताए गए हैं। यहां हम जानते हैं शिव पुराण में बताए ॐ के प्रणव नाम से जुड़े अर्थ को-

शिव पुराण में प्रणव के अलग-अलग शाब्दिक अर्थ और भाव बताए गए हैं- 'प्र' यानी प्रपंच, 'ण' यानी नहीं और 'व:' यानी तुम लोगों के लिए। सार यही है कि प्रणव मंत्र सांसारिक जीवन में प्रपंच यानी कलह और दु:ख दूर कर जीवन के अहम लक्ष्य यानी मोक्ष तक पहुंचा देता है। यही कारण है ॐ को प्रणव नाम से जाना जाता है।

दूसरे अर्थों में प्रणव को 'प्र' यानी यानी प्रकृति से बने संसार रूपी सागर को पार कराने वाली 'ण' यानी नाव बताया गया है। इसी तरह ऋषि-मुनियों की दृष्टि से 'प्र' अर्थात प्रकर्षेण, 'ण' अर्थात नयेत् और 'व:' अर्थात युष्मान् मोक्षम् इति वा प्रणव: बताया गया है। जिसका सरल शब्दों में मतलब है हर भक्त को शक्ति देकर जनम-मरण के बंधन से मुक्त करने वाला होने से यह प्रणव: है।

धर्मशास्त्रों के अनुसार मूल मंत्र या जप तो मात्र ओम ही है। ओम के आगे या पीछे लिखे जाने वाले शब्द गोण होते हैं। ॐ ही महामंत्र और जप योग्य है।

शरीर ब्रह्मांड का एक हिस्सा है!

दिव्य शक्तियां इस शरीर में विद्यमान है,,,, शरीर ब्रह्मांड का एक हिस्सा है! ध्यान लगाओ नजर आएंगे!

हमारा शरीर एक ब्रह्मांड का छोटा सा हिस्सा है! अंतर ध्यान करके आंख बंद करके चित् शांत करके जरा देखो पूरे ब्रह्मांड की शक्ति नजर आएगी! हम दिव्य शक्ति हैं! हमारे अंदर इस शरीर में दिव्य शक्तियां मौजूद है उसको पहचानिए! अंतर ध्यान लगाकर उसे देखिए! सर से लेकर पैर तक इस शरीर में पूरे त्रिलोक समाया हुआ है! कमर से पैर तक पाताल,,, वक्ष से कमर तक भूलोक है,, और इससे ऊपर ब्रह्म लोक है! पूरे ब्रह्मांड इस शरीर में विद्यमान है इसको शीघ्र ही पहचानिए! यह अंतर ध्यान लगाने पर ही मालूम चलेंगे! ध्यान लगा कर देखो! दिव्य शक्ति नजर आएगी! तभी वह परमात्मा नजर आएंगे!

इच्छाओं का त्याग ही मोक्ष है!

भगवान कहते हैं 1 दिन का तुम्हें मैंने समय दिया चलो 1 दिन में अपनी इच्छा मिटाओ!अपनी सारी इच्छा सोने से पहले मिटा लो वरना कल फिर तुम्हें मैं उठाऊंगा जो तुम्हारी बाकी इच्छा पहले दिन शेष रह गई है! उसे कल उठने के बाद पूरा करते हैं मोक्ष पाना है तो कल के लिए कोई इच्छा ना बचाओ!

सोने से पहले सारी इच्छा मिट गई यही मोक्ष है! मृत्यु के समय जो इच्छा बाकी रह जाता है उसी इच्छा के लिए फिर से उसको नया जन्म मिलता है जैसे बाकी इच्छा अगले दिन पूरा करते हो ऐसे ही इस जन्म का बाकी इच्छा जीव उसे अगले जन्म में पूरा करता है! और जन्म हमें कब तक लेना पड़ेगा? जब तक इच्छा बाकी रहेगा! इच्छा पूरी हो गई वही मोक्ष! इच्छा तो कभी पूरी होगी नहीं अनंत जन्म बीत गए अब तक पूरी नहीं हुई तो आगे क्या होगा? इसलिए इच्छाओं का त्याग ही मोक्ष है!

सद्गति और दुर्गति क्या है?

मनुष्य योनि में आने के बाद हीरा जन्म प्राप्त करने के बाद जो मौज मस्ती में लगे हैं मृत्यु के बाद जीव को 84 के चक्कर लगाने होते हैं! कुत्ते बिल्ली पशु पक्षी जीव को इसी के राउंड में घूमने होते हैं कब तक कई कल्पों तक इसमें घूमती रहती है! कुत्ता योनि में आने के बाद एक बार कुत्ता बनकर मर गए ऐसा नहीं है लाखों बार उसको कुत्ते योनि में जन्म मिलेगा!

ऐसे ही पूरे 84 राउंड उसको पर करना होता है और एक राउंड रही कई राउंड उसको लगाने होते हैं! कब तक जब तक भगवान की उसे पर कृपा नहीं हो जाती कृपा दृष्टि से भगवान देखते हैं तब उसको एक चांस देते हैं! यहां से निकलने के लिए इस सौभाग्य से जीव को मनुष्य योनि में जन्म मिलता है! इसमें जाकर और शैतानी किया! तो फिर वही हाल होगा 84 भोगने पड़ेंगे!

जीव बस 84 चक्र में घूमती रहती है घूमते घूमते कई युग बीत गए! कभी-कभी भगवान की बड़ी दया से जीव को मनुष्य योनि में जन्म मिलता है सिर्फ मौका देते हैं! 84 चक्र से बाहर होने के लिए यदि नहीं हुआ तो फिर से वापस उसमें वह डालेगा,,, मनुष्य योनि सिर्फ जन्म मृत्यु के खेल से बाहर होने का एक अवसर है चांस है जो फिर इसके बाद कभी नहीं मिलेगा, 50 खरब वर्ष में एक बार जीव को मनुष्य योनि मिलती है! कठोपनिषद इसका प्रमाण है!

सिर्फ एक उद्देश्य के लिए मोक्ष प्राप्ति,, अवसर पाकर मुक्त नहीं हुए इसका परिणाम यही होगा! जन्म मृत्यु 84 चक्र के जेल में फिर से उसे कैद कर दिया जाएगा इसके बाद कितने युगों के बाद मनुष्य योनि मिलेगी? कुछ कहा नहीं जा सकता!

और इस खेल का शर्त है जिसने अपने मन को प्रत्येक सेकंड भगवान में लगा कर रखा है वहीं उनकी सद्गति अर्थात जन्म मृत्यु से मुक्ति! और जो अपने मन को प्रत्येक सेकंड माया, धन, परिवार इसमें रखा है वहीं उनकी दुर्गति है!

अंत जैसी मति वैसी गति

अंत तक इसे ध्यान पूर्वक पढ़िएगा सबसे महत्वपूर्ण विषय! गीता 8/5

भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से इस बात को गीता में बताया है की मृत्यु के समय का चिंतन जो हो गया बस वही उनकी गति होती है पूरा जीवन उनका ध्यान किस चीज में लगा है महत्व इसका नहीं है महत्व इसका होता है!

मृत्यु के समय चिंतन उसे किसका होगा??? बस उसी के अनुसार उनका अगला शरीर अगला जन्म उसका निर्धारित होता है! पूरा जीवन भगवान की भक्ति किया और अंत समय चिंतन हो गया माताजी का अगर धोखे से भी हो गया तो फिर उस जीव को भगवान जहां उसके माताजी जिस योनि में गई होगी उसी के साथ उसको लटका देते हैं!

चाहे संसार में किसी का भी चिंतन हो! जिसका हमें चिंतन होगा अंत समय उसको जो फल मिलेगा आगे वही फल हमको भी मिलेगा! ऐसे व्यक्ति का चिंतन हो गया जो नरक में चले गए तो हमें भी नरक जाना पड़ेगा! कोई महापुरुष कोई सद्गुरु जो भगवान को प्राप्त करें ऐसे का चिंतन यदि हुआ तो सीधे उसे मोक्ष की प्राप्ति होगी! अंत समय का चिंतन सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है!

और यह सिर्फ इस चीज पर निर्भर करता है की पूरा जीवन उसका मन किस चीज में लगा है बस उसी के अनुसार शरीर से प्राण निकलते समय मन में उसी की छवि बनती है! पूरा जीवन जिसमें उसका मन लगा था!

माताजी का हमें चिंतन हुआ मान लो वे छिपकली योनि में चली गई अपने कर्म से तो हमें भी उसी छिपकली के बच्चे बनना पड़ेगा इससे कोई नहीं रोक सकता! जो वह बनेंगे वही हमें भी बनना पड़ेगा! मां की जो गति होगी वहीं उनकी गति होगी!

मान लो किसी दोस्त का चिंतन हुआ भक्ति तो किया पर मन किसी एक दोस्त में अधिक लगा था और दोस्त बन गया सूअर तो हमें भी सूअर योनि में जाना पड़ेगा और उसी के पास रहना पड़ेगा जहां दोस्त जाएगा! भगवान का यह शाश्वत कानून है!

भगवान ने साफ स्पष्ट कह दिया है अंत समय जिसका जैसा चिंतन होता है आगे की गति उसी के अनुसार होती है कहां जन्म मिलेगा? कैसा वातावरण मिलेगा? किसके घर जन्म मिलेगा? कैसा शरीर मिलेगा? सिर्फ मन, बुद्धि, चित के अनुसार आगे की गति होती है मृत्यु के समय चिंतन जिस चीज का होगा! बस उसी पर हमारा अगला जन्म टिका होता है इसलिए यह जीवन भगवान ने सिर्फ अभ्यास के लिए ही दिया है! जैसा अभ्यास करोगे वैसा पाओगे!

जो पूरा जीवन जिस चीज का अभ्यास करेगा अंत समय उसका वैसा ही चिंतन होगा और जैसा चिंतन अंत समय हुआ वैसी उनकी गति होती है!,,,

जिसे मृत्यु के समय भगवान का या गुरु का चिंतन हो गया भगवान ने कहा है वह सीधे मेरे परमधाम को प्राप्त होते हैं! उनका कभी जन्म नहीं होता और जो माया का चिंतन करता है! उसे 84 लाख के चक्कर लगाने होते हैं!

अंत समय दादाजी का चिंतन हुआ था कि मेरा घर का क्या होगा? पुत्र की बुद्धि में आ गया कि हमें कुत्ता पालना चाहिए और वह उसी के पास गया! लेख खींचकर उनको उसी की तरफ ले गया,,,, जहां उस जीव को आना था जहां उनके पिता कुत्ते बने हुए थे उसका दादाजी कुत्ता बन गया और उसी के पास उन्हें आना पड़ा! मेरे घर का क्या होगा? अब देखते रहो अपने घर को!

पूरा जीवन मन को भगवान में लगाने की लाख कोशिश के बाद अंत समय चिंतन फिसल जाता है मृत्यु के समय भगवान का याद आना उनका स्मरण होना,, इतना आसान नहीं होता! अंत समय जीव को महा भयंकर कष्ट भोगना पड़ता है! तब जाकर बड़ी मुश्किल से तो शरीर से प्राण निकलते हैं! प्राण,, शरीर को इतनी आसानी से नहीं छोड़ती!

उस समय जीवात्मा कष्टो से उनका बहुत बुरा हाल होता है जो उस कष्ट को वह किसी को बता नहीं पाती! हाथ पैर वाणी सब काम करना बंद कर देते हैं! बेहोश हो जाती है अंत समय बस सांस और धड़कन चलता रहता है! क्या उस समय भगवान का चिंतन होगा? अंदर से जीवात्मा को पीड़ा इतनी अधिक होती है हर बार प्रत्येक जन्म में हमसे यही होता आया है!

पूरा जीवन भक्ति करके भी अंत समय भगवान को याद नहीं कर पाते! मां-बाप, पति-पत्नी, बेटा बेटी, बस इसी का चिंतन हर जन्मों में हमसे होता आया है हमें बचाओ,, वाणी तो कुछ बोल नहीं पाती,,, कोई अंग काम नहीं करते! सब काम करना अंत समय बंद कर देते हैं बस सिर्फ चिंतन होता है उनका,,, माता को याद किया, पिता को, पुत्र को कहां हो आओ,, हम मर रहे हैं बचाओ ना हमें! यह अपने परिवारजन को पुकारती है! यही चिंतन करते-करते चली जाती है!

एक बार तुम्हें देख ले हम जा रहे हैं बस ऐसे ही अपना सर्वनाश कर दिया! फिर आ जाती है उसी के पास!

ऐसे ही हम फिसलते गए और फिर से जन्म लेना पड़ा और उसी जगह हमारा आज जन्म हुआ है जहां पूर्व जन्म में हमारा जिस परिवार में चिंतन था जहां से मन हटा नहीं है इसलिए मृत्यु के समय सावधान रहना होगा! अगर कभी जन्म नहीं लेना है! तो अंत समय बहुत ही सावधान रहना होगा! क्यूंकि मृत्यु के बाद तुरंत जन्म फिर से निश्चित होता है!

इतना अभ्यास कीजिए और ऐसा कीजिए की अंत समय भगवान का ही चिंतन हो कहीं मन बुद्धि अंत समय माया में ना फिसल जाए अन्यथा फिर से जन्म लेने पड़ेंगे!

कृष्ण के अलावा चित् किसी दूसरे में ना हो! जैसा अभ्यास होगा वैसा अंत समय चिंतन होगा और जैसा अंत समय चिंतन जैसा हुआ वैसे ही उनकी गति होगी!

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् |

य: प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशय: || 5|| ,,,, गीता-8/5

हमें कैसी साधना करनी है? परमात्मा तक पहुंचने के लिए

परमात्मा तक पहुंचने के लिए हमें कैसी साधना करनी है? जो जीव इंद्रियों से ही ऊपर नहीं जा पा रहे तो वह कहां से मन से ऊपर जा पाएगा?,, कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी वाणी पल भर भी विश्राम नहीं लेती! लगातार उनकी वाणी चलता रहता है इंद्रियों में संयम ही नहीं,,,, ना आंखें अपने वश में,, न वाणी,, ना रसना,, अभी तो सब माया के आधीन है साधना से ही सब अपने वशीभूत होंगे!

भगवान कहते हैं मुझ तक पहुंचना है तो सबसे पहले तुम्हें इंद्रियों से ऊपर जाना होगा! सबसे पहली साधना- पूरे 10 इंद्रियों को पहले तो अपने वश में करना होगा! जब यह हो जाए तब सिर्फ मन में विचार चलता रहेगा चलने दीजिए क्योंकि चित् में संस्कार भरे है विचार तो रुकेगा नहीं! इसके बाद दूसरी साधना कीजिए मन के विचारों को रोकने की,,, यह अभ्यास कीजिए जो एकांत होकर अंतर ध्यान करने से ही संभव है! विचारों को रोकने का अभ्यास कीजिए! अनंत जन्मों से मन को बहुत गहरी आदत है इसलिए विचारों को नष्ट करना जल्दी नहीं होगी समय लगेगा पर करते रहिए एक दिन अवश्य होगा!

फिर उसके बाद मन को क्रॉस करना होगा अब आ गए बुद्धि में,,,, इंद्रियां और मन को पार कर लिया फिर भी नहीं मिलेंगे भगवान,,,, अब कीजिए तीसरी साधना- बुद्धि की माया को तोड़कर उससे भी आगे जाना होगा! यह तो भगवान की सबसे बड़ी माया है इसको भी हमें हराना होगा!

बुद्धि को बिल्कुल सरल करना है ऐसा कि हमारे पास बुद्धि है ही नहीं! बिल्कुल शून्यवस्था में यह साधना तीसरे नंबर पर करनी है! अब इसको भी पार कर लिया! उसके बाद चित् और अहंकार से जीतना है! अच्छे बुरे संस्कार (आदत) और कर्तापन (मैं भाव और मेरा भाव) इसको मिटाने की कोशिश करनी है यह चौथे नंबर की साधना है!

इन दोनों को परास्त करना होगा! इसके बाद सिर्फ 3 मोह तत्व है उसे मिटानी होगी पूर्ण त्याग आवश्यक है किसी से तनिक भी आसक्ति ना हो ना अपने प्राण से न शरीर से!

यही सबसे अंतिम स्टेज है इससे ऊपर है आत्मा! इसके बाद तो सिर्फ आत्मा ही शेष रहेगी सब मिट गए अब बच गई केवल आत्मा अब हम केवल आत्मा है!

यहां तक पहुंच गए इससे ऊपर है परमात्मा! यहां तक पहुंचने के लिए पहले तो आत्मा तक पहुंचना होगा! इंद्रियों से सीढ़ी पकड़कर आना है हमें आत्मा तक! इंद्रियां, मन, बुद्धि, चित, अहंकार, मोह इन 6 सीढ़ियों को पार करके आगे बढ़ना होगा!

इन सबको 6 माया के आवरण को पार करना ही आत्म तत्व में प्रवेश करना है पहले तो आत्मा तक पहुंचना होगा फिर परमात्मा की प्राप्ति बाद में होगी!

पहले आत्मवान बनना होगा! आत्म साक्षात्कार आवश्यक है मैं इंद्रिय, मन, बुद्धि नहीं मैं सिर्फ आत्मा हूं यह अनुभव सबसे पहले आवश्यक होता है इसके बाद तो परमात्मा ही है! माया के छह पर्दा इस जाल को तोड़कर आगे बढ़ना होगा! इंद्रिय< मन< ,बुद्धि<, <चित< अहंकार और< मोह तत्व इससे ऊपर <आत्मा है! और उससे ऊपर <परमात्मा!

मनुष्य योनि कब मिलेगी?-

अब इसके बाद मनुष्य योनि कब मिलेगी?-

10 खरब वर्षों बाद जीव को यह सौभाग्य प्राप्त होता है,,, मुक्त होने के लिए अवसर चांस उसे एक बार दिया जाता है वही है मनुष्य योनि! जो इसके बाद कभी नहीं मिलेंगे!,, कई युग बीत जाते हैं जीव को मनुष्य योनि नहीं मिलती! जब कभी भगवान की दया होती है बहुत बड़ी कृपा होती है तब उसे मिलता है अन्यथा 84 में अनंत काल तक भटकती रहती है!

अंत तक ध्यान से गौरपूर्वक पढ़िएगा,, बहुत ही महत्वपूर्ण विषय 84 का घनघोर रहस्य! ,

पद्म पुराण के अनुसार,,,,

जीव को 84 पार करने के बाद मनुष्य योनि में जन्म मिलता है!

जो बार-बार नहीं मिलते एक बार सिर्फ मोक्ष के लिए मिलता है!

जान लीजिए मनुष्य योनि जिसे बर्बाद कर रहे कितनी मुश्किल से मिला है मौज मस्ती करने वालों को जानना यह आवश्यक है कि इसके बाद अब कब मिलेंगे?

यहां समझना ध्यान से एक-एक शब्दों को समझिएगा! पद्म पुराण के अनुसार?

जीव,,, मनुष्य योनि से जैसे ही शरीर छोड़कर जाती है जीव को सबसे पहले वृक्ष योनियों में डाला जाता है! पेड़ पौधे की कुल 20 लाख योनियां है! उनमें से एक-एक योनियों में 10- 10 हजार वर्ष तक सजा काटना होता है!

फिर उसके बाद उसे कीड़े मकोड़े की योनियों में डाला जाता है! जो कि कुल 11 लाख योनियां है! उनमें से सिर्फ एक योनि में 50,000 बार लगभग जन्म मिलता है पूरे 11 लाख योनियों को पार करने के पश्चात उसे अगली योनियों में भेजा जाता है! कीड़े मकोड़े की पूरी वैरायटी जब पार कर लेती है! कीड़े की जितनी भी कंपनी है! सब उसमें सजा काटना होगा!

उसके बाद उसे जलचर में लाया जाता है समुद्री जीव उसे बनना पड़ता है! जो कि कुल 9 लाख योनियां है! एक मछली योनि में 50,000 बार लेने के बाद उसे जलचर की दूसरी वैरायटी जैसे कछुआ उसके बाद मेंढक उसके बाद मगर जलचर मे 9 लाख कंपनी है!

पूरे 9 लाख को पार करने के बाद जलचर पार कर लिया उसके बाद उसे पक्षी योनि में डाला जाता है! जो कि 10 लाख योनियां है! ऐसे ही पक्षियों की एक-एक योनि में 50,000 बार जन्म मिलता है तोता फिर कोयल फिर उल्लू फिर चिड़िया फिर गौरैया फिर मोर सबको पार करना होगा!

पूरे 10 लाख जब पार हो जाएंगे! तब उसे पशु योनि में डाला जाता है! जो कि कुल पशुओं की 30 लाख योनियां है! एक-एक योनियों में उसे 50,000 बार जन्म मिलता है! जैसे भालू एक योनि हो गई तो उसी में हजार बार जन्म मिलेगा फिर उसके बाद जिराफ फिर ऊंट फिर शेर फिर बकरी फिर कुत्ते फिर बिल्ली जंगली जानवर और पालतू जानवर जब पशुओं की पूरी कंपनी में चक्कर हम काट लेंगे!

अब हमने 80 लाख योनियां पार कर ली! उसके बाद सबसे श्रेष्ठ हीरा जन्म मनुष्य योनि में डाला जाता है मनुष्य के बाद फिर से 84 का चक्र ऐसे ही अनंत काल तक चलता रहता है! जब तक जीव को मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती!

84 भटकने के बाद अंत में उसे एक चांस दिया जाता है! 84 राउंड महा भयंकर कष्ट से बाहर निकलने के लिए मुक्त होने के लिए उसे एक अवसर मिलता है! अगर इस खेल से जन्म मृत्यु से मुक्त नहीं हुआ तो फिर से उसे 84 राउंड में डाल दिया जाता है!

कुत्ते बिल्ली पशु पक्षी क्यो बने हुए हैं?

जितने कुत्ते बिल्ली पशु पक्षी हम देखते हैं वह एक समय मनुष्य योनि में थे! क्यों भोग रहे हैं सजा? कई लोगों ने उनको बताया समझाया! भगवान का नाम लो! इन सब ने कहा था हमारे पास समय नहीं इतने हम बिजी हैं कभी भगवान के लिए समय नहीं निकाल पाए मनुष्य योनि हाथ से निकल गया! सुबह से लेकर रात तक पूरा जीवन अपना खाने, कमाने और सोने में ही व्यर्थ खो दिया! पाप करने वालों को नरक की प्राप्ति होती है! 84 में तो वही जाते हैं जो पूरा जीवन विषयों में फंसे रहते हैं! भगवान को नहीं मानते! जो इन सब चीजों को झूठ समझता है! जो भगवान को समय नहीं देते,, भगवान उन्हें इतना समय देते हैं लंबे की जाओ 84 में भटकते रहो! तुम्हारी यही सजा!

मानव योनि का महत्व, वेद के अनुसार

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।

(केनो.२-५)

ये मंत्र कहता है, मनुष्यो! तुमको मनुष्य शरीर मिल गया है, इसका लाभ उठा लो। ये करोड़ों जन्मों में मिला है।

जन्मान्तर सहस्त्रैस्तुमनुष्यत्वं हि दुर्लभम्। (महाभारत)

जल्दी बना लो। भगवान् के शरणापन्न हो जाओ। संत के द्वारा समझ कर अपना कल्याण करो। फिर वेद कहता है-

इह चेदशकद् बोध्दुं प्राक् शरीरस्य विस्त्रसः।

ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते॥ (कठो. २-३-४)

ऐ मनुष्यो! ये मनुष्य शरीर पाकर, ईश्वर भक्ति कर के अपना लक्ष्य प्राप्त कर लो। नहीं तो 'सर्गेषु' करोड़ों बार चौरासी लाख में घूमना पड़ेगा। फिर मानव देह मिलेगा और फिर तुम यही कहोगे कर लेंगे। पहले तो ९९ प्रतिशत लोग जानते ही नहीं कि क्या करना है और जो जान गये वह उधार कर देते हैं, कर लेंगे, कर लेंगे रिटायर्ड होंगे तो करेंगे। और पहले मर गये तो? तो फिर क्या करेंगे? कुछ नहीं करेंगे। अच्छा रिटायर्ड हो गये अब तो करो। वह तो ठीक है कि हो गये, लेकिन ऐसा है कि अभी बच्चे छोटे हैं। तो बच्चे तुम्हारे बाप बनेंगे क्या? वह तो हमेशा तुम्हारे बच्चे रहेंगे। फिर तुम कब करोगे ? यही उधार करते करते हम लोगों ने अनन्त जन्म बिता दिये। जैसे आज आप पढ़ हैं प्रवचन ऐसे अनन्त जन्मों में पढ़ा है, सुना है। और माना भी है। हाँ, बात बिल्कुल ठीक है। हम कर सकते हैं। शरणागति में क्या करना है। खाली भगवान् के आगे रोना है। संसार के आगे रोते-रोते तो अनन्त जन्म बीत गये। पैदा होते ही रोये। आप लोग जब पैदा हुये तो सबसे पहला काम क्या किया आपने? रोये। आप रोये तो माँ बाप हँसे, ठीक है, ठीक है। जिन्दा है। आप रो रहे हैं, माँ बाप हँस रहे हैं। हाँ। अरे वह स्वार्थी हैं। बेटा चाहते हैं। तुम रोओ, गाओ, जिन्दा तो हो। सारे जीवन रोता रहा इस प्रकार और एक्टिंग करता रहा। Hello! All right? Yes yes, alright. एक भी right नहीं है, सब wrong है। और ऐसे आप लोग आपस में बोलते रहते हैं। एक दूसरे को धोखा देते हैं। भीतर गड़बड़ बाहर ठीक। मुस्करा दिये। हाथ मिलाये, मुस्करा दिये। प्रणाम किया, मुस्कुरा दिये। यह जीवन बीता जा रहा है इसी में। तो वेद कहता है जल्दी करो। जीवन को मत परखो।

न श्व: श्व उपासीत को हि पुरुषस्य श्वो वेद। (वेद)

वेद कहता है कल करेंगे यह मत कहो। तुम्हारा कल हो न हो। एक बार युधिष्ठिर के पास एक ब्राह्मण आया। उसने कहा राजा साहब! हमको दस तोला सोना चाहिये। लड़की की शादी है, हम बहुत गरीब हैं। उन्होंने कहा अच्छा-अच्छा मिल जायेगा। कल आना आज हम बहुत व्यस्त है। कह के चले गये। वह बिचारा चला गया। खैर कल आयेंगे। भीमसेन सुन रहे थे। उनको खराब लगा। अरे हमसे कह देते बड़े भैया कि तुम जाओ इसे दस तोला सोना दिला दो खजाने से। तो भीमसेन को भी मजाक सूझा। उन्होंने बुलाया प्राइम मिनिस्टर को और कहा भई देखो आज खुशी

मनाओ। एक बहुत बड़ी खबर है खुशी की। तो उसने नीचे आज्ञा दे दी। सारे शहर में तमाम प्रकार की खुशियाँ मनाई जाने लगी। युधिष्ठिर ने देखा, उसने कहा आज क्या है? न जन्माष्टमी, न रामनवमी, न कोई त्यौहार। ये काहे की खुशी मना रहे हैं सब लोग? पूछा, किसी से तो उसने बड़े ऑफिसर का नाम ले दिया फिर उससे पूछा तो उसने प्राइम मिनिस्टर का नाम ले दिया तो उससे पूछा। तो उन्होंने कहा कि महाराज ! आपके भाई साहब ने कहा है। मेरे भाईसाहब ने? भीमसेन कहाँ है? आये। सब क्या है ? क्या हो रहा है? उन्होंने कहा भैया! आज बहुत बड़ी खुशी की बात है। क्या? आपने काल को जीत लिया है। काल को जीत लिया? काल को कौन जीत सकता है? तो भैया फिर आपने उस ब्राह्मण को क्यों कहा था कि कल आना। अगर रात में ही हम लोग संसार से चल बसे तो? अरे हाँ। शरीर मोटा है, अकल बड़ी पतली है इसकी। उन्होंने कहा बुलाओ उस ब्राह्मण को अभी दो।

तो उधार करते करते हम लोग अनन्त जन्म समाप्त कर चुके। और ये जो हम कह रहे हैं, ये सुनते हुये भी आप उधार करना बन्द नहीं करेंगे, ये मैं जानता हूँ। आदत है। आप मन के गुलाम हैं। इसलिये ये सारी गड़बड़ी है। मन के समान कोई शत्रु न था, न है न होगा, सबसे बड़ा शत्रु मन है। सारे पाप इसी के द्वारा होते हैं। भगवान् की भक्ति को रोकने वाला भी यही मन है। सब गड़बड़ी करने वाला आपका मन।

प्रवचनांश- भक्तियोग रसावतार अनंतश्रीविभूषित जगद्गुरूत्तम १००८ स्वामि श्री कृपालु जी महाराज

मनुष्य योनि क्या सिर्फ सोने खाने के लिए मिला है?

महत्वपूर्ण विषय

यह तो सभी को मालूम होता है कि अगर किसी को पूछा जाए कि बताओ सप्ताह में मंगलवार कितने बार आता है तो कहेंगे एक बार आता है अगर पूछे कि बताओ पूरे वर्ष में सितंबर कितने बार आता है तो कहेंगे एक बार आता है लेकिन उनको यह नहीं पता बिल्कुल इसी प्रकार 84 लाख योनियों में मनुष्य योनि सिर्फ एक बार मिलती है! हमारे उपनिषद कहते हैं- जैसे दिसंबर के बाद जनवरी, शनिवार के बाद रविवार बिल्कुल वापस रिटर्न होता है ऐसे ही मनुष्य योनि के बाद फिर से 84 राउंड प्रारंभ होता है!

पूरे 84 में एक बार मनुष्य योनि बड़ी मुश्किल से मिलती है और इसका मुख्य प्रयोजन लक्ष्य यह होता है! केवल मोक्ष प्राप्त करने के लिए जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त होने के लिए उन्हें एक बार अवसर दी जाती है! जो इसे प्राप्त करके मुक्त नहीं हो पाया वह 84 चक्र में फिर जन्म फिर मृत्यु अनंत काल तक इसमें भटकती रहती है!

पूरे 84 में ऐसी कोई बुद्धि नहीं जिसमें भगवान परमात्मा ब्रह्म तत्व को जाना जा सके मैं कौन हूं? स्वयं को जाना जा सके परम तत्व को जानने के लिए ही जीव को मनुष्य योनि में जन्म मिलता है! अपने 84 चक्र को जानने के लिए यहां से छूटने के लिए ही उसमें इसको जन्म मिलता है!

अज्ञानता वश जीव समझ लेती है कि सोना खाना बस यही मेरा जीवन है ऐसे ही करते-करते अनंत जन्म बीत गए जीव आज तक नहीं जान पाई कि मनुष्य योनि का परम लक्ष्य क्या है? प्रत्येक चराचर जीव का एक ही परम लक्ष्य है पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति!

मनुष्य योनि मुक्त होने का एक चांस है भगवान जन्म मृत्यु से मुक्त किसी को नहीं करते केवल अपनी कृपा से मनुष्य योनि में लाते हैं! इसे प्राप्त करके जो अपनी बिगड़ी नहीं बना पाया! यह मनुष्य योनि शरीर छूटने के बाद फिर से 84 में भगवान उसको डाल देते हैं!

यजुर्वेद और सामवेद इसका प्रमाण है!

इह चेत् अवेदीत् अथ सत्यम् अस्ति न चेत् इह अवेदीत् महती विनष्टिः । भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृता भवन्ति ॥५॥

केन उपनिषद 2/5, कठोपनिषद 2/3/4

84 राउंड का चक्र

84 राउंड का चक्र:- सबसे पहले वृक्ष योनि में जीव जाती है उसके बाद कीड़े मकोड़े की योनि मिलती है उसके बाद समुद्री जीव जलचर में जाती है उसके बाद पक्षी योनि में आती है फिर उसके बाद पशु योनि में तब उसे अंत में एक बार करोड़ों वर्षों के संघर्ष के बाद बड़ी मुश्किल से मनुष्य योनि में जन्म मिलता है केवल मुक्त होने के लिए एक चांस भगवान देते हैं!

इसे प्राप्त करके जन्म मृत्यु से मुक्त नहीं हो पाया तो भगवान कहते हैं फिर इसकी जवाबदारी हमारी नहीं है!

केवल तुम्हारी होगी! हमने तो तुम्हें मनुष्य योनि में जन्म दे दिया बुद्धि दे दी अब तुम्हें जानना है की सत्य क्या है? तुम्हें हमने वह बुद्धि दी है जो 84 में किसी को नहीं मिला! परम तत्व परमात्मा को जानने के लिए उनको प्राप्त करने के लिए यह तुम्हें बुद्धि दी गई है स्वयं को जानने के लिए कि मैं कौन हूं कहां से आया? मेरा परम लक्ष्य क्या है? मनुष्य योनि में आकर सिर्फ सोना खाना बस इसी को अपना लक्ष्य समझ लिया तो फिर से पशु योनि में जन्म मिलेगा!

मनुष्य योनि का यह लक्ष्य नहीं है सोना खाना पशुओं का काम है मनुष्य योनि सबसे बड़े परम तत्व पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानंद को प्राप्त करने के लिए दी गई है!

जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त होने के लिए अनंत काल से 84 में जीव घूम रही है भटक रही है उसे भयावह कष्ट से मुक्त होने के लिए दी गई है अपने आत्म कल्याण करने के लिए दी गई है इस त्रिगुणात्मक महा भयंकर चक्र से तुम्हें मुक्त होने के लिए अवसर प्रदान की गई है!

अगर नहीं हो पाए तो इसकी जवाबदारी भगवान की नहीं होती! फिर तो स्वयं जीव की होती है! अगर इसमें जन्म प्राप्त करके लापरवाही अगर उसने की! मौज मस्ती की तो फिर से उसे 84 में जाना होता है!

भगवान की भक्ति नहीं कि उनका मार्ग नहीं पकड़ा! जन्म मृत्यु के आवागमन में अनंत काल तक ऐसी जीवात्मा भटकती रहती है! इस चक्र से बस वही बचता है जो भगवान की शरण ग्रहण कर लेते हैं! उनकी शरण में जाने मात्र से ही जीव इस महा भयंकर चक्र से मुक्त हो जाती है!

गीता 18/66.

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज |

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः || 66||

श्री राधे हरे कृष्ण

मनुष्य शरीर अत्यन्त दुर्लभ श्रीमद् भागवत महापुराण

नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं

प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् ।

मयानुकूलेन नभस्वतेरितं

पुमान् भवाब्धिं न तरेत् स आत्महा ॥ १७ ॥ स्कंध-11,, अध्याय-20 श्लोक-17 श्रीमद् भागवत महापुराण

(11/20/17)

भावार्थः- यह मनुष्य शरीर समस्त शुभ फलोंकी प्राप्तिका मूल है और अत्यन्त दुर्लभ होनेपर भी अनायास सुलभ हो गया है। इस संसार सागरसे पार जानेके लिये यह एक सुदृढ़ नौका है। शरण ग्रहणमात्र से ही गुरुदेव इसके केवट बनकर पतवार का सञ्चालन करने लगते हैं और स्मरणमात्र से ही मैं अनुकूल वायु के रूप में इसे लक्ष्य की ओर बढ़ाने लगता हूँ। इतनी सुविधा होनेपर भी जो इस शरीरके द्वारा संसार सागर से पार नहीं हो जाता, वह तो अपने हाथों अपने आत्मा का हनन - अधःपतन कर रहा है ॥ 17 ॥

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभङ्गुरः ।

तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रियदर्शनम् ॥ २९ ॥

(श्रीमद् भागवत महापुराण)

11-2-29

भावार्थः- जीवों के लिये मनुष्य शरीर का प्राप्त होना दुर्लभ है। यदि यह प्राप्त भी हो जाता है तो प्रतिक्षण मृत्यु का भय सिर पर सवार रहता है, क्योंकि यह क्षणभर के लिए उसे मिला है। इसलिये अनिश्चित मनुष्य जीवन मे भगवान के प्यारे और उनको प्यार करनेवाले भक्तजनोंका, संतोंका दर्शन तो और भी दुर्लभ है ।। 29 ।।

इसी को गोस्वामी तुलसीदास जी कह रहे-

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।

सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ॥44॥

(रामचरितमानस उत्तरकांड)

भावार्थ:-

जो मनुष्य ऐसे साधन पाकर भी भवसागर से न तरे, वह कृतघ्न और मंद बुद्धि है और आत्महत्या करने वाले की गति को प्राप्त होता है॥44॥

मानव योनि का महत्व

रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने उत्तरकांड में यहां से इसकी व्याख्या किए हैं--

दोहा- 42

जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान।

जे हरि कथाँ न करहिं रति तिन्ह के हिय पाषान॥42॥

भावार्थ

सनकादि मुनि जैसे जीवन्मुक्त और ब्रह्मनिष्ठ पुरुष भी ध्यान (ब्रह्म समाधि) छोड़कर श्री रामजी के चरित्र सुनते हैं। यह जानकर भी जो श्री हरि की कथा से प्रेम नहीं करते, उनके हृदय (सचमुच ही) पत्थर (के समान) हैं॥42॥

एक बार रघुनाथ बोलाए। गुर द्विज पुरबासी सब आए॥

बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन। बोले बचन भगत भव भंजन॥1॥

भावार्थ

एक बार श्री रघुनाथजी के बुलाए हुए गुरु वशिष्ठ जी, ब्राह्मण और अन्य सब नगर निवासी सभा में आए। जब गुरु, मुनि, ब्राह्मण तथा अन्य सब सज्जन यथायोग्य बैठ गए, तब भक्तों के जन्म-मरण को मिटाने वाले श्री राम जी वचन बोले-॥1॥

सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहउँ न कछु ममता उर आनी॥

नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई। सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई॥2॥

भावार्थ

हे समस्त नगर निवासियों! मेरी बात सुनिए। यह बात मैं हृदय में कुछ ममता लाकर नहीं कहता हूँ। न अनीति की बात कहता हूँ और न इसमें कुछ प्रभुता ही है, इसलिए (संकोच और भय छोड़कर, ध्यान देकर) मेरी बातों को सुन लो और (फिर) यदि तुम्हें अच्छी लगे, तो उसके अनुसार करो!॥2॥

सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई॥

जौं अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई॥3॥

भावार्थ

वही मेरा सेवक है और वही प्रियतम है, जो मेरी आज्ञा माने। हे भाई! यदि मैं कुछ अनीति की बात कहूँ तो भय भुलाकर (बेखटके) मुझे रोक देना॥3॥

बड़ें भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा॥

साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक सँवारा॥4॥

भावार्थ

बड़े भाग्य से यह मनुष्य शरीर मिला है। सब ग्रंथों ने यही कहा है कि यह शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है (कठिनता से मिलता है)। यह साधन का धाम और मोक्ष का दरवाजा है। इसे पाकर भी जिसने परलोक न बना लिया॥4॥

दोहा-43

सो परत्र दुःख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताई।

सो परत्र दुःख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताई॥43॥

भावार्थ:- वह परलोक में दुःख पाता है, सिर पीट-पीटकर पछताता है तथा (अपना दोष न समझकर) काल पर, कर्म पर और ईश्वर पर मिथ्या दोष लगाता है॥43॥

एहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई॥

नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं॥1॥

भावार्थ

हे भाई! इस शरीर के प्राप्त होने का फल विषयभोग नहीं है (इस जगत् के भोगों की तो बात ही क्या) स्वर्ग का भोग भी बहुत थोड़ा है और अंत में दुःख देने वाला है। अतः जो लोग मनुष्य शरीर पाकर विषयों में मन लगा देते हैं, वे मूर्ख अमृत को बदलकर विष ले लेते हैं॥1॥

फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा॥

कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही॥3॥

भावार्थ

माया की प्रेरणा से काल, कर्म, स्वभाव और गुण से घिरा हुआ (इनके वश में हुआ) यह सदा भटकता रहता है। बिना ही कारण स्नेह करने वाले ईश्वर कभी विरले ही दया करके इसे मनुष्य का शरीर देते हैं॥3॥

नर तनु भव बारिधि कहुँ बेरो। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो॥

करनधार सदगुर दृढ़ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा॥4॥

भावार्थ

यह मनुष्य का शरीर भवसागर (से तारने) के लिए बेड़ा (जहाज) है। मेरी कृपा ही अनुकूल वायु है। सद्गुरु इस मजबूत जहाज के कर्णधार (खेने वाले) हैं। इस प्रकार दुर्लभ (कठिनता से मिलने वाले) साधन सुलभ होकर (भगवत्कृपा से सहज ही) उसे प्राप्त हो गए हैं,॥4॥

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।

सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ॥44॥

भावार्थ

जो मनुष्य ऐसे साधन पाकर भी भवसागर से न तरे, वह कृतघ्न और मंद बुद्धि है और आत्महत्या करने वाले की गति को प्राप्त होता है॥44॥

अत्यंत ही मनमोहक अद्भुत वर्णन और जीवन की सच्चाई को यहां पर उन्होंने दर्शाया है!

श्री राधे हरे कृष्ण

84 लाख योनियों में मनुष्य योनि

जैसे सप्ताह में शनिवार एक बार आता है वर्ष में जनवरी एक बार आता है ऐसे ही 84 लाख योनियों में मनुष्य योनि सिर्फ एक बार मिलती है! इसलिए इसकी कीमत को समझें इसे व्यर्थ बर्बाद ना करें इसका परिणाम यही होगा कुत्ते बिल्ली सूअर पशु पक्षी की योनि मिलेगी!, पद्म पुराण कहते हैं अगला मनुष्य शरीर जीव को 50 अरब वर्ष बाद मिलते हैं! जिसे समझ लिया है कि मैं इसके बाद और प्राप्त कर लूंगा! मनुष्य के बाद मनुष्य जन्म किसी को नहीं मिलता! शनिवार के बाद वापस रविवार जैसे आता है ऐसे ही रिटर्न चक्र मनुष्य के बाद फिर से 84 राउंड स्टार्ट होता है! अंत में मनुष्य योनि मिलती है! भगवान की बड़ी करुणा करने के बाद यह मिला है फिर दोबारा कभी नहीं मिलेंगे! यदि मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया ,साधन धाम मोक्ष कर द्वारा!

मृत्यु का कष्ट

मृत्यु का कष्ट इतना महा भयंकर होता है इतना कष्टप्रद कि उस कष्ट को जीव अंत समय नहीं सहन कर सकती और मूर्छित हो जाती है! जितना भगवान का चिंतन पहले हो जाता है वहीं रह जाता है अंत समय कोई भगवान को याद नहीं कर सकता! अंत समय की पीड़ा इतनी तीव्र होती है! जीव उसको नहीं सह सकती और मूर्छित पड़ जाती है! उसके कुछ घंटे मिनट के बाद शरीर से प्राण निकलते हैं पहले मूर्छित होती है! यह कष्ट ऐसा है कि जीव अंत समय किसी को भी नहीं बता सकती केवल इसका अनुभव उसे स्वयं होती है बताना चाहती है अपने परिवारजन को पर करें क्या? अंत

समय वाणी बंद हो जाती है जैसे आई है गर्भ में अकेले बिल्कुल वैसे ही अकेले चली जाती है! मृत्यु के क्षण भगवान उनकी वाणी बंद कर देते हैं इंद्रियां,,सब काम करना बंद कर देते हैं! शरीर शिथिल पड़ जाती है फिर से जड़ बन जाता है और चेतन निकल जाता है! वही चेतन शक्ति परमात्मा है! जो अभी शरीर में विद्यमान है!

अंत समय का चिंतन?

मृत्यु का कष्ट

® अंत समय का चिंतन?

® शरीर से प्राण इतनी आसानी से नहीं निकलते!

® एक बार मरना नहीं है हजार लाख बार मरना पड़ेगा यदि मोक्ष की प्राप्ति नहीं हुई!

मृत्यु का कष्ट इतना महा भयंकर होता है इतना कष्टप्रद कि उस कष्ट को जीव अंत समय नहीं सहन कर सकती और मूर्छित हो जाती है! जितना भगवान का चिंतन पहले हो जाता है वहीं रह जाता है अंत समय कोई भगवान को याद नहीं कर सकता!

अंत समय की पीड़ा इतनी तीव्र होती है! जीव उसको नहीं सह सकती 10,000 बिच्छू एक साथ डंक मारती है इतना महा भयंकर पीड़ा उसे होती है इसलिए प्रत्येक जीव मृत्यु से डरती है अनंत जन्मों का कष्ट उन्हें अनुभव है और मूर्छित पड़ जाती है! हम अनंत बार मर चुके हैं और अनंत बार जन्म ले चुके हैं!

पूर्व संस्कारों के वशीभूत जीव मृत्यु से डरती है! वह दर्द कष्ट उन्हें मालूम है किस प्रकार होती है? पूरा जीवन भगवान की भक्ति करने वाला ज्ञानी भक्त भी अंत समय माया में फिसल जाता है! जब शरीर छोड़ने का समय आता है माया अपनी ओर उसे खींच लेती है और चिंतन सगे संबंधियों माता-पिता, पति-पत्नी, बेटा बेटी का ही होता है भगवान का चिंतन उनका स्मरण मृत्यु के समय होता ही नहीं! अंत समय का पीड़ा उन्हें भगवान की स्मृति भुला देती है!

जिसका परिणाम उसे फिर से संसार में जन्म लेना पड़ता है! मां के गर्भ योनि में फिर से उसे आना होता है और एक बार नहीं बारंबार उसे आना होता है कब तक जब तक मोक्ष नहीं मिलती! जो अंत समय चिंतन सगे संबंधी, परिवार, धन दौलत का करते हैं मेरे जाने के बाद इनका क्या होगा?

अंत समय जो यह सोचते हैं की आखिरी बार मैं उनको देख लूं उनसे मिल लूं अंतिम क्षण में जिसने ऐसा चिंतन कर लिया उनका फिर से जन्म होता है! उनका जन्म लेना निश्चित होता है!

अंतिम समय में जो धोखे से भी परिवार धन इनका चिंतन कर दिया! फिर से संसार में से दोबारा आना होता है हर जन्मों में हमसे एक ही भूल हुई है अंतिम क्षणों में परमात्मा को हमने याद नहीं कर पाया! अनंत जन्मों के अभ्यास के फल स्वरुप और भगवान की कृपा से ही अंत समय उनका स्मरण होता है फिर कभी वह संसार में लौटकर नहीं आता! और यह एक जन्म के अभ्यास से नहीं कई करोड़ों जन्मों के अभ्यास से ही संभव है!

जीव अंत समय में माया में फिसल जाती है! चाहे वह भगवान का कितना भी ध्यान करें! अंत समय में ही पता चलता है कि जीव को सबसे अधिक किससे प्रेम है? भगवान से या माया से! या फिर परिवार जनों से!

अंत समय चिंतन उन्हीं का होता है जिससे जीव को सबसे अधिक मोह है! दिन रात उसका मन, बुद्धि, चित जिस चीजों में लगा रहता है! अंत समय छवि पटल में वही दृश्य बनती है जिससे जीव को अधिक अटैचमेंट है और इस शरीर से निकलने के बाद उसे तुरंत उसके पास भेज दिया जाता है जिसका अंत समय वह चिंतन करती है!

भगवान का किया तो उसे दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता! परमधाम भगवान की उसे प्राप्ति होती है कभी लौटकर संसार में नहीं आती जो जीव अंत समय भगवान का चिंतन करते हैं!

शरीर नश्वर है और आत्मा अविनाशी है आत्मा कभी नहीं मरती इसलिए आत्मा के लिए किया गया कार्य भी अजन्मा है आत्मा के लिए किया गया कार्य ही श्रेष्ठ है जो शाश्वत है अखंड है जो कभी नष्ट नहीं होती!

लाख कोशिश करने पर भी शरीर को नहीं बचाया जा सकता! कितने भी पंचमहाभूत शरीर को बचाने की हम कोशिश कर ले कितने भी औषधि जड़ी बूटी डॉक्टरों की सहायता से पैसे की सहायता से शरीर को रिश्वत देने की हम कोशिश करें! हम अपने पैसे के बल पर शरीर तुम्हें बचा लेंगे! कितने दिन तक बचेंगे! एक दिन तो जाना पड़ेगा! शरीर का छूटना संसार का छूटना तो निश्चित है जिसने पहले से छोड़ दिया वह निहाल हो जाता है उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है! अगर मृत्यु उन्हें छुड़ाएं तो फिर से उसका जन्म होता है!

शरीर नाशवान है उसका मिटना निश्चित है जन्म हुआ इसीलिए है उसे नष्ट होने के लिए! मृत्यु होने का कोई कारण नहीं! इसका मुख्य कारण है उसका जन्म लेना ही मृत्यु का कारण है! भगवान ने सांख्य योग गीता में स्वयं कही है जिसका जन्म हुआ है उनका मृत्यु निश्चित है! गीता 2/27

जीवात्मा को अधिक समय तक पहले बहुत ज्यादा कष्ट भोगने पड़ते हैं उसके कुछ घंटे मिनट बाद अपार कष्ट भोगते हुए शरीर से प्राण निकलते हैं! जीव शरीर को छोड़ती है! इतनी आसानी से जीव शरीर नहीं छोड़ती! शरीर छोड़ने के लिए जीव को अपार कष्ट भोगना पड़ता है और एक बार कष्ट सहकर शरीर से निकल जाएंगे उसके बाद फिर यह मृत्यु का खेल समाप्त हो जाएगा ऐसा बिल्कुल भी नहीं मृत्यु के बाद फिर जन्म होगा! फिर मृत्यु, फिर जन्म, फिर मृत्यु फिर जन्म आवागमन इससे मुक्ति नहीं मिलती! जब तक जीव को संसार से पूर्ण वैराग्य नहीं हो जाती! तब तक जन्म लेने पड़ते हैं जब तक तनिक भी मन संसार के किसी भी विषयों में आसक्त रहती है! अटैच रहती है!

और ऐसा नहीं की एक बार मर जाएंगे तो हमारा खेल खत्म,, मृत्यु तो शरीर का अंत है जीव का अंत नहीं,,, क्योंकि आत्मा अविनाशी है! नित्य है शाश्वत है जीवात्मा कभी नहीं मरती,, जीव केवल शरीर बदलती है उसे तो और जन्म लेने पड़ते हैं जब तक मोक्ष नहीं मिलती! मरने के बाद तो हजार लाख बार और मरना पड़ेगा! अगर मोक्ष की प्राप्ति नहीं हुई तो बारंबार जन्म मृत्यु के चक्र में अनंत काल तक घूमना पड़ेगा और जन्म मरण का कष्ट भोगना पड़ेगा! पहले मूर्छित होती है! यह कष्ट ऐसा है कि जीव अंत समय किसी को भी नहीं बता सकती,,, अपने प्रिय जनों को अंत समय चिल्लाती है रोती है मुझे बचाओ पर उनकी आवाज किसी तक नहीं पहुंच पाती,,, जो भक्त भगवान की भक्ति

में जीवन को व्यतीत किया है अंत समय भगवान उनकी रक्षा करते हैं और बाकी को तो नरक ही भोगने पड़ते हैं श्रीमद् भागवत महापुराण रहती है उन सभी जीवों को नरक की प्राप्ति होती है जिसने कभी भगवान का नाम नहीं लिया!

अंत समय जीवात्मा अकेले बड़े ही कष्ट भोगती है क्योंकि अकेले जाने का समय उनका आ जाता है संसार के कोई भी रिश्ते नाते अपना नहीं है सिर्फ मन हुआ है यह मेरा है माता-पिता मेरे हैं पति-पत्नी मेरे हैं बेटा बेटी मेरे हैं पर वास्तविक में भगवान के सिवा कोई अपना नहीं! अपना कौन है? किसे कहते हैं अपना? जो हमारे साथ आया है जो अभी वर्तमान में साथ है और जो आगे हमारे साथ जाएगा वही अपना है! बाकी सब यही प्राप्त हुआ और यही नष्ट हो जाएगा!

अंत समय सबसे बिछड़ना होता है! जब प्राण निकलते हैं शरीर से तो उनको जो कष्ट होता है अंदर से दर्द पीड़ा जो होती है परमात्मा अंदर विद्यमान है वही उनके कष्ट को जानता है जो अभी वर्तमान में साथ है अंत समय वही परमात्मा जीव को पकड़कर ले जाते हैं! जो इस जीव को शरीर में लाया है! वही इसे ले जाता है! और उसके कर्म अनुसार दूसरे शरीर में डाल देते हैं! जो अंत समय पीड़ा होती है इसका अनुभव उसे स्वयं होती है बताना चाहती है अपने परिवारजन को पर करें क्या? अंत समय वाणी बंद हो जाती है जैसे आई है गर्भ में अकेले बिल्कुल वैसे ही अकेले चली जाती है! मृत्यु के क्षण भगवान उनकी वाणी बंद कर देते हैं इंद्रियां,,सब काम करना बंद कर देते हैं!

शरीर शिथिल पड़ जाती है फिर से जड़ बन जाता है और चेतन निकल जाता है! वही चेतन शक्ति परमात्मा है! जो अभी शरीर में विद्यमान है! भगवान का एक कानून है शरीर में प्राण के रहते जिसने अपने चेतन शक्ति को पहचान ली उसका कभी जन्म नहीं होता!

और जिसने अपनी चेतन शक्ति परमात्मा को नहीं पहचाना उनको नहीं जान पाया तो उनका फिर से जन्म होता है जन्म मृत्यु का चक्र तो अनंत काल तक चलते रहते हैं जब तक उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती! और मोक्ष के लिए मूल रूप से तीन गुण चाहिए! तभी मोक्ष संभव है! पहला निर्विकार दूसरा पूर्ण वैराग्य तीसरा निष्काम!

हर स्त्री के लिए पति उनका स्वामी होता है!

पति और पत्नी भगवान के द्वारा बनाया गया संबंध है! संसार के पुरुष नारायण का स्वरूप है और संसार की सभी स्त्री मां लक्ष्मी का स्वरूप है! संसार के स्त्री और पुरुष उनका ही अंश है! हर पत्नी के लिए उनके पति स्वामी होता है! जैसे मां लक्ष्मी भगवान विष्णु के चरण सेवा में दिन रात लीन रहते हैं! पतिव्रत नारी भगवान श्री हरि को अत्यंत प्रिय है जैसे सती सावित्री इतिहास में महान प्रति व्रत स्त्री है! स्त्री का सबसे बड़ा धर्म है! अपने पति व्रत धर्म का पालन करना! यह भगवान विष्णु ने अपने पुराण में बताया है! संसार के हर स्त्री के लिए उनके पति देवता का स्वरूप है! और हर पुरुष के लिए उनकी पत्नी देवी का स्वरूप है! उन्हें चाहिए दोनों एक दूसरे का सम्मान करें यही उनका सबसे बड़ा धर्म है! भगवान का स्मरण करते हुए आसक्ति रहित होकर अपना अनासक्त भाव से कर्म पूरा करते हुए भगवान की प्राप्ति किया जा सकता है!,, श्री राधे

शरीर, जीव का प्रारब्ध है,

शरीर जीव का प्रारब्ध है, और जो प्रारब्ध नहीं वही मोक्ष है!

समझिए इस तथ्य को!

जहां प्रारब्ध है वहां मोक्ष नहीं,, जहां मोक्ष है वहां प्रारब्ध नहीं!

शरीर की कोई भी क्रिया क्यों नहीं रोक सकते?

क्यों नहीं रोक सकते कारण पता कीजिए! जब उल्टी लगता है तो क्यों करते हो खांसी आती है तो क्यों खांसते हो,,,, मल मूत्र लगी तो विसर्जित करने क्यों भागते हो! क्यों नहीं रोक सकते! हमारी सांसे अपनी चाहत के अनुसार नहीं किसी की मर्जी से चल रही है जिनकी खबर नहीं, चाहते हैं कि शरीर में कभी रोग ना आए फिर भी क्यों आ जाता है! संसार में चाहते तो सब यही हैं कि मैं कभी ना मरूं फिर भी मर जाते हैं! अपनी सांसों को बचाने के लिए लोग क्या-क्या तरकीब नहीं कर चुके बड़े-बड़े अमेरिका डॉक्टर इधर-उधर कहां-कहां नहीं जा चुके!

फिर भी श्वास को कोई रोक पाया! जब चलेगा तो कोई रोक नहीं सकता और जब गया तो कोई ला नहीं सकता! क्योंकि शरीर की कोई भी क्रिया अपने हाथ में है ही नहीं!

आत्मा दिव्य है!

चेतना, जो आत्मा का लक्षण है, उसे भौतिक अवयवों द्वारा समझा जा सकता है लेकिन आत्मा स्वयं भौतिक विषयों के संपर्क मे नहीं रहती। ऐसा केवल इसलिए है कि आत्मा दिव्य है और इस कारण से आत्मा भौतिक विषयों के पारस्परिक संबंधों से परे है। वायु आत्मा को सुखा नहीं सकती और जल द्वारा इसे भिगोया और अग्नि द्वारा इसे जलाया नहीं जा सकता है, ऐसा कहकर श्रीकृष्ण ने आत्मा का विशद वर्णन किया है।

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।

नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥24॥

अच्छेद्यः-खण्डित न होने वाला; अयम्-यह आत्मा; अदाह्यः-भिगोया न जा सकने वाला; अयम्-यह आत्मा; अक्लेद्यः-गीला नहीं किया जा सकता; अशोष्यः-सुखाया न जा सकने वाला; एव-वास्तव में; च-तथा; नित्यः-सनातन; सर्वगतः-सर्वव्यापी; स्थाणुः-अपरिवर्तनीय; अचलः-जड़; अयम्-यह आत्मा; सनातनः-सदा नित्य।

आत्मा अखंडित और अज्वलनशील है, इसे न तो गीला किया जा सकता है और न ही सुखाया जा सकता है। यह आत्मा शाश्वत, सर्वव्यापी, अपरिर्वतनीय, अचल और अनादि है। यहाँ आत्मा की अमरता के विषय की ओर पुनः ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। शिक्षक के लिए विद्यार्थी को केवल ज्ञान प्रदान करना ही पर्याप्त नहीं होता। ज्ञान तभी उपयोगी होता है जब वह विद्यार्थी के हृदय में बैठ जाए। इसलिए एक निपुण शिक्षक प्रायः अपने पिछले वक्तव्यों को दोहराता रहता है। संस्कृत साहित्य में इसे पुनरुक्ति या पुनरावृत्ति कहते हैं। श्रीकृष्ण भगवान ने भगवद्गीता में प्रायः पुनरुक्ति का प्रयोग अपने महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक सिद्धान्तों को रेखांकित करने के लिए एक साधान के रूप मे किया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके भक्त उनके उपदेशों को गहनता से ग्रहण करें।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।

तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥25॥

अव्यक्तः-अप्रकट; अयम्-यह आत्मा; अचिन्त्यः-अकल्पनीयः अयम्-यह आत्मा; अविकार्यः-अपरिवर्तित; अयम्-यह आत्मा; उच्यते-कहलाता है; तस्मात् इसलिए; एवम्-इस प्रकार; विदित्वा-जानकर; एनम् इस आत्मा में; न-नहीं; अनुशोचितुम्-शोक करना; अर्हसि उचित।

इस आत्मा को अदृश्य, अचिंतनीय और अपरिवर्तनशील कहा गया है। यह जानकर हमें शरीर के लिए शोक प्रकट नहीं करना चाहिए।

आत्मा, बुद्धि की पहुंच से बाहर है।

हमारी आँखे भौतिक शक्ति से बनी हैं और केवल सांसारिक विषयों का ही अवलोकन कर सकती हैं क्योंकि आत्मा दिव्य है और भौतिक शक्तियों के क्षेत्र से परे है इसलिए यह हमारी आँखों के लिए अदृश्य है। वैज्ञानिकों ने कई बार आत्मा के अस्तित्व को जानने के लिए कई प्रयोग किए हैं। उन्होंने मरणासन व्यक्ति को शीशे के बक्से में रखा और उसे चारों ओर से बंद (सील) कर दिया ताकि वे जान सकें कि शरीर त्यागने पर आत्मा के प्रस्थान करने पर क्या बक्सा टूट जाएगा। किन्तु आत्मा बक्सा तोड़े बिना शरीर से बाहर निकल गयी। अत्यंत सूक्ष्म होने के कारण आत्मा को अपनी गतिशीलता के लिए भौतिक शरीर या स्थान की आवश्यकता नहीं होती। कठोपनिषद् में वर्णन किया गया है कि भौतिक ऊर्जा से भी सूक्ष्म होने के कारण आत्मा हमारी बुद्धि की पहुंच से बाहर है।

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।

मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान्परः।। (कठोपनिषद्-1.3.10)

"इन्द्रियों से परे इन्द्रियों के विषय हैं, इन्द्रियों के विषय से सूक्ष्म मन, मन से परे बुद्धि और बुद्धि से सूक्ष्म आत्मा है।" हमारी लौकिक बुद्धि केवल सांसारिक विषयों को समझ-बूझ सकती है लेकिन अपनी चिन्तन शक्ति से दिव्य आत्मा तक नहीं पहुंच सकती। अतः आत्मा को जानने के लिए आंतरिक ज्ञान आवश्यक है जो केवल धर्मग्रन्थों और गुरु द्वारा सुलभ है।

क्या है मोक्ष??? गीता

क्या है मोक्ष???

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने दूसरे अध्याय 2/27 में स्पष्ट किया है अर्जुन को,,,, 95% प्राणियों का फिर से जन्म होता है केवल 5% जीव को ही मोक्ष मिलता है! छठवें अध्याय 6/42 में कहा है जो पूर्ण वैराग्य जिनको हो चुका है उनका भी फिर से जन्म होता है किसी तपस्वियों के स्थान में पर,,जन्म होगा ही होगा क्योंकि जो पाप कर्म हुए हैं वह कहां जाएंगे उसे भोगने के लिए फिर जन्म लेना पड़ता है जब तक हिसाब पूरे ना हो जाए तब तक जन्म जीव को लेना पड़ता है! मोक्ष अत्यंत दुर्लभ है! जब रात को प्रतिदिन सोते हैं तो कल के लिए कुछ इच्छा बाकी रखते हैं या नहीं,, इच्छा बचा कर

प्रतिदिन सो रहे हैं तो समझ लीजिए फिर से जन्म होगा, इच्छा रहित होकर सो रहे यही मोक्ष है! कुछ भी बाकी ना रखना ही मोक्ष है!

तीन ब्रह्म मुहूर्त होते हैं!

तीन ब्रह्म मुहूर्त

1. 3-4

2. 4-5

3. 5-6,,, जैसा-जैसा क्रम है उसके अनुसार फल है! 6:00 के बाद जो समय है वह प्राकृतिक समय है ब्रह्म का दरवाजा सुबह 3:00 से 6:00 तक खुले रहते हैं!

भगवान का भजन ध्यान नाम जाप इस समय पर करना कई गुना अधिक फल देने वाली होती है! जो इस समय पर साधना करते हैं उन्हें इसी जन्म में भगवत प्राप्ति होने की संभावना सबसे अधिक रहती है! 3:00 से 6:00 के बीच किए गए आराधना भगवान तक सीधे पहुंचते हैं,, कलयुग की यही तपस्या है जीव को भगवान इसी तपस्या से ही मिलेंगे! बाकी समय पर किए गए ध्यान, आराधना भगवान की प्राप्ति विलंब से होती है! 24 घंटे के समय में यह जो 3 घंटा है! ब्रह्म की दिव्य शक्तियां इस पृथ्वी लोक पर सीधे पड़ती है! और उस जीव पर पड़ती है जो प्रतिदिन निद्रा तोड़कर स्नान निवृत्त शुद्ध होकर इस समय पर भगवान का नाम जाप करने बैठ जाते हैं!

3:00 से 6:00 के बीच पृथ्वी में एक सकारात्मक लहर वायु चलती है,,, जो इस समय केवल अपना निद्रा स्थान ही त्याग देते हैं! भगवान कहते हैं उन्हें भी मेरी दिव्य शक्तियां सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होता है! शरीर के पांच प्राण को शुद्ध करने वाली वायु जो इस समय चलता है वह उसे प्राप्त होता है! शरीर में रोग कष्ट इस वायु को लेने मात्र से ही चले जाते हैं! इतनी शुद्ध वायु दिव्य शक्तियां इस समय चलती है जिसका वर्णन शब्दों से नहीं किया जा सकता! 3:00 से 6:00 के बीच की शक्तियां उन्हीं को मिलेंगे जो इस समय पर भगवान का ध्यान करने बैठ जाते हैं! कभी शरीर में रोग कष्ट प्रवेश ही नहीं हो सकते! इस समय की लिया गया वायु उनके शरीर की पीड़ा तत्काल मिटा देते हैं! जिनके शरीर में प्रतिदिन यह वायु पड़ता है 6:00 के बाद फिर प्राकृतिक हवा चलती है!,, श्री राधा

शोक नहीं करना चाहिए।

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्।

तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥26॥

अथ-यदि, फिर भी; च-और; एनम्-आत्मा; नित्य-जातम्-निरन्तर जन्म लेने वाला; नित्यम्-सदैव; वा-अथवा; मन्यसे-तुम ऐसा सोचते हो; मृतम-निर्जीव; तथा अपि-फिर भी; त्वम्-तुम; महाबाहो बलिष्ठ भुजाओं वाला; न-नहीं; एवम्-इस प्रकार; शोचितुम्-शोक अर्हसि उचित।

यदि तुम यह सोचते हो कि आत्मा निरन्तर जन्म लेती है और मरती है तब ऐसी स्थिति में भी, हे महाबाहु अर्जुन! तुम्हें इस प्रकार से शोक नहीं करना चाहिए।

श्रीकृष्ण द्वारा इस श्लोक में 'अथ' शब्द का अर्थ 'यदि' है का प्रयोग करना यह दर्शाता है कि अर्जुन आत्मा की सत्ता की प्रकृति के विषय पर किसी अन्य प्रचलित स्पष्टीकरण पर विश्वास करना चाहेगा। इस श्लोक को भारत में प्रचलित दार्शनिक विचारधाराओं और आत्मा की प्रकृति के संबंध में उनकी विभिन्न मान्यताओं के तात्त्विक संदर्भो के अंतर्गत समझना चाहिए। ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय चिन्तन को बारह दर्शनशास्त्रों में समाविष्ट किया गया है। इनमें से छः दर्शन जो वैदिक प्रमाणों को स्वीकार करते हैं उन्हें आस्तिक दर्शन कहा जाता है। ये मीमांसा, वेदान्त, न्याय, वैशेषिक, सांख्य और योग हैं। इनमें प्रत्येक की अन्य शाखाएँ भी है।

उदाहरणार्थ वैदिक दर्शन को आगे फिर छः दर्शनों में विभक्त किया गया है-अद्वैतवाद, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, विशुद्धाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद और अचिन्त्य भेदाभेदभाव। आगे इनकी भी अन्य शाखाएँ पायी जाती है, जैसे अद्वैतवाद को दृष्टि-सृष्टिवाद, अवच्छेदवाद, बिम्ब-प्रतिबिम्बवाद, विवर्तवाद, अजातवाद आदि में विभक्त किया जाता है। यहाँ इन दर्शनशास्त्रों की विस्तृत जानकारी नहीं दी जाएगी। यह भी संतोषजनक है कि ये सभी दर्शन शास्त्र वेदों के उद्धरणों को अधिकृत रूप स्वीकार करते हैं। तदनुसार ये समस्त दर्शन शास्त्र आत्मा को शाश्वत और अपरिवर्तनशील मानते हैं। भारतीय चिन्तन के शेष छः दर्शन वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार नहीं करते। यह दर्शन चार्वाकवाद और बौद्धों के चार दर्शन (योगाचारवाद, माध्यमिकवाद, वैभाषिकवाद और सौत्रांतिकवाद) और जैन धर्म हैं। इनमें से प्रत्येक की आत्मा की प्रकृति के संबंध में अलग-अलग धारणाएँ हैं। चार्वाकवाद के अनुसार शरीर स्वयं आत्मा को बनाता है और चेतना केवल उसके अवयवों के समूहों की उत्पत्ति है।

जैन धर्मग्रंथो के अनुसार आत्मा का आकार शरीर के आकार के समान होता है और इसलिए यह एक जन्म से दूसरे जन्म में परिवर्तित होती रहती है। बौद्ध दर्शन की विचारधारा आत्मा के स्थायी अस्तित्व को स्वीकार नहीं करती और इसके स्थान पर उसकी यह मान्यता है कि एक जन्म से दूसरे जन्म में पुनर्जन्म का चक्र चलता रहता है जो आत्मा और मानव जाति की नित्यता सुनिश्चित करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान श्रीकृष्ण के युग में भी आत्मा के पुनर्जन्म और आत्मा के अस्थायित्व के संबंध में बौद्ध दर्शन की विचारधारा विद्यमान थी। इसलिए श्रीकृष्ण यह व्याख्या कर रहे हैं कि यदि अर्जुन आत्मा के एक जन्म से दूसरे जन्म अर्थात पुनर्जन्म के विचार को स्वीकार करता है तब भी उसके शोक करने का कोई कारण नहीं होना चाहिए। कोई शोक क्यों न करें? इसे अब अगले श्लोक में स्पष्ट किया जाएगा।

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥27॥

जातस्य-वह जो जन्म लेता है; हि-के लिए; ध्रुवः-निश्चय ही; मृत्युः-मृत्युः ध्रुवम् निश्चित है; जन्म-जन्म; मृतस्य-मृत प्राणी का; च-भी; तस्मात्-इसलिए; अपरिहार्य-अर्थे-अपरिहार्य स्थिति मे; न-नहीं; त्वम्-तुम; शोचितुम्-शोक करना; अर्हसि उचित।

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म भी अवश्यंभावी है। अतः तुम्हें अपरिहार्य के लिए शोक नहीं करना चाहिए।

गीता मेरा प्राण

गीता मेरा प्राण गीता मेरी धड़कन,, रोम रोम में गीता,,, मेरी सांस सांस में गीता,,, जीवन मेरी गीता,,, विश्वास मेरी गीता,, गुरु मेरा कृष्ण ज्ञान मेरी गीता,,, कैसे पाना है निर्गुण ब्रह्म को बताया है मेरी गीता,,, तत्वज्ञान का सारा तथ्य मिले जहां वही गीता,,, चंचल मन को वश में करना बताया है मेरी गीता! चार वेद 108 उपनिषद का निचोड़ है मेरी गीता,,, 18 पुराण में कहीं ना मिलेगा,, गुढ़ रहस्यों का संग्रह है गीता! सांख्य योग और कर्म योग,,ज्ञान योग और भक्ति योग,क्षर-अक्षर ब्रह्म योग,,, ऐसा रहस्यमई ग्रंथ है गीता! कोई जानता भी नहीं की आत्मा अविनाशी है! संसार को यह जिसने ज्ञान दिया! वही है हमारी श्रीमद् भागवत गीता!, 11 दिसंबर मोक्षदा एकादशी,, 18 अध्याय इस तिथि को पूर्ण हुआ!

संसार की सच्चाई

सामने में सभी एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और अंदर में कपट सबके अंदर है ऐसा लगेगा कि हमें हृदय से आशीर्वाद दे रहा है! अंतःकरण में सबको एक दूसरे के लिए ईर्ष्या है! एक माता अपने पुत्र को जितना सच्चे हृदय से आशीर्वाद देती है! जब आप किसी को कहते हैं खुश रहो बेटा तो क्या सच्चे हृदय से उनको कहते हो! सामने में कह दिया खुश रहो भगवान तुम्हें खूब तरक्की दे! जब वह चले गए तो घर में उनकी निंदा शुरू हो जाती है संसार की वास्तविकता जान लीजिए! जब तक जीव को भगवत प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक किसी का सुख वह बर्दाश्त नहीं कर सकती सिर्फ स्वयं के सुख के सिवा! प्रत्येक जीव केवल अपने सुख की भूखी है!

जीवात्मा शरीर बदलती है!

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥22॥

गीता 2/22

वासांसि-वस्त्र; जीर्णानि-फटे पुराने; यथा-जिस प्रकार; विहाय-त्याग कर; नवानि-नये; गृहणति-धारण करता है; नरः-मनुष्य; अपराणिअन्य; तथा उसी प्रकार; शरीराणि शरीर को; विहाय-त्याग कर; जीर्णानि-व्यर्थ; अन्यानि-भिन्न; संयाति-प्रवेश करता है; नवानि-नये; देही देहधारी आत्मा।

भावार्थ:- जिस प्रकार से मनुष्य अपने फटे पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार मृत्यु होने पर आत्मा पुराने तथा व्यर्थ शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण करती है।

गीता 2/22 का विस्तृत वर्णन:- आत्मा की प्रकृति का निरन्तर निरूपण करते हुए भगवान श्रीकृष्ण पुनर्जन्म की अवधारणा को दोहराते हुए उसकी तुलना दैनिक क्रिया-कलापों से कर रहे हैं। जब वस्त्र फट जाते हैं या व्यर्थ हो जाते हैं तब हम उन्हें त्याग कर नये वस्त्र धारण करते हैं और ऐसा करते समय हम स्वयं को नहीं बदलते। इसी प्रकार समान दृष्टि से जब आत्मा जीर्ण शरीर को छोड़ती है तब उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता। न्यायशास्त्र में प्रदत्त निम्न तर्क द्वारा पुनर्जन्म की अवधारणा सिद्ध की गयी है।

जातस्य हर्षभयशोक सम्प्रतिपत्तेः।। (न्यायशास्त्र-3.1.18)

उपर्युक्त तर्क के अनुसार यदि हम छोटे शिशु की गतिविधियों पर ध्यानपूर्वक विचार करते हैं, तब हमें यह ज्ञात होता है कि वह बिना किसी स्पष्ट कारण के कभी प्रसन्न, कभी उदास और कभी भयभीत दिखाई देता है। न्यायशास्त्र के अनुसार छोटा शिशु अपने पूर्वजन्म का स्मरण करता रहता है और इसी कारण समय-समय पर उसकी मनोदशा में परिवर्तन देखने को मिलता है। हालांकि जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ती है तब उसके मन-मस्तिष्क मे वर्तमान जीवन के संस्कार पूरी तरह अंकित हो जाते हैं तथा जिसके परिणामस्वरूप उसके पूर्वजन्म की स्मृतियाँ विलुप्त हो जाती हैं।

इसके अतिरिक्त जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया भी अत्यंत पीड़ादायक होती है जो हमारी पूर्वजन्म की स्मृतियों के ठोस अंशों को मिटा देती है। पुनर्जन्म के पक्ष में न्यायशास्त्र का दूसरा तर्क जिसमें यह कहा गया है-"स्तन्याभिलाषात्" (3.1.21)।

इसमें यह वर्णन किया गया है कि नवजात शिशु को भाषा का कोई ज्ञान नहीं होता। तब फिर कोई माँ जब अपने बालक के मुँह में अपना स्तन डाल कर उसे दूध पीना या स्तनपान करना कैसे सिखा सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नवजात शिशु ने अपने अनन्त पूर्व जन्मों में यहाँ तक कि पशु की योनी में स्तन, निप्पल और थन से अपनी असंख्य माताओं का दूध पिया होता है। इसलिए जब माँ अपने बच्चे के मुँह में स्तन का अग्रभाग डालती है!

तब बच्चा स्वतः अपने पूर्व जन्म के अभ्यास के आधार पर अपनी माँ का स्तनपान करना आरंभ कर देता है। पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार किए बिना मानव मात्र में भेद करना अनिवर्चनीय और तर्कहीनता है। उदाहरणार्थ मान लो यदि कोई व्यक्ति जन्म से अंधा है तब वह व्यक्ति यह कहे कि उसे ऐसा दण्ड क्यों मिला तब इसका तर्कसंगत उत्तर क्या होना चाहिए?

यदि हम कहते हैं कि ये सब उसके पूर्वजन्मों के कर्मों का परिणाम है तब वह यह तर्क देगा कि उसने केवल वर्तमान जीवन को देखा है और इस प्रकार से जन्म लेते समय उसके कोई पूर्वकर्म ही नहीं है जो उसे इस जन्म में बुरा फल देते। यदि हम कहते हैं कि यह भगवान की इच्छा थी तब यह भी अविश्वसनीय लगता है क्योंकि अकारण करुणा-करण भगवान जो सब पर बिना भेदभाव के करुणा करते हैं और वे कभी किसी को अनावश्यक रूप से अंधा नहीं बनाना चाहेंगे। इसकी तर्कसंगत व्याख्या यही है कि वह मनुष्य अपने पूर्वजन्म के कर्मों के कारणवश अंधा है। इस प्रकार सामान्य मत और धर्मग्रंथों के प्रमाणों के आधार पर हमें पूर्वजन्म की अवधारणा को स्वीकार करना चाहिए।

आत्मा अविनाशी है!

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥23॥ गीता 2/23

न-नहीं; एनम्-इस आत्मा को; छिन्दन्ति-टुकड़े-टुकड़े; शस्त्राणि-शस्त्र द्वारा; न-नहीं; एनम्-इस आत्मा को; दहति-जला सकता है; पावकः-अग्नि; न कभी नहीं; च-और; एनम्-इस आत्मा को; क्लेदयन्ति-भिगोया जा सकता है; आपः-जल; न कभी नहीं; शोषयति-सुखाया जा सकता है; मारूतः-वायु।

भावार्थः- किसी भी शस्त्र द्वारा आत्मा के टुकड़े नहीं किए जा सकते, न ही अग्नि आत्मा को जला सकती है, न ही जल द्वारा उसे गीला किया जा सकता है और न ही वायु इसे सुखा सकती है।

गीता 2/23 का विस्तृत वर्णन

चेतना, जो आत्मा का लक्षण है, उसे भौतिक अवयवों द्वारा समझा जा सकता है लेकिन आत्मा स्वयं भौतिक विषयों के संपर्क मे नहीं रहती। ऐसा केवल इसलिए है कि आत्मा दिव्य है और इस कारण से आत्मा भौतिक विषयों के पारस्परिक संबंधों से परे है। वायु आत्मा को सुखा नहीं सकती और जल द्वारा इसे भिगोया और अग्नि द्वारा इसे जलाया नहीं जा सकता है, ऐसा कहकर श्रीकृष्ण ने आत्मा का विशद वर्णन किया है।

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।

नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥24॥

गीता 2/24

अच्छेद्यः-खण्डित न होने वाला; अयम्-यह आत्मा; अदाह्यः-भिगोया न जा सकने वाला; अयम्-यह आत्मा; अक्लेद्यः-गीला नहीं किया जा सकता; अशोष्यः-सुखाया न जा सकने वाला; एव-वास्तव में; च-तथा; नित्यः-सनातन; सर्वगतः-सर्वव्यापी; स्थाणुः-अपरिवर्तनीय; अचलः-जड़; अयम्-यह आत्मा; सनातनः-सदा नित्य।

भावार्थः- आत्मा अखंडित और अज्वलनशील है, इसे न तो गीला किया जा सकता है और न ही सुखाया जा सकता है। यह आत्मा शाश्वत, सर्वव्यापी, अपरिर्वतनीय, अचल और अनादि है।

गीता 2/24 का विस्तृत वर्णन

यहाँ आत्मा की अमरता के विषय की ओर पुनः ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। शिक्षक के लिए विद्यार्थी को केवल ज्ञान प्रदान करना ही पर्याप्त नहीं होता। ज्ञान तभी उपयोगी होता है जब वह विद्यार्थी के हृदय में बैठ जाए। इसलिए एक निपुण शिक्षक प्रायः अपने पिछले वक्तव्यों को दोहराता रहता है। संस्कृत साहित्य में इसे पुनरुक्ति या पुनरावृत्ति कहते हैं। श्रीकृष्ण भगवान ने भगवद्गीता में प्रायः पुनरुक्ति का प्रयोग अपने महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक सिद्धान्तों को

रेखांकित करने के लिए एक साधान के रूप मे किया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके भक्त उनके उपदेशों को गहनता से ग्रहण करें।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।

तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥25॥ गीता 2/25

भावार्थः-इस आत्मा को अदृश्य, अचिंतनीय और अपरिवर्तनशील कहा गया है। यह जानकर हमें शरीर के लिए शोक प्रकट नहीं करना चाहिए।

अभिमान और अहंकार इन दोनों में अंतर

अभिमान और अहंकार दोनों ही मनोभाव हैं और एक-दूसरे से करीबी तौर पर जुड़े हुए हैं:

अभिमान का मतलब है किसी व्यक्ति की अपनी क्षमताओं पर अत्यधिक विश्वास होना. अभिमान में अक्सर अहंकार शामिल होता है. अभिमान को लोग समाज के सामने प्रकट करते हैं.

अहंकार का मतलब है किसी व्यक्ति का दूसरों से बेहतर होने के बारे में अत्यधिक गर्व होना. अहंकार आता है दूसरों का नीचा दिखाने के विचार से. अहंकार अच्छे में बदल सकता है, लेकिन घमंड नहीं.

अभिमान और अहंकार से जुड़ी कुछ और बातें

गर्व एक सकारात्मक भावना है, जबकि अहंकार अवांछनीय है.

गर्व आता है परिश्रम से, जबकि अभिमान आता है सफलता से.

अगर कोई व्यक्ति दूसरों की तारीफ़ करे, तो यह उसके लिए अहंकार कहलाता है. वहीं, अगर कोई व्यक्ति खुद अपनी तारीफ़ करे, तो यह घमंड कहलाता है.

अभिमान पर विजय प्राप्त करना ही 'स्वाभिमान' है. स्वाभिमान स्वयं की आत्मा में होता है और इसे लोगों के सामने प्रकट नहीं किया जाता.

अभिमान का संबंध आसक्ति से है जब किसी को अपना मानकर जब हमें उस पर गर्व हो! जैसे मेरा घर मेरी बेटी मेरी पत्नी मेरे माता-पिता मेरी संपत्ति इन सबको अपना मानकर उन्हें गुमान हो जाता है यही अभिमान है जिसे घमंड भी कहते हैं अहंकार एक भावना है जिसका संबंध आत्मा से है! स्वयं मैं भाव ही अहंकार है! हमारे अंतःकरण का चौथा तत्व जिसका संबंध इसी से है अहंकार जो एक कर्ता भाव है दोनों भिन्न-भिन्न है! अच्छा प्रश्न किया था आपने,, हर किसी को जानना आवश्यक है इस रहस्य को!

चार चीज कभी अपनी इच्छा से नहीं मिलती

चार चीज कभी प्राणी के चाहत के अनुसार नहीं मिलती पूर्व जन्म के कर्म के विधान के अनुसार मिलता है!

जैसा उनके प्रारब्ध में लिखा है वैसा ही मिलता है जानिए कौन सी चार चीज! भगवान की मर्जी से भी नहीं मिलती! उनके पूर्व जन्म के कर्म के अनुसार यह 4 सेट होता है!

1. स्वस्थ शरीर!

2. रोगी काया!

3. ऐश्वर्य भौतिक सुख (संपत्ति)!

4. गरीबी (निर्धन)!

लाख कोशिश करके भी अपने परिश्रम के बल पर इनको कभी नहीं पा सकते!

क्योंकि यह पहले से निर्धारित हो चुका है!

शारीरिक और मानसिक कष्ट

उस परमात्मा ने इस संसार में इतने शारीरिक और मानसिक कष्ट दुख दर्द चिंताएं समस्याएं और बीमारियां क्यों रची है?

ताकि इस भौतिक जगत की मोह माया से अभिभूत प्रत्येक मनुष्य जब इन सांसारिक कष्टों को भोगे तो वो ये जान पाए कि वो हांड मांस और इस चमड़े से बना एक शरीर मात्र नहीं है बल्कि वो तो वास्तव में स्वयं उस परमात्मा का हीं अंश स्वरूप आत्म रूप केवल एक आत्मा है और ये भौतिक संसार वास्तविक और सत्य नही अपितु वो अनंत अविनाशी परमात्मा हीं पूर्ण शाश्वत सत्य है

और ये जानकर इस संसार का प्रत्येक प्राणी मात्र अपने इस आत्म ज्ञान से इस भौतिक शरीर और जगत के समस्त विकारों से मुक्त होकर उस परमात्मा की शरण में आकार इस अतिकष्टकारी जन्म मरण के दुष्चक्र से सदा सदा के लिए मुक्त हो जाए

परंतु ये अज्ञानी मनुष्य जीवनभर हजारों सांसारिक समस्याओं दुखों से जूझता है परंतु कभी भी अपने इस शरीर और इस संसार के प्रति अपनी मोह माया को नहीं छोड़ता है

एक मनुष्य जीवनभर गरीबी और भुखमरी से लड़ते हुए रोटी के इन दो टुकड़ों के लिए दिन रात कड़ी धूप में अतिकष्टकारी मेहनत मजदूरी करता है दो वक्ता खाना नहीं जुटा पाता है फिर भी ढेरों बच्चे पैदा करके पीढ़ी दर पीढ़ी अपना वंश बढ़ाता है अपने साथ साथ अपनी संतानों को भी इस नारकिया संसार की आग में जलाता है और पीढ़ी दर पीढ़ी इस भौतिक जगत के भ्रम जाल में हीं उलझा रहा है

पर अपने इस शरीर और संसार के प्रति मोह का त्याग करके सच्चे हृदय से उस परमात्मा की शरण में नही आता है बल्कि वो तो इन मंदिरों में झूठी मुटी पूजा पाठ करके हीं अपने को धर्मात्मा समझने लगता है

हर एक जीव मात्र का कल्याण हो

जय महाकाल

भावी महा प्रबल है रामचरित अयोध्या कांड

यह दोहे उस समय की है जब गुरु वशिष्ठ भरत को समझाते हुए कहा है अपने पिता पर विलाप कर रहे थे तब उन्होंने समझाया है की जन्म मृत्यु, लाभ हानि, यश अपयश यह अपने हाथ में नहीं होते यह नियति के अधीन होते हैं! भावी महा प्रबल है इससे कोई नहीं लड़ सकता! उन्हें सब को स्वीकार करना पड़ता है अपने पिता के शोक जब भरत जी कर रहे थे तब गुरु वशिष्ठ ने यह समझा कर उन्हें शांत्वना दिए कि उन्हें स्वीकार करो!

[रामचरित अयोध्या कांड दोहे- 171,,,, गोस्वामी जी कह रहे-

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ

हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ!!!

इस चौपाई का अर्थ है कि मुनि वशिष्ठ ने दुखी होकर कहा, "हे भरत! सुनो, होनी बहुत बलवान है। हानि-लाभ, जीवन-मरण और यश-अपयश, ये सब विधाता के हाथ में हैं".

भगवद गीता में योगक्षेम क्या है?

भगवान दो चीज़ों का वादा करते हैं। पहला है योग - वे अपने भक्तों को वे आध्यात्मिक संपत्तियाँ प्रदान करते हैं जो उनके पास नहीं हैं। दूसरा है क्षेम - वे उन आध्यात्मिक संपत्तियों की रक्षा करते हैं जो उनके भक्तों के पास पहले से ही हैं।

गीता के अनुसार योग कैसे करें?

भगवद गीता बताती है कि हम सर्वोच्च सत्ता के साथ एक हो जाते हैं, लेकिन गुणवत्ता में और मात्रा में नहीं। प्रत्येक साधक को यह तय करना होता है कि कौन सा योग उसके प्राकृतिक स्वभाव के लिए सबसे उपयुक्त है । कर्म योग को कर्मों के लिए, भक्ति योग को भक्ति के लिए और ज्ञान योग को तर्क के लिए सुझाया जाता है ।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥9/22॥ (गीता 9/22)

भगवान भक्त वत्सल हैं सदैव अपने अनन्य भक्तों की रक्षा करते हैं! इस श्लोक में कहा है- योगक्षेम उनका वहन करता हूं! जो नित्य निरंतर मेरा ध्यान करते हैं!

भगवान श्री कृष्ण इसमें कहे हैं-

जो लोग सदैव मेरे बारे में सोचते हैं और मेरी अनन्य भक्ति में लीन रहते हैं एवं जिनका मन सदैव मुझमें तल्लीन रहता है, उनकी जो आवश्यकताएँ होती हैं उन्हें मैं पूरा करता हूँ और जो कुछ उनके स्वामित्व में होता है, उसकी रक्षा करता हूँ।

गीता 9/22 का विस्तृत वर्णन

एक माँ पूर्ण रूप से उस पर आश्रित नवजात असहाय शिशु के प्रति अपने दायित्वों का त्याग करने के बारे में सोच नहीं सकती। शिशु की परम और शाश्वत माँ भगवान ही हैं। भगवान केवल उन पर पूर्ण शरणागत होने वाली जीवात्माओं को माँ जैसी सुरक्षा प्रदान करते हैं।

यहाँ 'वहाम्यहम्' शब्द का प्रयोग किया गया हैं जिसका अर्थ यह है 'मैं अपने भक्तों की रक्षा का दायित्व स्वयं लेता हूँ' यह ठीक उसी प्रकार से जैसे कोई विवाहित व्यक्ति अपनी पत्नी और बच्चों के देखभाल का दायित्व अपने उपर लेता है। भगवान दो वचन देते हैं-पहला 'योग' है!

जिसके माध्यम से वे अपने भक्तों को आध्यात्मिक सम्पति प्रदान करते हैं जिससे वे वंचित होते हैं। दूसरा 'क्षेम' है जिसके द्वारा वे भक्तों की उस अध्यात्मिक संपत्ति की रक्षा करते हैं जो उनके पास पहले से है। किन्तु भगवान ने इसके लिए अनन्य शरणागति की शर्त रखी है। इसे पुनः माँ और पुत्र के सादृश्य से समझा जा सकता है। नवजात शिशु अपनी माँ पर पूर्णतया आश्रित होता है जो अपने शिशु की पूरी तरह से देखभाल करती है।

बच्चे को जब किसी वस्तु की आवश्यकता होती है तब वह रोने लगता है और फिर माँ उसे दूध पिलाती है, उसे स्वच्छ करती है और स्नान आदि कराती है लेकिन जब वह शिशु 5 वर्ष का हो जाता है तब वह उपर्युक्त सभी कार्य स्वयं करने लग जाता है और कुछ सीमा तक माँ का दायित्व कम हो जाता है। जब बालक युवा हो जाता है और अपने उत्तरदायित्व को अनुभव करने लगता है, तब माँ अपने कुछ और उत्तरदायित्वों का त्याग कर देती है। अब यदि पिता घर में आकर अपने पुत्र के संबंध में कुछ पूछता है कि 'हमारा पुत्र कहाँ है तब माँ उत्तर देती है, 'वह विद्यालय से घर वापस नहीं आया।

संभवतः वह अपने मित्र के साथ मूवी देखने गया होगा।' अब माँ की मनोवृति उसके प्रति स्वाभाविक हो जाती है किन्तु जब यही बालक 5 वर्ष का था और यदि उसे विद्यालय से लौटने में 10 मिनट की भी देरी हो जाती थी, तब माता और पिता दोनों ही चिन्तित हो जाते थे-क्या हुआ होगा? वह एक छोटा बालक है और यह आशंका करने लगते कि उसके साथ कोई दुर्घटना तो नहीं घटी। जरा विद्यालय में फोन कर पता लगाएँ।' इस प्रकार जब बालक जितना अधिक अपने उत्तरदायित्वों को समझने लगता है तब माँ अपने दायित्वों का निर्वहन करना छोड़ देती है।

भगवान का नियम भी कुछ ऐसा है। जब हम स्वयं को कर्त्ता मानकर अपनी स्वेच्छा से कार्य करते हैं और अपनी क्षमता पर भरोसा कर लेते हैं तब भगवान अपनी कृपा नहीं बरसाते। वे केवल हमारे कर्मों का लेखा-जोखा रखकर उसी के अनुरूप हमें फल देते हैं जब हम भगवान के प्रति आंशिक रूप से शरणागत होते हैं और आंशिक रूप से संसार का आश्रय लेते हैं तब भगवान भी हम पर आंशिक कृपा करते हैं और जब हम स्वयं को पूर्ण शरणागत कर देते हैं।

"मामेकमं शरणं व्रज" तब भगवान हम पर कृपा करते हैं और जो हमारे पास है उसकी रक्षा करने और जो कमी है उसे पूरा करने का दायित्व अपने ऊपर ले लेते हैं।

आत्मा का निरूपण

आत्मा की प्रकृति का निरन्तर निरूपण करते हुए भगवान श्रीकृष्ण पुनर्जन्म की अवधारणा को दोहराते हुए उसकी तुलना दैनिक क्रिया-कलापों से कर रहे हैं। जब वस्त्र फट जाते हैं या व्यर्थ हो जाते हैं तब हम उन्हें त्याग कर नये वस्त्र धारण करते हैं और ऐसा करते समय हम स्वयं को नहीं बदलते। इसी प्रकार समान दृष्टि से जब आत्मा जीर्ण शरीर को छोड़ती है तब उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता। न्यायशास्त्र में प्रदत्त निम्न तर्क द्वारा पुनर्जन्म की अवधारणा सिद्ध की गयी है।

जातस्य हर्षभयशोक सम्प्रतिपत्तेः।। (न्यायशास्त्र-3.1.18)

उपर्युक्त तर्क के अनुसार यदि हम छोटे शिशु की गतिविधियों पर ध्यानपूर्वक विचार करते हैं, तब हमें यह ज्ञात होता है कि वह बिना किसी स्पष्ट कारण के कभी प्रसन्न, कभी उदास और कभी भयभीत दिखाई देता है। न्यायशास्त्र के अनुसार छोटा शिशु अपने पूर्वजन्म का स्मरण करता रहता है और इसी कारण समय-समय पर उसकी मनोदशा में परिवर्तन देखने को मिलता है। हालांकि जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ती है तब उसके मन-मस्तिष्क मे वर्तमान जीवन के संस्कार पूरी तरह अंकित हो जाते हैं तथा जिसके परिणामस्वरूप उसके पूर्वजन्म की स्मृतियाँ विलुप्त हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया भी अत्यंत पीड़ादायक होती है जो हमारी पूर्वजन्म की स्मृतियों के ठोस अंशों को मिटा देती है। पुनर्जन्म के पक्ष में न्यायशास्त्र का दूसरा तर्क जिसमें यह कहा गया है-"स्तन्याभिलाषात्" (3.1.21)। इसमें यह वर्णन किया गया है कि नवजात शिशु को भाषा का कोई ज्ञान नहीं होता।

तब फिर कोई माँ जब अपने बालक के मुँह में अपना स्तन डाल कर उसे दूध पीना या स्तनपान करना कैसे सिखा सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नवजात शिशु ने अपने अनन्त पूर्व जन्मों में यहाँ तक कि पशु की योनी में स्तन, निप्पल और थन से अपनी असंख्य माताओं का दूध पिया होता है। इसलिए जब माँ अपने बच्चे के मुँह में स्तन का अग्रभाग डालती है, तब बच्चा स्वतः अपने पूर्व जन्म के अभ्यास के आधार पर अपनी माँ का स्तनपान करना आरंभ कर देता है। पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार किए बिना मानव मात्र में भेद करना अनिवर्चनीय और तर्कहीनता है। उदाहरणार्थ मान लो यदि कोई व्यक्ति जन्म से अंधा है!

तब वह व्यक्ति यह कहे कि उसे ऐसा दण्ड क्यों मिला तब इसका तर्कसंगत उत्तर क्या होना चाहिए? यदि हम कहते हैं कि ये सब उसके पूर्वजन्मों के कर्मों का परिणाम है तब वह यह तर्क देगा कि उसने केवल वर्तमान जीवन को देखा है और इस प्रकार से जन्म लेते समय उसके कोई पूर्वकर्म ही नहीं है जो उसे इस जन्म में बुरा फल देते। यदि हम कहते हैं कि यह भगवान की इच्छा थी तब यह भी अविश्वसनीय लगता है क्योंकि अकारण करुणा-करण भगवान जो सब पर बिना भेदभाव के करुणा करते हैं और वे कभी किसी को अनावश्यक रूप से अंधा नहीं बनाना चाहेंगे। इसकी तर्कसंगत व्याख्या यही है कि वह मनुष्य अपने पूर्वजन्म के कर्मों के कारणवश अंधा है। इस प्रकार सामान्य मत और धर्मग्रंथों के प्रमाणों के आधार पर हमें पूर्वजन्म की अवधारणा को स्वीकार करना चाहिए।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥23॥

न-नहीं; एनम्-इस आत्मा को; छिन्दन्ति-टुकड़े-टुकड़े; शस्त्राणि-शस्त्र द्वारा; न-नहीं; एनम्-इस आत्मा को; दहति-जला सकता है; पावकः-अग्नि; न कभी नहीं; च-और; एनम्-इस आत्मा को; क्लेदयन्ति-भिगोया जा सकता है; आपः-जल; न कभी नहीं; शोषयति-सुखाया जा सकता है; मारूतः-वायु।

किसी भी शस्त्र द्वारा आत्मा के टुकड़े नहीं किए जा सकते, न ही अग्नि आत्मा को जला सकती है, न ही जल द्वारा उसे गीला किया जा सकता है और न ही वायु इसे सुखा सकती है।

गर्भ में तीन चीजे निश्चित

आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ।

पञ्चैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः ।। (चाणक्य-नीतिः-०४.०१)

भावार्थः- जब जीव मां के गर्भ में रहती है 9 महीने उसी समय उनकी तीन चीजे निश्चित कर दी जाती है! भगवान उनके तीन चीज तय कर देते हैं! 1. मृत्यु किस टाइम पर होगी? वह समय फिक्स है! 2. किस जगह पर होगी? वह स्थान फिक्स है! 3. किस कारण से होगी? किस रीजन से हमारा प्राण शरीर छोड़ेगा? रोगों से कौन सी बीमारी हमें शरीर से उड़ा कर ले जाएगी? वह कारण भी निर्धारित है! अचानक होगा तो वह कारण भी फिक्स है!

मोक्ष के लिए योग्यता

मोक्ष के लिए जीव के अंदर कौन-कौन सी योग्यता होनी चाहिए?

जैसे संसार में अलग-अलग पोस्ट में लगने के लिए अलग-अलग योग्यता चाहिए! शिक्षक के लिए B.ED,, रेलवे के लिए आईटीआई,,, ऐसे ही मोक्ष के लिए भी योग्यता चाहिए!

1. पूर्ण निर्विकार!

2. पूर्ण वैराग्य!

3. स्थित प्रज्ञ!

4. कर्म रहित! (अच्छे बुरे कर्मों से परे होना)

5. पूर्ण शरणागति!

6. स्थिरता!

7. त्याग!

8. ज्ञान और भक्ति! अर्थात चित् की शुद्धि!

9. परमात्मा से प्रेम!

10. आत्म साक्षात्कार! अर्थात मन, बुद्धि, इंद्रियां, चित, अहंकार माया के आवरण से बाहर निकलना! और आत्म तत्व में प्रवेश करना!

यह 10 योग्यता जिनके अंदर आ गई उनका मोक्ष इसी जन्म में निश्चित है! मन और बुद्धि का स्थिर हो जाना! मन का संसार से विरक्त हो जाना और परमात्मा से प्रीत हो जाना यही मोक्ष है!

नश्वर कभी अनश्वर नहीं बन सकता!

पानी को कितने भी हम लोहे बनाने की कोशिश करें कठोर बनाने की कोशिश करें,,, पर क्या बन सकता है नहीं! पानी तरल ही रहेगा जो उसका गुण है! अगर उसमें रंग डालेंगे तो वह कलरफुल हो सकता है! लेकिन कठोर नहीं बन सकता! ऐसे ही पानी की भांति यह हमारा नश्वर शरीर है! इसे हम कितने भी देखभाल करें सुरक्षित रखने की कोशिश करें! पर यह शरीर नश्वर है जो इसका प्रमुख गुण है! औषधि, जड़ी बूटी, करने पर शरीर चमक सकता है,, कलरफुल हो सकता है सजाया जा सकता है! लेकिन अविनाशी कभी नहीं बन सकता! चाहे कितने भी डॉक्टरों की सहायता से इसे बचाने की कोशिश करें! पर नहीं बच पाएगा! इसका मिटना निश्चित है! मिटने के लिए देर भले हो सकता है फिर भी एक दिन इसका मिटना निश्चित है!

संसार को मिथ्या जगत क्यों कहा गया है?

जो इन आंखों से हमें संसार दिखाई दे रहा है वह झूठ है असत्य है मिथ्या है,, माया वही है जो जीव को सत्य प्रतीत होती है ऐसा लगता है कि यही हकीकत है लेकिन सत्य नहीं है! वैसे ही यह संसार है, प्रत्येक जीव को यह जगत सत्य लग रहा पर सत्य नहीं है! जैसे स्वप्न हकीकत लगता है पर हकीकत नहीं है ऐसे ही यह संसार है स्वप्न टूटने के बाद उसका झूठापन पता चलता है!

ऐसे ही संसार से जाने के बाद संसार का झूठापन पता चल जाता है! भगवान जो आगे उसे वहां दिखाएंगे उसे वही सत्य लगेगा! यह संसार उनकी बुद्धि से हट जाएगा! जो कुछ भी बुद्धि में याददाश्त है आज जो कुछ भी ज्ञान है जो कुछ भी इस बुद्धि में डाटा है जितने चीजों की जानकारी है कुछ याद नहीं रहेगा!

भगवान अंत समय सीधे बुद्धि को फॉर्मेट कर देंगे रिसेट कर देंगे! मैं लड़का था या लड़की! कहां जन्म लिया था राम नाम का जाप किया था या राधा नाम का,,, किस भगवान की भक्ति किया था कितने पाप कितने सत्कर्म किया था सब बुद्धि से हटा दिया जाएगा! इसीलिए इस जगत को झूठी दुनिया,, मिथ्या कहा गया है क्योंकि आगे कुछ याद रहेगा नहीं कुछ भी साथ नहीं जाएगा जो आज जिन-जिन चीजों की जानकारी है! वेद कहते हैं ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या!

मैंने पूरा जीवन क्या-क्या किया था? आगे कुछ भी मालूम नहीं होगा! बुद्धि में जो हलचल हुआ वही माया है आगे तो इसकी कोई सत्ता नहीं! यहां से एक तिनका ज्ञान भी साथ नहीं जाएगा! बुद्धि आगे जाएगी ही नहीं,, यही नष्ट हो जाएगी! मृत्यु के बाद मन,,,,चित् और अहंकार यही तीनों साथ जाते हैं!

मृत्यु के बाद हमें कहां जाना होगा?

श्रीमद् भागवत गीता 8/5

पूरा जीवन भगवान का किया गया चिंतन उनका स्मरण एक तरफ और मृत्यु के समय का चिंतन एक तरफ इन दोनों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मृत्यु के समय के चिंतन का होता है! श्रीमद् भागवत गीता 8/5 के अनुसार,,,,,,,,

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् |

य: प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशय: || 5||

भगवान क्या कहते हैं अर्जुन से- जब शरीर से प्राण निकलते हैं उस समय उसका शरीर, इंद्रियां, काम करना बंद कर देती है अंदर-अंदर जीवात्मा तड़पती रहती है! क्योंकि शरीर से निकल रही,, उस पर 10,000 बिच्छुओं का डंक एक साथ आक्रमण करती है इसलिए उस कष्ट हो रहा है ऐसा कष्ट की वह किसी को बता नहीं सकती!

अंत समय वाणी भी बंद हो जाता है! उस समय बस उसका चिंतन मन, बुद्धि चलता रहता है! परिवार के परिजन को वह बताना चाहती है मेरे साथ यह हो रहा है लेकिन वह बोल नहीं पाती! बताएं किसको? स्वयं अकेले पीड़ा सहती है! कोई कितने भी संबंध इकट्ठा कर ले पर अंत समय सबको अकेले ही जाना है!

क्योंकि जीव आई है अकेले,,, चिंतन करते-करते प्राण ठीक निर्धारित समय पर निकल जाता है! भगवान वही चिंतन को पकड़ कर उस जीव को ले जाते हैं! और इस चिंतन का महत्व सबसे अधिक होता है पूरे जीवन भर किया गया चिंतन से कई अधिक महत्वपूर्ण अंत समय के चिंतन का होता है याद रखो!

इसलिए अंत समय सावधान रहने की जरूरत है कहीं चिंतन बिगड़ ना जाए! इसका परिणाम क्या होता है? भगवान श्री कृष्ण ने इस श्लोक में बताया है!

जैसे कोई जीव पूरा जीवन भगवान की भक्ति किया है लेकिन उन्हें संगीत बहुत ही पसंद था फिल्मी गाने सुनने की आदत थी लता मंगेशकर उनको बहुत अधिक पसंद थी उनके गाने अंदर में गूंज रहा था और अंत समय अगर उसको चिंतन लता मंगेशकर जी का हो गया!

तो भगवान उस जीव को वहीं ले जाकर पटक देंगे जहां लता मंगेशकर का जीव अभी वर्तमान में जिस योनि में भटक रही होगी! अगर चूहा बनी होगी तो उसे भी उसी चूहे का बच्चा बनना पड़ेगा,, छिपकली बनी होगी तो उसी छिपकली के बच्चे बनना पड़ेगा,,,, भगवान उसी के पास लटका देंगे जिसका हमने अंत समय चिंतन किया था यह भगवान का सबसे बड़ा कानून है!

कोई फिल्मी हीरो हीरोइन का चिंतन कर दिया धोखे से भी तो सीधे उन्हीं के पास जाना पड़ेगा! कोई मित्र का चिंतन हो गया तो उनकी जो गति होगी वही गति हमारी होगी!

प्राण निकलते समय जो चिंतन हुआ! धोखे से भी जिस किसी का चिंतन हो गया,,, जीव की बस वही गति होती है!

और भगवान श्री कृष्ण कहते हैं जो अंत समय मेरा चिंतन करते हुए प्राण त्यागता है तो उसे सीधे मेरी प्राप्ति होती है उनका कभी दोबारा जन्म नहीं होता! और यह तभी संभव है जब पूरा जीवन हम अपने मन को भगवान में लगाने का बार-बार अभ्यास करेंगे बार-बार प्रैक्टिस करेंगे तभी अंत समय भगवान का चिंतन संभव है

अन्यथा पूरा जीवन भगवान की भक्ति करने वाला भी अंत समय माया में,, परिवार में,,,संपत्ति में फिसल जाता है! इसलिए मृत्यु के समय पीड़ा कष्ट इतनी अधिक होती है कि कोई भगवान का स्मरण नहीं कर पाता! इसलिए उसका फिर से जन्म होता है!

जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं।

अंत राम कहि आवत नाहीं॥

मोक्ष क्या है?

अगर मोक्ष चाहते हैं इसी जन्म में तो उनके लिए इन बातों को ध्यान रखना अति महत्वपूर्ण है! जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त होना ही मोक्ष है! भगवान श्री कृष्ण गीता 2/27 में कहे हैं प्राणी का फिर से जन्म निश्चित होता है मोक्ष किसी को नहीं मिलते! 99% जीवो का फिर से जन्म होता है!

क्या है मोक्ष?

किसको प्राप्त होता है?

मोक्ष क्या है? मोक्ष का अधिकारी कौन जिनके अंदर यह है!

1. इच्छाओं का नष्ट हो जाना!

2. पूर्ण निर्विकार होना!

3. संसार से मन का पूर्ण विरक्त होना!

4. ना पाप कर्म न पुण्य कर्म दोनों से रहित होना!

5. सुख दुख के माया जाल से बाहर निकलना!

6. अनासक्त भाव से अपना कर्तव्य पूर्ण करना! बिना आसक्ति के कर्म करते रहना!

7. स्थित प्रज्ञ हो जाना! (ठंडी गर्मी, मान अपमान, सुख दुख) सब में एक समान रहना!

8. मोह, वासना और अहंकार का पूर्ण त्याग!

9. इंद्रिय, मन, बुद्धि से ऊपर उठ जाना!

10. एकमात्र वैराग्य युक्त परमात्मा से प्रेम!

11. चित् का शुद्ध हो जाना, बुरे संस्कारों का मिट जाना!

12. मन बुद्धि का स्थिर हो जाना,, शांत हो जाना माया जब विचलित न कर पाए!

13. विचारों का नष्ट होना, इंद्रियों का (संयम) नियंत्रण होना!

14. सद्गुणों का जागृत होना!

15. आठ प्रकार के अष्टांग योग में सफल हो जाना! अपनी सांसों को कुछ मिनट जब हम रोक सके!

16. आत्म साक्षात्कार

(अंतर ध्यान हो जाना अर्थात अंतर्मुखी)!

ज्ञानी पुरुष के 10 लक्षण

1. निर्विकार शुद्ध चित्!

2. साधुता!

3. क्षमा भाव!

4. दया भाव!

5. स्थित प्रज्ञ अर्थात मन बुद्धि की स्थिरता!

6. पूर्ण वैराग्य अर्थात त्याग!

7. सरलता अर्थात कर्तापन का त्याग मैं का मिट जाना!

8. माया रहित (सुख दुख से अलग)!

9. अनासक्त भाव से कर्म करना!

10. इंद्रिय संयम (मन, बुद्धि, 10 इंद्रिय अपने वश में होना)!

भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं ज्ञानी पुरुष मेरी आत्मा है और भक्त मेरा प्राण है! जिसके अंदर यह 10 गुण विद्यमान है वही ज्ञानी पुरुष किस श्रेणी में आते हैं! भगवान श्री कृष्ण ने कहे हैं!

सच्चे भक्त के 10 लक्षण

1. धैर्यवान!

2. दृढ़ विश्वास अपने परमात्मा पर!

3. पूर्ण शरणागति अर्थात पूर्ण समर्पण!

4. प्रेम के आंसू!

5. सहनशीलता!

6. निरंतर नाम जाप करना!

7. अपने प्रभु का बार-बार प्रत्येक क्षण स्मरण होना!

8. माया रहित (सुख दुख से अलग)!

9. अनासक्त भाव से कर्म करना!

10. इंद्रिय संयम (मन, बुद्धि, 10 इंद्रिय अपने वश में होना)!

भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं ज्ञानी पुरुष मेरी आत्मा है और भक्त मेरा प्राण है! जिसके अंदर यह 10 गुण विद्यमान है वही ज्ञानी पुरुष की श्रेणी में आते हैं! भगवान श्री कृष्ण ने कहे हैं!

चार प्रकार के भक्त

मूल रूप से चार प्रकार के भक्त होते हैं!

1. सतोगुणी भक्ति

इसमें वह लोग आते हैं जो भगवान की भक्ति सिर्फ मोक्ष प्राप्त करने के लिए करते हैं! उन्हें सांसारिक सुखों की चाहत नहीं होती! सांसारिक सुखों को पूर्ण रूप से मिटा देते हैं केवल मोक्ष की चाहत होती है!

2. रजोगुणी भक्ति

इसमें वह लोग आते हैं जो भगवान की भक्ति अपने स्वार्थ के लिए करते हैं इच्छापूर्ति के लिए करते हैं धन की प्राप्ति, संतान प्राप्ति, विवाह इत्यादि किसी चाहत को लेकर करते है! इसे साकाम भक्ति भी कहते हैं!

3. तमोगुणी भक्ति

इसमें वह लोग आते हैं जो भगवान की भक्ति क्रोध भाव से करते हैं! भक्ति तो करेंगे लेकिन द्वेष भाव से भगवान का स्मरण उन्हें होगा! उनका ध्यान करेंगे लेकिन उन्हें भगवान से क्रोध रहता है! इस प्रकार के भक्त को तमोगुणी भक्त कहते हैं! और एक भक्त है जो इन तीनों से ऊपर है उसे निर्गुण भक्ति कहते हैं!

निर्गुण भक्ति:- इसमें वह लोग आते हैं जो तपस्या भगवान की भक्ति नाम, मंत्र जाप ध्यान करते हैं पूरा जीवन भगवान की भक्ति में लगा देते हैं और चले जाते हैं लेकिन मोक्ष की कामना भी नहीं रखते! भूक्ति मुक्ति से रहित भक्ति होती है! इसमें कोई भी कामना नहीं होती,, पूर्ण निष्काम रूप से भक्ति की जाती है! मोक्ष की भी इच्छा नहीं यह पूर्ण निष्काम भक्ति होती है! भगवान से मिलने के लिए उनको प्राप्त करने के लिए यह भक्ति की जाती है यह सबसे उंचे क्लास की भक्ति है इससे नीचे सतोगुणी भक्ति है उससे नीचे रजोगुणी भक्ति उससे नीचे तमोगुणी भक्ति है!

राधा तत्व क्या है?

राधा तत्व क्या है?,,, चार वेदों के द्वारा,,,,,

आज का सबसे महत्वपूर्ण विषय श्री राधा तत्व को नहीं जाना तो कुछ नहीं जाना इसे जानना है तो पूरे अंत तक तथ्य को समझने होंगे! कौन है श्री राधा रानी? जगद्गुरु कृपालु जी महाराज बता रहे हैं! चारों वेदों के प्रमाण के द्वारा!

1989 में एक प्रवचन के समय में जगतगुरु श्री कृपालु जी महाराज द्वारा बताया गया है आज तक ऐसा भेद को विश्व में किसी ने नहीं बताया जो उन्होंने बताया है जगद्गुरु कृपालु जी महाराज ही स्वयं श्री जी के अवतार हैं!

जिसने उनको जान लिया बस जान लिया! जैसे भगवान छिपे हैं ऐसे ही कृपालु जी महाराज भी छिपे हुए हैं! अगर प्रचार हो जाते जगह-जगह तो सब जान जाते,,, चैतन्य महाप्रभु जब वापस गए तो उन्होंने कहा था 500 वर्ष बाद एक अंतिम बार और इस कलयुग में आऊंगा 1922 में वही हमारे कृपालु जी महाराज के रूप में आए!

वही जगतगुरु श्री कृपालु जी महाराज है विश्व में पांच मौलिक जगतगुरु हुए हैं जिसमें पहला जगतगुरु आदि जगतगुरु शंकराचार्य उसके बाद निंबार्क आचार्य, रामानुजन आचार्य, माधवाचार्य उसके बाद पांचवा मौलिक जगतगुरु श्री कृपालु जी महाराज है 1922 मे जो धरती पर आए थे संसार को ब्रह्म ज्ञान देने के लिए निराकार ब्रह्म के रहस्य को बताने के लिए!

जिस पर श्री कृष्ण जी की कृपा हुई है राधा रानी जी स्वयं जिस पर कृपा किए हैं बस वही जगतगुरु कृपालु जी महाराज को जान पाया है! उनकी कृपा के बिना कोई पंचम मौलिक जगत गुरु को नहीं जान सकते! जब उनके महान गुरु की खबर नहीं तो कहां से श्री कृष्ण को जान पाएंगे?

एकमात्र वही निर्गुण निराकार ब्रह्म के सारे रहस्य को बताया है चारों वेदों में और 18 महापुराण में प्रमाण के द्वारा,,,, राधा तत्व का निरूपण भी उन्होंने हीं किया है!

आदि जगतगुरु शंकराचार्य ने भी राधा तत्व की महिमा बताई है चारों वेदों में कई जगह राधा तत्व की अपार महिमा है! कौन है श्री राधा रानी? पहले तो इसको जानना होगा!

निर्गुण निराकार ब्रह्म को जो सगुण साकार रूप में जिन्होंने अस्तित्व मे लाया है! वही राधा तत्व है! अनंत ब्रह्मांड के ऊपर एक महा कारण समुद्र है बिरजा नदी दिव्य सागर जहां कारण महा विष्णु का वास है प्राकृतिक समुद्र नहीं वह दिव्य समुद्र है अनंत ब्रह्मांड से परे की सीमा है!

यहां से लेकर सबसे ऊपर गोलोकधाम के जो क्षेत्र है यहां पर जिनकी सत्ता है जिन्होंने अपनी पराशक्ति से इनकी रचना किए हैं! वही राधा तत्व है! मूल प्रकृति श्री राधा रानी अस्तित्व में नहीं आती तो सदा निर्गुण निराकार ब्रह्म ही रहते! ना भगवान श्री कृष्णा होते ना ब्रह्मांड ना संसार और ना ही माया!

यह सब कहां से आया है श्री राधा रानी की शक्ति से आया है! श्री राधा रानी मूल प्रकृति है,,, मां दुर्गा को केवल प्रकृति कही गई है देवी दुर्गा श्री कृष्ण की योगमाया शक्ति है!

लेकिन श्री राधा रानी मूल प्रकृति है जो निराकार ब्रह्म की अंतरंग शक्ति है समझिए!

जो हम सब श्री कृष्ण रूप में जो भगवान देखते हैं वह भी श्री राधा जी की इच्छा से उनका निर्माण हुआ है वरना परमात्मा का एक ही रूप है सदा निर्विकार निर्गुण निराकार,,,, और यह भी बताया है जो श्री राधा रानी की शरण में नहीं गया! उनकी भक्ति नहीं की! उनका ध्यान नहीं किया तो उसे अनंत ब्रह्मांड में कोई नहीं बचा सकता!

जो दया और करुणा उसमें भरी हुई है वह परमात्मा श्री कृष्ण में नहीं है,,,, वह अपने कानून और नियम के पक्के हैं एक अनजाने से पाप कर्म हुआ तो भोगना पड़ेगा सोच रहे कि हम तपस्या करके श्री कृष्ण को प्रसन्न कर लेंगे कभी नहीं होंगे,,, चाहे तपस्या करते-करते प्राण निकल जाए! श्री कृष्ण को प्रसन्न करना आसान नहीं! इतनी जल्दी प्रसन्न नहीं होते श्री कृष्ण,, जितनी जल्दी श्री राधा रानी होती है! इसीलिए चार वेद हमें कहीं हैं श्री राधा रानी की शरण ग्रहण करो शीघ्र ही करो एक क्षण की देरी न करो,, वरना अनंत ब्रह्मांड में कोई तुम्हें नहीं बचा पाएंगे,,, चार वेद ने हमें बस यही बात कहा है!

श्री कृष्ण क्षमा नहीं करते! चाहे पूरे जीवन तपस्या करते-करते प्राण त्याग दीजिए! एक कर्म से मुक्ति नहीं पाया जा सकता! कर्मों को क्षमा सिर्फ राधा रानी ही करती है जिन्होंने अपने आप को उनको समर्पित कर दिया हो जो उनकी भक्ति कर रहा हो सिर्फ उनके ही अपराध क्षमा होते हैं! जो श्रीजी से विमुख हैं उनके अपराध नहीं!

निराकार ब्रह्म भी जिनके वशीकरण में है वही राधा तत्व है,,, अगर राधा रानी को छोड़कर ब्रह्मांड के कोई अन्य देवी देवता भगवान की भक्ति कर रहे तो इस पूरे अनंत ब्रह्मांड त्रिलोक में अपने पाप कर्म से कोई उन्हें नहीं बचा सकता!

परमात्मा के एक ही शाश्वत कानून है कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा! चाहे महान तपस्वी हो चाहे दुष्ट आत्मा! किसी के अपराध क्षमा नहीं होते! कर्मों को क्षमा केवल किशोरी जी ही करते हैं श्री राधा रानी से विमुख होकर किसी भी भगवान का ध्यान करें! अनंत जन्मों के पाप कर्मों से मुक्ति नहीं मिल सकता! आवागमन के चक्र से मुक्ति तो मिलेगी ही नहीं सोच रहे की कृष्ण की भक्ति करके मुक्त हो जाएंगे इसी जन्म में संभव नहीं! इसी जन्म में मुक्ति तभी संभव है जब श्री राधा रानी की शरण में जीव जाएगी! अन्यथा कोई अनंत ब्रह्मांड में नहीं बचा सकता! अपने किए हुए पाप कर्मों से मुक्ति तो मिलेगी ही नहीं! अगर राधा रानी चाहेंगे तभी यह संभव है! पहले तो यह जान लीजिए ब्रह्मा, विष्णु, शंकर,, पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण सब श्री राधा रानी के अधीन है! श्री राधा रानी की इच्छा पर ही सारे देवी

देवता अनंत ब्रह्मांड टिकी हुई है! श्रीजी की इच्छा के विरुद्ध अनंत ब्रह्मांड में कोई कुछ नहीं कर सकते! जब स्वयं पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्णा नहीं कर सकते तो नीचे वालों की और क्या श्रेणी है! इसलिए शीघ्र ही राधा जी की शरण ग्रहण करना होगा और उनकी भक्ति करनी होगी! अगर शीघ्र माया निवृत्ति की चाह है!

परमात्मा के इतने लंबे चौड़े कानून है! कि उनके कानून से कोई नहीं बच सकता! जिस जीवात्मा से श्री जी प्रसन्न हो गई निराकार ब्रह्म परमात्मा भी नतमस्तक है कुछ नहीं कर सकते,,,,

उन्हें मूल प्रकृति श्री राधा रानी अपने चरणों में वास देती है! गोलोकधाम निराकार ब्रह्म श्री कृष्ण की पराशक्ति श्री राधा रानी द्वारा रची गई नित्य धाम है!

जहां भगवान श्री कृष्ण और श्री राधा रानी रहते हैं वहां दोनों अपने भक्तों के साथ विराजमान है! श्री राधा रानी के अनन्य भक्तों को ही वहां वास मिलता है!

श्री राधा रानी को छोड़कर किसी अन्य की भक्ति कोई कितने भी कर ले! उन्हें अपने अनंत जन्मों के किए हुए पाप कर्मों से मुक्ति नहीं मिल सकती! स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने कहा है मेरे कानून के आगे मैं भी कुछ नहीं कर सकता!

भगवान श्री कृष्ण जिनके अधीन है अगर वह प्रसन्न हो गई तो उनकी मुक्ति निश्चित है! जिसने लाडली की चरण शरण कसकर पकड़ लिया हो! समस्त अनंत ब्रह्मांड की चाबी श्री राधा रानी के पास ही होते हैं! पहले जानना होगा राधा तत्व क्या है? तभी उनकी शरण में जाया जा सकता है!

माता दुर्गा को एक बार जाना जा सकता है संसार उन्हें जानते ही हैं,, बच्चे बच्चे जानते हैं कौन नहीं जानता मां दुर्गा को परंतु श्री राधा रानी को कोई नहीं जान पाया!

सारा जगत जानते हैं मां दुर्गा को लेकिन श्री राधा रानी! सर्व बुद्धि से परे है मां दुर्गा केवल प्रकृति है श्री राधा रानी मूल प्रकृति है मां दुर्गा भी जिनके अंश है! उन्हें कभी अपनी बुद्धि द्वारा नहीं जाना जा सकता! नहीं जाना जा सकता,, नहीं जाना जा सकता,, कभी नहीं जाना जा सकता,,,! जब तक स्वयं उनकी कृपा ना हो!

वेद ने भी बता दिया है भगवान श्री कृष्ण अविनाशी ब्रह्म और श्री राधा रानी को कोई नहीं जान सकता! परम तत्व की आत्मा श्री राधा रानी है! जब कोई नहीं जान सकता तो फिर उन्हें कौन जान सकता है?

वेद ने भी हमें बताया है जब कोई नहीं जान पाया तो कैसे उन्हें जान पाएंगे,,,

4 वेद कहते हैं!

जब स्वयं उसने जिस जीव पर कृपा कर दी जिनको अपनी दिव्य शक्ति उनके इंद्रिय, मन, बुद्धि में दे दी! जिस पर उनकी दिव्य कृपा हो गई! बस वही उनको जान पाया है! और वही उनको प्राप्त किया है! भगवान श्री कृष्ण और श्री राधा रानी को जानना पूर्ण असंभव है! जिस पर उनकी कृपा हो गई बस वही उनको जान सकता है!

पंचम मौलिक जगतगुरु श्री कृपालु जी महाराज 1989,, अलौकिक दिव्य प्रवचन

जय श्री राधे

दो ही कार्य डुबकी लगाकर करना है!

केवल दो ही कार्य डुबकी लगाकर करना है! इसके अतिरिक्त कोई भी अन्य कार्य हम करें तो सिर्फ अनासक्त भाव से! बस दो ही कार्य करते समय हमें डूब जाना है! अंतर्मन की गहराई में!

1. शास्त्र,, वेद ग्रंथो का अध्ययन!

2. भगवान का नाम जाप अर्थात ध्यान!

इसके अलावा कोई भी कार्य करें अनासक्त भाव से ही करना है! अधिक से अधिक समय का सदुपयोग बस यही दो कार्य में होनी चाहिए इसके अलावा कोई भी कार्य करें! ध्यान रहे बस अनासक्त भाव से ही हो!,, श्री राधे

प्राणी स्वयं ही अपना शत्रु स्वयं ही अपना मित्र- गीता

श्रीमद् भागवत गीता 6/6

महत्वपूर्ण श्लोक

प्राणी स्वयं ही अपना शत्रु है और स्वयं ही अपना मित्र देखिए कैसे?

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।

अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्ते तात्मैव शत्रुवत् ॥6॥

देखो भगवान श्री कृष्ण क्या कह रहे हैं- मन ही अपना मित्र और मन ही अपना शत्रु है! अर्थात भगवान इसमें यह कहना चाहते हैं- प्राणी अपना ही खुद शत्रु है और अपना ही खुद मित्र है कैसे? जिसका मन भगवान में नहीं लग रहा वह अपना शत्रु है अपना सर्वनाश कर रहा है क्यूंकि मृत्यु के बाद उसे नरक भोगना पड़ेगा! जिसका मन नहीं लग रहा वही पाप आत्मा है! दूसरा प्राणी स्वयं ही अपना मित्र है जिसका मन भगवान में लग गया! किसी भी तरह समझो वह नरक और 84 से बच गया! उसे वहां नहीं जाना पड़ेगा कभी नहीं! आगे उनका कल्याण निश्चित है जो अपने आप को आवागमन चक्र से मुक्त करने में लगा है! अपना भलाई किसमे है? संसार में हैं या मोक्ष प्राप्त करने में है जिसने जान लिया कि हमारा लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है! कोशिश में लग गया वही अपना मित्र है जिसने सत्य को नहीं जाना वही अपना शत्रु है जो अपने आप का सर्वनाश कर रहा है! जो अपने मन को भगवान में न लगाकर संसार में लगाया हुआ है! इसी को भगवान ने कहा है वह अपना स्वयं शत्रु है अपना खुद सर्वनाश कर रहा है अपने आप को नर्क में डाल रहा है! वही तो अपना शत्रु है जिन्हें अपनी भलाई का ही ज्ञान नहीं! अपनी भलाई किस में है? संसार या भगवान! जिसने जान लिया वही अपना मित्र है!

GOD का अर्थ

G- Generate- ब्रह्मा जी- प्रारंभ- रजोगुण

O-Operate- भगवान विष्णु- मध्य- सतोगुण

D- Destroy- भगवान शिव- अंत- तमोगुण

प्रकृति के तीन संचालन

सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण

प्राणी गर्भ में महा भीषण प्रतिज्ञा करके आई है!

श्रीमद् भागवत महापुराण स्कंद-3,,,, महत्वपूर्ण विषय माता देवहूति और भगवान कपिल देव!

संसार के समस्त प्राणी गर्भ में महा भीषण प्रतिज्ञा करके आई है कि भगवान एक बार मुझे इस महा भयंकर नरक से इस कष्ट से बाहर करो एक जगह एक ही स्थिति में बड़े कष्ट हो रहे प्लीज बाहर करो! 🙏🙏 दिन-रात तुम्हारी भक्ति करूंगा! भगवान बोले जाने के बाद मेरी माया तुम्हें पकड़ लेगी! फिर मुझे भूलोगे तो नहीं,,, जीव कहती है अगर भूल जाऊं तो आप याद दिला देना भगवान कहते हैं ठीक है! जन्म लेते ही संसार की वायु जैसे ही छुती है उसे! माया उसे पकड़ लेती है सब कुछ अपनी प्रतिज्ञा भूलकर माया में बुरी तरह फंस जाती है! श्री राधे हरे कृष्ण

जन्म मृत्यु क्या है?

जन्म मृत्यु क्या है? आवागमन चक्र

जन्म मृत्यु एक शाश्वत चक्र है आवागमन चक्र है जैसे कालचक्र निरंतर है क्षण भर के लिए नहीं रुकता बस ऐसे ही आवागमन चक्र भी नहीं रुकता! मृत्यु के बाद तुरंत जन्म और जन्म के बाद मृत्यु यह चक्र कभी बंद नहीं होता! लगातार निरंतर चलता रहता है! जब तक जीव को मोक्ष ना मिल जाए तब तक यह चक्र चलता रहता है! जन्म मृत्यु भगवान के अंश का एक छोटा सा भाग है उनका मस्तिष्क जन्म है तो पैर के सबसे निचला भाग मृत्यु है! जन्म और मृत्यु भगवान में ही सैर करता है! और वह स्वयं जन्म मृत्यु से परे है! वह जन्म मृत्यु से नहीं अपितु जन्म मृत्यु उनसे है! वेद कहते हैं जो उनको जान लेता है जो उनकी शरण में चला जाता है वह भी जन्म मृत्यु से पार हो जाता है! जब तक उनकी शरण में न जाए तब तक इस चक्र में जीव अनंत काल तक घूमती रहती है!

सर्व साक्षी परमात्मा,,, ध्यान रहे अंदर कोई छिपा है! देखने वाला

भगवान ने जीव को यह ज्ञान नहीं दिया है वह छुपा कर रखे हैं! जब प्राणी गर्भ से आई है तो उसके साथ कोई छिपकर साक्षी भी आए हैं! जिसकी हमको खबर नहीं! पूरे 24 घंटे हमारे साथ कोई तैनात है हम अकेले नहीं हैं,,, लग रहा है कि हम अकेले हैं!

हम दो लोग हैं एक करने वाला एक देखने वाला,, जीव और परमात्मा! 24 घंटे में क्या-क्या दृश्य देख रहे हैं? उस दृश्य को वह भी देख रहा है जो शब्द हम सुन रहे हैं उसे वह भी सुन रहा है जो कुछ हम ग्रहण कर रहे हैं उसे वह भी ग्रहण कर रहे हैं आंखों की पुतली जिधर जिधर जा रही है उधर उधर उनकी नजर भी जा रही है!

हमारी नजरों में ही उनकी नज़रें हैं उनके अनंत आंख हैं अनंत हाथ पैर उनकी अनंत नजरे हैं पूरे 24 घंटे में जिधर जिधर हम जा रहे हैं उधर उधर भी हमारे संग वह भी जाते हैं! मल मूत्र त्याग करने जाते हैं,, वहां भी साथ रहते हैं रात को गहरी नींद में सो गए तो पूरी रात भी वह हमारे साथ रहते हैं,,, सांस क्या अपने आप चलती है वह है शरीर के अंदर तब चल रहा है! परंतु हर समय है हमारे अंदर क्यों?

देखने के लिए कि हम क्या-क्या कर रहे हैं? तभी तो जीव को कर्मों का फल मिलता है कोई उसके साथ उसे हर पल देखने वाला रहता है सर्व साक्षी वही परमात्मा है! अगर कोई देखने वाला नहीं रहता तो जीव को किसी को अत्यंत सुख तो किसी को अत्यंत दुख नहीं मिलता संसार में सुख-दुख जो प्राणी को मिल रहा है! इसका कारण यह है कि जीव को हर पल कोई उसे देखने वाला रहता है! उसने माया का पर्दा ऐसा चढ़ा दिया है कि किसी को विश्वास नहीं होगा कि वह हर पल उनका कैमरा ऑन है! जैसे ही कैमरा बंद होगी सांस भी उसी वक्त बंद हो जाएगी! जहां-जहां उनका अंश जीव जिस जिस हाल में हैं वहां वहां तक उनको पूरी खबर है! किस क्षण में कौन क्या कर रहा? उनकी खबर किसी को नहीं परंतु उन्हें एक-एक प्राणियों की खबर है! देखिए 24 घंटे में पूरे समय में हमने उनको याद किया सिर्फ शाम को 4:15 में उनको भूल गए!

सिर्फ इसी टाइम पर लेकिन उनकी नजर इस टाइम पर भी थी! जिस समय हम उनको भूल जाते हैं उस टाइम धोखे से कुछ कर दिया वह भी हमारे कर्मों को देखना कर्म को नोट करना उस टाइम भी नहीं भूलते! वह सर्वशक्तिमान है सर्व व्यापक है सर्व साक्षी है सृष्टि के रोम रोम में उनका वास है प्रत्येक जीव के अंदर विराजमान है सारे ब्रह्मांड सूरज चांद तारे वह सब में व्याप्त है! ऐसा कोई जगह नहीं जहां वह नहीं है!

हमें देखने के लिए आंखों की जरूरत पड़ती है लेकिन परमात्मा आंखों से नहीं देखते,,,,,

जैसे हम सब देखते हैं! उनके नेत्रों के अंदर में ही समस्त असंख्य ब्रह्मांड घूम रही है अनंत प्राणी समस्त त्रिलोक चराचर जीव पशु पक्षी विद्यमान है! प्रत्येक जीव उनके नज़रों के सामने में ही है ,, एक चींटी जिधर जिधर जा रही है उधर उधर भी उनकी नजर है!

स्थान,, जीव और समय उनसे बचा नहीं है! इन सब में उनका वास है!,,,, परमात्मा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है और विराट से भी विराट है परमात्मा अनंत ब्रह्मांड से भी विराट है! और वह इतना सूक्ष्म है की जीवाणु कीटाणु बैक्टीरिया इन सब के अंदर भी बसा हुआ है,, पृथ्वी के धूल के एक कण में भी उनका वास है!

सूक्ष्म से विराट तक एक उनकी ही सत्ता है! इसलिए यह सोचना हमारी नादानी है कि मुझे कोई नहीं देख रहा जैसा मर्जी आए वैसा करो! ऐसा कहना उचित है हम उनको नहीं देख पा रहे! चाहे माने या ना माने,,, हर पल उनकी नजर है,, अगर नहीं मानेंगे तो भगवान का कुछ बिगड़ेगा नहीं! हमको भोगना पड़ेगा! मन बुद्धि चित्त को यह बात पता नहीं,,, वह जानते ही नहीं कि उन्हें देखने वाला कोई है! इसलिए तीनों मिलकर मनमानी करते हैं! और चले जाते हैं फिर

उसका फल जीव को अकेले स्वयं भोगना पड़ता है! फल भोगने के समय कोई उसका साथ नहीं रहता क्योंकि कर्मों में स्वयं अकेले जीव ही भागीदारी है! जब कर्म की थी तो किसी को पूछ कर नहीं की थी स्वयं अकेले फैसला ली थी अपने अच्छे बुरे का, इसलिए जब इसका दंड मिलेगा सजा मिलेगी सुख मिलेगा तो उनको अकेले स्वयं भोगना पड़ेगा!

पैसे को भले एक दूसरे को दिया जा सकता है लेकिन शरीर में रोग कष्ट, गरीबी जो आ गए क्या उसे कोई एक दूसरे को दे सकता है नहीं चलो मिलकर बांट लेते हैं! नहीं कभी नहीं! उसे स्वयं अकेले ही भोगना पड़ता है! इसलिए सावधान रहना होगा देखने वाला कहीं बाहर नहीं हमारे अंदर ही विद्यमान है!

कब पता चलता है?

1. विकट परिस्थिति में- भगवान पर विश्वास कितना है!

2. मृत्यु के समय- संसार से मोह कितना है?

3. मान सम्मान धन संपत्ति वैभव जब प्राप्त हो- अहंकार कितना है?

4. रूपवान स्त्री या पुरुष जब दिख जाए- मन में वासना कितना है?

5. जब कोई दो तमाचा हमें मार दे- क्रोध कितना है?

6. भक्ति के मामले में हो या ज्ञान या धन के मामले में हमसे कोई आगे बढ़ रहा हो- ईर्ष्या कितना है?

7. मुसीबत के समय में- साहस और धैर्य कितना है?

8. जीवन में दुख कष्ट जा ही नहीं रहा और भक्ति बरकरार है- निष्कामता कितना है?

9. जब सब कुछ हमारा छिन जाए घर परिवार दौलत फिर भी विचलित ना हो- वैराग्य कितना है?

10. धन है फिर भी और धन की चाहत है- लोभ कितना है?

11. शरीर में पीड़ा रोग आकर अगर घेर ले- सहनशीलता कितना है?

12. गरीबी में पता चलता है- धन की इच्छा कितना है?

ज्ञान की नदी

एक है ज्ञान की नदी और एक है अज्ञान की नदी जो हम सब यह संसार देख रहे हैं वह अज्ञान की नदी है!,,, और वेद कहते हैं अज्ञान ही तो माया का स्वरूप है! अज्ञानता क्या है? जो सत्य को जानता ही नहीं! उनकी बुद्धि में परम सत्य को एक पर्दा ने ढक दिया है वही अज्ञान है,, और यह सारा संसार अज्ञान का ही समुद्र है! सत्य को जो पूर्ण रूप से ढक दिया है वही माया है, वही अज्ञान है! गीता 10/11 जब मेरी कृपा होती है तब उनकी बुद्धि से अज्ञान जाता है! जो ज्ञान

की नदी में डुबकी लगाएगा उसे देर सबेर परमात्मा की प्राप्ति होगी, परमात्मा ज्ञान का स्वरूप है और संसार अज्ञान का स्वरूप है और जो अज्ञान की नदी में डुबकी लगाएगा उसे नरक की प्राप्ति होती है!

श्री राधा कौन हैं?

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज द्वारा श्री राधा कौन हैं?

(जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज द्वारा एक विशेष राधाष्टमी व्याख्यान)

आज श्री राधा रानी के प्राकट्य का पावन दिवस है। इसलिए आप सभी के मन में यह

जानने की इच्छा अवश्य होगी कि राधा तत्व क्या है? राधा कौन हैं?

आइए सबसे पहले 'राधा' शब्द की व्याकरणिक संरचना को समझें। राधा संस्कृत भाषा का मूल शब्द है। इसका अर्थ है आराधना और उपासना। राधा शब्द के दो अर्थ हैं-

दोनों ही सही हैं। राधा का एक अर्थ है वह जो श्री कृष्ण की प्रार्थना और पूजा करती है। दूसरा अर्थ है, वह जिसकी पूजा ब्रह्म श्री कृष्ण करते हैं, वह राधा है। तो, हमारे पास दो विपरीत अर्थ हैं। उसे राधा इसलिए कहा जाता है क्योंकिक्यों वह ब्रह्म कृष्ण की पूजा करती है, और उसे राधा इसलिए कहा जाता है क्योंकि क्यों ब्रह्म कृष्ण उसकी पूजा करते हैं।

भागवतम् – संदर्भ – 10/30/28 –

जब कृष्ण राधा के साथ महारास से अदृश्य हो गए, तब गोपियाँ विरह में विलाप कर रही थीं और उन्हें ढूँढ रही थीं।थीं उन्हें राधा और कृष्ण के पदचिह्न दिखाई दिए। गोपियाँ एक-दूसरे से कहने लगी। कृष्ण, हमारे प्रियतम उस गोपी

को ले गए हैं, जिसने उनकी सबसे अधिक भक्ति की होगी। हम उनसे निम्न स्तर के भक्त हैं। इसीलिए कृष्ण उस गोपी को ले गए और हमें यहाँ छोड़ गए।

ब्रह्मवैवर्त पुराण - इस श्लोक में कृष्ण कहते हैं - "हे किशोरी जी, मेरी गलतियों को क्षमा करें और मुझ पर कृपा करें।" इस प्रकार दोनों प्रकार के कथन शास्त्रों में पाए जाते हैं। इसलिए, राधा शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों ही सही हैं। कुछ लोग कहते हैं कि राधा तत्व बाद में कुछ लोगों द्वारा गढ़ा गया था और श्री कृष्ण ही एकमात्र तत्व हैं। वेद में प्रश्न पूछा गया है कि, "वह कौन सी परम शक्ति है जो सर्वत्र व्याप्त है?" इसका उत्तर भी वेद में दिया गया है। श्री कृष्ण सर्वत्र व्याप्त हैं। अन्य सभी उनसे हीन हैं तथा श्री कृष्ण के उपासक हैं। परन्तु कुछ लोगों ने भावना के वशीभूत होकर यह मान लिया कि राधा ही सर्वश्रेष्ठ भक्त हैं, इसलिए धीरे-धीरे उनका महत्व इतना बढ़ा दिया कि श्री कृष्ण ब्रह्म ही उनके भक्त हैं और उन्होंने न्हों यह प्रचारित कर दिया। कुछ भोले लोग ऐसा कहते हैं।

राधा तत्व वास्तव में क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर केवल एक शब्द में है, 'अवर्णनीय।'

वेदों में राधा के स्वरूप को अवर्णनीय बताया गया है। दूसरे शब्दों में, यह वाणी, मन या बुद्धि का विषय नहीं है। फिर भी कुछ बुनियादी ज्ञान देने और भक्तों को उनके भक्ति मार्ग में सहायता करने के लिए, सभी रसिक संतों,तों शास्त्रों और वेदों ने राधा का वर्णन किया है।

सबसे पहले आपको यह समझना होगा कि आप कौन हैं। यह शरीर आपका है, यह मन आपका है और यह बुद्धि आपकी है। आप कौन हैं? इसका आपके पास कोई उत्तर नहीं होगा। और अगर आपके पास कोई उत्तर होगा भी तो वह शास्त्रों के अनुसार होगा। यह सैद्धांतिक ज्ञान होगा कि, "मैं आत्मा हूँ।" यह शरीर मेरा है, मन मेरा है और बुद्धि मेरी है। लेकिन मैं शरीर, मन और बुद्धि नहीं हूँ, बल्कि आत्मा हूँ। तो आत्मा ही सर्वोच्च है। शरीर, इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि आत्मा के सेवक हैं। वे चौबीसों घंटे आत्मा की सेवा करते हैं। वे सोचते हैं, “मैं क्या देखूँ कि मेरी आत्मा खुश हो जाए” , “मैं क्या सुनूँ कि मेरी आत्मा खुश हो जाए” , “मैं क्या सूँघूँ कि मेरी आत्मा खुश हो जाए” , “मैं क्या चखूँ या खाऊँ कि मेरी आत्मा खुश हो जाए” , “मैं क्या छूऊँ कि मेरी आत्मा खुश हो जाए” , “मैं क्या सोचूँ कि मेरी आत्मा खुश हो जाए” , “मैं क्या निर्णय करूँ कि मेरी आत्मा खुश हो जाए” इत्यादि। हम बस यही सोच सकते हैं। यही हम अनंत काल से हर पल करते आ रहे हैं।

हर पल हम आत्मा की सेवा करने के लिए काम करते हैं। वेद कहता है, - भगवान श्री कृष्ण आपकी आत्मा हैं और आप उनके सेवक हैं। क्रम से चलते हुए - जैसे आपका शरीर आपकी आत्मा का सेवक है, वैसे ही आपकी आत्मा भगवान का शरीर है। और भगवान हमारी आत्मा की आत्मा हैं। उसी तरह, श्री कृष्ण की आत्मा राधा है (स्कंद पुराण और भागवतम) - कालिंदी कह रही है - राधा आत्मा हैं और श्री कृष्ण उनका शरीर हैं। जैसे आत्मा शरीर को नियंत्रित करती है और शरीर आत्मा का सेवक है, उसी तरह आत्मा परमात्मा की सेवक है और परमात्मा श्री कृष्ण राधा के सेवक हैं।

जब शास्त्र आत्मा की व्याख्या नहीं कर सकते, यह कहते हुए कि "आत्मा अर्थात् मैं हमारी बुद्धि से परे है।" "तो कौन कह सकता है कि वह हमारी आत्माओं की आत्मा, श्री कृष्ण को जानता है?" "तो श्री कृष्ण की आत्मा, राधा को कौन जान सकता है?" कौन उसके बारे में बात कर सकता है? कौन उसके बारे में सोच सकता है? कौन उसे देख सकता है? यह सब असंभव है। अब आप जानते हैं कि राधा सर्वोच्च शक्ति, श्री कृष्ण की आत्मा हैं।

अगर कोई उन्हें अलग समझता है - ब्रह्मवैवत पुराण - (वेद व्यास) - जो राधा और कृष्ण के बीच अंतर करता है – सिर्फ आनंद का आनंद लेने की दृष्टि से, अगर कोई कहता है कि राधा बड़ी है या कृष्ण बड़े हैं, तो यह ठीक है, लेकिन अगर कोई अपने मन में यह नकारात्मक विचार बनाता है कि राधा जी श्री कृष्ण से बड़ी हैं या श्री कृष्ण राधा जी से बड़े हैं, तो उस व्यक्ति को कालसूत्र नामक नरक में तब तक पीड़ा भुगतनी पड़ती है जब तक सूर्य और चंद्रमा मौजूद रहते हैं - यानी जब तक पृथ्वी पूरी तरह से नष्ट नहीं हो जाती। यह बहुत बड़ा अपराध है। तो दोनों एक हैं।

नारदपंचरात्र - एक प्राचीन ग्रंथ कहता है, "राधा और कृष्ण परम परात्पर भगवान हैं उनसे बड़ा कुछ भी नहीं है।" राधा उपनिषद - "राजा विष्णु की पुत्री सृष्टि से संबंधित प्रमुख दिव्य शक्ति है। सब कुछ उसी से उत्पन्न होता है।" इस वेद मंत्र के अनुसार। 'रा' और 'धा' दो शब्दों का अर्थ है - "जिससे ब्रह्मांड उत्पन्न होता है, रहता है और विलीन होता

है, वह शक्ति राधा है।"

फिर नारदपंचरात्र कहता है, - श्री कृष्ण का दूसरा भाग राधा है और राधा श्री कृष्ण का दूसरा भाग है। श्री कृष्ण कहते हैं, "मैं स्वयं राधा बन गया," राधा कहती हैं, "मैं स्वयं श्री कृष्ण बन गई।" ब्रह्मवैवर्त पुराण कहता है - "श्री कृष्ण का जो रूप है, मैं वही रूप बन गई। यह मैं ही हूँ," राधा कह रही हैं। "मैंने मैं पुरुष रूप धारण किया, इसलिए लोग मुझे श्री कृष्ण कहने लगे।" तो दोनों सही हैं।

नारदपंचरात्र फिर कहता है - "जैसे दूध और उसकी सफेदी एक हैं, वैसे ही राधा कृष्ण भी एक हैं।" दूध से सफेदी को अलग नहीं किया जा सकता। वे दोनों एक ही हैं। एक फिर से दो हो गया है। नारदपंचरात्र कहते हैं - "देवी महा लक्ष्मी, जो अनगिनत ग्रह प्रणालियों के स्वामी, महा विष्णु की पत्नी हैं - राधा के शरीर के बाईं ओर से प्रकट होती हैं। सभी देवियाँ, दुर्गा,

जयंती, मंगलाकाली, भद्र काली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवाधात्री, स्वाहा, स्वधा, वैष्णवी और ब्रह्माणी सभी राधा से ही प्रकट होती हैं।"

पद्म पुराण कहता है - "राधा के नख से, असंख्य विष्णु प्रकट होते हैं, केवल एक विष्णु

नहीं। " संदर्भ: पद्म पुराण, मत्स्य पुराण, आदि पुराण, पद्म पुराण। वेद व्यास जी ने राधा

का अर्थ समझाया - "वह जो कुछ आँसू बहाकर सभी आत्माओं की सभी इच्छाओं को

पूरा करती है।" उसका नाम राधा है।'

देवी भागवत पुराण कहता है - "पहले आपको राधा का नाम लेना चाहिए, फिर श्री कृष्ण का नाम। इस तरह, जो बोलता है, कीर्तन करता है, और इस तरह ध्यान करता है, वह गोलोक में जाता है।" राधा का नाम हमेशा पहले लिया जाता है। कोई भी 'कृष्ण राधा' नहीं कहता। हम कहते हैं 'राधा कृष्ण', 'श्यामा श्याम।'

हमारे धर्मग्रंथों में अनगिनत स्थानों पर राधा नाम का उल्लेख मिलता है। रसिक संतों की रचनाओं की कोई सीमा नहीं होती। हमारे ब्रज में वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, गौरांग महाप्रभु, रामानुजाचार्य और माधवाचार्य जैसे महान जगद्गुरु और आचार्य हुए। ये उन्होंने साबित कर दिखाया है. माधवाचार्य और रामानुजाचार्य - ये दोनों जगद्गुरु हैं जो लक्ष्मी नारायण के भक्त थे। ब्रज के बाकी संत और आचार्य राधा कृष्ण के भक्त थे। माधवाचार्य लक्ष्मी नारायण के भक्त थे, लेकिन उनके शिष्य माधवेंद्रवें पुरी राधा कृष्ण के भक्त थे। माधवेंद्रवें पुरी के शिष्य ईश्वर पुरी भी राधा कृष्ण के भक्त थे। ईश्वर पुरी के शिष्य चैतन्य महाप्रभु भी राधा कृष्ण के भक्त थे। वल्लभाचार्य केवल एक ही बात कहते हैं -

"राधा स्वयं ब्रह्म हैं।" वे ब्रह्म के बराबर नहीं हैं, वे स्वयं ब्रह्म हैं। निम्बकाचार्य कहते हैं कि "राधा शक्ति हैं और कृष्ण वह हैं जिनमें शक्ति निवास करती है।" दोनों में कुछ अंतर है और कोई अंतर नहीं भी है। इस कारण वे दो हैं और एक भी हैं। श्री गौरांग महाप्रभु कहते हैं कि राधा और कृष्ण बाह्य रूप से दो हैं और नित्य एक हैं।निष्कर्ष यह है कि सभी आचार्य राधा कृष्ण को एक ही मानते हैं। रामानाचार्य और माद्वाचार्य भी अपने दर्शन में लिखते हैं कि कुछ लोग राधा के रूप में महा लक्ष्मी की पूजा करते हैं। इसलिए आपको राधा और कृष्ण में भेद करने के लिए अपनी बुद्धि का

उपयोग नहीं करना चाहिए। आनंद की दृष्टि से राधा का महत्व अधिक है। रसिक संतों ने स्तुति में गाया है:- "परम धन राधा नाम आधार"। (राधा नाम ही मेरा परम धन और आश्रय है)। "जसु श्याम मुरली मह तेरा, सुमिरत बाराम्बर" कृष्ण अपनी बांसुरी में उसका नाम गाते हैं और हर समय उसे याद करते हैं। ''कोतिन रूप धरे नंदनंदन, तबहु न पायो पार।'' कृष्ण ने राधा के प्रेम की गहराई को समझने के लिए अनगिनत रूप अपनाए लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके। इसी ब्रज में अलबेली शरण नाम के एक संत थे, उन्होंने न्हों स्पष्ट कहा है:- "राधा रा के कहत ही, निकसत सकल विकार," ('रा' कहने से मायिक कष्ट सब भाग जाते हैं) "अउ पुनि आवत पावत नाहिं" (और अगर माया वापस आने की कोशिश करे तो क्या होगा) "धक्का देत धाकड़" - फिर 'धा' कहकर माया को बाहर निकाल देता है।

वेदों में क्या कहा गया है? चलिए सबसे पहले वेदों में जाकर देखते हैं कि 'राधा' नाम है या नहीं। नाम तो है लेकिन बहुतायत में नहीं। ऋग्वेद के सभी सात व्याकरण में 'राधा' शब्द मिलता है। इसके अलावा ऋग्वेद में संस्कृत श्लोक - राधा तत्व का भी वेदों में वर्णन है। अब यदि कोई राधा नाम का गलत अनुवाद करते हुए कहे कि 'मैं राधा की ऐसी व्याख्या नहीं करने जा रहा हूँ। मैं इसकी दूसरी तरह से व्याख्या करने जा रहा हूँ।'

(संस्कृत श्लोक) – 'उनकी बुद्धि उनकी अपनी प्रवृत्ति के अनुसार व्याख्या करती है।'

(संस्कृत श्लोक) – जब उद्धव ने श्री कृष्ण से प्रश्न पूछा, "हमारे देश में इतने सारे मार्ग क्यों हैं?"

"कर्म, ज्ञान या योग जैसे कई अलग-अलग मार्ग क्यों वर्णित हैं?" तो श्री कृष्ण ने कहा, "प्रत्येक आत्मा में तीन भौतिक गुणों की भिन्नता के कारण उनकी अलग-अलग स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ होती हैं। इस कारण से विद्वानों ने अपने-अपने मन की रुचि के अनुसार वेदों का अर्थ अलग-अलग ढंग से समझाया है। इसलिए ऐसे लोग हैं जिन्होंने 'राधा' शब्द का गलत अर्थ लगाया है। मेरा उनसे कोई विरोध नहीं है। ठीक है। उनका अपना दर्शन हो सकता है। अब उपनिषदों पर आते हैं, (संस्कृत श्लोक) - मंत्र और ब्रह्म, अर्थात उपनिषद, वेद कहलाते हैं। वेद में एक प्रश्न पूछा गया है - राधा की पूजा क्यों की जाती है? राधा कौन हैं? वेद ने उत्तर दिया सामवेदीय राधोपनिषद - वेद कहता है, "जिनकी चरणधूलि, कृष्ण, असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी, सर्वशक्तिमान अपने ही सिर पर धारण करता है, वह राधा तत्व है। जिसकी गोद में लेटे हुए परम पराशक्ति कृष्ण गोलोक के आनन्द को भूल जाते हैं, वह शक्ति राधा है।

इसके बाद राधा उपनिषद कहता है – – श्री कृष्ण जिसकी पूजा करते हैं वह राधा तत्व है। राधा जिसकी पूजा करती हैं वह श्री कृष्ण तत्व हैं। दोनों एक दूसरे की पूजा करते हैं।

राधिकोपनिषद फिर कहता है, (संस्कृत श्लोक) – एक दिव्य प्रकाश – (संस्कृत श्लोक) – एक दिव्य अस्तित्व, एक सर्वोच्च शक्ति, दो हो गई। वेद कह रहा है – एक दिव्य अस्तित्व दो हो गया। राधा और कृष्ण दोनों की एक बुद्धि, एक मन, एक आत्मा, एक ही लक्षण और एक ही ज्ञान है। इस कारण दोनों में कोई अंतर नहीं है। मैंने मैं आपको निम्न शास्त्रों - वेद, उपनिषद, नारद पंचरात्र, माया पुराण, पद्म पुराण, आदि पुराण, देवी भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण के माध्यम से भी समझाया है कि इन शास्त्रों में राधा का वर्णन और वर्णन है। फिर भी कुछ भोले लोग कहते हैं कि राधा का नाम भागवत में नहीं है। इसलिए संदेह होता है और लोग यह मानने लगते हैं कि राधा सिर्फ़ एक कल्पना हो सकती है। इसलिए मैं अब यह साबित करने जा रहा हूँ कि राधा का नाम भागवत में कई जगह है।

संख्या 1 - भागवतम् संदर्भ: 2/4/14 - आप इसे देख सकते हैं। राधा कौन है? –

"कोई भी उसके बराबर या उससे बड़ा नहीं है।" दूसरे शब्दों में, सबसे बड़ी (आत्मा) परम शक्ति राधा है। जब वह श्री कृष्ण की आत्मा है, और जब वह परम परम शक्ति है, तो हमें राधा के बारे में संदेह कैसे हो सकता है? इसलिए भागवतम् में प्रयुक्त शब्द 'राधासा' राधा के लिए है।

संख्या 2 - भागवतम् संदर्भ: -10/30/28 - जब कृष्ण राधा के साथ महारास से गायब हो गए, तो गोपियाँ रो रही थीं और उन्हें ढूँढ रही थीं। उन्होंने राधा और कृष्ण के पैरों के निशान देखे। गोपियों ने कहा, "उसने परम भक्ति की है। जो कृष्ण की सबसे अधिक भक्ति करता है वह राधा तत्व है। मैंने मैं पहले भी यह बताया है।

संख्या 3 - भागवतम् संदर्भ: 10/83/42 - रुक्मिणी और कृष्ण की अन्य रानियाँ कह रही हैं, "राधा के वक्षस्थल से, कृष्ण के चरण कमलों पर कुमकुम (लाल चूर्ण) शोभायमान है। मैं उस श्री की दासी बनना चाहती हूँ।" यहाँ 'श्री' शब्द का प्रयोग राधा के लिए किया गया है। रुक्मिणी, 'श्री' का अवतरण पहले से ही कृष्ण के पास (द्वारिका में) है। रुक्मिणी के लिए 'श्री' का प्रयोग कैसे हो सकता है? वह पहले से ही वहाँ थी।

इस श्लोक में 'श्री' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'श्री' का अर्थ है राधा। जब आप यहाँ बरसाना में मंदिर जाते हैं, तो आप लोगों को कहते हुए सुनते हैं, 'हमें श्रीजी के मंदिर जाना है।' कोई भी राधा जी का मंदिर नहीं कहता। वेद कहते हैं, (संस्कृत श्लोक) – एक शक्ति श्री है और दूसरी लक्ष्मी है और मैंने मैं समझाया था कि लक्ष्मी राधा की सहचरी है।

संख्या ४ - संदर्भ: भागवतम १०/३०/२८ - इस श्लोक में राधा शब्द स्पष्ट रूप से लिखा गया है। भागवतम संदर्भ: १०/३०/३६ - यहाँ राधा के लिए गोपी नाम का प्रयोग किया गया है। कृष्ण उस गोपी के साथ अंतर्ध्यान हो गए। तो गोपी भी राधा के नामों में से एक है। राधा उपनिषद में अन्य पर्यायवाची शब्दों के अलावा राम नाम के बारे में मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ - भागवतम संदर्भ: १०/४७/३ - जब उद्धव ब्रज गए तो गोपियों ने गाँव वालों से सुना कि रामपति का संदेश आया है। यही इस श्लोक का अर्थ है। क्या गोपियों के लिए महाविष्णु का संदेश आया था? यह श्री कृष्ण का संदेश था। इसलिए यहाँ राधा के लिए राम शब्द का प्रयोग किया गया है। चलिए आगे चलते हैं, (संस्कृत श्लोक) – जैसे एक छोटा बच्चा अपनी छाया के साथ खेलता है, श्री कृष्ण, पूर्ण आनंदित परमेश्वर, गोपियों के साथ खेलते और रास करते थे। यहां, कृष्ण के लिए रमेश नाम का उपयोग किया जाता है। क्या महाविष्णु ने रास किया था? तो यहाँ, राम का अर्थ राधा है। तो राधा के भगवान - कृष्ण ने रास किया। भागवतम संदर्भ: १०/३१/१७ – हमारे भागवतम में, 'राम' नाम का उल्लेख कई बार किया गया है, 'श्री' नाम का उल्लेख किया गया है, 'गोपी' नाम का उल्लेख किया गया है और जैसा कि मैंने मैं आपको बताया है, 'राधा' नाम का उपयोग दो स्थानों पर भी किया जाता है। इसलिए, आपको इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि 'राधा' नाम भागवतम में नहीं है। साथ ही, जिसने भागवतम (वेद व्यास) की रचना की है, उन्होंने न्हों अन्य सभी पुराणों की भी रचना की है। मैंने मैं पहले इन पुराणों के नाम दिए हैं। इन शास्त्रों में राधा नाम का विस्तार से वर्णन किया गया है। राधा नाम न लिखने का एक और कारण है। शुकदेव परमहंस को 'राधा' नाम इतना प्रिय था कि अगर वे परीक्षित से यह नाम लेते तो शुकदेव छह महीने के लिए समाधि में चले जाते। शुकदेव को परीक्षित को सात दिन में भागवतम बताना था। इसी कारण शुकदेव ने 'राधा' शब्द नहीं कहा।

नारद पंचत्र में लिखा है - "जब आप सिर्फ 'रा' कहते हैं, तो आपको यह समझना चाहिए कि आपको सब कुछ मिल गया है, अगर यह पूरी आस्था के साथ कहा जाता है।" "और जब कोई 'धा' कहता है, - कृष्ण आत्मा के पीछे भागते हैं, वह राधा है।" शुकदेव परमहंस ने सोचा, "मेरे कृष्ण को भागना होगा, इसलिए मुझे गुप्त रूप से अन्य नामों का उपयोग

करना चाहिए और राधा का नाम नहीं लेना चाहिए।"

उदाहरणार्थ - मेंहदी का रंग हरा होता है। इसके पत्ते हरे होते हैं। स्त्रियाँ अपने पैरों में मेंहदी लगाती हैं, इसलिए उनके पैर लाल हो जाते हैं। पत्तियों में लाल रंग पहले नहीं देखा गया था। यह कहाँ से आया? यह पत्तियों में गुप्त रूप से विद्यमान है। इसी प्रकार शुकदेव परमहंस ने राधा के अन्य पर्यायवाची शब्दों के साथ राधा के नाम का वर्णन किया है। इसलिए यदि किसी को यह गलतफहमी है कि राधा का नाम भागवत में नहीं है, तो उसे यह विचार निकाल देना चाहिए। हमारा मुख्य उद्देश्य और उद्देश्य क्या होना चाहिए? हमारा असली उद्देश्य राधा के प्रति समर्पण करना है। केवल समर्पण, और कुछ नहीं।हीं यदि आप समर्पण करते हैं, तो आपको राधा की कृपा प्राप्त होगी और माया से मुक्ति मिलेगी। आप अनंत काल तक दिव्य आनंद और दिव्य ज्ञान प्राप्त करेंगे। वेद घोषणा करते हैं - "आप पूरी तरह से संतुष्ट और आत्म-संतुष्ट हो जाएंगे और आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।" इसलिए, मैंने मैं सिद्ध किया है कि राधा नाम केवल भागवतम में ही नहीं बल्कि वेदों में भी पाया जाता है।

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज द्वारा

जो भगवान से विमुख है उनसे बचकर रहो

जो भी हमें अपने भगवान से दूर करें उन्हें तत्काल त्याग देना चाहिए चाहे माता-पिता हो चाहे पति हो या पत्नी या संतान! जो भगवान से दूर करें वही माया है उनसे सदा सावधान रहो! जान लीजिए इसका परिणाम क्या होगा? नरक यातना किसको भोगनी पड़ती है? जिनका मन भगवान में बिल्कुल भी नहीं लगता उन्हीं को नरक भोगने पड़ते हैं, और जिसने उनके साथ संबंध जोड़ रखा है उनसे अटैच है! इसलिए उसको भी नरक जाना पड़ेगा!,,,, जिसके साथ हमारा मन का संबंध है उनकी जो गति होगी वही गति हमारी भी होगी! जो भगवान से विमुख हैं उनसे दूर रहो,,, उनकी दुर्गति तो होगी साथ में हमारी भी होगी!

जीवन बस एक ही कारण के लिए मिला है?

प्राणी को जीवन बस एक ही कारण के लिए मिला है?

संसार की चीजों को दुनिया के प्रपंच को जानने के लिए नहीं मिला है! स्वयं को जानने के लिए मिला है शरीर छूटने से पहले स्वयं को जान लो अन्यथा केवल पछताना हीं पड़ेगा! मानव योनि हाथ से निकल गया और खुद को जाना नहीं तो सोचा नहीं होगा इतना पछताना पड़ेगा! क्योंकि यह सृष्टि भगवान के कानून के अनुसार चल रहा है,,, पूरी सृष्टि जगत उनके नियमबद्ध चल रहा है! जैसी मृत्यु होगी तुरंत उस जीव को इस शरीर से निकालकर भगवान 84 के कैद में बंद कर देते हैं परंतु किसको? जिसने मानव योनि में जन्म प्राप्त करके स्वयं को नहीं जान पाया जो हीरा जन्म 84

के बाद मिलता है कभी-कभी मिलता है हर बार नहीं? यजुर्वेद कहते हैं उसे आगे केवल पछताना हीं पड़ेगा! जिसने स्वयं को नहीं जाना!

प्राणी को जीवन मिला है?

इस चीज को समझने के लिए प्राणी को जीवन मिला है?

1. जो मैं सांस ले रहा हूं किसकी ताकत से ले रहा हूं? क्या खुद में ताकत है लेने की,,, अगर है तो फिर प्राणी को डॉक्टर की सहायता से ऑक्सीजन मशीन क्यों लगवाना पड़ता है?

2. जो मैं भोजन ग्रहण करता हूं खाने को निगलता हूं तो किसकी शक्ति से ले जाता हूं?

3. जो मैं सुबह उठता हूं तो किसकी शक्ति से उठता हूं?

4. जो मैं रात को गहरी नींद में चला जाता हूं तो कौन मुझे निद्रा में ले जाता है?

5. बुद्धि में जो कुछ भी मुझे जानने की शक्ति मिली है किसने दिया है?

6. मेरे अंदर चेतन शक्ति कहां से आया है?

7. भोजन पेट में जाता है तो उसे डाइजेस्टिंग कौन करता है? शरीर के पूरे सिस्टम को कौन चला रहा है?

8. नेत्र तो है पर इस नेत्र में रोशनी किसकी शक्ति से है? किसकी शक्ति से हम जगत को देख रहे हैं?

9. कौन है वह जो धड़कन को हर पल धड़का रहा है? शरीर के कोने-कोने में रक्त वायु भेज रहा है? जिसके बदौलत हम जीवित हैं!

10. वह कौन है? यह कौन है? और मैं कौन हूं? यह संसार क्या है? हमें बनाने वाला संसार बनाने वाला कौन है? वह कहां है? क्यों बनाया इन सब रहस्य को जानने के लिए ही उन्होंने जीव को मानव योनि में लाया है!

एकमात्र यही एक ऐसी योनि है,,, जिसमें जीव इस मनुष्य शरीर रूपी रथ में बैठकर परमात्मा तक पहुंच सकता है! क्योंकि यही योनि में जीव को बुद्धि मिला है बाकी किसी भी योनियों में नहीं! भगवान मनुष्य योनि में लाकर एक सौभाग्य देते हैं इसे प्राप्त करके अनंत जन्मों की अपनी बिगड़ी बना ले अन्यथा यह हाथ से निकल गया तो बस पछताना हीं पड़ेगा!

और दूसरा कोई विकल्प नहीं पछताने के सिवा!

एकांत से भगवान मिलेंगे

ज्ञान की तलवार

अगर परमात्मा से शीघ्र ही मिलना है तो एकांत में रहने की आदत बना लेनी है! जैसे गणित हल करने का विषय है ऐसे ही परमात्मा एकांत का विषय है! जितना एकांत होंगे उतनी शीघ्र परमात्मा की प्राप्ति होगी! परमात्मा का ध्यान एकांत में ही हो सकता है! चंचल मन का सबसे बड़ा दुश्मन एकांत ही है!

जब तक लोगों के बीच रहने की आदत रहेगी तब तक कभी परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती! परमात्मा तक पहुंचना है शीघ्र इसी जन्म में तो एकांत मे रहने की आदत बनानी होगी! बड़े-बड़े ऋषि मुनि भगवान को प्राप्त करने के लिए जब निकले थे तपस्या के लिए तो उन्होंने एक ग्रुप बनाकर गए थे या अकेले? अकेले ही एकांत में तपस्या करके उनको पाया है! परमात्मा जीव के हर पल अंदर है उसे एकांत में ही जाना जा सकता है! भीड़ भाड़ में नहीं! लोगों से जितना अधिक हो सके अलग रहने की कोशिश करनी है!

परमात्मा की संपूर्ण दिव्य शक्ति एकांत में ही नजर आता है!

सबसे बड़ा आनंद एकांत ही है! जब एकांत में रहने की आदत बन जाए तो परमात्मा की अनुभूति अपने आप होने लगेगी! लगेगा ही नहीं! वह भगवान इस नेत्रों से हर पल हमें दिखने लगेगा! और लगा है!

अज्ञानता को लोगों के पास रहना अच्छा लगता है और ज्ञान को एकांत प्रिय होता है! क्योंकि ज्ञान को एकमात्र परमात्मा की तलाश रहती है दूसरा किसी की नहीं! अज्ञानता तो परमात्मा को जानता ही नहीं तो कहां से उनकी तलाश करेगा? वह तो पैसे की तलाश करता है! क्योंकि वह पैसे को ही जानता है उसे तो बस खाने कमाने और सोने का हीं ज्ञान रहता है! आगे पीछे सोचने की शक्ति उसके पास तो रहती ही नहीं! ज्ञान ही तो एकमात्र ऐसी संपत्ति है संसार से वैराग्य करने में ज्ञान अकेले काफी है! ज्ञान से ही वैराग्य होता है! इसलिए ज्ञान एकांत चाहता है! जैसे ज्ञान संसार से वैराग्य करता है ऐसे ही अज्ञान,, जीव को संसार से अनुराग करवाता है! और वेद कहते हैं- बुद्धि की अज्ञानता ही माया का स्वरूप है! और इस अज्ञानता को आत्मज्ञान के द्वारा नष्ट किया जा सकता है!

इस अज्ञानता रूपी माया को ज्ञान रूपी तलवार ही काट पाया है! और कोई दूसरा शस्त्र नहीं! इतनी बड़ी प्रबल माया को जो काट सके! वह तलवार भी तो मजबूत होना चाहिए! अगर चाकू में धार नहीं है तो क्या प्याज को कांटा जा सकता है! उसके लिए चाकू प्रबल होना चाहिए जितना कठोर वस्तु होगा उसके लिए उतना ही प्रबल अस्त्र चाहिए! ऐसे ही प्रबल माया को तोड़ने के लिए ज्ञान का मजबूत होना आवश्यक है! जितना तत्व ज्ञान, आत्मज्ञान मजबूत होगा! माया उतनी ही शीघ्र कट जाएगी! ज्ञान बिना वैराग्य नहीं! और वैराग्य बिना एकांत नहीं! जब संसार से वैराग्य होने लगेंगे तभी एकांत प्रिय लगेगा! इस आनंद को जिसने चखा है बस वही जान पाएगा कि इसमें कितना आनंद है!

संसार एक ट्रेन हैं! समय जिसका ड्राइवर

संसार के समस्त प्राणी ट्रेन यात्रा कर रहे हैं! समय जिसका ड्राइवर है!

ट्रेन के सभी डिब्बे एक ड्राइवर के हाथ में होता है वही सब को बिठा कर ले जाते हैं! चाहे यात्री कुछ भी करें ड्राइवर अपने लक्ष्य में मगन रहता है! निरंतर आगे तरफ उनका ध्यान रहता है जहां जिसका स्टेशन आया वहां यात्री उतर जाते हैं ट्रेन आगे चला जाता है उसे और भी आगे जाना रहता है बाकी यात्री को उतारने के लिए! बस ऐसे ही यह संसार है देखिए

कैसे? संपूर्ण ब्रह्मांड ट्रेन है जिसमें हम सब बैठे हुए हैं समय जिसका ड्राइवर है समस्त प्रकृति को समय ड्राइविंग कर रहा है! संसार के अनंत प्राणी उस ट्रेन के यात्री हैं और स्टेशन मृत्यु है समय तो उससे भी आगे जाएगा! जिस प्राणी का जहां स्टेशन पड़ेगा उसे वहीं उतरना पड़ता है ट्रेन से बाहर कर दिया जाता है! अर्थात वह प्राणी इस संसार से बाहर हो जाता है!

संसार की सच्चाई

प्रत्येक प्राणी अपने-अपने सुख की खोज में लगे हैं! पुत्र पुत्री माता पिता पति पत्नी किसी को किसी से मतलब नहीं इस जगत में,,,, अपने सुख के लिए एक दूसरे के साथ संबंध है!

जीव को सिर्फ अपने सुख से मतलब है और किसी से नहीं! जीव अनंत जन्मों से अपने सुखों की भूखी है! जब तक भगवत प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक जीव की भूख शांत नहीं होती! इसलिए वह कभी किसी का सुख नहीं चाह सकती! जितने संसार में प्राणी देख रहे हो सब अपने सुख की खोज में लगी है! यहां किसी को किसी से मतलब नहीं! सब स्वार्थ युक्त है! सुबह से रात तक अपने सुख की भाग दौड़ चल रही है!इच्छा ठीक अपने पूर्व जन्म के अनुसार!

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/